Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

080006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

~~RF 366.~~

080006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

UNESCO

यूनैस्को वृत्तपत्रिका

...-१, रिंग रोड
नई देहली

यह समाचार पत्र संयुक्त राष्ट्रीय शैक्षणिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संस्था के विश्व भर के कार्यों का मासिक प्रतिवेदन है

मासिक बुलेटिन | ज़नवरी, १९६५ | अंक ११, संख्या

080006
26-3-65
080006

विषय-सूची

यूनैस्को महासम्मेलन का तेरहवां अधिवेशन २

वैज्ञानिक प्रगति और मानवता का भविष्य
प्रो० नोरेयर एम० सिसाकियां ४

एक प्रेरणादायक परिचर्चा से प्राप्त निष्कर्ष
रेने महू, महानिदेशक १०

निरक्षरता का उन्मूलन : एक महान और तात्कालिक कार्य १६

विश्व के युवकों के प्रति यूनैस्को महानिदेशक का सन्देश १९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूनैस्को महासम्मेलन का तेरहवाँ अधिवेशन

यूनैस्को महासम्मेलन के तेरहवें अधिवेशन में ११७ सदस्य देशों के एक हजार से ऊपर प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इन प्रतिनिधियों में ६४ मन्त्री, ८० वैज्ञानिक और शिक्षा तथा संस्कृति के १४० विशेषज्ञ थे। अधिवेशन पेरिस में २० अक्तूबर से २० नवम्बर १९६४ तक हुआ।

अपने अन्तिम भाषण में रूसी विज्ञान अकाडमी के सदस्य प्रोफेसर नोरैयर एम० सिमाकियाँ ने जो सर्व सम्मति से सभापति चुन लिए गए थे, सम्मेलन के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा, "यूनैस्को के भावी विन्यास और सामान्य दीर्घावधि कार्यवाइयों पर इसका निःसन्देह निश्चित प्रभाव पड़ेगा।" मिस्टर रेने मह्-महानिदेशक ने कहा कि यह यूनैस्को के विकास में एक महत्वपूर्ण चिह्न है।

१९६५-६६ के लिए स्वीकृत नियमित कार्यक्रम का बजट इस बार ४,८८,५७,००० डालर है। पहले की अवधि की अपेक्षा यह १,००,००,००० डालर अधिक है। इस संख्या के अतिरिक्त सदस्य देशों में कार्यचालन कार्यवाहियों की वित्त व्यवस्था के लिये ५,००,००,००० डालर की राशि विशेष निधि और तकनीकी सहायता से प्राप्त होगी। संयुक्त राष्ट्र की ये संस्थाएँ ऐच्छिक योगदानों द्वारा चलाई जाती हैं। इस दो वर्ष की अवधि में यूनैस्को के कुल आर्थिक संसाधन लगभग १०० मिलियन डालर होंगे।

सामान्य परिचर्चा और उसके निष्कर्ष

अधिवेशन को प्रारम्भ करते हुए पहले सभापति प्रोफेसर पॉलो ई० द० बेरेदो कारनीरो (ब्राजील) ने प्रतिनिधियों को याद दिलाया कि उन्हें दोहरा काम करना है। उन्होंने कहा कि "हमें सबसे पहले तो महानिदेशक कार्यकारी मण्डल और बहुत सी दूसरी विशिष्ट समितियों द्वारा बनाई हुई रिपोर्टों का विश्लेषण करना और उन पर विचार करना है जो १९६२ में महासम्मेलन के बाद अधिवेशन द्वारा स्वीकृत संस्थाओं और सिफारिशों को लागू करने के सम्बन्ध में है। पिछले दो वर्षों में क्या किया जा चुका है इसका पुनरीक्षण करने के बाद हमें अपना ध्यान आगामी दो वर्षों की प्रस्तावित प्रायोजनाओं और कार्य योजनाओं की ओर लगाना होगा।" अपने सम्पूर्ण अधिवेशनों में सम्मेलन ने पिछली कार्यवाहियों के परिणामों का पुनरीक्षण किया और यूनैस्को की सम्भावनाओं पर विचार किया। २२ अक्टूबर से २ नवम्बर तक ९४ वक्ताओं ने सम्मेलन में भाषण दिया जिसमें से ४७ शिक्षा मन्त्री थे। फिर महानिदेशक ने अपने भाषण में इस दीर्घ और विस्तृत परिचर्चा के निष्कर्षों को प्रस्तुत करने का निश्चय किया। १९४६ में अपने प्रारम्भ के बाद ही पहली बार सम्मेलन में यह आवश्यक माना गया कि सामान्य परिचर्चा के निष्कर्षों के सम्बन्ध में एक संस्ताव स्वीकार किया जाए। इस संस्ताव में ये सब बातें थीं। यूनैस्को के बौद्धिक विन्यास और कार्यचालन कार्यवाहियों के निरन्तर समायोजन की आवश्यकता, इसके कार्यक्रम की एकता और कार्यवाइयों की विविधता को बनाए रखना, शिक्षा और विज्ञान को अग्रता, निरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष की स्वीकृति और यूनैस्को के प्रमुख कार्यक्रमों के रूप में वयस्क शिक्षा का आयोजन द्विमुखी और अन्तर्राष्ट्रीय सहायता को सन्तुलित करने की उपयोगिता, कार्यचालन कार्यवाही के लिए बजट सम्बन्धी उपायों और स्थितियों के अध्ययन की आवश्यकता, यूनैस्को के अनिवार्य नैतिक लक्ष्यों का पुनः स्मरण। इस संस्ताव को नीचे दिया जा रहा है।

१९६५ और १९६६ के लिए कार्यक्रम

जब सम्मेलन वर्तमान विश्व में यूनैस्को के कार्यक्रम के योगदान का आकलन करने का प्रयत्न कर रहा था, उस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके दो प्रमुख आयोग १९६५ और १९६६ में यूनैस्को की कार्यवाहियों के सम्बन्ध में महानिदेशक के प्रस्तावों का अध्ययन कर रहे थे। इस सम्बन्ध में यूनैस्को वित्त पत्रिका में पहले कहा जा चुका है। इस कार्यक्रम के प्रति कार्यकारी मण्डल ने मई १९६४ की अपनी बैठक में सहमति प्रकट की थी और सभी प्रतिनिधि मण्डलों ने सर्व-सम्मति से इसकी प्रशंसा की थी।

इसके प्रमुख तत्व क्या हैं ? पहली बात तो यही है कि अब भी शिक्षा के लिए सहायता को अग्रता दी जा रही है क्योंकि शिक्षा आर्थिक और सामाजिक प्रगति के लिए एक मूल तत्व है। इसके लिए नियमित बजट का लगभग एक चौथाई भाग निश्चित कर लिया गया है। शिक्षा आयोजना और निरक्षरता विरोधी विश्व अभियान पर अत्यधिक जोर दिया गया है। सम्मेलन में आठ देशों में प्रयोगात्मक कार्यवाहियों का एक कार्यक्रम चलाने का निश्चय किया गया। सम्मेलन ने ईरान के शहंशाह का एक निमन्त्रण स्वीकार किया जिसमें उन्होंने विश्व स्तर पर साक्षरता लाने के उपाय और तरीकों का पुनरीक्षण करने के लिए सदस्य देशों के शिक्षा मन्त्रियों का एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन तेहरान में बुलाने के लिए कहा।

सम्मेलन ने प्राकृतिक विज्ञानों को शिक्षा के समान ही महत्व देने के महानिदेशक के प्रस्तावों को स्वीकार कर लिया और १९६५ तथा १९६६ की अवधि में उनको पहले के दो वर्षों की अवधि की अपेक्षा ५७ प्रतिशत अधिक बजट देने का निश्चय किया। इस निर्णय के परिणामस्वरूप कार्य की योजना कार्यक्रम आयोग के उप-आयोग के रूप में एक वैज्ञानिक सम्मेलन द्वारा निश्चित की गई। इसके प्रमुख उद्देश्य यह हैं—विकासशील देशों में विज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की स्थापना करना, इन देशों में तकनीकी शोध विस्तारण और इंजीनियरों के प्रशिक्षण को प्रोत्साहन देना, प्रमुख विश्वविद्यालय के समायोजन में इन देशों में वैज्ञानिकों के लिए विन्यास कार्यक्रमों की स्थापना करना, इस वर्ष के प्रारम्भ से अन्तर्राष्ट्रीय जल-वैज्ञानिक दशक का प्रारम्भ, सागर मापन विज्ञान, भू-विज्ञान, भूकम्प विज्ञान और जीवन विज्ञानों के क्षेत्रों में आगे अध्ययन करवाना, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को प्रोत्साहन देना और विश्व भर में वैज्ञानिक अभिलेखन और सूचना के स्तर को बढ़ाना।

साथ ही यूनैस्को अपना ध्यान विकास के सामाजिक और सांस्कृतिक पक्षों पर भी केन्द्रित कर रही है। इन दो विभागों को एक विभाग में मिला देने से मानव के अध्ययन के एक विस्तृत और विचार प्रधान दृष्टिकोण को अपनाने में सुविधा होगी। सामाजिक और मानव विज्ञानों में शोध प्रवृत्तियों का दीर्घावधि सर्वेक्षण करवाया जाना है। समाज विज्ञान तथा तीन प्रमुख समकालीन प्रश्नों का विशेष महत्व रहेगा। जातीय भेदभाव के विरुद्ध आन्दोलन, नव-स्वतन्त्र देशों की आर्थिक और सामाजिक समस्याएँ और निःशस्त्रीकरण के आर्थिक और सामाजिक परिणाम। सांस्कृतिक कार्यवाई विभाग पूर्व पश्चिम प्रमुख प्रायोजना के अन्तिम पक्ष का अवीक्षण करेगा और अफ्रीका के सामान्य इतिहास का निर्माण करेगा। इसके साथ ही साथ आधुनिक कलात्मक सृष्टि और सामाजिक परिवर्तन तथा औद्योगिकी के विकास से इसके सम्बन्ध के अध्ययन की ओर भी ध्यान लगाएगा।

अन्त में जन संचालन और अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय के क्षेत्र में विकासशील देशों में प्रैस, रेडियो, टैलीविजन और फिल्मों के विस्तारण तथा शिक्षा सम्बन्धी प्रायोजनाओं विशेषरूप से वयस्क शिक्षा और साक्षरता आन्दोलन के लिए दृश्य-श्रव्य साधनों के उपयोग पर जोर दिया जाएगा। प्रकाशनों में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहन दिया जाएगा और अतीत की ही भाँति अब भी विदेशों में अध्ययन को प्रोत्साहन दिया जाएगा।

१९६५ और १९६६ के यूनैस्को कार्यक्रम के मुख्य अंश यही हैं। फिर भी जैसा कि महानिदेशक ने कहा था शिक्षा विज्ञान, संस्कृति और जन संचारण अपने में कोई लक्ष्य नहीं हैं वरन् यूनैस्को के सच्चे कार्य आध्यात्मिक प्रयत्न के लिए साधन मात्र हैं। इन्हीं के प्रति यूनैस्को के संस्थापकों का ध्यान सबसे अधिक था। यूनैस्को का प्रयोजन मानवीय अधिकारों के आदर पर आधारित शान्ति है।

सम्मेलन द्वारा सर्व सम्मति से स्वीकृत दो सामान्य संस्तावों की पृष्ठ-भूमि में यही भावना थी। एक संस्ताव औपनिवेशिक देशों और राष्ट्रिकों द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता की प्राप्ति में यूनेस्को के योग को पुष्ट करता है और दूसरा सदस्य देशों से यह माँग करता है कि वे एक दूसरे के साथ शान्तिपूर्वक रहने और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों के आधार पर पारस्परिक आदर और लाभ का ध्यान रखते हुए अनाक्रामक भाव से एक दूसरे की सत्ता, समानता और प्रादेशिक समेकता के प्रति आदर भाव रखते हुए एक दूसरे के आन्तरिक मामलों में दखल न देते हुए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का विस्तार करते हुये और सदस्य देशों के बीच शान्तिपूर्ण उपायों से मतभेदों को दूर करने में और तनावों को कम करने का प्रयत्न करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैज्ञानिक प्रगति और मानवता का भविष्य

ले०—प्रो० नोरेयर एम० सिसाकियां

प्रमुख वैज्ञानिक सचिव, रूसी विज्ञान अकादमी, यूनेस्को महासम्मेलन के अध्यक्ष

सभ्यता के इतिहास में विज्ञान सदा ही प्रगति की शक्ति रहा है। आज नई सामाजिक परिस्थितियों में यह एक निश्चित उपयोगी शक्ति बनता जा रहा है। प्रत्येक मानवीय कार्यवाही विज्ञान और औद्योगिकी की उपलब्धियों के प्रयोग से किसी-न-किसी प्रकार सम्बद्ध है।

मूल और व्यावहारिक विज्ञान

इस सम्बन्ध में दो समस्याओं का विशेष महत्व हो जाता है। एक तो भौतिकी रसायन और जीव-विज्ञान की शाखाओं में मूल शोध और उत्पादन के लिए विज्ञान का उपयोग। जब से गालवानी ने जीवन तत्वों में विद्युत की शोध की थी उसके अनेक दशकों बाद विद्युत प्रकाश की व्यवस्था हो सकी थी। आज कोई भी महत्वपूर्ण शोध होते ही उत्पादन के लिए उसका उपयोग उसके आविष्कारकों की आशाओं से भी बहुत पहले हो जाता है।

हम जानते हैं कि गणित के विकास द्वारा गणितीय तर्क विज्ञान की प्रगति निश्चित हो गई और विद्युत संगणना की उपलब्धियों के साथ उन संगणकों स्वचालित नियन्त्रण यन्त्रों का निर्माण होने लगा जिनका आज विज्ञान और औद्योगिकी में इतना महत्वपूर्ण स्थान है। सैद्धान्तिक और व्यावहारिक भौतिकी की उपलब्धियों के कारण मनुष्य अणु की अणुकेन्द्रीय ऊर्जा का स्वामी बन सका और आज वे ही उपलब्धियाँ मनुष्य को तापन्युक्लीय प्रक्रियाओं पर नियन्त्रण प्राप्त करने में सहायता कर रही हैं जिससे कि वे शान्तिपूर्ण ऊर्जा के सशक्त और व्यावहारिक दृष्टि से अगाध स्रोत बन सकें। सैद्धान्तिक भौतिकी की उपलब्धियों के कारण ही कृत्रिम स्पुतनिक राकेट और अन्तरिक्ष यानों के द्वारा ब्रह्माण्ड की खोज करने का युग आया और इस प्रकार विश्व के प्राकृतिक घटनाओं के अधिक गहरे ज्ञान के लिए एक निश्चित आधार का निर्माण हो सका। जिसके द्वारा सौर मण्डल के ग्रह परस्पर मानो और निकट हो गए। आधुनिक जीव विज्ञान, जीव भौतिकी और सूक्ष्म जीव-विज्ञान का विकास उद्योग की उन शाखाओं के विकास का आधार बना जो जीवाणुरोधी, विटामिन, फर्मेण्ट और मानवीय जीवन के लिए अतिशय महत्वशाली अन्य औषधियों से सम्बन्धित रहा। सैद्धान्तिक शोध का प्रभाव व्यावहारिक वैज्ञानिक उपलब्धि पर पड़ता है और यह सम्भव है कि कभी-कभी तकनीकी प्रगति ज्ञान और उत्पादन की नई शाखाओं की सृष्टि करे।

यद्यपि आर्थिक स्वतन्त्रतापूर्ण राजनीतिक स्वतन्त्रता की उपलब्धि के लिए अनिवार्य है किसी भी देश में प्राकृतिक और व्यावहारिक विज्ञान के विकास के बिना आर्थिक प्रगति की बात सोची भी नहीं जा सकती। प्रकृति की नियमित प्रारूपों की जाँच उन नए कानूनी खोज जिनके द्वारा प्राकृतिक घटनाओं पर मनुष्य का नियन्त्रण बढ़ जाता है जिससे कि वह प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग अधिक संगत रूप से कर सकता है और उनको बढ़ा भी सकता है। ये सभी काम प्राकृतिक विज्ञानों के हैं। प्राकृतिक संसाधनों का ज्ञान अब विकसित होते हुए देशों के लिए विशेष महत्वपूर्ण है क्योंकि वे अपनी कृषि में परिवर्तन करके औद्योगिक होते जा रहे हैं।

रसायन का विकास पूर्णतया अनिवार्य हो गया है। इस विज्ञान के द्वारा लोगों को अधिक और अधिक अच्छे कपड़े मिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते हैं, खाद्य का संरक्षण हो सकता है और खाने के लिए अधिक अच्छा मिल सकता है। हम सब जानते हैं कि हाल के वर्षों में प्राकृतिक संयुगों के विकास की समस्या तथा जीव रसायन संश्लेषण के तन्त्र का अध्ययन और रासायनिक तत्वों द्वारा मिट्टी पर जीव वैज्ञानिक प्रभावों की जाँच के द्वारा किस प्रकार पौधों और पशुओं की बीमारियाँ रोकी जा सकती हैं। वर्तमान समय में कृषि में बिना रासायनिक तत्वों के उपयोग के ऊँचे परिणाम प्राप्त नहीं हो सकते। दूसरी ओर मनुष्यों और जानवरों के स्वास्थ्य के लिए रासायनिक तत्वों को बेसमझे बूझे प्रयोग खतरा ला सकता है। इसी से मृत्तिका जीव विज्ञान, जीव रसायन और कोशिका जीव विज्ञान की समस्याएँ अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं और उनकी जाँच की जानी चाहिए।

सजीव प्रकृति के नियमों के विस्तृत व्यवहारों के सम्बन्ध में नए तकनीकी सिद्धान्त निकाले गए हैं। इस स्तर पर मस्तिष्क के जटिल अन्तर्शाखा अध्ययन का विशेष महत्व हो जाता है।

प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग

विज्ञान और शिक्षा के बीच सम्बन्ध और समकालीन समाज के बीच में बढ़ते हुए सहयोग के कारण स्वाभाविक ही था कि यूनेस्को की कार्यवाहियों में शिक्षा के साथ-साथ विज्ञान को भी अग्रता मिले। यदि शिक्षा के परिणामों का तकनीकी और वैज्ञानिक प्रायोजनाओं में उपयोग नहीं किया जाता और उनसे तकनीकी और वैज्ञानिक समस्याएँ नहीं सुलझ पातीं तो शिक्षा के कारगर होने की बात करना सम्भव न होगा। इसके साथ ही शिक्षा की उपयोगिता वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धि द्वारा ही निश्चित की जाती हैं।

प्राकृतिक विज्ञानों और औद्योगिकी की वर्तमान उपलब्धियों के आधार पर यह खतरा बतलाया जाता रहा है कि पृथ्वी के ऊर्जा स्रोत समाप्त हो जाएँगे और जनसंख्या के बढ़ते जाने के साथ-साथ खाद्य संसाधनों में कमी हो जाएगी, ये दोनों धारणाएँ अब गलत सिद्ध हो चुकी हैं। इस सम्बन्ध में निराशावादिता का आधार नहीं रहा है।

जैसा मैं कह चुका हूँ भौतिकी में की गई कुछ हाल की खोजों से ताप न्यूक्लीय प्रतिक्रियाओं का नियन्त्रण करने का उपाय मिला है। इस समस्या को सुलझाने की सभी समय के लिए समस्त मानवता की विद्युत आवश्यकताएँ पूरी हो जाएँगी विश्व की समूची जनसंख्या के लिए पर्याप्त खाद्य जुटाने के प्रश्न के सम्बन्ध में ये आँकड़े दिये जा सकते हैं। विश्व भर में कृषि योग्य भूमि १४०० मिलियन हेक्टर है और चराई की भूमि २६०० मिलियन हेक्टर है अर्थात् विश्व के समूचे क्षेत्र का केवल ११-१२ प्रतिशत ही इस प्रकार उपयोग में लाया जा सकता है। हम यह अनुमान लगा लेते हैं कि ये आँकड़े बीसवीं शताब्दी के अन्त तक इतने ही रहेंगे। इस समय तक उत्पादन अधिक-से-अधिक हो चुकेगा जैसे कि अब भी विश्व के कई देशों में हो चुका है अर्थात् कृषि भूमि के प्रति हेक्टर में तीन टन और चराई भूमि के प्रति हेक्टर में एक टन। यदि हम कम-से-कम आँकड़ों का आंकलन करें तो बीसवीं शताब्दी के अन्त तक समूचा उत्पादन सात हजार मिलियन टन होगा। संयुक्त राष्ट्र के आँकड़ों के अनुसार शताब्दी के अन्त तक विश्व की जनसंख्या जितनी हो जाएगी उससे दुगुनी जनसंख्या के लिए इतना अनाज पर्याप्त होगा।

इन आकलनों में महासागरों और सागरों में पाये जाने वाले खाद्य संसाधनों को नहीं सम्मिलित किया गया है। इन्हीं में पृथ्वी के और दैनिक पदार्थों का प्रमुख अंश पाया जाता है। महासागरों के जीव वैज्ञानिक और खनिज संसाधनों का एक-सा विकास नहीं किया गया है। यह स्वाभाविक ही है कि विश्व की बढ़ती हुई जनसंख्या उनका उपयोग करना चाहे इसको विज्ञान की द्रुत प्रगति और विभिन्न औद्योगिक विकासों के द्वारा सुविधा मिलती है जिनके कारण सागर और महासागर के संसाधनों को प्राप्त करना सम्भव हो गया है। हाल में बनी हुई फ्रांसीसी फिल्म "सागर तल के भीतर की दुनिया" में सागरों और महासागरों के संसाधनों और जल जीवन के सौंदर्य विशेषताओं और विविधताओं का अच्छा परिचय मिलता है। सागर के जीव वैज्ञानिक संसाधन अधिकतर खाद्य संसाधन हैं। वे प्रोटीन के स्रोत हैं जिनकी खाद्य में कमी रहा करती है और पशु-पक्षियों के लिए मूल्यवान खाद्य सम्भरण हैं। और बहुत-सी औद्योगिक प्रक्रियाओं में एक महत्वपूर्ण तत्व होता है। यदि कम-से-कम आँकड़े माने जाएँ तो निकट भविष्य में सागर से प्राप्त होने वाले खाद्य संसाधन पचास मिलियन टन होंगे। परन्तु यह कोई अन्तिम संख्या नहीं है आगे चलकर यह संख्या प्रतिवर्ष सौ मिलियन टन भी हो सकती है। इस सम्भावना का एक महत्वपूर्ण प्रमाण पेरू के अनुभव में मिलता है जहाँ पिछले दस वर्षों में प्रशान्त महासागर तट के मध्य भाग में पहले की अपेक्षा दो सौ गुना ज्यादा मछलियाँ पकड़ी जाती हैं।

समुद्री जीव-कोशिकों के द्वारा जीव-तत्वों के उत्पादन के नियमों का ज्ञान सागर के जीव वैज्ञानिक संसाधनों का उपयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के लिए और उत्पादनशीलता को बढ़ाने के लिए आवश्यक है। इस ज्ञान के बिना मछली पकड़ने के तरीकों को अधिक अच्छा करना या मछली पकड़ने की नई जगहों का पता लगाना कठिन होगा।

सागर के रासायनिक और खनिज संसाधन अगाध हैं। जितने भी रासायनिक तत्वों का ज्ञान है वे सब सागर जल में या महासागर के तल में पाये जाते हैं। लेकिन अर्थशास्त्र और औद्योगिकी की परम्पराएँ यह हैं कि प्रमुखतः नमक, ब्रोमाइन, मैगनिशियम और कैलशियम भी सागर जल से निकाले जाते हैं। सागर और महासागरों में लोहे और मैंगनीज की २००००० मिलियन टन की राशि पाई जाती है। तेल और गैस के भण्डार सागर तल पर महाद्वीपीय भण्डारों के बराबर तो हैं ही, उनसे अधिक भी हो सकते हैं।

पृथ्वी विज्ञानों में यूनैस्को का कार्य

सागरों और महासागरों के अध्ययन में बहुत-सी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएँ आती हैं। वे सुलझाई जा सकेंगी यदि मछली पकड़ने का उद्योग विकसित हो, मछलियों की उपयोगी जातियाँ पाई जा सकेंगी और यह उद्योग एक ही प्रकार और एक ही क्षेत्र से हटाकर दूसरी ओर भी लगाए जा सके जिससे कि एक ही प्रकार की मछलियाँ समाप्त न हो जाएँ। इन समस्याओं को सुलझाने में यूनैस्को का बड़ा महत्वपूर्ण योग हो सकता है।

दूसरी ओर सागर जल से धातु तत्वों के निकाल देने पर ताजे पानी की आवश्यकता की पूर्ति की बहुत बड़ी सम्भावना हो सकती है। अभी कुछ समय पहले तक भी विश्व के अधिकतर भाग में पानी की कमी नहीं थी। इस समय ताजे पानी की आवश्यकता बढ़ गई है और इतनी बढ़ती जा रही है कि ऐसा लगता है कि जैसे "अकाल-सा" पड़ गया है।

नगरों के लिए जन सेवाओं की आयोजन से व्यक्तिगत रूप से जल का उपयोग बढ़ गया है। कृषि के लिए सिंचाई के कारण अधिक-से-अधिक जल की आवश्यकता है। उद्योग विशेषकर रासायनिक उद्योग के लिए अत्यधिक जल की आवश्यकता है। इसी से जल के गुणात्मक तत्वों की समस्या भी उठ खड़ी हुई है और हमारे समय की सबसे महत्वपूर्ण वैज्ञानिक और तकनीकी समस्याओं में से सागर जल की सफाई की समस्या भी है।

उनको सुलझाने के लिए आणविक ऊर्जा का बहुत अधिक महत्व है। अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और अनेकों देशों में वैज्ञानिकों की शोध द्वारा सागर जल को धातु रहित करना, आणविक ऊर्जा के शान्तिपूर्ण प्रयोग का एक प्रमुख लक्ष्य है। आणविक ऊर्जा को अब मानवता की भौतिक सम्पत्ति और सांस्कृतिक मूल्यों का विनाश करने का उपकरण नहीं रहना है। इसके स्थान पर इसको मरुस्थलों को उद्यानों में परिवर्तित करना है और ताजे पानी की मनुष्य की आवश्यकता को पूरा करना है।

लेकिन सागर जल को धातु रहित करने की समस्या अब भी पूरी तरह सुलझ नहीं सकी है। इसलिए वर्तमान ताजे जल के संग्रह और संगत उपयोग का अत्यधिक महत्व है। इस समस्या के सफल समाधान का एक उदाहरण अस्वान उच्च बांध का निर्माण है जिसमें जल के कृषि सम्बन्धी और औद्योगिक उपयोग तथा सस्ती जल ऊर्जा की सम्भावना है।

जल का प्रश्न केवल इसी कारण अधिक जटिल नहीं हो गया है कि पहले की अपेक्षा अधिक परिणाम में जल की आवश्यकता हो गई है। परन्तु इसलिए भी कि मनुष्य को दूषित जल का उपयोग करना पड़ रहा है। ऐसे जल के कारण विशेष प्रकार की वनस्पति और पशु नष्ट हो जाते हैं। उनकी जनन प्रक्रिया को क्षति पहुँचती है, उनकी उत्पादनशीलता कम हो जाती है और उनकी सन्तति उतनी अच्छी नहीं रहती। अणु-केन्द्रित शस्त्रों के परीक्षण के कारण बहुत से रेडियो सक्रिय तत्व जल भण्डारों में गिर जाते हैं। विश्व के लोगों को सभी प्रकार के आणविक तत्वों का परीक्षण पूरी तरह रोक देना चाहिए। एक स्वच्छ वायु मण्डल, जल मण्डल और जीव मण्डल के लिए संघर्ष अत्यधिक महत्व का संघर्ष है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार प्रतिवर्ष जल से फैलने वाली बीमारियों जैसे टाइफाइड, पेचिश और हैजे से पाँच सौ मिलियन लोग पीड़ित होते हैं और पांच मिलियन बच्चे मरते हैं। इस सम्बन्ध में इस वर्ष विश्व स्वास्थ्य परिषद् के अधिवेशन में यह निश्चय किया गया कि पीने वाले पानी को स्वच्छ रखने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम बनाकर तैयारी करनी होगी। परन्तु इन छूत की बीमारियों को दूर करना केवल जल को दूषित होने से बचाकर ही नहीं किया जा सकता। इसके लिए उन जीव रासायनिक और शरीर वैज्ञानिक प्रक्रियाओं को अच्छी तरह समझना होगा जो कोशिका और पूरे शरीर में चलती रहती है। इस सम्बन्ध में संयुक्त राष्ट्र सरणी के विभिन्न संगठनों और अन्तर्राष्ट्रीय गैर सरकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगठनों के बीच कार्रवाइयों का समायोजन अत्यधिक महत्व का है।

भू-विज्ञानों का क्षेत्र एक ऐसा विशाल और द्रुत गति से विकसित होने वाला क्षेत्र है जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय समायोजन की विशेष आवश्यकता है। दूसरी शताब्दी के मध्य में जब भू-भौतिक विशेषज्ञों को यह विश्वास हो गया है कि पृथ्वी की भू पृष्ठ के विकास के सम्बन्ध में नियमों को किसी सीमित क्षेत्र में प्रेक्षणों के द्वारा समझा नहीं जा सकेगा। इसके लिए तो विश्व भर में सन्तुलित और एक से प्रेक्षण करने होंगे। प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक प्रक्रिया का अध्ययन और सभी उपलब्ध उपायों तथा तकनीकी साधनों के उपयोग से भू-पृष्ठ पर घटित होने वाली प्रक्रियाओं के स्वरूप को समझा जा सकता है। यह बड़े महत्व की बात है कि मनुष्य इन प्रक्रियाओं पर अधिकार प्राप्त करे और उनको अपनी इच्छा के अधीन कर ले। क्योंकि इन प्रक्रियाओं से इतनी ऊर्जा प्राप्त हो सकती है जितनी अब तक कभी कृत्रिम रूप से उत्पन्न नहीं की जा सकी। अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सहयोग कार्यक्रम, अन्तर्राष्ट्रीय भू-भौतिक वर्ष के बीच प्रारम्भ किया गया और नई अन्तर्राष्ट्रीय प्रायोजनाओं के द्वारा आगे बढ़ाया गया। इसका उद्देश्य यह होना चाहिए कि न केवल विभिन्न देशों में शोध करवाए, वरन् इस शोध के परिणामों का इस प्रकार उपयोग भी करवाए कि मानव अस्तित्व की परिस्थितियों में सुधार हो सके।

यह कोई संयोग की बात नहीं है कि यूनेस्को को इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया है। भू-भौतिक भू-विज्ञानों में ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रायोजनाओं के लिए जैसे भू-पृष्ठ का अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय सागर मापन शोध अन्तर्राष्ट्रीय सूर्य वर्ष और हिमशैलों, भू-कम्पों, और ज्वालामुखियों के अध्ययन के कार्यक्रम के लिए यूनेस्को की सहायता न केवल सम्पूर्ण विश्व की जानकारी प्राप्त करने के लिए आवश्यक वैज्ञानिक प्रेक्षण करेगी वरन् विकासशील देशों में ऐसे प्रेक्षणों का आयोजन भी करेगी। उपयुक्त प्रयोगशालाओं, प्रेक्षण गृहों और व्यवस्थाओं के निर्माण से इन देशों में विज्ञान की सामान्य प्रगति और नये प्राकृतिक संसाधनों की शोध हो सकेगी। प्रकृति के सक्रिय उपयोग के लिए आधार भूमि मिलेगी जो केवल विश्वव्यापी स्तर पर ही उपयोगी हो सकती है।

अपने भूकम्प वैज्ञानिक कार्यक्रम के लिए यूनेस्को की कार्यवाई विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यद्यपि पिछली मिशनों को भूकम्प विज्ञान की स्थिति और कई देशों में भूकम्प वैज्ञानिक संरचना का समुचित चित्र प्राप्त करने में सफलता हुई है और यद्यपि बहुत खतरे के प्रदेशों में अत्यधिक आवश्यक कार्य किए जा चुके हैं फिर भी जब सम्पूर्ण आयोजित कार्यक्रम होना होगा तो और उपयोगी परिणाम होंगे। खतरे के प्रदेशों का नक्शे में निर्देश और आयोजना तथा निर्माण में विशेष उपायों की स्वीकृति जीवन की क्षति को बचायेगी और बहुत अधिक धन भी नष्ट न होगा। इस क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय समायोजन के सफल परिणामों पर इन्हीं सब बातों के कारण विश्वास होता है।

शिक्षा के आर्थिक और समाजिक प्रभाव

एक लोकप्रिय कहावत है कि निरक्षर व्यक्ति को पहाड़ की चोटी पर खड़े होकर भी कुछ दिखाई नहीं देता। इससे शिक्षा के महत्व का सबसे अधिक अन्दाजा लगता है। शिक्षा का सामाजिक और आर्थिक महत्व बहुत अधिक है, विशेषकर आज जब कि मनुष्य की मानसिक और शारीरिक शक्तियों का समुचित विकास होना चाहिए जिससे कि समाज के सभी पक्षों की आवश्यकताएँ पूरी हो सकी प्रगति के लिए अनिवार्य है। जब शिक्षा के क्षेत्र की समस्याओं के सम्बन्ध में उनकी आर्थिक पक्षों की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। इसका उदाहरण सोवियत अकादेमी के सदस्य एस० जी० स्ट्रमलिन की एक कृति है जिन्होंने शिक्षा के विकास के आर्थिक निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न किया था और यह निष्कर्ष निकाला था कि जिन व्यक्ति को प्रारम्भिक शिक्षा मिल चुकी है उसके कार्य का मूल्य एक निरक्षर व्यक्ति के कार्य की अपेक्षा ४३ प्रतिशत अधिक है। यदि माध्यमिक शिक्षा मिल चुकी है तो १०८ प्रतिशत अधिक है और उच्चतर शिक्षा मिल चुकी है तो ३०० प्रतिशत अधिक है। इन संख्याओं को आकलन का आधार बनाकर हम देख सकते हैं कि शिक्षा पर खर्च किया गया धन कुछ ही वर्षों में अधिक से अधिक लाभ देता है।

यदि शिक्षा को अधिक कुशल होना है तो उसको आयोजित होना पड़ेगा। शिक्षा आयोजना में सामाजिक, आर्थिक, जनांकित भौगोलिक, संगठन सम्बन्धी और दूसरे तथ्यों का ध्यान रखना होगा और इन सभी तथ्यों को राष्ट्रीय आर्थिक विकास की सर्वोपरि आयोजना से भी निकट रूप से सम्बन्धित होना पड़ेगा।

इस प्रश्न के सामाजिक और आर्थिक पक्षों पर जोर देना होगा। औद्योगिक सम्बन्धों में परिवर्तनों के परिणाम स्वरूप कार्य के रूप में भी परिवर्तन हो रहा है और यांत्रिकता की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकता और उत्पादन के स्वचालन के कारण भी। आज उद्योग के लिए उच्च प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है और तकनीकी शिक्षा को इस आवश्यकता की पूर्ति करनी होगी।

रूस और कुछ दूसरे देशों के निरक्षरता के द्रुत उन्मूलन और शिक्षा की विकास ने प्राप्त अनुभव से यह तथ्य प्राप्त हुआ है कि लेखन और गणित विद्यार्थी को अपनी ही मातृभाषा में सिखाया जाना चाहिए। इसी से नये विकासशील देशों के लिए प्रत्येक भाषा की लिपि का निर्माण करना और प्रारम्भिक स्कूलों के विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाना बड़े महत्व की बात है। कार्यक्रमबद्ध शिक्षण से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान और तकनीकी साधनों का उपयोग केवल वयस्क साक्षरता आन्दोलनों में ही नहीं वरन प्रारम्भिक, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा के आगे विकास में भी उपयोगी हो सकता है।

शिक्षा और वैज्ञानिक तकनीकी विकास तब तक सुलझाई नहीं जा सकती जब तक प्रत्येक देश में वैज्ञानिकों और दूसरे विशेषज्ञों के प्रशिक्षण पर पूरी तरह ध्यान नहीं दिया जाता। प्रत्येक विकासशील देश में अपना राष्ट्रीय वैज्ञानिक केन्द्र होना चाहिए जैसे कि विज्ञान अकादमियों और विज्ञान परिषदों का एक जाल होना चाहिए जिसे कि आर्थिक और सामाजिक विकास के प्रमुख क्षेत्रों को लाभ पहुँच सके। यह यूनैस्को का कर्त्तव्य है कि विकास शील देशों को विज्ञान के विकास के लिए राष्ट्रीय और प्रादेशिक आधार बनाने में कारगर सहायता प्रदान करे।

यूनैस्को का सामाजिक विज्ञान कार्यक्रम अधिकतर चर्चा का विषय रहा है। मेरे मत में सामाजिक विज्ञानों में कार्यवाइयों और शोध कार्य की प्रभावशीलता को बढ़ाने का सबसे अच्छा तरीका यह होगा कि सामान्य और सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण के परिणाम स्वरूप शिक्षा विज्ञान, और संस्कृति के विकास की महान सम्भावनाओं पर जोर दिया जाय। प्रत्येक देश विशेषकर विकासशील देशों के लिए शिक्षा कार्यक्रमों की वित्त व्यवस्था और वैज्ञानिक के प्रशिक्षण के संसाधन प्रस्तुत करने के साथ ही सामान्य और सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण शिक्षा की समस्या को एक सुदृढ़ आधार पर रक्खेगा। निःशस्त्रीकरण की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और तकनीकी परिणामों के अध्ययन और विकासशील देशों में उप-निवेशवाद के प्रभावों को दूर करने के सब तरीके, जातीय पूर्वाग्रह और भेदभाव के संघर्ष को बढ़ाना और एक दूसरे के भिन्न-भिन्न विचारों, उपायों और सिद्धान्तों के ज्ञान का विस्तार ये सब बातें उन समस्याओं को सुलझाना सम्भव बना देंगी जिनको सुलझाने का दायित्व यूनैस्को पर उसके संविधान के द्वारा है।

कलाकृतियाँ तभी मूल्यवान होती हैं जब वे लोगों के लिए आनन्द प्रदान करने वाली होती हैं और उनको अधिक सम्पूर्ण जीवन बिताने में अधिक सहायक होती हैं। तथा विश्व की घटनाओं के महत्व को ठीक-ठीक प्रस्तुत करती हैं। यही कारण है कि अतीत के महान कलाकारों की कृतियाँ अमर हो गईं हैं। उदाहरण के लिए हम मीलों की 'विनस" नामक कृति को ले लें। इसका उद्भव यूनान में हुआ था और निवास पेरिस में रहा। अब तक यह नयी और पुरानी दुनिया के सभी जगह में यात्रा कर चुकी है और विश्व की नागरिक बन चुकी है। इसी तरह आइस्टीन की फिल्म "बैटिल-शीप पॉटेमकिन" बहुत से देशों में कई दशकों से सफलता प्राप्त कर चुकी है। यही बात वेस्ट साइड स्टोरी नामक फिल्म के लिए भी सिद्ध होगी।

प्रत्येक राष्ट्र के अपने प्रिय लेखक, कलाकार और संगीतकार हुआ करते हैं। वे साहित्यकार और कलाकार जो किसी भी देश के आदर और स्नेह को जीत पाते हैं समस्त मानवता के दाय बन जाते हैं। यह तथ्य इस बात से भी सत्य सिद्ध होता है कि माइकल एंजिलो और शेक्सपियर, रेम्ब्रांट और बीठोनवे के मैक्सिनमोर्की रोदें और मार्कटवेन विश्व के सभी राष्ट्रों को आनन्द देते हैं। और अभी तक तो हमने अफ्रीका और लैटिन प्राप्त ही नहीं किया है।

यदि यूनैस्को अपने सब साधनों का इसलिए प्रयोग करे कि मानवता के सांस्कृतिक मूल्य मानववादी सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने के लिए हैं और शान्ति, मित्रता और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की संकल्पनाओं को शीघ्र बढ़ाने और विस्तृत करने के लिए हैं तो वह अपना काम अच्छे ढग से करेगी।

समस्त विश्व का भविष्य और मानवता की सामाजिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति हमारी नयी पीढ़ी की शिक्षा पर निर्भर है। यदि विश्व में कहीं भी जातीय पूर्वाग्रह और बदले की भावना से घिरे हुए युद्ध की मनोवृत्ति विजय प्राप्त करेगी तो शान्ति भयंकर खतरे में रहेगी। नयी पीढ़ी की शिक्षा राष्ट्रों के बीच पारस्परिक सद्भावना, शान्ति और मित्रता की भावना के साथ होनी चाहिए और उसमें राष्ट्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिन्नता और राजनैतिक तथा धार्मिक विश्वासों का कोई भी विचार नहीं किया जाना चाहिए। यही यूनैस्को और हम सबका कर्त्तव्य है।

शान्तिपूर्ण सहयोग और सह-अस्तित्व की नीति

जिस दुनिया में हम रहते हैं इसका यथार्थवादी आंकलन यह दिखलाता है कि उसमें आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक विरोध है फिर भी समस्याओं को सुलझाने के लिए शक्ति के प्रयोग को स्थानीय रूप में नहीं रखा जा सकता। क्योंकि कहीं भी उनका प्रयोग हो सम्पूर्ण मानवता के लिए भयंकर परिणाम होंगे। इसी से समस्याओं को सुलझाने में शक्ति के प्रयोग को छोड़ देने और आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक समायोजन और शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति को स्वीकार करना यही वह सही रास्ता है जो राष्ट्रों को अपनाना है।

सभी देशों के लोगों को आणविक शस्त्रों के सभी प्रकार के परीक्षणों को पूरी तरह रोक देने के लिए सभी संभव प्रयत्न करने चाहिएँ और सामान्य और सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण कर देना चाहिए और समस्त मानवता के प्रगति के नाम पर विभिन्न सामाजिक पद्धतियों का अवलम्बन करने वाले देशों के बीच भी आर्थिक, सांस्कृतिक, और वैज्ञानिक समायोजन को सुदृढ़ बनाना चाहिए।

सामाजिक और औद्योगिक प्रगति के विश्व में समय के लिए खाद्य और ऊर्जा की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए छूत की बीमारियों को पूर्णतया दूर करने के लिए और कैंसर तथा हृदय सम्बन्धी रोगों को जीत लेने के लिए, दीर्घ जीवन की प्राप्ति, शिक्षा विज्ञान और संस्कृति की उन्नति ये सब कुछ अब सपना नहीं रहा है वरन बहुत निकट भविष्य में ही निश्चित रूप से उपलब्ध हो जाएगा।

स्वरूपतः जीवन अन्तर्विरोधपूर्ण है परन्तु आशावादी है। यह एक अबाध और महान सृजनात्मक प्रक्रिया का परिणाम है। हमें निरन्तर इस प्रक्रिया का विस्तार करने और मानवता में मानवतावादी सिद्धान्तों को स्थिर करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। और इस मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को निश्चय-पूर्वक दूर कर देना चाहिए।

अब तक सदा यही माना जाता रहा है कि एक विशेष प्रकार का जीव समय के बीतने के साथ पुराना पड़ता जाता है। यही प्राकृतिक नियम है। परन्तु मनुष्य विज्ञान और मानवता-वाद का सहारा लेकर इस स्वाभाविक घटना पर विजय प्राप्त करेगा।

यूनैस्को वर्षों के साथ पुरानी नहीं पड़ती क्योंकि नये-नये सदस्य देश उसमें सम्मिलित होते जाते हैं। और उसके कार्य का परिणाम उपलब्ध होता है। मैं अपना यह दृढ़ विश्वास प्रकट करना चाहता हूँ कि हमारा यह संगठन हमारे युग के महानतम उद्देश्यों, शान्ति को सुदृढ़ बनाने और शिक्षा विज्ञान तथा संस्कृति के क्षेत्र में सफल समायोजन की उपलब्धि में अधिक से अधिक भाग लेता रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रेरणादायक परिचर्चा से निष्कर्ष

रेने मह्यू

महानिदेशक

जब से मैं यूनैस्को में काम कर रहा हूँ मैंने कभी विषय क्षेत्र, समृद्धि और गुण में ऐसी परिचर्चा नहीं सुनी जैसी इस बार यूनैस्को महासम्मेलन के तेरहवें अधिवेशन में हुई। ८७ राज्यों ने अपने मत प्रकट किए १४ भाषण दिये गये और वक्ताओं में ४७ शिक्षा मन्त्री थे। परिचर्चा अतीत से सम्बन्धित तो थी ही क्योंकि इसमें महानिदेशक की १९६२, १९६३ और १९६४ के पूर्वार्द्ध की रिपोर्टें थीं वरन् निकट भविष्य से भी—अर्थात् १९६५-६६ के कार्यक्रम से भी सम्बन्धित थी। इसके साथ ही मैंने १३C/४ अभिलेख में जिन दूर की सम्भावनाओं का संकेत किया था उनका भी उल्लेख हुआ। प्रतिनिधियों ने कार्यकारी मण्डल की रिपोर्टें और टिप्पणियों पर भी विचार किया।

कार्यकारी मण्डल और मुझे दोनों को ही यह आशा थी कि इस परिचर्चा का प्रारूप पारम्परिक और घिसा-पिटा नहीं रहेगा। हमें यह भी आशा थी कि इसमें अब मात्र विचारों का विनिमय ही न होगा जिससे केवल दृष्टिकोण की समानता या कुछ विशेष प्रवृत्तियाँ प्राप्त हो पाती हैं। इसके स्थान पर इसमें एक ऐसा संस्ताव स्वीकार किया जा सकेगा जिसमें कुछ स्पष्ट और आधारभूत प्रश्नों पर एक नियमित सामान्य नीति स्वीकार की जा सकेगी। और समुचित परिचर्चा के अन्त में महासम्मेलन ने जो संस्ताव स्वीकार किया उसमें १९६५-१९६६ के कार्यक्रम को कार्यान्वित करने और १९६७-१९६८ के लिए बजट और कार्यक्रम तैयार करने के लिए प्रमुख विचार प्रस्तुत किये गये हैं।

बौद्धिक कार्रवाई और कार्यचालन कार्रवाई

मैं यहाँ पर सामान्य नीति की उन कुछ बातों का उल्लेख करूँगा जो इस परिचर्चा से उद्भूत हुई हैं। पहली बात तो यूनैस्को की कार्यचालन कार्रवाइयों के विस्तारण के कारण उनमें हुआ परिवर्त्तन है। मैंने इस बात पर सदस्य देशों का ध्यान आकर्षित किया था। मुझे प्रसन्नता है कि अनेकों प्रतिनिधि मण्डलों ने इस बात की चर्चा की और सभी को इस गहरे परिवर्त्तन का अनुभव हो रहा है। इस परिवर्त्तन के कारण काम बढ़ रहा है और उसमें विस्तार हो रहा है, मेरे मत से कोई कमी नहीं हो रही है। यद्यपि यह सत्य है कि आज यूनैस्को वह नहीं है जो वह कल थी, परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि यूनैस्को कल जो कुछ थी उससे आज उसमें कुछ कमी आई है। इसका मतलब तो यही है कि यह कुछ अतिरिक्त चाहती है और पहले की बातों के साथ इसको भी चाहती है। कार्यचालन कार्रवाई इसके पुराने कामों के साथ जुड़ा हुआ नया काम है। यह समेकन सूक्ष्म और कठिन है पर मैं इसे अनिवार्य मानता हूँ।

यहाँ मैं एक और महत्त्वपूर्ण तथ्य पर जोर देना चाहता हूँ। विकासशील देशों में से कोई भी देश ऐसा नहीं है—और वही वे देश हैं जिनके कारण यूनैस्को में यह परिवर्त्तन हुआ है, जिसने कार्यचालन कार्रवाई के आधार रूप में बौद्धिक कार्रवाई को न लिया हो या जिसने कार्यचालन कार्रवाई के नैतिक पक्ष को न समझा हो।

उदाहरण के लिए ट्रिनिडाड और टोबैगो के प्रतिनिधि ने कहा कि उनका देश यूनैस्को में आर्थिक सहायता के लिये नहीं वरन् इसलिये सम्मिलित हुआ है कि उसका सांस्कृतिक विकास अलग न होकर वरन् विश्व-संधार में हो। इसका अर्थ इसके अतिरिक्त और क्या हो सकता है कि यूनैस्को सहायता का मूल्य ट्रिनिडाड और टोबैगो राज्य के लिये उसकी व्यावहारिकता या प्रत्यक्ष स्वरूप के कारण नहीं वरन् उसकी विश्वव्यापकता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण है। इस देश को सहायता देना मात्र भौतिक सहायता ही नहीं है यूनैस्को इसे विश्व में प्रतिष्ठित कर रही है। और यह केवल एक विश्व संस्था ही कर सकती है।

फिर कांगो गणराज्य के प्रतिनिधि ने क्या कहा ? (हमें उस पृष्ठ भूमि का भी ध्यान रखना होगा जिसमें १९६० से यूनैस्को इस देश को सहायता दे सकी है)। उन्होंने कहा—"यूनैस्को ने अपने आदर्शों के अनुसार हमें एक उपकरण ही नहीं दिया है। हमें अपनी आत्मा और अपने मूल्यों को खोजने के लिए मनोस्थिति भी दी है।" यह इस बात का एक और प्रमाण है कि कार्यचालन और बौद्धिक कार्रवाइयों को परस्पर विरोधी नहीं मानना चाहिये। मैं और भी महत्वपूर्ण भाषाओं का उल्लेख कर सकता हूँ जैसे कि सियरालिग्रोन के शिक्षा मन्त्री के भाषण का जिसमें उन्होंने कहा था कि यूनैस्को की सदस्यता देश को विश्व समेकता की सरणी में प्रतिष्ठित कर देती है और किसी एक राष्ट्र को अकेलापन नहीं लगता। इसी प्रकार इण्डोनेशिया के वैज्ञानिक शोध मन्त्री ने अपने भाषण में कहा कि यूनैस्को आंतरिक विकास का बाह्य आधार प्रस्तुत करती है और मैं इसी को सच्ची स्वतन्त्रता की परिभाषा कहता हूँ। माली के शिक्षा मन्त्री ने अपने भाषण में कहा, "यूनैस्को विकास के लिए जो सहायता देती है, उसकी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि उसका दृष्टिकोण मानवतावादी रहता है। अन्त में मैं नाइजीरिया के शिक्षा मन्त्री मिस्टर न्वाचुकू के भाषण का उल्लेख करना चाहूँगा जिन्होंने कहा था कि विकास के लिए सहायता अन्तर्राष्ट्रीय बौद्धिक सहयोग के मूल में है और विकसित देशों तक ही बौद्धिक सहयोग को सीमित कर देने का अर्थ तो यही है कि उसी प्रकार का बौद्धिक सहयोग अब भी हो जैसा कि अठारहवीं शताब्दी में हुआ करता था। जब तक विकास के लिए सहायता नहीं दी जाती अर्थात् जब तक इस बीसवीं शताब्दी में नए अविकसित देशों को बौद्धिक सहयोग की सरणी में भाग लेने का अवसर नहीं दिया जाता तब तक उस प्रकार का विश्व-व्यापी स्तर का सहयोग नहीं हो सकता जो यूनैस्को का उद्देश्य और प्रयोजन है।

इस बात पर मैं बहुत से और उद्धरण दे सकता था लेकिन अब मैं इस पर कुछ और नहीं कहूँगा। मेरा यह विश्वास है कि कार्य चालन कार्यवाहियों से लाभ उठाने वाले देश उनको भली प्रकार समझते हैं। अब तक जो कुछ होता रहा है, और जो यूनैस्को की स्थापना के कारणों में से है, अर्थात् वह बौद्धिक सहयोग जो कि सभी का आधार है, और वह नैतिक दृष्टिकोण जो अन्तिम लक्ष्य हुआ करता है, उन दोनों में से किसी को भी छोड़ना नहीं है। कार्यचालन कार्यवाही इन दोनों के बीच में पड़ती है और इन दोनों की विश्व-व्यापकता के लिए व्यावहारिक दृष्टि से आवश्यक है।

बजट अतिरिक्त संसाधनों का समेकन और सहायता

सहायता कार्यक्रमों का समायोजन

इस अनिवार्य तथ्य पर जोर देते हुए मैं दो सम्बद्ध प्रश्नों पर अपने विचार प्रकट करना चाहूँगा।

पहला प्रश्न है, बजट अतिरिक्त संसाधनों को यूनैस्को कार्यक्रम में समेकित करना। मुझे यह देखकर बहुत सन्तोष होता रहा है कि अधिकतर प्रतिनिधि मण्डल इस बात से सहमत हैं और वे समझते हैं कि यूनैस्को को सच्चे अर्थों में एकता प्रदान करने के लिए यह समेकन पूर्णतया आवश्यक है। परन्तु जैसे-जैसे बजट अतिरिक्त संसाधनों के बढ़ने के साथ-साथ हमारे कार्य-चालन दायित्व बढ़ते जाते हैं हमें नियमित कार्यक्रम को विस्तृत करना आवश्यक है और इसके परिणामस्वरूप इस कार्यक्रम के लिए बजट में स्थान बनाना होगा। यदि हम समेकन करना चाहते हैं और इस कार्यक्रम को व्यावहारिक रूप से कारगर बनाना चाहते हैं तो इन बातों का ध्यान हमें निश्चित रूप से रखना पड़ेगा। इस समस्या का समाधान सचिवालय के हाथ में नहीं है। यह तो सरकारों को करना है क्योंकि उनको ही अपना योगदान इन दोनों सरणियों में विभाजित करना है। इस सम्बन्ध में मैं जर्मन संघ गणराज्य के प्रतिनिधि मण्डल के अध्यक्ष मिस्टर राल्फ लार्क और आस्ट्रेलिया के प्रतिनिधि मण्डल के अध्यक्ष सर रैनोल्ड वाकर को धन्यवाद देना चाहूँगा जिन्होंने जोर देकर एक सामान्य कार्यक्रम में संसाधनों के समेकन की आवश्यकता और दो स्रोतों से आने वाले योगदानों के बीच सन्तुलन स्थापित करने के दायित्व के सम्बन्ध में जोर देकर कहा क्योंकि संस्थाएँ अपने आप इस सन्तुलन को स्थापित नहीं कर सकतीं।

दूसरे प्रश्न को भी मैं कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं समझता। यह बहुमुखी कार्य-चालन सहायता और द्विमुखी सहायता के सम्बन्ध के बारे में है। मुझे प्रसन्नता है कि बहुत से प्रतिनिधियों ने इस सम्बन्ध में अपना मत प्रकट किया है क्योंकि दो वर्षों में यह कुछ प्रमुख समस्याओं में से होगी जिनको एक और सदस्य देशों को और दूसरी ओर यूनैस्को को सुलझाना होगा। कार्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चालन कार्यवाहियों का दायित्व लेकर यूनैस्को निश्चय ही द्विमुखी कार्यों से होड़ ले रही है। जब तक या केवल अन्तर्राष्ट्रीय बौद्धिक सहयोग के दायित्वों का ही ध्यान रखती थी यूनैस्को सदस्य देशों की व्यावहारिक कार्यवाहियों में किसी प्रकार भी सम्बद्ध नहीं थी। परन्तु जब से इसने कार्य चालन का रूप ले लिया है, इसकी कार्यवाहियाँ दूसरे द्विमुखी सहायता-कार्यक्रमों के समान हो गई हैं। यदि सावधानी न बरती जाए तो कार्य में एक ऐसी निकटता प्रतिद्वन्द्विता बन जा सकती है।

यही कारण है कि मुझे इस बात से अत्यधिक प्रसन्नता है कि अनेकों प्रतिनिधि मण्डलों ने द्विमुखी और बहुमुखी कार्यक्रमों के समायोजन के पक्ष में ये मत प्रकट किया है। इन प्रतिनिधि मण्डलों में फ्रांस और संयुक्त राज्य भी थे जो सब से अधिक द्विमुखी सहायता कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। मैं इसको अत्यधिक आवश्यक मानता हूँ। मेरा विश्वास है कि आगामी वर्षों में इस सन्तुलन की उपलब्धि के लिए दोनों पक्षों से प्रयत्न करना होगा। केवल इसीलिए नहीं कि इस प्रकार धन और जन का खर्च बचता है, क्योंकि अधिकतर धन और विशेषज्ञ तथा उपस्कर एक ही स्रोत से आते हैं और इसके लिए केवल व्यापारिक और प्रशासकीय कारण ही नहीं हैं बल्कि मेरा विश्वास है कि राजनीतिक कारणों से भी ऐसा करना चाहिए। वास्तव में यह सोचना अभी सम्भव है कि कोई संगठन अपने सदस्य देशों से प्रतिद्वन्द्विता करेगा। मैं तो सब लोगों को विश्वास दिलाता हूँ कि जहाँ तक मुझसे हो सकेगा, मैं इस वांछनीय सन्तुलन को लाने के लिए अधिक से अधिक सुविधाएँ दूँगा।

यह किस प्रकार किया जा सकता है? मैं समझता हूँ कि बहुत सी स्थितियों को सुलझाने के लिए अनेकों समाधान हो सकते हैं और इस सम्बन्ध में मैं स्वीडेन के प्रतिनिधि मण्डल के अध्यक्ष मिस्टर लुण्ड को तथा जर्मन संघ गणराज्य के प्रतिनिधि मण्डल के अध्यक्ष मिस्टर लॉ को उनके भाषणों के लिए धन्यवाद देना चाहूँगा। स्वीडेन ने जिस सहायता को कुछ अफ्रीकी देशों के लिए निश्चित किया था, उसको यूनैस्को के माध्यम से उदारता दिखाई जाए। मैं इस बात से बड़ा प्रसन्न हुआ कि स्वीडेन के प्रतिनिधि मण्डल के अध्यक्ष ने जिस प्रकार यह कार्यक्रम चलाया उसके सम्बन्ध में यूनैस्को सचिवालय की जो प्रतिक्रिया रही, उस पर सन्तोष प्रकट किया। यह एक कार्यविधि है जिसे और कार्यक्रमों के लिए भी स्वीकार किया जा सकता है।

जिस सम्बन्ध में मिस्टर लार ने कहा वह एक भिन्न प्रकार का कार्यक्रम है। स्वीडेन की पद्धति के अनुसार वे उस सहायता को यूनैस्को के द्वारा नहीं दे रहे जो द्विमुखी सहायता के रूप में दी जाने वाली थी वरन् वे इस कार्यक्रम को एक महत्तर स्तर पर लागू करने और इसका एक बहुमुखी कार्यक्रम के रूप में विस्तृत करने से सम्बन्धित हैं। अतः एक प्रकार से यह सहायता द्विमुखी ही है, लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय कार्यवाही से सम्बद्ध है और कुछ अर्थों में उससे समेकित भी हैं। मुझे लगता है कि यह एक बड़ी रोचक पद्धति है। हमें इसको चलाकर देखना चाहिए और यदि यह सफल हो तो दूसरे देशों में भी ऐसा ही करना चाहिए। मैं समझता हूँ कि अनेकों विकसित देशों के, जो दोनों प्रकार की समस्याएँ प्राप्त करते हैं, उनके लिए इससे अधिक सन्तोषजनक और कोई बात नहीं हो सकती।

अन्त में मैं माली के शिक्षा मन्त्री के कथन की चर्चा करना चाहूँगा। उन्होंने बहुमुखी सहायता और द्विमुखी सहायता के बीच सहयोग की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा था कि "सहायता के नीति शास्त्र" की परिभाषा प्रस्तुत करनी चाहिए। सहायता केवल व्यावहारिक स्तर पर नहीं होनी चाहिए, उसका वह नैतिक महत्व भी होना चाहिए, जिसके बारे में पहले ही कह चुका हूँ।

यूनैस्को से सम्बन्धित सामान्य और मूलभूत प्रश्नों के सम्बन्ध में मैं यही बातें कहना चाहता था।

सचिवालय का मूल्य और अग्रताओं की समस्या

अब मैं जिन प्रश्नों पर विचार करना चाहूँगा वे कार्यक्रम और अग्रताओं से सम्बन्धित हैं। जहाँ तक संकेन्द्रण का प्रश्न है, सम्मेलन के पहले के अधिवेशनों में इस पर बहुत अधिक विचार हो चुका है। मुझे इस बात के सम्बन्ध में बड़ी प्रसन्नता रही है कि मैंने इस सम्बन्ध में जो बातें कही थीं उनको व्यवहार रूप में परिणत कर सका हूँ। कार्यक्रम के संकेन्द्रण के सम्बन्ध में जिन दो सिद्धान्तों की चर्चा हमने की थी वे अब सभी के सामने स्पष्ट हो गए हैं। गुण की दृष्टि से चुनना और संघनन के लिए समूह बनाना।

अग्रता का प्रश्न संकेन्द्रण से सम्बन्धित है, प्रतिनिधि मण्डल इस सम्बन्ध में भी एकमत रहे हैं। उन्होंने शिक्षा और प्राकृतिक विज्ञानों को अग्रता देने की आवश्यकता स्वीकार कर ली है। सब ने यह मान लिया है कि यह अग्रता का मामला तात्कालिकता की दृष्टि से होता है, महत्व की दृष्टि से नहीं। फिर भी बहुत से वक्ताओं ने कुछ दूसरे खण्डों में स्थिरीकरण हो जाने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षोभ प्रकट किया है। विशेष रूप से सामाजिक विज्ञान, मानव विज्ञानों, और सांस्कृतिक कार्यवाहियों के क्षेत्र में। परन्तु इस बात को स्पष्टत: समझ लेना चाहिए कि अग्रता का अर्थ है विकल्प। और जब हम शिक्षा और प्राकृतिक विज्ञानों में अग्रता को स्वीकार करते हैं तो कुछ दूसरे क्षेत्रों में स्थिरीकरण को भी स्वीकार करना होगा।

और इस प्रकार इस समय हमें यह समझ लेना है कि जैसा सर रोनैल्ड वाकर ने कहा था "यूनैस्को ने १९६० में शिक्षा के पक्ष में जो फैसला किया था और जो उसने अब प्राकृतिक विज्ञानों के सम्बन्ध में किया है उसका मतलब है, एक ऐसे कार्यक्रम का प्रारम्भ जो बहुत वर्षों तक चलता रहेगा। इस प्रकार के चुनावों से यह पता चलता है कि बहुत समय तक संतुलन की यह कमी बनी रहेगी। यद्यपि संतुलन के लिए बार-बार कुछ उपाय किए जा सकते हैं फिर भी वे बहुत तक नहीं किए जा सकते।

सामान्य नीति के इन प्रश्नों को उठाने के बाद में अब कार्यक्रम की विषय वस्तु पर अधिक बात नहीं करूँगा। वरन् अब मैं इसकी कार्य परिस्थिति के तत्व अर्थात् सचिवालय के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहूँगा।

सबसे पहले तो यह कि सचिवालय की निष्ठा भाव से काम करने के लिए जो अनेकानेक प्रशंसाएँ हुई हैं, मुझे उस पर बहुत संतोष और गर्व है। सभी मानवीय वस्तुओं की भाँति सचिवालय में भी अपनी दुर्बलताएँ हैं। लेकिन यह मेरा भी विश्वास है कि इसकी निष्ठा और वफादारी पर कोई सन्देह नहीं किया जा सकता और वही सबसे अनिवार्य वस्तु है। इटली के शिक्षामन्त्री ने ठीक कहा था कि यूनैस्को की तरह के एक अन्तर्राष्ट्रीय सचिवालय के अस्तित्व और कार्य-चालन का अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में स्वत: ही एक योगदान है। यह एक उपकरण-मात्र नहीं है। इस उपकरण के निर्माण का अत्यधिक आन्तरिक महत्व भी है और वर्तमान विश्व में जिसमें राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का प्रश्न बराबर सामने आ जाता है, यह एक बहुत अच्छी और सर्वाधिक महत्व की बात है कि अन्तर्राष्ट्रीय सचिवालय अपनी कृतियों और अपने रोज-रोज के काम में अन्तर्राष्ट्रीय भावना को बनाए रखते हैं।

एक दूसरी भी बात है, जिस पर मैं चुप नहीं रहना चाहता विशेषज्ञों के सम्बन्ध में मित्रतापूर्ण परन्तु कुछ हद तक सही आलोचना बारबार की जाती रही है। इसका मेरे ऊपर और भी गहरा प्रभाव पड़ा है क्योंकि इस प्रकार की अधिकतर आलोचना उन देशों से सुनने में मिलती है जो इन विशेषज्ञों को काम करते हुए देखते हैं और जिनकी सहायता करने के लिए ये विशेषज्ञ भेजे गए हैं। सामान्यत: मैं इस बात से सहमत हूँ कि आलोचना का आधार है। हाँ हम सभी में कमियाँ हैं। पहली बात तो यह कि हमें इन विशेषज्ञों को और जल्दी भेजना चाहिए फिर यह कि वे अधिक अच्छे होने चाहिए और तीसरे यह—और यह बात शायद ज्यादा महत्वपूर्ण है—कि उन विशेषज्ञों को अन्तर्राष्ट्रीय कार्य करने के लिए अधिक अच्छा प्रशिक्षण मिला होना चाहिए क्योंकि कुछ दुखद अनुभव और सफलताएँ विशेषज्ञों की अयोग्यता के कारण नहीं वरन् इस कारण हुई हैं कि उन विशेषज्ञों को एक विकासशील देश में अन्तर्राष्ट्रीय सेवा के लिए कोई प्रशिक्षण नहीं मिला था। हमको इन मामलों में पूरा दायित्व नहीं लेना चाहिए। विशेषज्ञ और जिस देश में वह जाता है, उसकी इस सम्बन्ध में दायित्व है। लेकिन फिर भी इसका अधिकतर दायित्व तो हमारे ऊपर ही है। वह हमारा है और मैं उसके स्वीकार करता हूँ। इसके अतिरिक्त मेरा विचार है और अनेकों प्रतिनिधि मण्डलों ने यह कहा है कि मिशनों को अधिक लम्बे समय के लिए भेजा जाना चाहिए। सदस्य देशों के रूष्ट हो जाने का खतरा उठाकर भी हमारे लिए यह अच्छा होगा कि अगर हम छोटी अवधि की कुछ प्रायोजनाओं को मना कर दें क्योंकि थोड़े समय के लिए गए हुए विशेषज्ञ के लिऐ आवश्यक कुशलता प्राप्त करना बहुत कठिन हो जाता है। इसलिए मुझसे यह भी कहा जाता है कि हमें अपनी प्रक्रियाओं को ही नहीं, वरन सहायता की संकल्पना पर ही फिर से विचार करना चाहिए और मैं अपने साथियों के साथ इस प्रश्न पर पुनः विचार करूँगा।

इस तत्व के सम्बन्ध में तीसरी और अन्तिम बात है, सचिवालय की कार्यकारी क्षमता। फिनलैंड और कनाडा के प्रतिनिधियों ने इस पर प्रश्न उठाया है और उन्होंने ठीक ही किया है। हमें निश्चय ही अपने साधनों का ठीक-ठीक ज्ञान सदा होना चाहिए। जहाँ तक मैं समझता हूँ मैंने महासम्मेलन से कुछ भी ऐसा करने को नहीं कहा है जो हमारी शक्ति सीमा के भीतर नहीं है। लेकिन मैं स्पष्टता से कह देना चाहता हूँ कि हमारी कार्य करने की क्षमता पर अधिक से अधिक जोर पड़ चुका हैं और यह एक ऐसा विचार है जिसको भावी प्रस्तावित कार्यक्रम की तैयारी करने के लिए मैं अपने सामने रखूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूनैस्को की संगत प्रगति

इसके बाद मैं बजट और इसकी राशि निश्चित करने पर आता हूँ। जिन कई वक्ताओं ने इस सम्बन्ध में अपने दृष्टिकोण प्रकट किए हैं मैं उनके साथ विश्वास करता हूँ कि कार्यविधियों में सुधार करना चाहिए और कार्यकारी मण्डल तथा महानिदेशक को अगली बजट अवधि में यह काम करना होगा। मेरा विचार हैं कि यह सुधार दो विभिन्न स्तरों पर सम्भव है। विचार विनिमय का पक्ष और विस्तार का पक्ष।

परन्तु एक और भी मौलिक प्रश्न है जिनको इटली और फ्रांस के प्रतिनिधि मण्डलों के अध्यक्षों ने उठाया था। अब जब कार्यक्रम की नीति भली प्रकार निश्चित हो चुकी है और जहाँ तक मुझे लगता है इसे सामान्य स्वीकृति भी प्राप्त हो चुकी है तब यूनैस्को महासम्मेलन कार्यकारी मण्डल और महानिदेशक सबके बीच में यूनैस्को की संगत प्रगति के सम्बन्ध में एक संयुक्त समझौता हो जाना पड़ेगा। इसका राजनीतिक पक्ष भी है। इसलिए मेरा विश्वास है कि इस प्रगति की परिभाषा देना सरकारों का काम है यह केवल उनका कर्त्तव्य ही नहीं है, उनके पास इसके लिए शक्ति और साधन भी हैं। मैं इस बात पर भी विश्वास करता हूँ कि कार्यकारी मण्डल और महानिदेशक उनको इस काम में सहायता दें। अपने लिए मैं इतना ही कहूँगा कि यूनैस्को की सेवा में मेरे जो थोड़े से वर्ष शेष हैं उन पर मैं इसी बात पर सबसे अधिक ध्यान दूंगा।

फ्रांसीसी प्रतिनिधि मण्डल के अध्यक्ष ने यह कहा है कि दीर्घावधि आधार पर यूनैस्को की प्रगति की आयोजना की संभावना पर विचार किया जाए। यह यूनैस्को को एक संधार प्रस्तुत करेगा और गति में स्थिरता तथा सजीवता प्रस्तुत करेगा। परन्तु कैसे इतनी नई संस्था में और इस प्रकार की हलचल से भरी हुई दुनिया में कोई भी व्यक्ति यूनैस्को के कार्यक्षेत्रों में ५ या १० वर्षों के लिए आयोजना कर सकता है। फिर भी जितना कुछ मुझसे हो सके मैं इस सम्बन्ध में करने के लिए तत्पर हूँ।

स्विटजरलैंड के अध्यक्ष ने मुझसे पूछा है कि हम लोग रुक क्यों नहीं जाते। एक समय था जब यूनैस्को अपने कर्त्तव्य का निश्चय करने के लिए प्रयत्नशील थी। और तब यह कहा जाता था कि इसको पाँव रखने के लिए जमीन नहीं मिली है। अब ऐसी स्थिति नहीं है। यूनैस्को से भूलें हो सकती हैं और कुछ बातें रह जा सकती हैं परन्तु अब यह विश्व के और उसके इतिहास का अंश बन चुकी है और वही उसे बना रहना है वही इसका कार्य है और उद्देश्य है। परन्तु वर्तमान समय में विश्व और इतिहास के विस्तारण की प्रक्रिया में है, जिसकी सीमाएँ-उद्देश्यों को तो छोड़ ही दें—कभी-कभी समझ में नहीं आती। इस प्रकार की गतिशीलता में फंसी हुई यूनैस्को कैसे रुक सकती है। इसका अर्थ तो यही होगा कि यूनैस्को से कहा जाए कि तुम अपनी जगह ही छोड़ दो। यह तो ऐसा ही है जैसे गुरुत्वाकर्षण की शक्ति से संचालित किसी ग्रह से कहा जाए कि वह स्थिर हो जाए। मेरा विश्वास है कि हमें साँस लेने का अवकाश कभी कभी मिल जा सकता है और वह आवश्यक ही है लेकिन पूरी तरह रुक जाना बिल्कुल असम्भव है और अन्तर्विरोधपूर्ण।

यूनेस्को का नैतिक कार्य

यह अन्तिम बात है और यूनैस्को के अन्तिम प्रयोजन से सम्बन्धित है। उस नैतिक प्रयोजन से जिसको सभी ने यूनैस्को के अस्तित्व का कारण माना है।

हम पहले तो यह देखें कि यूनैस्को का नैतिक कार्य क्या नहीं है। यूनैस्को अकेली हमारे समय की हर नैतिक समस्या का उत्तर नहीं दे सकती। नैतिक प्रश्नों पर विचार करते समय यूनैस्को विभिन्न धर्मों के समान विचार नहीं कर सकती लेकिन फिर भी मेरा मत यह नहीं हैं कि यूनैस्को कुछ भी आध्यात्मिक नहीं दे सकती।

दूसरे कुछ प्रतिनिधि मण्डलों ने जैसे इटली और संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रतिनिधि मण्डलों ने यह तर्क प्रस्तुत किया है कि यूनैस्को के पास कोई निश्चित कथन नहीं होना चाहिये। उसको कोई सिद्धान्त प्रस्तुत नहीं करना है और उसको कभी भी सिद्धान्त को किसी के ऊपर लादना नहीं है लेकिन जैसा भारत के शिक्षा मन्त्री मिस्टर छागला ने कहा था यूनैस्को के पास एक विश्वास है एक निष्ठा है और वह निष्ठा है मानवीय अधिकारों के प्रति और संयुक्त राष्ट्र के घोषणा-पत्र के प्रति।

तीसरे यह कहा गया है कि यूनैस्को को प्रचार नहीं करना चाहिए। उसका नैतिक कार्य यह नहीं है कि यह ऐसे कार्य या शब्द प्रस्तुत करे जो इसकी कार्यवाही से नहीं वरन् सामयिक समस्याओं से सम्बन्धित हों, जैसे विशिष्ट राजनैतिक और भावपरक समस्याएँ और विचार। परन्तु यूनैस्को का एक प्रभाव होना ही चाहिए। उसकी आवाज उठनी चाहिए, वह सुनी जानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए और उसकी प्रतिक्रिया भी होनी चाहिए। मूक यूनैस्को यूनैस्को नहीं है।

अब हम यह कहना चाहेंगे कि यूनैस्को का नैतिक कार्य क्या है अर्थात् महासम्मेलन के विचार विमर्श के बाद मैं उसे क्या समझता हूँ।

पहली बात तो यह है कि यूनैस्को के नैतिक कार्य को इसके कार्यक्रम में घुला-मिला होना चाहिए। कैसे ? मुझे तीन बातें समझ में आती हैं। बौद्धिक सहयोग के सम्बन्ध में जो सभी चीजों का आधार है, यूनैस्को का नैतिक दायित्व है, विश्वव्यापी विचार-विनिमय करवाना। हमें यह देखना होगा कि अन्तर्राष्ट्रीय बौद्धिक सहयोग विशेषज्ञों के विचारों और व्यावसायिक विचारकों के दृष्टिकोणों के सम्मिलित रूप से कुछ अधिक होता है। हमें इसे सभी विचारधाराओं को मानने वाले विचारों का प्रभावपूर्ण आधार बनाना है। फिर इस आदान-प्रदान की विश्व व्यापकता के कारण हम एक तकनीकी कार्य को नैतिक मूल्य प्रदान करेंगे जो इसके बिना उपयोगी तो होता लेकिन न तो उसकी यह प्रतिष्ठा रहती और न यह महत्व ही।

"यूनैस्को को सहायता की नैतिकता" की परिभाषा प्रस्तुत करने वाले विचारों को बढ़ाना है। नैतिकता का अर्थ यह नहीं है कि एक दूसरे प्रकार की कार्रवाई की जाए। इसका मतलब यह है कि जो कुछ भी किया जाए वह एक विशेष विचार से और एक विशेष मनोवृत्ति से जो बौद्धिक सहयोग को नैतिक आयाम प्रदान करता है, वह है उसको बनाने वाली दृष्टिकोणों की विश्व व्यापकता। अतः विकास सहायता का मूल यह है कि उसको जिन सिद्धान्तों पर काम करना है, उनकी स्पष्ट संकल्पना होनी चाहिए।

अब मैं कुछ प्रतिनिधि मण्डलों, विशेष रूप से भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर फिर से आ रहा हूँ। उनका विचार है कि यूनैस्को को केवल अर्थशास्त्र, प्रशासन या शिक्षा के विस्तारण से ही सम्बन्धित नहीं होना चाहिए वरन् इसकी विषय वस्तु पर भी ध्यान देना चाहिए। हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आ जाने पर मानव-विचारों में परिवर्तन पर भी ध्यान देना होगा। जैसा कि मिस्टर कारनीरो ने कहा, यह परिवर्तन या और उसके उपयोगों से अधिक महत्वपूर्ण है। संयुक्त राष्ट्र सरणी के अन्तर्गत जहाँ विकास के लिए विज्ञान के उपयोग से सम्बन्धित दूसरी संस्थाएँ भी हैं, यूनैस्को का काम यह है कि इस प्रकार के परिवर्तनों के समाज वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों और परिस्थितियों पर ध्यान दे। अन्त में संस्कृतियों की पारस्परिक सद्भावना से हम इन समृद्धियों को परस्पर बाँट लेने को प्रोत्साहन देना चाहते हैं।

परन्तु यूनैस्को के नैतिक दायित्व को कार्यक्रम में मिला लेना ही काफी नहीं होगा। हमें कार्यक्रम को वर्तमान समस्याओं पर केन्द्रित करना भी आवश्यक है। यह भी काफी नहीं है कि यह कार्य वर्तमान के सम्बन्ध में ही हो। हमें यह समझ लेना है कि हम क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं। जब तक हम इस प्रकार विचार नहीं करते जो कार्यवाही और उसके कारगर होने की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है यूनैस्को का स्वरूप ही बदल जाएगा। मुझे इसका दृढ़ विश्वास है कि यूनैस्को के लिए जैसा कि उसके संस्थापकों ने सोचा था वैसा ही आध्यात्मिक स्थल बन सकती है और इस चर्चा के बाद मुझे इस विचार से और भी उत्साह मिला है कि यूनैस्को ने अपने पाँव भी जमीन पर रखे हैं क्योंकि यूनैस्को की जमीन अन्तर्राष्ट्रीय बौद्धिक सहयोग है। यूनैस्को को उन सभी शिक्षा विज्ञान और संस्कृति के विशेषज्ञों द्वारा जीवन प्रदान किया जाता है जो किसी-न-किसी प्रकार जो कुछ हम करते हैं उससे सम्बन्धित है। यूनैस्को की दूसरी प्रमुख शक्ति है, विकास के लिए सहायता। लेकिन उसमें हमको व्यावहारिक उपयोगितावाद से ही सन्तुष्ट नहीं हो जाना है। स्विट्जरलैंड के प्रतिनिधि मण्डल के अध्यक्ष ने एक बात कही थी जो मैं भी कहना चाहूँगा। उन्होंने संगति की शक्ति के बारे में कहा था। इस समय जबकि समस्त विश्व विसंगति की शक्तियों के खतरों से प्रतिध्वनित हो रहा है क्यों न हम यूनैस्को को संगति की महान् शक्ति बना दें जो विसंगति की शक्तियों को पूर्णतया निष्फल कर दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरक्षरता का उन्मूलन : एक महान् और तात्कालिक कार्य

"विश्व में इस समय ७ अरब लोगों से भी अधिक लोग निरक्षर हैं और वे किसी भी प्रकार लिखित भाषा से विचारों के विश्व में प्रवेश नहीं पा सकते ! जिन सदस्य देशों ने अपने को विकास-दशक में मानवीय प्रगति के लिए समर्पित किया है उनकी सरकारों और लोगों के लिए यह एक चुनौती है। विकास दशक की सभी उपलब्धियाँ छोटी प्रतीत होंगी, यदि विश्व में करोड़ों लोग प्रकाश के लिए अंधकार में ही टटोलते रहेंगे और उन्हें उसको प्राप्त कर सकने के साधन नहीं दिए जाएँगे। यूनैस्को महासम्मेलन में विश्व के प्रति एक अपील निकाली थी क्योंकि उसने यह निर्णय किया था कि यूनैस्को को निदेशक द्वारा प्रस्तावित प्रयोगात्मक विश्व साक्षरता कार्यक्रम करना चाहिए।

इस निर्णय को मिस्टर रैने महू ने ऐतिहासिक कहा है और अब तक सभी महाद्वीपों में निरक्षरता को दूर करने के सभी निर्णयों में यह सब से महत्वपूर्ण है।

प्रारम्भिक स्थितियाँ

दिसम्बर १९६१ में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने एक संस्ताव स्वीकार किया था जिसमें यूनैस्को से अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तरों पर कारगर तरीके निकालने के लिए इस समस्या का एक सामान्य पुनरीक्षण करने को कहा था। इस अपील के उत्तर में यूनैस्को ने प्रारम्भिक अध्ययन करवाया जिसके नतीजे अक्तूबर १९६३ में महासभा के अठारहवें अधिवेशन के बीच प्रस्तुत किए गए। इस रिपोर्ट का उत्साहपूर्ण स्वागत हुआ। महासभा ने सर्व-सम्मति से एक संस्ताव स्वीकार किया जिसमें यूनैस्को को अपनी कार्यवाहियों के लिए प्रशंसा की गई थी और विश्व साक्षरता आन्दोलन के सिद्धान्त को स्वीकार किया था तथा महासचिव को अन्तर्राष्ट्रीय अधिकरणों के अध्यक्षों विशेषकर यूनैस्को के महानिदेशक के साथ निरक्षरता को दूर करने के सम्बन्ध में राष्ट्रीय प्रयत्नों को सहायता देने के सम्बन्ध में एक रिपोर्ट देने को कहा था।

तब से सदस्य देशों और यूनैस्को सरकार द्वारा प्रारम्भिक कार्रवाई की गई है। इसके बाद महासम्मेलन ने पिछले नवम्बर में ५२ प्रतिनिधि मण्डलों के विचार विनिमय के पश्चात् एक व्यावहारिक और एक कारगर कार्यक्रम स्वीकार किया जो निरक्षरता को दूर करने के आन्दोलन का प्रारम्भ होगा।

यह निश्चित है कि पिछले वर्ष में विश्व साक्षरता कार्यक्रम का विस्तार काफी स्वीकृत हो गया है। इसका बहुत से प्रादेशिक और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों तथा विभिन्न राज्य अध्यक्षों तथा प्रधान मन्त्रियों और दूसरे नेताओं के साथ महानिदेशक की बातचीत से लगता है। इस प्रवृत्ति का इससे अच्छा और कोई उदाहरण नहीं कि ईरान के शहंशाह ने सभी राज्यों के अधिकारियों और यूनैस्को महासम्मेलन से यह प्रस्ताव किया कि अगले सितम्बर में तेहरान में निरक्षरता से संघर्ष करने के अच्छे से अच्छे उपायों का निश्चय करने के लिए शिक्षा मन्त्रियों का एक विश्व सम्मेलन हो।

परन्तु दिसम्बर १९६३ में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने इस सम्बन्ध मे जो एकमत प्रकट हुआ उसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि समस्या सुलझ गई है। इस एकमत में भी बहुत से लोगों के मन में साक्षरता के आर्थिक दाय और इस आन्दोलन के खर्च के सम्बन्ध में सन्देह बने रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ लोग फिर भी यह विश्वास करने में हिचकिचाते थे कि निरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष का प्रारम्भिक महत्व है। इसके उत्तर में महानिदेशक ने यह तर्क दिया कि प्रारम्भिक शिक्षा का अधिकार एक आधारभूत मानव अधिकार है और निरक्षरता के परिणामस्वरूप मानवता की बौद्धिक ऊर्जा का अत्यधिक अपव्यय होता है।

बहुत से विशेषज्ञों ने यह भी विचार प्रकट किया कि यदि जिन देशों में बहुत निरक्षरता है वे साक्षरता आन्दोलन के प्रयत्न करने का निश्चय कर चुके हैं और उनकी अर्थ-व्यवस्था पर इस साक्षरता आन्दोलन का परिणाम लाभकारी होगा। यूनैस्को सचिवालय ने उन समस्याओं का सरकारों के उत्तर के आधार पर और विशेषज्ञों के द्वारा बड़ा गहरा अध्ययन करवाया और तब यह प्रयोगात्मक कार्यक्रम बनाया गया जिसको महासम्मेलन ने स्वीकार किया है।

जिस उत्साह से सम्बद्ध राष्ट्रों ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है, उससे उन लोगों के कार्य करने के निश्चय के सम्बन्ध में या उनकी भावनाओं के सम्बन्ध में कोई सन्देह नहीं रह जाता। इस आन्दोलन के मूल में न तो विशेषज्ञ हैं और न सरकारें। यह जागती हुई जनता है जो न्याय और प्रतिष्ठा तथा कुशलता के नाम पर शिक्षा के अधिकार माँग कर रही है। विकासशील देशों के लिए साक्षरता निःसन्देह ही एक प्रमुख अग्रता है। इसका सब से अच्छा प्रमाण यही है कि उन देशों के राष्ट्रीय बजटों में इसके लिए धन निश्चित किया जाता है और बाहरी सहायता के लिए उनकी प्रार्थना में भी उसका स्थान होता है।

निरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष की आर्थिक उपयुक्तता के सम्बन्ध में काफी प्रगति की जा चुकी है। अब एक बात स्पष्टतया सामने आती है और वह है प्रत्येक देश की आर्थिक और सामाजिक विकास की सामान्य आयोजना में साक्षरता को समेकित करने की आवश्यकता। इसको शिक्षा आयोजना के अंग के रूप में आना चाहिए जो विकास की सामान्य आयोजना के अन्तर्गत होती है। कुछ विशेषज्ञों के अध्ययनों और कुछ सरकारों के अनुभवों से यह प्रकट होता है कि जब साक्षरता विकास आयोजनाओं के संधार में होती है तो आर्थिक दृष्टि से ठीक रहती है। इसी से यूनैस्को इस क्षेत्र में संयुक्त राष्ट्र सरणी के दूसरे संगठनों का सहयोग माँग रही है।

पंचवर्षीय प्रयोगात्मक कार्यक्रम

महानिदेशक ने यह भी कहा था कि विश्व स्तर पर एक ऐसे काम को उठाने के पहले जो पहले कभी नहीं किया गया था यह उचित होगा कि यूनैस्को एक प्रयोगात्मक कार्यक्रम से प्रारम्भ करे। यह भी वांछनीय है कि यूनैस्को को निरक्षरता को दूर करने के तरीकों का अध्ययन करने का समय होना चाहिए क्योंकि यह मानवीय प्रतिष्ठा के लिए ऐसी मूलभूत कार्रवाई है कि इसमें असफल होने का हमें कोई अधिकार नहीं है।

यूनैस्को का यह कार्यक्रम दो प्रकार से चुनाव करेगा। एक तो यह प्रारम्भ में भाग लेने की इच्छा प्रकट करने वाले देशों में से ८ देशों को ही लेगा। दूसरे यह प्रयत्न प्रमुखतः प्रयोगात्मक प्रायोजनाओं के रूप में संकेन्द्रित होंगे। और इन प्रयोगात्मक प्रायोजनाओं को समाज के ऐसे संगठित खण्डों में चलाना होगा जहाँ साक्षरता की इच्छा सब से अधिक है और जहाँ शिक्षा का रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाने और विकास को द्रुत करने के लिए प्रयुक्त करने की सुविधाएँ हैं। इस प्रकार की परिस्थितियाँ व्यापार संघों या सामुदायिक विकास प्रायोजनाओं के अन्तर्गत पाई जा सकती हैं।

यह कार्यक्रम अनिवार्य रूप से वयस्क साक्षरता से सम्बन्धित है लेकिन राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर वयस्क शिक्षा को स्कूली शिक्षा से सम्बन्धित करने की आवश्यकताओं पर भी विचार किया जाएगा। यदि चुने हुए क्षेत्रों में स्कूल सरणियों को विस्तृत किया जाएगा और उनमें सुधार किया जाएगा जिससे कि निरक्षरता का इसके मूल ही नाश हो सके। वयस्क साक्षरता व्यवस्थाओं और शिक्षा संस्थाओं के बीच कार्य सम्बन्धों की स्थापना करने के तरीकों का अध्ययन किया जाएगा और कार्य रूप में परिणत किया जाएगा।

१९६५ का वर्ष आयोजना और तैयारी के लिए होगा। आर्थिक और सामाजिक विकास के साथ साक्षरता को समायोजित करने की आवश्यकता का मतलब यह है कि संयुक्त राष्ट्र और उसके विशिष्ट अधिकरण इस कार्यक्रम को सहायता दें। इस कार्यक्रम को विशेष निधि और तकनीकी सहायता के विस्तारित कार्यक्रम आदि विभिन्न स्रोतों से आर्थिक सहायता प्राप्त होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसीलिए इसकी आयोजनाएँ विभिन्न संस्थाओं द्वारा मिलकर बनाई जाएँगी। बहुत से अन्तर्राष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन भी इस कार्यक्रम को चलाने में सक्रिय रूप से भाग लेने को तैयार हैं और विश्व के सभी देशों में करोड़ों व्यक्तियों का समर्थन इसके लिए मिलेगा।

आशा की जाती है कि १९६६ में इस सहायता से तीन देश लाभ उठा सकेंगे। १९६७ में तीन और देश और १९६८ के लिए दो और देश चुने जाएँगे। आठ देशों में प्रारम्भ की गई प्रायोजनाओं को तीन वर्षों के लिए सहायता मिलेगी। अधिक से अधिक पाँच वर्षों के लिए।

राष्ट्रीय स्तर पर यह कार्य कुछ देशों में शोध की प्रादेशिक सहयोग से भी पूरा किया जाएगा।

कार्यक्रम के प्रमुख लक्ष्यों में साक्षरता के आर्थिक और सामाजिक लाभों का परीक्षण करना और उनको प्रमाणित करना है। इसलिए प्रारम्भ से ही मूल्यांकन के साधन देखे जाने चाहिएं विशेष रूप से मतों, मनोवृत्तियों और व्यवहारों में परिवर्तनों के वस्तुगत विश्लेषण और परिणामों के वैज्ञानिक और परिमाणात्मक स्वरूप भी देखे जाएँगे। तीसरे वर्ष के प्रारम्भ में ही पहले परिणाम प्रकाशित होंगे। धीरे-धीरे इसी से यह प्रयोगात्मक कार्यक्रम विस्तृत होगा और विश्व साक्षरता कार्यक्रम के रूप में परिणत भी होगा।

सम्मेलन ने उस समय एक दोहरा निश्चय किया। जब इसने सचिवालय के प्रस्तावों और इसके कार्यक्रम आयोग के संस्तावों का निर्णय किया। पहले तो इसने पाँच वर्षीय प्रयोगात्मक कार्यक्रम को प्रारम्भ करने के लिए कहा। इसको बजट अतिरिक्त संसाधनों की सहायता से चलाया जाएगा। लेकिन सम्मेलन में प्रतिनिधित्व प्राप्त सभी सदस्य देशों ने राष्ट्रीय स्तर पर आन्दोलन चलाने की शपथ ली। महानिदेशक ने कहा कि जो हम चाहते हैं या जो मैं समझता हूं वह है ५ वर्ष के अन्त में दो महान् धाराओं का मिल जाना। एक ओर इस प्रयोगात्मक कार्यक्रम द्वारा प्रारम्भ की गई प्रयोगात्मक और दूसरी ओर सभी देशों द्वारा किए गए राष्ट्रीय प्रयत्न। मेरा विश्वास है कि अब हम एक ऐसा आन्दोलन प्रारम्भ कर रहे हैं जिसमें पीछे लौटना नहीं होगा और हम एक दिन देखेंगे कि मानवता के द्वारा एक ही पीढ़ी में निरक्षरता की लज्जाजनक स्थिति को पृथ्वी से पूर्णतया हटा देने का एक विशाल समेकित प्रयत्न होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व के युवकों के प्रति

यूनैस्को महानिदेशक रेने मह्यू का एक सन्देश

नव-वर्ष १९६५ के लिए

नव वर्ष प्रारम्भ हो गया है। संयुक्त राष्ट्र की संस्थाओं ने यह निश्चय किया है कि इस वर्ष को अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए अर्पित किया जाए। वे यह अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग शब्दों में ही नहीं मनाना चाहते, वरन् कार्यों में प्रदर्शित करना चाहते हैं। तो विश्व भर में मेरे तरुण मित्रों, मेरे सन्देश का विषय भी यही है और इसके साथ ही मैं अपनी शुभकामनाएँ तुम्हें भेजता हूँ।

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एक आवश्यकता भी है, और आदर्श भी।

यह आधुनिक सभ्यता के लिए एक आवश्यकता है क्योंकि विकास की जो सम्भावनाएँ यह सभ्यता प्रस्तुत करती हैं, उनसे तभी लाभ उठाया जा सकता है, विकास की जो समस्याएँ सामने आती हैं, उनको तभी सुलझाया जा सकता है जब राष्ट्रों की सीमा से अतीत, चाहे वे कितने भी महान् और शक्तिशाली राष्ट्र क्यों न हो, अत्यधिक विस्तृत और जटिल सरणियों में ज्ञान के संचालन, विचारों के प्रस्तुतीकरण, संसाधनों के संयोजन और प्रयत्नों के संगमन का उपाय किया जाएगा।

यह एक आदर्श भी है और इससे मैं यह नहीं समझता कि एक स्वप्न है वरन् एक नैतिक दायित्व है क्योंकि मनुष्य इस बात का अधिक-से-अधिक अनुभव करते जा रहे हैं कि वे नैतिक तथा भौतिक दृष्टि से अन्तर्निर्भर हैं। हममें से प्रत्येक इस बात के प्रति अधिक-से-अधिक सचेत होता जा रहा है कि हम तब तक पूर्णतया प्रसन्न नहीं हो सकते तब तक दूसरे निर्धनता या बन्धन में रहते हैं कि हम तब तक अपने भीतर भी शान्ति नहीं पा सकते जब तक दूसरे एक दूसरे से युद्ध ठान रहे हों। संक्षेप में हम मनुष्य के रूप में अपनी पूरी प्रतिष्ठा तब तक नहीं पा सकते जब तक अन्याय और अभाव दूसरे लोगों को सभी को हमारे समान और हमारे साथ वही प्रतिष्ठा प्राप्त करते नहीं देखते। मैं कहता हूँ कि सभी लोग क्योंकि जब तक हम अपने विचारों या कार्यों में यह स्वीकार करते रहेंगे कि मानवता के परिवार में से कुछ लोग अलग भी किये जा सकते हैं, तब तक हम अपनी निजी मानवता के एक अंश को ही खो देंगे।

इस अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की ऐसी दुहरी उपयुक्तता है इसके लिए यूनैस्को जैसी संस्थाएँ काम करती हैं और मैं आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे आपके तरुण वर्षों के समस्त उत्साह और उदारता के साथ इसके लिए अपने को अर्पित कर देने को कहता हूँ।

क्योंकि यद्यपि अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए ठोस संगठन और तकनीक की आवश्यकता है, यह केवल इन्हीं साधनों से उपलब्ध नहीं किया जा सकता। इसके लिए मस्तिष्क के खुलेपन और हृदय की थोड़ी गरमाई की आवश्यकता है। संक्षेप में सेवा तत्परता की आवश्यकता है। इसका स्वतः ही यह मतलब होता है कि मानवीय भ्रातृत्व के प्रति समर्पण।

इसी महान् उद्देश्य के लिए मैं आप लोगों से अपने को अर्पित करने की मांग करता हूं।

कृपया मुझे गलत न समझें। मैं आपसे यह नहीं कह रहा कि आप अपने परिवार, अपनी जीविका या अपने देश के सदर्भ में जो भी कार्य करने जा रहे हैं, उनको छोड़ दें। मैं यही चाहता हूँ कि जब आप इन कार्यों को करें तो आप यह भी याद रखें कि आप एक वृहत्तर परिवार, एक विशालतर जीवन और एक विशालतर समुदाय के सदस्य भी हैं, जिसका नाम मानवता है। मैं आपसे यह अनुभव करने की इच्छा करता हूँ कि आपके अस्तित्व का अर्थ और मूल्य आपकी अपनी व्यक्तिगत नियति से परे जाकर ही है और आप मानवता के साथ एक महान् साहसिक कार्य में हिस्सा ले रहे हैं। वह साहसिक कार्य जिसके लिये सभी की ओर से समझने और प्रयत्न करने की आवश्यकता होती है। अन्त में मैं आपसे चाहता हूँ कि आप जिस मनुष्य से मिलें, उसे बिना उसकी जाति, देश, भाषा, सामाजिक स्थिति या विश्वासों का ध्यान किये हुए उसको अपने भाई के समान समझिए अर्थात् अपने ही समान आवश्यकताओं और वैसी ही आवश्यकता से युक्त प्रतिष्ठा में अपने समान समझिए।

आप औद्योगिक चमत्कारों के युग में बड़े हो रहे हैं। आपकी पीढ़ी सितारों तक पहुँचेगी। और मैं चाहता हूँ कि सबसे ऊपर आप मानव को अपने भीतर और दूसरों में भी आदर दें, सम्मान दें और उस तक पहुँचे।

मैं कामना करता हूँ कि १९६५ आपको सहयोग, सन्तुलन न्याय और शान्ति के द्वारा इस लक्ष्य की ओर चलने में सहायक हो।

मेरे तरुण मित्रों, मैं तुम्हारे सौभाग्य की कामना करता हूँ। तुम्हारा मन प्रसन्न रहे और नववर्ष तुम्हारे लिए प्रसन्नता-दायक हो।

Published by the Director UNESCO South Asia Science Co-operation Office, N-1, Ring Road, New Delhi and printed by Rakesh Press, Delhi. (Unesco Vritta Patrika, Vol. 11, No. 1, January, 1965.
Reproduction authorised : Credit line should read UNESCO.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

UNESCO

यूनैस्को वृत्तपत्रिका

न-१, रिंग रोड
नई देहली

यह समाचार पत्र संयुक्त राष्ट्रीय शैक्षणिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संस्था के विश्व भर के कार्यों का मासिक प्रतिवेदन है

मासिक बुलेटिन फरवरी, १९६५ अंक ११, संख्या २

080006
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
12-4-65

विषय-सूची

विज्ञान और सामान्य मनुष्य — २
--रिची काल्डर
अफ्रीका का सामान्य इतिहास — ७
जन-संचारण के साधन और राष्ट्रीय विकास — ९
इस शताब्दी के अन्त तक विश्व जनसंख्या में द्विगुण वृद्धि
सन् २००० में विश्व की जनसंख्या — १२
सचिवालय समाचार — १५

शिक्षा

स्कूल भवन निर्माण कार्यक्रम
युवक सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय समिति
विश्व शिक्षा का दृश्य पटल
भारत में यूनैस्को विशेषज्ञ

प्राकृतिक विज्ञान

अन्तर्राष्ट्रीय संगणन केन्द्र
"प्रगति का जाल"
"प्रभाव"

सामाजिक तथा मानव विद्याएँ तथा सांस्कृतिक कार्रवाइयाँ

सामाजिक और मानव विद्याओं में शोध प्रवृत्ति
समाज विज्ञान शब्दावली
विश्व के पुस्तकालयों की संख्या

जन-संचारण

नए शिक्षा तकनीकों के लिए यूनैस्को की प्रयोगात्मक प्रायोजना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान और सामान्य मनुष्य

[रिची काल्डर]

कानून के सम्बन्ध में न जानना क्षम्य नहीं माना जाता, उसी प्रकार बीसवीं शताब्दी में विज्ञान सम्बन्धी अज्ञान क्षम्य नहीं है। क्योंकि जैसे पहली बात के लिए यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक के पास कानून की कोई न कोई उपाधि हो। उसी प्रकार दूसरी के लिए यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक को विज्ञान का ग्रैजुयेट होना चाहिए। सच्चाई तो यह है कि हमारे समय में विज्ञान सामाजिक गतिशीलता का प्रतीक बन गया है। वह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर छाया हुआ है। वह हमारे जीवन और हमारी आजीविका के लिए खतरा भी है और यदि उपयुक्त उपयोग किया जाए तो उससे अधिक सम्पूर्ण और सार्थक अधिक जीवन प्राप्त हो सकता है। परन्तु भाषा और अनुभवों की गहरी खाई वैज्ञानिक को अपनी विशेषता में बृहत्तर समुदाय से अलग करती है और यह अलगाव हमारी सभ्यता और स्वयं विज्ञान के लिए खतरे की बात है।

विज्ञान ने जिसका अस्तित्व ही रहस्य और जादू को हटाने के लिए है, स्वतः अपना रहस्यमय और जादू का संसार बना रखा है। लोगों को स्पष्ट विवेचन न होने के कारण इस सम्बन्ध में अज्ञान है और वे प्रति एक प्रकार का अन्ध विश्वासपूर्ण भय रखते हैं। इसके साथ ही वे विज्ञान से चमत्कारपूर्ण यन्त्रों और औषधियों की अपेक्षा भी करते हैं जिनकी अपेक्षा करने की प्रवृत्ति उनमें विशेष प्रकार के अखबारी लेखों के द्वारा आ गई है। विज्ञान के तरीकों और प्रक्रियाओं के समुचित ज्ञान और वैज्ञानिक ज्ञान के सामाजिक समेकन के अभाव में आविष्कारों की प्रकट विसंगति के कारण विज्ञान के प्रति अविश्वास और अस्वास्थ्यकर सामान्य मनोवृत्ति को प्रोत्साहन मिलता है। लोग सदा ही उस चीज से डरते हैं। जिसको वे नहीं समझते।

विज्ञान प्रयोगात्मक शोध पर जार देता है और इस प्रकार इसने प्राकृतिक दर्शन को छोड़ दिया है। सैद्धान्तिकता से हट जाने के कारण इसमें धीरे-धीरे विद्वत्ता को भी भूल जाने की प्रवृत्ति आने लगी है परन्तु यह विद्वत्ता ही मानव विद्याओं के साथ इसकी सामान्य भूमि है। इसी प्रकार इन मानव-विद्याओं ने भी विज्ञान को छोड़ दिया है। अति विशेषज्ञता की प्रवृत्ति वैज्ञानिकों को यह कहने का बहाना बन जाती है कि हमें दूसरे विषयों के लिए समय नहीं है। उधर मानव-विद्याओं के अध्येताओं को यह कहने का बहाना देती है कि अगर विज्ञान को सीखने में इतना लम्बा और इतना गहरा अध्ययन करना पड़ता है तो हम उसे कैसे समझ सकते हैं।

विज्ञान अधिक से अधिक शाखाओं में बंटता जा रहा है। प्रत्येक शाखा के पास अपने विशिष्ट विषय हैं और इस प्रकार वैज्ञानिक स्वयं ही बंट रहे हैं और उनके लिए एक दूसरे को ही समझना कठिन होता जा रहा है सामान्य जनता को तो समझाने का तो प्रश्न ही बाद में उठता है। हमारे स्कूलों और विश्व-विद्यालयों में विषयों का विभाजन कुछ इस प्रकार है कि विद्यार्थियों का एक वर्ग विज्ञान का बहुत अधिक अध्ययन करता है तो दूसरा वर्ग बहुत ही थोड़ा।

यह मानव-विद्याओं की भी उतनी ही आलोचना है जितनी विज्ञान विभागों की। प्रश्न केवल "दो संस्कृतियों" के समझौते का ही नहीं। प्रश्न यह है कि हम जन-समुदाय को कहां तक उन शक्तियों को समझने का अवसर देते हैं जो उनके अस्तित्व का निर्णय करती है। पियर आगर की कही हुई यह बात कि विश्व में जितने भी वैज्ञानिक हुए है उन का नब्बे प्रतिशत समकालीन वैज्ञानिक का है आज सर्वविदित है। शेष दस प्रतिशत का स्थान अतीत में है। और उस अतीत से जब से विचारशील मनुष्य ने सर्वप्रथम अग्नि पर अधिकार प्राप्त किया था।

परन्तु 'वैज्ञानिक' शब्द अभी थोड़े समय से चला है। अंग्रेजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या किसी अन्य भाषा में भी १८४१ तक यह शब्द नहीं था। उसके पहले प्राकृतिक तत्वों में खोज करने वाले को 'विज्ञान का आदमी" कहा जाता था। १८६५ तक लन्दन के "डेली न्यूज" ने वैज्ञानिक शब्द को "अमरीकी" कहकर उसका विरोध किया था और अन्त समय तक एच० जी० वैल्स यही कहते रहे कि सही शब्द 'विज्ञान का आदमी' ही है।

यह अन्तर महत्वपूर्ण है। विज्ञान का आदमी सभी शाखाओं के लोगों, जैसे पेपील, ईवलिन, विशव वार्ड, विन्थ्रॉप, विलियम पेटी (राजनीतिक "लूनर सोसायटी" अर्थ शास्त्र के प्रवर्त्तक), तथा रोयल सोसायटी के संस्थापक मॉयल और हॉक्स सभी का था।

उस समय तक बर्मिंघम सदस्य का था। वहाँ भाप के इंजन के आविष्कार केम्स वाट, जर्मन बैन्ड मास्टर हर्शल के साथ संगीत हो सकते थे। की चर्चा करते थे। आक्सीजन का पता लगाने वाले जो जेफ प्रीस्टली राजनीति के सम्बन्ध में उसी प्रकार चर्चा करते थे जैसे रसायन के सम्बन्ध में। इरेस्मस डार्विन विकास के सिद्धान्त पर करते थे (जिसकी निश्चित परिभाषा उनके पोते चार्ल्स डार्विन ने प्रस्तुत की थी) और अपने घर लौटते समय राह में कविता भी लिखते थे। जहाँ जोजिया वेजवुड प्रीस्टली से अवसीकरण के तथ्यों को सीखते थे, और बाहर जाकर अपनी बढ़िया सफेद चीनी के वर्तनों के लिए अलौह मिट्टी प्राप्त करते थे।

ऐसे लोग मुक्त मस्तिष्कों से विज्ञान के साथ-साथ सभी बातों पर विचार-विनिमय करते थे। 'विज्ञान का आदमी' किसी भी दूसरे शिक्षित आदमी के अनुसार बातचीत और आदान-प्रदान कर सकता था। भाषा की भी कोई बाधा नहीं थी। कोई भी शिक्षित मनुष्य अपनी बात दूसरे को समझा सकता था क्योंकि जिन वैज्ञानिक शब्दों का वे प्रयोग करते थे बेलैटिन और ग्रीक की धातुओं से बने हुए थे और विवरणात्मक होते थे।

१६वीं शताब्दी के मध्य तक लोग वैज्ञानिक बनने लगे और इसका मतलब यह हुआ कि वे प्राकृतिक दार्शनिक नहीं रह गए। व मानव-विद्याओं के अपने सहकर्मियों से विचार विनिमय भी हन कर सकते थे क्योंकि अपने विशिष्ट प्रयोजनों के लिए। अपने लिए सुविधाजनक एक अलग ही भाषा का निर्माण कर रहे थे।

दो सौ वर्ष पहले १[illegible] में बोहीमिया के महान् शिक्षा-शास्त्री जॉन कमीनियस ने एक ऐसा प्रस्ताव रखा जो विज्ञान को बुद्धि पर आधारित करने का था। शिक्षा-सम्बन्धी उनके विचारों का आदर शिक्षा-शास्त्रियों में आज भी होता है। लेकिन उनकी एक विशेष देन है विज्ञान के सम्बन्ध में भी वह है एक विशेष कालेज (पैंसौफिकन) के निर्माण का विचार।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनके विचार को रस फ्रांन्सिस बेकन के "हाउस आफ सोलोमन" से प्रेरणा मिली थी। परन्तु कामिन्स ने इसको निश्चित रूप में प्रदान किया। उनका विचार यह था कि एक ऐसा कालेज बनाया जाए जिसमें विश्व के बुद्धिमान व्यक्ति परस्पर एक वर्ष के लिए एकत्र हों और प्रकृति सम्बन्धी समस्त ज्ञान को सकलित करें, उसको एक साथ रखें और मनुष्य के लिए उनको स्वीकरणीय बनाएँ।

यह विचार ब्रिटेन में कुछ लोगों को अच्छा लगा और उनको लन्दन में निमन्त्रित किया गया। वहाँ इसको इतनी लोकप्रियता मिली कि चेलसिया में सेंट जेम्स की सेमिनरी को इस कालेज के लिए निश्चित कर दिया गया। इस कालेज की स्थापना के तरीके और साधनों पर जिस पार्लियामेंन्ट में विचार करना था, उसी अधिवेशन के समय गृह-युद्ध प्रारम्भ हो गया। चार्ल्स प्रथम की मृत्यु हो गई, कामीनियस के कालेज की बात आई गई हो गई और जो भवन इस प्रयोजना के लिए निश्चित किया गया था उसको चार्ल्स द्वितीय ने युद्ध के घायलों को रखने का स्थान बना दिया। आज पेंशनयाफ्ता लोगों के लिए राजकीय चेलसिया अस्पताल इसी स्थान पर है जहाँ वह कालेज हो सकता था। परन्तु यह विचार बिलकुल व्यर्थ नहीं गया। इसका प्रभाव बड़े-बड़े लोगों पर पड़ा और उन्होंने लन्दन और आक्सफर्ड में बैठकें कीं और फिर लन्दन की सोसायटी की स्थापना की गई। यही सोसायटी सभी राष्ट्रीय आकदमियों का पूर्णरूप थी।

इस प्रकार बर्मिंघम की लूनर सोसायटी इसी कालेज की उपज थी और आज उच्चतर अध्ययनों का प्रिंसटन संस्थान कामीनियस की इच्छा को ही प्रतिबिंबित करता है। परन्तु केवल संश्लेषण और संकलन के उच्च बौद्धिक स्तर पर ही कामीनियस के विचार की वर्त्तमान अभिव्यक्ति होना पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता राजनीति के बीच विज्ञान के संचरण की है। हमें पहले की जिज्ञास-चेतना और सामान्य अवधारण को फिर से लाने की आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंगलैण्ड में जब रायल सोसायटी अठारहवीं शताब्दी के अन्त तक कुछ अलग होने लगी तो काउण्ट रमफोर्ड ने "रायल इंस्टीट्यूशन" की स्थापना की। वे एक अमरीकी थे जिनको बवहेरिया के राजा ने अपनी सेवा में रखा था और पवित्र रोमन साम्राज्य के मेंक काउण्ट की उपाधि दी थी। वे लन्दन में चन्दे से एक ऐसी संस्था की स्थापना करने के लिए आए थे जो गरीबों को खिलाने, उनको उपयुक्त नौकरी देने, नए आविष्कारों और सुधारों का प्रयोग करके घरेलू आराम और अर्थ-व्यवस्था में सुधार करने की दृष्टि से उपयोग करने से सम्बन्धित था।"

इसी संस्थान में सर हम्फी डेवी और फैरेडे की प्रयोगशाला मिली और १८३१ तक वह बौद्धिक वर्ग का मिलन स्थल बन गया था और सामान्य जनता की वस्तु नहीं रह गया था। अत: विज्ञाए की प्रगति के अंग्रेजी संस्थान' की नींव पड़ी। यह नई संस्था १८२१ में यार्क में स्थापित हुई और इसका एक उद्देश्य यह था कि विज्ञान की प्रगति के रास्ते में जो बाधाएँ आती हैं उनको दूर किया जाए। यह बात स्पष्ट रूप से स्वीकार की गई कि यह बाधा सामान्य जनता का अज्ञान ही है। इसी उद्देश्य से विज्ञान के लोगों को वार्षिक बैठकों के लिए विभिन्न प्रान्तों में बुलाया जाता था जिससे 'चन्द्रमा में स्थित मनुष्य' को 'सामान्य जन' के बीच लाया जा सके।

जब १६वीं शताब्दी के मध्य में विज्ञान अधिक-से-अधिक विशिष्ट बनने लगा तो ब्रिटिश संस्थान ने इस प्रवृत्ति को दूर करने का प्रयत्न किया। १८६० में इसमें भाषण-माला प्रारम्भ की गई, जिसमें टिंडल, टी०एच० हक्सले, लुबक, प्रीस्ट, आयरटन, प्राम्बैन, वॉल और बड़े-बड़े लोग विज्ञान के तथ्यों को गांवों तक पहुँचाने में सहायता देने लगे। निरक्षर व्यक्तियों के बीच समझने की बहुत बड़ी भूख थी। दक्षिण वैल्स में खाने के काम करने वालों ने खदानों से विशेष रेल गाड़ियों में कार्डिफ में सिलवैयस टामसन की विद्युत सम्बन्धी चर्चा में गये और ब्रैडफोर्ड के मिल में काम करने वाले ३५,०० लोगों ने उनको ध्यान पूर्वक सुना।

रेलैकेस्टर, रिचार्डग्रिगोरी और एच० जी० वैल्स ने तीसरी शताब्दी के प्रारम्भ में यह मशाल उठाई। वैल्स प्राणि-विज्ञान में बी० एस० सी० तक ही शिक्षा प्राप्त की थी, परन्तु वे साडि के एक अस्पष्ट से लेख-पत्र को पाकर उससे अणुओं के स्थानान्तरण और उसके द्वारा ऊर्जा की सम्भव निष्कृति के सम्बन्ध में इतना समझ सके कि उन्होंने पहले कृत्रिम रेडियो सक्रियण कहें ठीक-ठीक वर्ष १६३२ के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की।

वैज्ञानिक धीरे-धीरे और अधिक विशेषज्ञता ग्रहण करते जा रहे थे। १६०० में लन्दन की रायल सोसायटी ने राष्ट्रीय अकादमी का रूप छोड़ दिया और ब्रिटिश अकादमी की स्थापना की गई, जिसको दर्शन, मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान, साहित्य आदि की समस्याएँ सुलझाने का काम सौंपा और स्वयं प्रयोगात्मक विज्ञान की सोसायटी बनाई। स्काटलैण्ड के विश्वविद्यालय में केवल प्रोफेसरों की उपाधियों में ही प्राकृतिक दर्शन शब्द रह गया। फिजिक्स शब्द अरस्तु की प्राकृतिक वस्तुओं सम्बन्धी चर्चा में से लिया गया था। अब उसका अर्थ ऊर्जा और संघति के गुणों सम्बन्धी वैज्ञानिक चर्चा तक सीमित रह गया था।

लूनर सोसायटी में मुक्त चर्चाओं के स्थान पर औपचारिक गोष्ठियों और विचार-विनिमयों का प्रचलन हो गया और वे विचार विनिमय अब वैज्ञानिक विषयों तक सीमिति हो गए। अब सभी प्रकार की सभाओं में खण्ड और उपखण्ड होते हैं।

इस कारण यह आश्चर्य की बात नहीं है कि सामान्य व्यक्ति विज्ञान को एक प्रकार का ऐसा यन्त्र मानता है जिसकी कुंजी विज्ञान के ग्रेजुएट के पास ही होती है। मानों इसमें विभिन्न सेफ हैं जिन पर भौतिकी, रसायन, प्राणि विज्ञान, भू-विज्ञान और ज्योतिष के पर्चे चिपके हुए हैं, और इन सब को खोलने के अपने-अपने विशिष्ट तरीके हैं। इन सेफों के अन्दर अनेकों लाकर हैं जिनके नाम न्यूक्लियर भौतिकी, क्रिस्टेलोक्रैफी धन स्थिति औरगैनिक, इनऔरगैनिक, प्राणि भौतिकी, प्राणि रसायन, जनन विज्ञान आदि असंख्यों पर्चे हैं।

यह प्रश्न विचारणीय है कि क्या किसी ने कभी विज्ञान की सब शाखाओं की एक सम्पूर्ण सूची बनाने का प्रयत्न किया है। इससे भी बुरी बात यह है कि सभी शाखाएँ अपनी-अपनी विशिष्ट भाषा का प्रयोग करती हैं। यह बात इतनी बुरी न होती अगर लोग स्वीकार करते कि यह उनकी अपनी सरलता के लिए प्रयुक्त भाषा है किन्तु अधिकतर वैज्ञानिक यह समझते हैं, उनकी कोड भाषा सामान्य भाषा है और यदि सामान्य जन उसे नहीं समझ पाते तो वे मूर्ख हैं। विज्ञान की पूर्व प्रचलित भाषा के शब्दों में प्रयोग के कारण अर्थ परिवर्तन हो गया है।

सभी वैज्ञानिकों के लिए यह एक शिक्षा और अनुशासन की बात होगी अगर वे अपने हाल के किसी लेख को लेकर उसमें से सब पारिभाषिक शब्दावली निकाल डालें और उसके स्थान पर वर्णनात्मक वाक्यांशों का प्रयोग करें। यह केवल जनता के लाभ के लिए नहीं होगा और न मेरे जैसे विज्ञान लेखकों के लाभ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए, परन्तु उनके अपने निजी अवधारणा के लिए भी होगा। यह कहना कठिन है, पर सच है कि जो वैज्ञानिक यह समझ नहीं सकता कि वह क्या कर रहा है वह वास्तव में जानता ही नहीं कि वह क्या कर रहा है। प्रत्येक महान् वैज्ञानिक अपने को समझा सकने में सफल हुआ है। आईस्टीन तक ने प्रयत्न किया था। जो वैज्ञानिक अपने विषय पर उतना विश्वास नहीं रखते वे ही अपने को बचाने के लिए न समझने योग्य बना लेते हैं। इस प्रकार विज्ञान के इस विभाजन का भाषा सबसे बुरा तथ्य है। वास्तव में तो यह कहना भी बहुत गलत नहीं होगा कि भाषा ही इसका कारण है।

प्रोफेसर हाइमन डेवी ने जून १९५५ में 'लिट्रेरी गाइड' में लिखा था कि "विज्ञान और वैज्ञानिक व्याख्या के सम्बन्ध में यह कठिनाई है कि वह विशेषज्ञ के अतिरिक्त और किसी की समझ में नहीं आती। सामाजिक जीवन में परिवर्तन घटित करते समय वैज्ञानिकों ने भाषा को बहुत स्फीत कर दिया है। नारमनों के हमले का अंग्रेजी भाषा पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था यह सभी जानते हैं, लेकिन आधुनिक विज्ञान का प्रभाव हुआ है इसका आकलन ही नहीं किया जा सकता। अगर आप रसायन शास्त्रियों प्राणि वैज्ञानिकों या गणितज्ञों के समूह को परस्पर बात करते सुनें तो आपको यह लगेगा कि अधिकतर अंग्रेज आज अपनी मातृ भाषा से परिचित नहीं रह गये हैं। एक विदेशी बात को अधिक अच्छी तरह समझ सकता है (अगर यह रसायन शास्त्री, प्राणी वैज्ञानिक या गणितज्ञ हैं)।"

गणित के प्रतीकों की भाषा का निरुपण करते हुए प्रोफेसर लेवी पूछते हैं "तुम कहते हो, कि तुम आईस्टीन के आपेक्षिकता के सिद्धान्तों की व्याख्या चाहते हो। किस प्रकार की व्याख्या? एंग्लो सैक्सन युग के शब्दों में जो उस समय की संकल्पनाओं के निकट होगी? या सत्र वहीं शताब्दी की भाषा में जिसमें न्यूटन के समय की संकल्पनाएँ होंगी? १९०० की भाषा में आधुनिक पारिभाषिक शब्दावली में या आधुनिक गणित सम्बन्धि प्रतीकवादी भाषा में। यह सभी व्याख्या के ही प्रयत्न होंगे। लेकिन इन में से किसको सफलता मिल सकेगी।"

अथवा मैं इसमें एक बात और जोड़ना चाहता हूँ कि लन्दन के एक पान गृह की भाषा में जिसमें प्रोफेसर लेवी ने मुझे आईस्टीन का अनुवाद बतलाया था, जिसके कारण उस रात बी० बी० सी० में ब्राडकास्ट की गई मेरी बार्ता लोगों को स्पष्ट प्रतीत हुई थी। मैं यह कहूँगा कि यह वैसा ही था जैसे एक क्री-इंडीयन से अणु ऊर्जा की परिभाषा करवाना, जैसा मैंने किया था। मैंने सरकारी भू-वैज्ञानिकों को कनाडा के उत्तर में कच्चे यूरेनियम को ढूंढने की शिक्षा देते हुए देखा था और मैंने सोचा कि उन क्री-इंडियनों के लिए उस सबका क्या अर्थ हैं। मैंने उन लोगों के प्रमुख से पूछा कि उसकी भाषा में अणु ऊर्जा क्या वस्तु है। उसने उत्तर दिया, "ऐस्कोटिक आचिट काओचिपाइक" इसका अर्थ है 'चट्टान से निकलती हुई बिजली'।

पारिभाषिक शब्दावली का प्रश्न सामान्य जनता के लिए विज्ञान के संचारण की चर्चा में सबसे महत्त्वपूर्ण बात है। कहा जाता है, "कि अन्धे घोड़े के लिए सिर हिलाने और आंख झप-कने में कोई अन्तर नहीं है।" और आजकल वैज्ञानिक सामान्य लोगों से व्यवहार करते समय (वे सामान्य लोग जो विज्ञान के प्रति अन्धे अथवा विज्ञान द्वारा अन्धे बना दिए गए हैं,) बहुत अधिक इशारों, सिर हिलाने और आंख झपकने का प्रयोग करते हैं।

जैसा प्रोफेसर लेवी ने कहा वैज्ञानिकों की अपनी भाषा कुछ भी हो, वे एक दूसरे को समझ सकते हैं। अपने विशेष विषय के सम्बन्ध में उनकी एक सामान्य भूमि होती है। यह मध्य युग के कारीगरों के समान ही है जो उन दिनों योरोप में घूमा करते थे। वे एक दूसरे की भाषा नहीं जानते थे लेकिन उनका काम अपने विशेष कौशल के प्रतीकों और चीन्हों से चला जाता था। उनकी कारीगरी 'रहस्य मया' हुआ करती थी और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तथा गुरु से शिष्य तक वह कारीगरी गोपीनयता के वातावरण में मशीनी उपचारों के द्वारा सिखाये जाते थे।

कभी कभी तो ऐसा लगता है जैसे वैज्ञानिको की विशिष्ट आधुनिक सभाएँ उसी प्रकार बनाई गई है जैसे एक बार लड़ाई में कूट शब्द बनाए थे जो व्याख्या प्रस्तुत करने के लिए नहीं धोखा देने के लिए थे। जब एक शाखा के वैज्ञानिक दूसरी शाखा की शब्दावली को ग्रहण करते हैं तो उससे काम नहीं चलता। जैसे हम्प्लाजाम शब्द को ले लें। शरीर वैज्ञानिको ने इसका प्रयोग १८४६ के लगभग रक्त, दूध या मांस पेशी के 'रंगहीन तरल अंश' के रूप में किया था। १०० वर्षों में प्राणि वैज्ञानिक ने इस शब्द को 'प्रोटोप्लाजम' कोषिकाओं के जिनित तत्य के रूप में भी प्रयुक्त किया। उसी समय इस पर आपत्ति की जानी चाहिए थी क्योकि ग्रीक उद्भव के अनुसार इस शब्द का अर्थ साँचा होना चाहिए था परन्तु प्रयोग के अधिकार से प्राणी वैज्ञानिक ने इस पर अधिकार पा लिया।

परन्तु इधर एक नया विज्ञान प्रारम्भ हुआ है, प्लाज्या-भौतिकी। इसका अर्थ है 'विद्युत संचारित गैसों' की भौतिकी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस शब्द का प्रयोग ट्यूब-लैम्पों में धनात्मक और ऋणात्मक आयनों के प्रभाव के अर्थ में किया था। परन्तु फिर ताप न्यूक्लियर ऊर्जा के उपयोग के सम्बन्ध में नागरिकों प्रयोजनों के लिए हाइड्रोजन बम के उपयोग के लिए की गई शोधों के कारण इसको एक नया महत्व प्राप्त हो गया।

प्लाज्मा क्यों ? भौतिकी में इसका अर्थ न साँचे का है और न ही तरल पदार्थ का। अगर कोई समानता है तो आयनों और रक्त अणुओं के बीच में जोकि शरीर वैज्ञानिक अर्थ को उल्टा है। संयुक्त राज्य अमेरिका की एक बैठक में-तूमें भौतिकी के विशेषज्ञों और प्राणी वैज्ञानिकों दोनों ने ही भाग लिया। भौतिकी विशेषज्ञ प्लाज्मा के सम्बन्ध में अधिकारपूर्वक बात करते रहे। तब तक कमरे से पीछे से एक प्राणी वैज्ञानिक ने कहा, "मिस्टर चैयरमैन क्या हम अपना शब्द वापस ले सकते हैं"। "नहीं, नहीं ले सकते। अणु वैज्ञानिकों के पास इतना धन है कि उन्होंने उसे खरीद लिया है"।

शब्दों को इस प्रकार से लेने से गड़बड़ी होती है, कभी-कभी तो बात समझने में बहुत अधिक कठिनाई हो जाती है। कभी ऐसा लगता है कम विशेषज्ञता प्राप्त मनुष्यों के साथ बात-चीत करने के लिए एक विशेष छूट ली गई और फिर वह शब्द चल पड़ा। ये ही शब्द किसी विषय के वर्णनात्मक पक्ष के समय किसी बात से समानता देखकर तुलना के लिए जाते हैं और फिर बने रह जाते हैं।

उदाहरण के लिए हम जानते हैं कि "फिशन" शब्द न्यूक्लियर भौतिकी में कैसे आया। हैन और स्ट्रैसमैन ने देखा कि जब वे यूरेनियम पर न्यूट्रनों कीवर्षा करते हैं तो यूरेनियम खुरदरी संहित के दोनों खण्डों में टूट जाता है। यह परिणाम उन्होंने अपने सहकर्मी लीस मीटनर को बतलाया। लीस मीटनर के भतीजे ओटो फ्रिस जो आगे चलकर केम्ब्रिज की कैवेंडिश प्रयोगशाला में प्रोफेसर हो गए, यहाँ आए हुए थे।

उन्होंने इस प्रभाव पर बातचीत की और यह माना कि उसकी व्याख्या यह ही हो सकती है कि न्यूट्रन के आ जाने से यूरेनियम परमाणु के केन्द्र के भीतर आकर्षण और विकर्षण की शक्तियों का संतुलन गड़बड़ हो गया है। मानो न्यूक्लियस लम्बा हो गया और दो हिस्सों में टूटने के पहले बीच में पतला हो गया। फ्रिश को लगा कि यह उसी प्रकार होता है जैसे जीवित कोशिकाएँ विघाटित होती हैं। जब वे कोपन-हेगन लौटे तो उन्होंने प्राणि विज्ञान के एक सहकर्मी से पूछा कि इसका प्राणि-वैज्ञानिक शब्द क्या है और उन्होंने 'फिशन' बताया। वही शब्द चल निकला।

वैज्ञानिकों ने "एटॉमिक पाइल" शब्द का प्रयोग किया और फिर स्वतः ही पाइल कहा कि यह ठीक नहीं है। एटॉमिक नहीं न्यूक्लियर होना चाहिए और साथ रिएक्टर होना चाहिए पहले 'पाइल' इसलिए कह दिया क्योंकि इसके महत्त्व को अधिकतर लोगों ने नहीं समझा था और उनको यह ग्रेफाइट और यूरेनियम धातु का ढेर-सा (पाइल) प्रतीत हुआ था। पर यह शब्द मेरे लिए कठिनाई बन गया। 'एटोमिक पाइल' शब्द चल चुका था। लन्दन के 'न्यूज क्रॉनिकल' के विज्ञान सम्पादक के रूप में मैंने ३ वर्षों तक एटोमिक पाइल के बाद (न्यूक्लियल रिएक्टर) शब्द रखा और धीरे न्यूक्लिय रिएक्टर के बाद (एटोमिक पाइल) रखा। तब यह शब्द चल सका।

वैज्ञानिक तथ्यों को गलत ढंग से समझने और गलत ढंग से प्रस्तुत किये जाने के सबसे बड़े उदाहरण अणु ऊर्जा के क्षेत्र में मिल सकते हैं। अणु ऊर्जा की प्राप्ति से मानों मनुष्य ने अपने तांत्रिक देवता बना लिए। तूफान या बिजली की शक्तियाँ जिनको हमारे पूर्वज प्रसन्न करना चाहते थे अब अनदेखे, अनसुने, अनपहने, अनसूँघे, अनअनुभूत, अस्वात और सर्वव्यापी वे विकिरण आ गए हैं जो न्यूक्लियस से निकले हैं। इसके कारण एक नया अंश विश्वास बन गया है और वह अंधविश्वास तांत्रिक देवताओं की भाँति सक्रिय है।

यह तथ्य कि ये नए तथ्य तर्क द्वारा प्राप्त किए गए हैं, इनको तार्किक पद्धति से नापा जा सकता है और वैज्ञानिकों द्वारा समझा सकता है कि उन लोगों के लिए कोई आश्वासन नहीं देते जो विज्ञान के तरीके नहीं समझते और जो अज्ञान वश विज्ञान को ऐसी वस्तुओं में हाथ डालता हुआ समझता है जिनसे दूर रहना चाहिए। यह असंगत और निंदनीय है। लेकिन परमाणु ऊर्जा की समस्या की किसी भी चर्चा में इसके ज्ञान को स्वीकार करना आवश्यक है।

अक्टूबर १९५७ में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने परमाणु ऊर्जा शान्तिपूर्ण उपयोगों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करने के लिए एक दल सगठित किया था जिसका एक सदस्य मैं भी था। इस दल के पास विश्व के अनेकों भागों से बहुत से शोध कर्त्ताओं कि रीपोर्टें थीं। न केवल अधिक विकसित समाजों की वरन् अल्प विकसित समाजों की भी। जिनके बीच अखबारों या न्यूक्लियर पाठ्य पुस्तकें का अभाव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अध्ययंन दल की निष्कर्ष यद्यपि सही थे फिर भी चिन्ता का विषय थे चिन्तनीय तत्व स्पष्ट हो गया। एक तो यह था कि अणु ऊर्जा के सम्बन्ध में न केवल परमाणु युद्ध के समय उसके नाश की संभावनाओं, वरन् उसके शान्तिपूर्ण उपयोगों के सम्बन्ध में भी विश्व जाति स्तर पर अशांति थी। इस दल को ऐसा अनुभव हुआ जैसे हमारी सभ्यता के आवरण बहुत ही झीने हैं और इस छोटे से अणु से निकलने वाली अमापनीय शक्ति के कारण सभ्य मनुष्य अपनी ही भावनाओं की अंधेरी गुफाओं में भटक रहा है। इस मानवता के बचपन में वापस आ गए हैं।

अफ्रीका का सामान्य इतिहास

महासम्मेलन के तेरहवें अधिवेशन में दो संस्ताव स्वीकार किए गए, एक में सदस्य देशों को ऐसे शोध कार्य को प्रोत्साहन देने के लिए आमन्त्रित किया गया था जो "अफ्रीका को सामान्य इतिहास" तैयार करने में योग दे सके और दूसरे में महानिदेशक को १९६५ से १९७५ तक १० वर्ष की अवधि में इस पुस्तक की तैयारी और प्रकाशन के लिए आवश्यक कार्य करने का अधिकार दिया गया था।

इस प्रयोजना की आवश्यकता

अफ्रीका के सामान्य इतिहास की प्रयोजना कई कारणों से प्रारम्भ की जा रही है—

वैज्ञानिक महत्व : आधुनिक तथ्यों का प्रयोग करते हुए और उनका आलोचनात्मक पुर्नमूल्यांकन करने वाली एक मूल कृति के प्रकाशन से मानवता के ज्ञान के सम्बन्ध में एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति होगी। इस कृति का उद्देश्य यह होगा कि अफ्रीका के सम्बन्ध में वर्तमान ऐतिहासिक ज्ञान की पूरी से पूरी और नियमित तस्वीर प्रस्तुत की जाए। इसके साथ ही वर्तमान समय में पर्याप्त सूचना की कमी के कारण शोधकार्य के क्षेत्र में जो सीमाएं है, उन्हें भी स्वीकार किया जाएगा। जिन क्षेत्रों के सम्बन्ध में बिलकुल भी काम नहीं किया गया है उनकी ओर ध्यान आकर्षित किया जाएगा और गलत सिद्धान्तों को अलग कर दिया जाएगा। इस प्रकार की प्रायोजनाओं को लागू करने के लिए ऐतिहासिक शोध तथा अध्ययन की दूसरी शाखाओं जैसे पुरातत्व, नृवंश विज्ञान और भाषा विज्ञान के सम्मिलित उपयोग की आकश्यकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक शोध की सम्भावनाएं : आज अफ्रीका और विश्व के दूसरे भागों में अनेकों ऐसे विशेषज्ञ हैं जिनके अनुभव से इस प्रायोजना के कार्य चालन में लाभ उठाया जा सकता है। इसलिए यह बात महत्वपूर्ण है कि अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक शोध जिसके द्वारा ही इतनी विशाल और जटिल प्रायोजना में सफलता प्राप्त हो सकती इस प्रयोजन के लिए प्राप्त किया जाए।

अफ्रीकियों की पहली अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में अफ्रीका के इतिहास के सम्बन्ध में इस प्रकार की विशद अध्ययनों को प्रारम्भ करने की वांछनीयता पर जोर दिया और अफ्रीकियों की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस की ब्यूरो ने सितम्बर १९६४ में अपनी बैठक में इस कार्य में समायोजन करने की इच्छा प्रकट की।

अतः यह प्रायोजना केवल एक आवश्यकता की ही पूर्ति नहीं करती वरन् विशेषज्ञों द्वारा सम्भाव्य भी बतलाई गई है।

कार्य की तात्कालिक आवश्यकता : किसी भी प्रकार के नियमित संगठित पुरातत्व संग्रह न होने के कारण सामग्री के खो जाने या नष्ट हो जाने की सम्भावना है। जो लोग मौखिक परम्पराओं से परिचित हैं, वे मरते जा रहे हैं और कुछ पारम्परिक संस्थाएं शीघ्रता से रूप बदल रही हैं।

अफ्रीकियों के लिए अफ्रीकी इतिहास का अत्यधिक महत्व : आज अफ्रीमियों के बीच में उनके राष्ट्र के वर्तमान इतिहास की इस स्थिति में एक स्पष्ट इच्छा अपने उद्गम और विकास की पद्धति को जानने के सम्बन्ध में दिखलाई पड़ती है इससे वे अपनी वर्तमान स्थिति को अधिक अच्छी तरह समझ सकेंगे और इति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह्रास की पृष्ठ भूमि में वर्तमान विश्व में अपने विकास को रख सकें। इसी से वैज्ञानिक विश्व द्वारा प्रामाणिक माना जाने वाला अफ्रीकी इतिहास आज एक ऐसी आवश्यकता की पूर्ति करेगा जिसका अनुभव अफ्रीका में बहुत अधिक किया जा रहा है।

प्रायोजना का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व : अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर अफ्रीकी देशों का आगमन। स्वतन्त्र अफ्रीकी देशों के आगमन ने विश्व भर के लोगों को अफ्रीकी लोगों को अधिक समझने की आवश्यकता के प्रति अत्यधिक सचेत कर दिया है। अफ्रीका के सामान्य इतिहास के प्रकाशन से पूर्वाग्रहों और गलत तथा असम्पूर्ण सम्मतियों को दूर कर दिया जाएगा और इस प्रकार इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान होगा।

प्रायोजना का विवरण

इसके शीर्षक "अफ्रीका का सामान्य इतिहास" से ही स्पष्ट हो जाता है कि इस प्रायोजना के अन्तर्गत पूरा अफ्रीका महाद्वीप होगा। उदाहरण के लिए उत्तरी अमरीका और उष्ण कटिबंधीय अफ्रीका के बीच सहारा के रास्ते से होने वाले राजनैतिक, व्यापारिक और सांस्कृतिक विभिन्न सम्बन्धों के इतिहास को भी पर्याप्त स्थान देना होगा। इस शीर्षक से यह भी स्पष्ट हो जाता कि अफ्रीका का इतिहास केवल घटनाओं और राजनीतिक संस्थाओं का विवरण ही नहीं होगा वरन् ऐसे तथ्यों का अध्ययन होगा जैसे कारवां परिवहन और व्यापार के द्वारा अफ्रीकी देशों के बीच स्थापित सम्पर्क, धातु विज्ञान आदि तकनीकों का विस्तार और आर्थिक सम्बन्धों के इतिहास के अनेकों पक्षों के साथ बंजारे लोगों के इधर-उधर आने-जाने या विभिन्न प्रकार के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के बीच सम्पर्क स्थापित करने आदि का।

प्रमुख संस्करण का रूप अनेकों खण्डों वाले एक सन्दर्भ ग्रंथ का होगा। यह विशेषतया विशेषज्ञों के लिए होगा लेकिन विद्यार्थियों और सामान्य शिक्षित जनता के लिए भी इसकी उपयोगिता होगी। फिर भी अधिक से अधिक पाठकों के लिए एक संक्षिप्त संस्करण की आवश्यकता होगी। अफ्रीका के सामान्य इतिहास का उपयोग अफ्रीकी इतिहास के पढ़ाने में सूचना के स्रोत के रूप में भी किया जा सकता है।

कार्य चालन के तरीके

यूनैस्को सर्वाधिक योग्य संस्थाओं के विशेषतया अफ्रीकियों की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस और विशेषज्ञों के बीच वैज्ञानिक समायोजन का प्रबन्ध करेगी।

अफ्रीकियों की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस न केवल अन्तर्राष्ट्रीय वरन् एक अन्तर्शाखा संघार भी प्रस्तुत करती है। संघटित स्वरूप के कारण यह वर्तमान अध्ययनों का उपयोग कर सकती है और ऐतिहासिक शोध में लगे हुए केन्द्रों और विशेषज्ञों को इस कार्य के लिए और अधिक प्रेरित कर सकती है। और दर्शन तथा मानवीय अध्ययनों की अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् के साथ सम्बद्ध होने के कारण यह यूनैस्को से निकट का परामर्श सम्पर्क भी रखती है।

इस कांग्रेस की स्थापना अफ्रीकियों के पहले अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का प्रमुख व्यावहारिक परिणाम था। यह सम्मेलन घाना विश्वविद्यालय में ११ से १८ दिसम्बर १९६२ तक यूनैस्को के तत्वावधान में और उसके सक्रिय सहयोग द्वारा हुआ था। इस सम्मेलन की अध्यक्षता इबादान विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० डाइक ने की थी और इसमें शोध संस्थानों, विश्वविद्यालयों और दूसरे अफ्रीकी केन्द्रों के लगभग ५०० विशेषज्ञों और तकनीकियों ने भाग लिया था। अफ्रीकियों की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस के अन्तर्गत तीन संस्थाएं हैं। कांग्रेस, स्थायी-परिषद् और ब्यूरो। कांग्रेस वह सामान्य सभा है जिसमें विशेषज्ञ अपने व्यक्तिगत रूप में सदस्य होते हैं। स्थायी परिषद् वह "विधान" सभा है जिसमें सदस्य संस्थाओं का प्रतिनिधित्व प्रतिनिधि मण्डलों द्वारा किया जाता हैं राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं इसकी सदस्य हो सकती हैं। कांग्रेस के पहले अधिवेशन के अन्त में परिषद् में अफ्रीका के ५२ अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रतिनिधि और उत्तरी अफ्रीका के फ्रांसीसी संस्थान तथा अन्तर्राष्ट्रीय अफ्रीकी संस्थान जैसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रतिनिधि भी थे जिनका वैज्ञानिक मूल्य निर्विवाद है। स्थायी परिषद् सामान्य नीति निर्धारित करती है, कार्यक्रम की रूप रेखा बनाती है और दूसरी वैज्ञानिक संस्थाओं के सहयोग से निश्चय करती है। ब्यूरो का चुनाव स्थायी परिषद् के द्वारा होता है और यही कार्य-चालन उपकरण है। परिषद् द्वारा इसको बहुत अधिकार दिए जाते हैं क्योंकि सामान्य नियम के अनुसार परिषद् की बैठकें तीन वर्ष में एक बार ही होती हैं। इसमें कुछ प्रमुख व्यक्ति होते हैं जिससे कि इसके परामर्श बड़ी जल्दी से किए जा सकें। परन्तु वे सब विभिन्न राष्ट्रीय समूहों, शाखाओं और वैज्ञानिक मतों के प्रतिनिधि होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९६५ और १९६६ के लिए आयोजित कार्यवाहियाँ

अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस की ब्यूरों से अध्ययन योग्य प्रदेशों और विषयों के सम्बन्ध में अग्रताओं का निश्चय करने के लिए एक बैठक बुलाने को कहा जाएगा और एक प्रारम्भिक कार्य योजना बनाने के लिए और उन संस्थाओं और विशेषज्ञों की एक सूची बनाने के लिए कहा जाएगा जिनका समायोजन वांछनीय होगा।

जब यूनैस्को ब्यूरो के प्रस्तावों को स्वीकार कर लेगी और समझौतों के अन्तर्गत करवाए गए अध्ययनों से अनुपूरक सुझावों और सूचना का मूल्यांकन कर लेगी तब अफ्रीकियों के दूसरे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के सम्मुख एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा, १९६६ का वर्ष प्रमुखत: मूल सामग्री को एकत्र करने और उसकी व्याख्या करने के लिए लगाया जाएगा। अफ्रीका में शोध कार्य प्रमुखत: विभिन्न अफ्रीकी शिक्षा संस्थाओं जो अफ्रीकी सदस्य देशों द्वारा स्थापित किए गए हैं विशेषकर वे जो विश्व-विद्यालयों से सम्बद्ध है विश्वविद्यालयों द्वारा किया जाएगा।

अगले दो वर्षों तक सूचना के नए स्रोतों के सम्बन्ध में सामग्री का विश्लेषण और शोध कार्य चलता रहेगा। तब इस प्रायोजना का अत्यधिक सक्रिय पक्ष प्रारम्भ होगा जिसमें शोध के परिणाम समायोजित किए जाएँगे और अध्ययनों को प्रकाशन के लिए तैयार किया जाएगा। इस सब में चार वर्ष लगेंगे और "अफ्रीका का सामान्य इतिहास" इस प्रायोजना के लिए निश्चित किए गए समय के अन्त में प्रकाशन के लिए तैयार हो जाएगा।

जनसंचारण के साधन और राष्ट्रीय विकास

१९६० और १९६२ के बीच यूनैस्को ने विशेषज्ञों और सरकारों तथा व्यावसायिक संगठनों के प्रतिनिधियों की तीन प्रादेशिक बैठकें संयोजित कीं जिसमें एशिया, लैटिन अमरीका और अफ्रीका में जन-संचारण साधनों के विकास के लिए विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया गया।

१९६२ में महासम्मेलन ने इन तीन प्रादेशिक सम्मेलनों के परिणामों पर आधारित एक अध्ययन प्रकाशित करने का अधिकार दिया जिसमें आर्थिक और सामाजिक प्रगति के प्रोत्साहन के लिए जन-संचार साधनों के कार्य का वर्णन प्रस्तुत किया गया था। इस अध्ययन की तैयारी का भार स्टैंटफोर्ड विश्वविद्यालय (संयुक्त राज्य अमरीका) में संचारण शोध के संस्थान के निदेशक मिस्टर विलबर स्क्रैम को सौंपा गया था। अब यह पुस्तक अंग्रेजी में प्रकाशित हो गई है (विलवर स्क्रैम : **जन संचारण और राष्ट्रीय विकास**, स्टैण्डफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, स्टैण्डफोर्ड कैलीफोनिया और यूनैस्को, पेरिस।

मिस्टर स्क्रैम ने अपना कार्य एक स्वतन्त्र विशेषज्ञ के रूप में किया है और सम्मितियाँ उन्होंने प्रकट की हैं, यह आवश्यक नहीं है कि वे यूनैस्को की ही सम्मतियाँ हों। फिर भी उनके अध्ययन का राष्ट्रीय विकास में सूचना साधनों में उपयोग की आयोजना में बड़ा व्यावहारिक महत्त्व होगा। उसमें शिक्षण और प्रौढ़ शिक्षा के लिए जन संचार साधनों के उपयोग के सम्बन्ध में मौलिक और विचारोत्तेजनक मत प्रकट किए गए हैं। नीचे दिए हुए उद्धरणों से इस कृति के सम्बन्ध में कुछ सूचना मिल सकेगी।

"यदि जन-संचारण अनेकों नए देशों में शिक्षा सम्बन्धी विकास के खर्च का थोड़ा भी अंश बचा सकता है तो वह अपने विकास का पूरा-पूरा खर्च भी बचा लेगा, इसी से प्रत्येक विकास-शील देश को जन-संचारण विकास और उपयोग के सुनियोजित कार्यक्रम में पूँजी लगानी चाहिये।" इस सम्बन्ध में डा० स्ट्रैण्ड ने आर्थिक विस्तारण के दूसरे खर्चों की तुलना में जन-संचारण साधनों के विकास के आपेक्षिक कम खर्च पर जोर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय विकास में सूचना का काम

समाज की आर्थिक उत्पादनशीलता की द्रुत वृद्धि आर्थिक विकास का मूल है। जन-संचारण साधनों का कार्य यही है कि आर्थिक विकास के लिए सम्भव लम्बे और धीमे सामाजिक परिवर्तन को द्रुत और सरल बना दे। विशेष रूप से राष्ट्रीय प्रयत्न के पीछे मानवीय संसाधनों को गतिशील करने के कार्य को द्रुत और सरल बना दे। अधिकतर अल्प-विकसित देशों की मूल समस्या प्राकृतिक संसाधनों की कमी नहीं है वरन् मानवीय संसाधनों का अल्प विकास ही है। इन देशों के लिए पहला काम यही है कि वे अपनी मानवीय पूंजी को सुनियोजित करे अर्थात् अपने राष्ट्रिकों की शिक्षा, कारीगरी, शारीरिक स्वास्थ्य और नैतिकता में सुधार करे।

किसी भी नए देश में शिक्षा और प्रशिक्षण को बहुत बड़े स्तर पर चलाना पड़ता है। उसका प्रमुख अंश होता है नवीकरण या परिवर्तनता। लोगों को ऐसे कामों को करने के लिए प्रोत्साहित करना पड़ता है जो उन्होंने पहले नहीं किए। हाथ से काम करने वालों को" मशीन का प्रयोग करना पड़ता है। किसान को नए तरीके अपनाने पड़ते हैं या कृषि को छोड़कर उद्योग में जाना पड़ता है। लोगों को अपनी समस्याओं को स्वतः ही सुलझाना पड़ता है, प्रचलित विश्वास पर निर्भर नहीं रहना होता है।

इसके लिए बहुत से "बीच के लोगों" की आवश्यकता होती है जो पारम्परिक मूल्यों और विश्वासों के बीच बढ़े हुए लोगों को आधुनिक औद्योगिकी और संस्कृति की शिक्षा दे सकते हैं। इन विकासशील देशों में ऐसे लोगों की बहुत कमी है और जन-संचारण साधन उनके कार्यों को बढ़ाने में बहुत सहायक हो सकते हैं।

अधिकतर पारम्परिक संस्कृतियों में परिवर्तन के प्रति विरोधी भाव रहता है और आर्थिक प्रेरणा की कमी रहती है। मानवीय संसाधनों को उत्प्रेरित करने के लिये प्रेरणा, नवीकरण अच्छे स्वास्थ्य अभ्यासों, धन बचाने और विलंबित परिणामों को प्राप्त करने के प्रति स्वीकार-भाव उत्पन्न करने की आवश्यकता है। लोगों को खतरा उठाने दायित्व लेने और पहल करने को इच्छुक होना पड़ेगा।

इस प्रकार विकास के पक्ष में वातावरण तैयार करने के लिए जो प्रयत्न किए जाते हैं, उनमें लोगों के मस्तिष्कों पर बेजा प्रभाव डालने की बात नहीं उठनी चाहिए, वरन् इसके विपरीत ऐसा कार्य मनुष्यों को रोज-रोज के कार्यक्रम से और उन लोगों के प्रभाव से जिनका पारम्परिक संगठनों और विचारों को बनाए रखने में अपना लाभ है, मनुष्यों को मुक्ति मिल सकती है।

जन-संचारण साधनों के व्यावहारिक उपयोग

रेडियो, अखबारों और सिनेमागृहों में वृद्धि करने से यह आवश्यक नहीं है कि आर्थिक विकास में भी आनुपातिक वृद्धि हो।

लेकिन सामान्य रूप में जन-संचार साधन जनता को उन आवश्यकताओं के प्रति संचत कर सकते हैं, जो वर्तमान रीति-रिवाजों या आचार व्यवहार के द्वारा पूरी नहीं होती और इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नए तरीके भी बतला सकते हैं।

विशेष रूप से जन-संचार साधनों का पहला प्रभाव बौद्धिक क्षितिज को विस्तृत करने का है जो दूर है उसको निकट लाने का और जो अजनबी है उसको समझने योग्य बनाने का। और इस प्रकार पारम्परिक और आधुनिक समाज के बीच-बीच के अन्तरण को जोड़ने का।

दूसरे वे जनता के ध्यान को आकर्षित करते हैं। विकासशील देशों में आधुनिकीकरण के सभी विषयों जैसे नई रीतियाँ, व्यवहार की नई प्रवृत्तियाँ, स्वाथ्य और कृषि की नई पद्धतियाँ आदि की ओर सामान्य रुचि जागृत करना महत्त्वपूर्ण है। उनके लाभ बताना और पुरानी रीतियों के खतरों और हानियों से उनका अन्दर बतलाना भी महत्वपूर्ण है।

तीसरे जन-संचार साधन आशाओं को बढ़ाने में सहायता करते हैं। यही शिक्षा का वास्तविक कार्य है और विकासशील देशों में यह एक बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य है। लोगों को भाग्यवाद और परिवर्तन में भय से ऊपर उठाना होगा। और उनमें कार्य के द्वारा अपने रहन-सहन के स्तर में सुधार करने की इच्छा भरनी होगी। यह इच्छा विकास आयोजनाओं की सफलता के लिए आवश्यक है।

परन्तु जन-संचार साधनों के उपयोग की सीमाएँ हैं। उदाहरण के लिये बहुत जमी हुई प्रवृत्तियों और पूर्वाग्रहों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आक्रमण करने के लिये इन साधनों का उपयोग करना गलत होगा बल्कि इसका प्रभाव उल्टा हो सकता है।

शिक्षा में जन-संचार साधन

जन-संचार साधन स्कूल में और स्कूल के बाहर सभी प्रकार की शिक्षा और प्रशिक्षण में पर्याप्त सहायता दे सकते हैं। वे शिक्षक के बड़े ही उपयुक्त अनुपूरक हैं और ऐसे प्रदेशों में जहाँ स्कूलों और शिक्षक वर्ग की कमी हो उनके स्थान पर भी प्रयुक्त हो सकते हैं। तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा में उनकी सामान्य उपयोगिता प्रमाणित हो चुकी है।

शिक्षा के चार क्षेत्रों में आधुनिक संचारण साधन हैं। विशेष उपयोगी हुए हैं: कृषि सम्बन्धी सुधार, स्वास्थ्य शिक्षा, साक्षरता शिक्षण और कुछ औपचारिक शिक्षण।

कृषि सम्बन्धी सुधार के क्षेत्र में ग्रामीण रेडियो चर्चा कार्यक्रमों के द्वारा उपलब्ध महत्त्वपूर्ण परिणाम उल्लेखनीय हैं। ग्रामीण रेडियो चर्चाएँ सबसे पहले कनाडा में १९४१ में प्रारम्भ हुई। १२ वर्ष पहले यूनैस्को के एक सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हुआ कि इन समूहों को न केवल कृषि सम्बन्धी तकनीकों में सुधार करने वरन् नेतृत्व शक्ति का विकास करने, किसानों के बीच सहयोग को प्रोत्साहन देने और सामुदायिक भावना का निर्माण करने में भी सफलता मिली है।

जहाँ तक स्वास्थ्य का सम्बन्ध है, जब केवल रोग का निदान करना ही नहीं वरन् लोगों की अपनी देखभाल करने और ठीक-ठीक स्वास्थ्य सम्बन्धी आदतें डालना सिखाना आवश्यक हो तब अनौपचारिक अभियान अनिवार्य है।

जन-संचार साधनों का साक्षरता शिक्षण में बड़ा महत्वपूर्ण कार्य हो सकता है। उन देशों में जहाँ निरक्षरता की दर बहुत ऊँची नहीं है और जहाँ व्यावसायिक या स्वैच्छिक प्रशिक्षित योग्य शिक्षक, योग्य अध्यापक पर्याप्त संख्या में मिलते हैं वहाँ पर निरक्षरता को दूर करने का अभियान स्कूलों के द्वारा प्रारम्भ किया जा सकता है लेकिन अधिकांश विकासशील देशों में अध्यापकों की कमी की पूर्त्ति साक्षरता पाठ्यक्रमों को टेलीविजन, रेडियो या फिल्म के द्वारा संगठित करने से ही दूर किया जा सकता है।

टेलीविजन साक्षरता शिक्षण के लिए एक अच्छा माध्यम है क्योंकि इसमें रेडियो और फिल्म दोनों ही के लाभ जुड़े हुए हैं और क्योंकि इसके साथ एक नए साधन का आकर्षण भी है। इटली में १९६० में शिक्षा सम्बन्धी टेलीविजन का एक रोचक प्रयोग किया गया था। उस समय तक इटली में बीस लाख निरक्षर थे। इनमें से ५,६०,००० ने एक स्थानीय शिक्षक की मदद से चार हजार दृश्य स्थलों पर इस पाठ्यक्रम से शिक्षा ग्रहण की। यह प्रयोग शिक्षण माध्यम के रूप में टेलीविजन की प्रभावशीलता और मितव्ययिता का स्पष्ट प्रमाण है। लगभग सभी विद्यार्थियों ने एक शिक्षक के द्वारा दिये गये पाठ्यक्रम में भाग लेकर पढ़ना और लिखना सीख लिया।

फिर भी सम्भवतः टेलीविजन का सबसे बड़ा काम औपचारिक शिक्षा के सम्बन्ध में होगा। वर्त्तमान समय में टेलीविजन के पाठ्यक्रमों का प्रमुख लाभ यही है कि उच्च प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का उपयोग करके शिक्षण के स्तर में सुधार किया जा सकता है। भविष्य के लिये स्कूल कार्यक्रमों और समय सारणियों को इस प्रकार आयोजित करना सम्भव होना चाहिये कि टेलीविजन की सम्भावनाओं का पूरा लाभ उठाया जा सके।

"आइये हम एक क्षण को स्वप्न देखें। यह मान लें कि एक नया देश पूरी तरह से अपने लिए आवश्यक पाठ्यक्रम को बनाने में मुक्त है और उसको इस विश्वास में आश्वासन है कि नए संचार साधनों द्वारा जो भी पाठ्यक्रम वह चुनेगा उसको पढ़ाने में सहायता मिलेगी।

यह मान लें कि वह देश में अपने अच्छे-से-अच्छे अध्यापकों का बड़े-से-बड़े स्तर पर उपयोग करता है जिससे कि प्रत्येक विद्यार्थी टेलीविजन के द्वारा सचमुच बढ़िया शिक्षण प्राप्त कर सकता है।

इसके साथ यह भी मान लें कि देश शिक्षण के कर्त्तव्यों को योग्यताओं के अनुसार बाँटता है जिसमें कुछ बहुत अच्छे अध्यापक टेलीविजन के लिये होते हैं, कुछ दूसरे कक्षा की चर्चा और अभ्यास करवाते हैं और कम प्रशिक्षण प्राप्त कुछ दूसरे शिक्षक पर्चे देखते हैं और नम्बरों का रिकार्ड रखते हैं।

यह मान लें कि देश में ऐसे स्कूल भवनों का निर्माण बन्द हो जाए जहाँ हर कमरा एक बराबर होता है। अर्थात् यह मान लें कि वह देश इस बात का ध्यान रखे कि बहुत से सीखने के काम विद्यार्थी को अपने आप करने हैं और दूसरे ऐसे हैं जिनके लिए वह एक बहुत बड़े कमरे का उपयोग भी कर सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। उदाहरण के लिए टेलीविजन की कक्षाओं के लिए। और कुछ और काम हैं जिनके लिए चर्चा योग्य कमरा बनवाने की आवश्यकता है।

मान लें कि एक देश जिसमें कार्यक्रमबद्ध शिक्षण सुलभ है अपने तरुणों को स्वतः अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार प्रत्येक विषय में आगे बढ़ना सम्भव करता है जिससे कि अधिक तेज विद्यार्थी इतने ही समय में बहुत आगे चलेजाएँ और धीमे चलने वाले जो सीख रहे हैं उसको अच्छी तरह सीख सकें।

मान लें कि एक देश जिसमें कि एक माध्यमिक स्कूल नहीं है कार्यक्रमबद्ध डाक पाठ्यक्रम प्रस्तुत करता है, जिसमें बहुत से ऐसे तरुण जो उन प्रदेशों में हैं जहाँ माध्यमिक स्कूल नहीं हैं अथवा जो किसी घरेलू कारण से स्कूल छोड़ने पर बाध्य हैं, वे अपनी शिक्षा को जारी रख सकते हैं।

कदाचित यह सब स्वप्न है परन्तु असम्भव नहीं है। यही समय है कि विकासशील देशों के शिक्षा विशेषज्ञ नये शिक्षा साधनों के सम्बन्ध में अधिक कल्पनाशील बनें।"

सन २००० में विश्व की जनसंख्या

विश्व के विशाल क्षेत्रों में जनसंख्या असाधारख तेजी से बढ़ रही है और इस असाधारण वृद्धि के कारण बहुत ही बड़ी-बड़ी आर्थिक और सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है—विशेषकर विकासशील देशों में। इन समस्याओं पर विश्व जनसंख्या सम्मेलन द्वारा विचार किया जाएगा। इस सम्मेलन के अन्तर्गत संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में यूनैस्को खाद्य कृषि संस्था, विश्व स्वास्थ्य संगठन और दूसरे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के सहयोग से सितम्बर १९६५ में बैलग्रेड, यूगोस्लाविया में जनसंख्या के विशेषज्ञों की वैज्ञानिक बैठक होगी। नीचे अगले ४० वर्षों के लिए विश्व की जनसंस्या संभावनाओं के सम्बन्ध में हाल के संयुक्त राष्ट्र अध्ययन के परिणाम दिए जा रहे हैं।

विश्व की जनसंख्या जो १९६० में ३०० करोड़ थी, सन् २,००० तक विश्व जनसंख्या संभावनाओं के सम्बन्ध में एक संयुक्त राष्ट्र रिपोर्ट में दिए गए आकलनों के अनुसार ५३० से ६८० करोड़ तक हो जाएगी। इस अध्ययन के अनुसार ६०० करोड़ अथवा १९६० की संख्या के दूने की आशा की जा सकती है।

यदि १९६० की जन्म संख्या बनी रहे और यदि मरण संख्या उसी प्रकार कम होती जाए जैसे १९५० से कम होती जा रही है तब तो सन् २००० तक विश्व की जनसंख्या १९६० की संख्या का ढाई गुना हो जाएगी परन्तु रिपोर्ट में कहा गया है कि भविष्य के विकासों द्वारा ऐसा होना सम्भव नहीं समझा जा रहा है।

अध्ययन में यह उल्लेख किया गया है कि यह बहुत अधिक सम्भव है कि ऐसी घटनाएँ घटें जो आज की जनसंख्या की प्रवृत्तियों में परिवर्तन करें। आज कुछ ऐसी विकास प्रवृत्तियाँ देखी जा सकती हैं जिनका निकट भविष्य पर निश्चित प्रभाव होगा। दूर भविष्य पर ही उनके सम्भव प्रभाव का अनुमान लगाया जा सकता है। यद्यपि इस अनुमान में कुछ अनिश्चय का भाव होगा।

यह प्रकाशन १९६३ में आकलित विश्व जनसंख्या सम्भावनाओं की अन्तिम रिपोर्ट आर्थिक और सामाजिक मामलों के संयुक्त विभाग की जनसंख्या शाखा द्वारा तैयार की गई है और इसको सरकारों, चुने हुए जनांकिकीय संस्थानों और विभिन्न विशेषज्ञों के पास टिप्पणियों और सुझावों के लिए भेजा जा रहा है। टिप्पणिओं के आधार पर जनसंख्या के अध्ययनों की संयुक्त राष्ट्र माला के अन्तर्गत अन्तिम रिपोर्ट प्रकाशित कर दी जाएगी। सइ रिपोर्ट में ३१६ पृष्ठ हैं जिन्हें मजमून और सारणियाँ दोनों ही दिए गए हैं। यह बातें मुख्य रूप से कही गई हैं :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग सभी विकासशील देशों में मृत्यु दर में शीघ्रता से कमी होने की पर्याप्त सम्भावना है जिससे कि वर्तमान प्रवृत्ति जनसंख्या की दर को बढ़ाने की होगी।

आजकल विकासशील देशों में जनसंख्या प्रतिवर्ष एक प्रतिशत से साढ़े तीन प्रतिशत तक बढ़ गई है जब कि अधिक से अधिक विकसित देशों में यह वृद्धि .५ से १.७ प्रतिशत है।

इस शताब्दी के अन्त तक लैटिन अमरीका की जनसंख्या १९६० की जनसंख्या से ३.६ गुनी होगी। अफ्रीका और दक्षिण पूर्व एशिया में तिगुनी होगी। पश्चिम एशिया में २.३ होगी। ओशनिया, उत्तरी अमरीका और सोवियत रूस में लगभग दूनी होगी। और योरोप की जनसंख्या में एक तिहाई की वृद्धि होगी।

सन् २,००० तक अल्प विकसित क्षेत्रों में विश्व की जनसंख्या का ८१ प्रतिशत भाग रहने लगेगा जब कि आज यह संख्या ७१ प्रतिशत है। पूर्व एशिया और दक्षिण एशिया में बहुत ही अधिक जनसंख्या की घनताएँ हो जाएँगी।

भविष्य में प्रवासन बहुत ही कम हो जाएगा और जनसंख्या की गतियों का आपेक्षिक जनांकिकीय महत्व और भी कम हो जाएगा।

विकसित देशों में जनसंख्या में वयप्राप्त लोगों का अनुपात निरन्तर बढ़ता जा रहा है, और इससे जनसंख्या की वृद्धि घट गई है।

रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि विश्व की जनसंख्या की वृद्धि मृत्यु दर के कम हो जाने के कारण असाधारण रूप से द्रुत हो गई है कि इसी कारण इसके आगे काफी बढ़ने की सम्भावना है। परन्तु यह निश्चित है कि यह वृद्धि धीरे-धीरे कम होगी। यदि जन्म दर कम नहीं होती तो जनसंख्या की वृद्धि में कमी होने की सम्भावना अधिक दूर चली जाती है और जनसंख्या बहुत अधिक होने की स्थिति स्पष्ट होती है।

विश्व के आठ क्षेत्रों में प्रवृत्तियां

रिपोर्ट के एक खण्ड में विश्व के आठ भागों में दो हजार सन् तक के जनसंख्या के आकलन दिए गए हैं। पूर्व एशिया, योरोप, सोवियत रूस, अफ्रीका उत्तरी अमरीका, लैटिन अमरीका और ओशनिया।

इस खण्ड में चीन (प्रमुख क्षेत्र) सम्बन्ध में भी जनसंख्या के अनुमान प्रस्तुत किए गए हैं। परन्तु रिपोर्ट में तथ्यों की कमी और उनके अनिश्चित होने के सम्बन्ध में कहा गया है और चीन की मृत्यु दर तथा जन्म दर की प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में प्राप्त आकलनों को लेकर जनसंख्या का अन्दाज लगाया गया है। एक विश्वास तो यह है कि मृत्यु दर बहुत कम है और जनन क्षमता बहुत देर में कम होती है। इसमें चीन के सम्बन्ध में ये संख्याएँ दी हुई हैं १९६०— ६४८.१ मिलियन,

१९८०— ९१६.८ मिलियन,

२०००—१२१०·० मिलियन।

बाल मृत्यु*

यद्यपि विश्व के लगभग सभी भागों में बाल मृत्यु की संख्या घट रही है फिर भी सब से कम और सब से अधिक मृत्यु संख्याओं में अभी बहुत अन्तर है। स्वीडन में प्रति हजार बच्चों में १५ बच्चों की मृत्यु होती है जब कि हैटी में १८०.४ की तुर्किस्तान में १६५ की और बर्मा में १३९.३ की।

संयुक्त अरब गणराज्य (हजार में १३३.९), इण्डोनेशिया (१२५), चिली (११६), टर्क्स और कैकोस द्वीप (१०७.१) और इक्वादोर (१०४) आदि देशों में भी बाल मृत्यु की दर बहुत अधिक है।

कम मृत्यु दर वाले देशों में स्वीडेन के अतिरिक्त हैं: नीदरलैण्ड (१५·८) आइसलैण्ड (१७) नार्वे (१७·८) फिनलैण्ड (१८), न्यूजीलैण्ड (१९.६), जिब्राल्टर (१९·६), आस्ट्रेलिया (२०), डेनमार्क (२०.१) और स्विट्ज़रलैण्ड (२१.२)।

वायु सीमा*

स्वीडेन में जन्म लेने वाली बालिकाएँ अब ७५ वर्ष तक जीवित रहने की आशा कर सकती हैं। नीडरलैण्ड, स्विट्ज़रलैण्ड और नार्वे में लगभग ७५ वर्ष। फ्रांस में ७४ वर्ष से कुछ ऊपर, डेनमार्क, संयुक्त राज्य अमरीका, चैकोस्लोवाकिया तथा न्यूजीलैण्ड में ७३ से ७४ वर्ष के बीच में।

इसके अतिरिक्त १९ अन्य देशों में आयु सीमा स्त्रियों के लिए ७० वर्ष या इससे अधिक है। इस प्रकार विश्व में २८ ऐसे

*ये आँकड़े 'संयुक्त राष्ट्र जनांकिकीय वर्ष पुस्तक—१९६३' से लिये गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश हैं जहाँ स्त्रियों की श्रायु सीमा ७० वर्ष या उससे ऊपर है।

श्राज जो बालक जन्म लेते हैं उनकी श्रायु सीमा स्वीडेन में ७२ वर्ष है। नीदरलैण्ड श्रौर नार्वे में ७१ वर्ष से कुछ ऊपर है।

तीन ही श्रन्य देश हैं डेनमार्क, इजराइल श्रौर श्राइसलैण्ड जहाँ पुरुषों की श्रायु सीमा ७० या उससे ऊपर है। इस प्रकार जहाँ स्त्रियों की श्रायु सीमा २८ देशों में ७० श्रौर उससे ऊपर है वहाँ पुरुषों की ७० या उससे ऊपर केवल ६ देशों में ही है।

सन् २००० में जनसंख्या (मिलियन में)

प्रदेश	१९६०	१९७०	१९८०	१९९०	२०००
पूर्वी एशिया					
मध्यम विचर संख्या	७९३	९१०	१०३८	११६३	१२८४
वर्त्तमान प्रवृत्तियों के बने रहने पर	७९३	९४१	११३९	१४१९	१८०३
दक्षिण एशिया					
मध्य विचर संख्या	८५८	१०९०	१३६६	१६७७	२०२३
वर्त्तमान प्रवृत्तियों के बने रहने पर	८५८	१०९२	१४१८	१८९८	२५९८
योरोप					
मध्यम विचर संख्या	४२५	४५४	४७९	५०४	५२७
वर्त्तमान प्रवृत्तियों के बने रहने पर	४२५	४६०	४९६	५३३	५७१
सोवियत रूस					
मध्यम विचर संख्या	२१४	२४६	२७८	३१६	३५३
वर्त्तमान प्रवृत्तियों के बने रहने पर	२१४	२५३	२९५	३४५	४०२
श्रफ्रीका					
मध्यम विचर संख्या	२७३	३४६	४४९	५८७	७६८
वर्त्तमान प्रवृत्तियों के बने रहने पर	२७३	३४८	४५८	६२०	८६०
उत्तरी श्रमरीका					
मध्यय विचर संख्या	१९९	२२७	२६२	३०६	३५४
वर्त्तमान प्रवृत्तियों के बने रहने पर	१९९	२३०	२७२	३२५	३८८
लैटिन श्रमरीका					
मध्यम विचर संख्या	२१२	२८२	३७४	४८८	६२४
वर्त्तमान प्रवृत्तियों के बने रहने पर	२१२	२८४	३८७	५३७	७५६
श्रौशनिया					
मध्यम विचर संख्या	१५.७	१८.७	२२.६	२७.०	३१.९
वर्त्तमान प्रवृत्तियों के बने रहने पर	१५.७	१८.४	२२	२६.७	३२.५
विश्व की कुल संख्या					
मध्यम विचार संख्या	२९९०	३४७४	४२६९	५०६८	४९६५
वर्त्तमान प्रवृत्तियों के बने रहने पर	२९९०	३६२६	४४८७	५७०४	७४१०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचिवालय समाचार

शिक्षा

स्कूल भवन निर्माण कार्यक्रम

लैटिन अमरीका में कुछ ऐसे कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिनमें अगले कुछ वर्षों में २५०००००००० डॉलर का खर्च होगा। लैटिन अमरीका में स्कूल निर्माण के प्रादेशिक केन्द्र द्वारा मैक्सिको में प्रकाशित एक अध्ययन पुस्तक से यह पता चलता है। यह पूर्वानुमान यह सूचना देता है कि प्रारम्भिक शिक्षा के सुधार और विस्तार सम्बन्धी अभियान को विश्व के इस प्रदेश में कितना असाधारण प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

मैक्सिको का यह केन्द्र मैक्सिको सरकार, यूनैस्को और अमरीकी राज्यों के संगठन के संयुक्त तत्वावधान में स्थापित किया गया था। इसमें यह आकलन किया है कि अगले १० वर्षों में स्कूल आयु के सभी बच्चों को ले सकने के लिए आवश्यक ५०००० कक्षाओं का निर्माण करने के लिए ४००००००० ०० डालर की आवश्यकता होगी। इस प्रदेश में जन-संख्या की वृद्धि तीन प्रतिशत है। यह दर विश्वभर में सबसे अधिक है।

केन्द्र के द्वारा प्रकाशित अभिलेख में राष्ट्रीय स्कूल निर्माण योजनाओं की वर्तमान स्थिति के सम्बन्ध में इस कार्य की अधिकारी तकनीकी संस्थाओं योजनाओं खर्चे और जलवायु तथा स्थानीय सुलभता के अनुसार चुनी हुई सामग्री के सम्बन्ध में सूचना दी गई है। विचारों और तथ्यों के विनिमय को प्रोत्साहन देने के लिए इस अध्ययन में ४७ वस्तु सम्बन्धी प्रायोजनाएँ हैं जिनमें उनकी महत्वपूर्ण विशेषताओं को सूचित किया गया है। इसमें राष्ट्रीय योजनाओं के सम्बन्ध में २६ रिपोर्टों का विस्तृत विश्लेषण दिया गया है। इनके बीच सबसे महत्वपूर्ण है कोलम्बिया की योजना, जिसमें अगले दस वर्षों में चालीस हजार कक्षाओं का निर्माण किया जाना है। इक्वादोर, जहां ग्यारह हजार कक्षाओं और पाँच हजार शिक्षकों के घरों के निर्माण की योजना है और मैक्सिको जहाँ संख्या ५५००० कक्षाओं और १६००० शिक्षकों के घरों की है।

इस अध्ययन में इन कठिनाइयों का भी निर्देश किया गया है, जिनसे निर्माण कार्य रूकता है या धीमा पड़ता है इनके अन्तर्गत बजट सम्बन्धी राशि बाहरी सहायता प्राप्त करने में देर और योजनाओं का सर्वेक्षण करने वाले विशेष सर्वेक्षण करने वाले का अभाव सभी सम्मिलित हैं।

लैटिन अमरीका के विभिन्न भागों से शिक्षा जानकारों, वास्तुविदों और सरकारी अधिकारियों के समायोजन में शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने लिए उपयुक्त भवनों की आयोजना में उठने वाली अनेकों तकनीकी समस्याओं को निश्चित किया गया है।

युवक सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय समिति

महासम्मेलन ने अपने तेरहवें अधिवेशन में यूनैस्को के युवक कार्यक्रम के आयोजन और संचालन में महानिदेशक को सहायता देने के लिए युवक सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय समिति के निर्माण को अधिकृत ठहराया था।

यह समिति परामर्शक होगी। महानिदेश द्वारा नियुक्त २४ सदस्य होगे। वे इस प्रकार चुने जाएँगे कि विभिन्न प्रदेशों और युवकों की स्कूल बाह्य शिक्षा की विभिन्न प्रवृतियों का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व करने के साथ-साथ योग्यता भी सम्मिलित होगी।

इस समिति के सदस्य निम्न प्रकार के संस्थाओं के होंगे। युवकों की स्कूल बाह्य शिक्षा से सम्बन्धित सरकारी नौकरियाँ :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूल वाह्य शिक्षा और युवक कार्यों से सम्बन्धित प्रमुख संस्थाएँ। उपयोगी शिक्षा सम्बन्धी कार्य में लगे हुए और विश्व भर में लोगों के साथ सम्पर्क स्थापित करने में यूनैस्को को सहायक होने की क्षमता वाले गैर सरकारी संगठन स्कूल बाह्य कार्यवाहियों से सम्बन्धित संस्थाओं के प्रयत्नों के समायोजन को प्रोत्साहन देने के लिए स्थापित राष्ट्रीय और प्रादेशिक संगठन।

इस समिति के सदस्यों का कार्य समय चार वर्ष होगा। १९६५ में महानिदेशक १२ ऐसे सदस्यों की नियुक्ति भी करेंगे जिनका कार्यकाल उनकी नियुक्ति के दो वर्ष बाद समाप्त हो जाएगा। परन्तु इस कार्यकाल को आगे बढ़ाया जा सकेगा। महानिदेशक के एक या अधिक प्रतिनिधि समिति पर कार्य करेंगे लेकिन उन्हें वोट देने का अधिकार नहीं होगा। समिति का सचिवालय यूनैस्को द्वारा दिया जायगा।

इस समिति की बैठक दो वर्ष में एक बार होगी जिसको महानिदेश संयोजित करेंगे और उन्हें यह अधिकार होगा कि कुछ लोगों को प्रेक्षकों के रूप में बुला सकें। समिति के कार्याधिकारी, अध्यक्ष उपाध्यक्षऔर संवाददाता होंगे जो प्रत्येक अधिवेशन में चुने जाएँगे। इसके साथ ही महानिदेशक का प्रतिनिधि औरसचिव का प्रतिनिधि भी होगा।

समिति कार्यविधि के नियम स्वीकृत करेगी जो महानिदेशक की स्वीकृति के लिए प्रस्तुत किए जाएंगे। प्रत्येक अधिवेशन के बाद समिति के कार्याधिकारी महानिदेशक को एक रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे।

विश्व शिक्षा का दृश्यपटल

"यूनैस्को आंकिकी वर्ष पुस्तक १९६३' अभी हाल में अंग्रेजी और फ्रांसीसी में प्रकाशित हुई है। इसका आधा भाग शिक्षा आँकड़ों से सम्बन्धित है।

१९६० में विश्व में ४२५ मिलियन विद्यार्थी थे। स्कूल पूर्व शिक्षा में १७ मिलियन बच्चे थे और २ मिलियन युवकों को विशेष शिक्षा मिल रही थी। सब मिलाकर वे विश्व की ५ से १९ वर्ष की जनसंख्या के लोगों का ४४ प्रतिशत थे। विद्यार्थियों में ७९ प्रतिशत प्राइमरी स्कूलों में थे, १८ प्रतिशत माध्यमिक स्कूलों में और ३ प्रतिशत उच्च शिक्षा संस्थानों में। (इन आंकड़ों में चीनमुख्य भूमिसम्मिलित नहीं हैं)

१९५० से १९६० तक सभी स्तरों में विद्यार्थियों की कुल संख्या ६५ प्रतिशत बढ़ गई। ६० प्रतिशत प्राइमरी शिक्षा के लिए ८७ प्रतिशत माध्यमिक शिक्षा में और ८४ प्रतिशत उच्च शिक्षा में। एशिया और अफ्रीका में विशेष रूप से बहुत अधिक वृद्धि हुई—१११ प्रतिशत और १०३ प्रतिशत।

अब लगभग २००००० विद्यार्थी अपने देश से बाहर जाकर ७५ विभिन्न देशों में अध्ययन कर रहे हैं। इन विद्यार्थियों का ९।१०वाँ भाग निम्नलिखित देशों में है: आस्ट्रिया, जर्मन संघ गणराज्य, बेल्जियम, फ्रांस, आयरलैण्ड, इटली, इंगलैंड, स्विटजरलैण्ड, आस्ट्रेलिया, संयुक्त राज्य अमरीका, जापान, मैक्सिको, सेनेगल सीरिया और संयुक्त अरब गणराज्य।

भारत में यूनैस्को विशेषज्ञ

भारत सरकार द्वारा स्थापित शिक्षा आयोग के सदस्यों के रूप में फ्रांस, जापान और सोवियत रूस के तीन शिक्षा जानकार भारत में काम कर रहे हैं। यूनैस्को ने इन विशेषज्ञों को यहां भेजा है: मिस्टर जॉन टामस, फ्रांस के शिक्षा महा निरीक्षक, यूनैस्को के भूतपूर्व सहायक महानिदेशक सहातोषी ईहारा, वाजेदा विश्वविद्यालय के विज्ञान और औद्योगिकी के प्रथम विभाग के प्रोफेसर; एस० टी० शुमोव्स्की उच्चतर और विशेष माध्यमिक शिक्षा मन्त्रालय के उपाय-विज्ञान खण्ड के निदेशक तथा मास्को विश्वविद्यालय में भौतिकी के प्रोफेसर यूनैस्को के शिक्षा विभाग के सदस्य मिस्टर जेम्स एफ० मकडूगल आयोग के सहायक सचिव के रूप में चुने गये हैं।

इस आयोग का कार्य यह है कि कम से कम समय में एक संतुलित समेकित और उपयुक्त पद्धति का निर्माण किया जाए जो राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों में सशक्त योग दे सके।

प्राकृतिक विज्ञान

अन्तर्राष्ट्रीय संगणन केन्द्र

अन्तर्राष्ट्रीय संगणन केन्द्र संयुक्त राष्ट्र की आर्थिक और सामाजिक परिषद और यूनैस्को महासम्मेलन के छठे अधिवेशन की संस्थाओं के अनुसार स्थापित की गई थी। इसका प्रयोजन था, यांत्रिक संगणन के आधुनिक तरीकों को प्रोत्साहन देना और तरीकों तथा संगणन यंत्रों में सुधार करने के सम्बन्ध में शोध को केन्द्रित करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

° नवम्बर १९६१ में यह केन्द्र स्थायी रूप से स्थापित हो गया और जनवरी १९६२ में इसकी पहली सभा यूनैस्को भवन पेरिस में हुई।

दूसरी महा सभा रोम में नवम्बर १९६४ में हुई। इसमें १३ सदस्य देशों (अर्जेन्टीना, बेलिजयम, फ्रांस, ग्रीस, इजराइल, इटली जापान, लीबिया मैक्सिको और संयुक्त अरब गणराज्य) में से १० प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। यूनैस्को का प्रतिनिधित्व वैज्ञानिक शोध में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग खण्ड के अध्यक्ष मिस्टर पेरे विटोरिया ने किया।

१० असदस्य देशों (ब्राजील, डेनमार्क, भारत, ईरान, मुनाको, पेरू, फिलीपाइन, स्विटजरलैण्ड, संयुक्त राज्य अमरीका और वैनेजुएला) तथा १९ अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से प्रेक्षक आए थे।

फ्रांस के प्रोफेसर लेलॉ प्रशासकीय परिषद के अध्यक्ष चुने गए जिसमें ग्रीस, इटली, जापान और संयुक्त अरब गणराज्य के भी सदस्य हैं। फ्रांस के एक गणितज्ञ प्रोफेसर सी बर्ज केन्द्र के निदेशक चुने गए।

सूचना के स्वत: आकलन सम्बन्धी एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी की योजना केन्द्र के द्वारा बनाई जा रही है। उन प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण मिलेगा जो अपने अपने देशों में इसी प्रकार की गोष्ठियाँ आयोजित करेंगे। आयोजना विभिन्न देशों में जन-प्रशासन सूचना की तैयारी के सम्बन्ध में छोटे छोटे समय की गोष्ठियों के विभिन्न देशों में (इजराइल, मैक्सिको और नीदरलैण्ड) और विभिन्न भाषाओं में (अंग्रेजी, स्पेनी) में करने की है।

१९६५ में दो वाद गोष्ठियाँ आयोजित की जाएँगी। एक सूचना की तैयारी के आर्थिक पक्ष में और दूसरी कार्य-चालन शोध में गणितीय नमूनों के सम्बन्ध में।

केन्द्र में एक संगणना प्रयोगशाला है और एक तकनीकी सलाहार व्यवस्था जिसका उपयोग सदस्य देश करेंगे। केन्द्र अंग्रेजी और फ्रांसीसी भाषा में त्रैमासिक पत्रिका निकलती है और अंग्रेजी में एक वृत पत्रिका भी। इसमें संगणन प्रयोग-शालाओ की अन्तर्राष्ट्रीय निर्देश का भी तैयार रहती हैं।

यूनैस्को महासम्मेलन के तेरहवें अधिवेशन में एक संस्ताव स्वीकृत हुआ था जिसमें महानिदेशक को केन्द्र की कार्यकारी परिषद के अध्यक्ष की सहमति से विशेषज्ञों की एक अन्तर्राष्ट्रीय समिति बनाने के लिए आमंत्रित किया गया था जो १९६५ के अन्त तक शिक्षा और वैज्ञानिक शोध के क्षेत्र में कारंवाइयों का विकास करने और सदस्य देशों को बढ़ाने तथा केन्द्र के भविय को सुरक्षित करने के उपायों के सम्बन्ध स रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी।

"प्रगति का जाल"

संयुक्त राष्ट्र सम्मेमन में दिए गए सुझावों की प्रतिक्रिया स्वरूप और संयुक्त राष्ट्र विकास दशक के अन्तर्गत महासमेलन में पिछले वर्ष प्राकृतिक विज्ञानों और विकास के लिए उनके उपयोग के क्षेत्र में यूनैस्को के कार्यक्रम को विस्तृत और गहन बनाने का निश्चय किया। यह संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन अल्प उन्नत क्षेत्रों के लाभ के लिए विज्ञान और औद्योगिकी के उपयोग के सम्बन्ध में और फरवरी १९६३ में हुआ था।

इस कार्यक्रम का निर्माण पहले तो राष्ट्रीय, प्रादेशिक, सरकारी और गैर सरकारी संगठनों के बीच वैज्ञानिक-शोध और अभिलेखल में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहन देने के लिए किया गया। अगले कुछ वर्षों में जिन प्रमुख क्षेत्रों में सहयोग किया जाएगा, वे ये होंगे : ज्योति और भभौतिकी, जल विज्ञान (अन्तर्राष्ट्रीय जल वैज्ञानिक दशक १९६५ से १९७५) सागर मापन, भू-पृष्ठ की भौतिकी (भूकम्प इंजीनियरी, मस्तिष्क शोध और कोशिका शोध।

दूसरे इसका उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग को बढ़ावा देने और विकास शील देशों में विज्ञान और औद्योगिकी के उपमोग को बढ़ावा देने का है। शोध के संगठन और इस कार्य के लिए आवश्यक वैज्ञानिक कर्मी वर्ग को प्रशिक्षण देने को अग्रता दी जाएगी।

राष्ट्रीय वैज्ञानिक कार्यक्रम के ये दो पक्ष यूनैस्को द्वारा अभी हाल में प्रकाशित एक पुस्तिका में वर्णित हैं। इस पुस्तिका का "प्रगति का जाल" है और इसे डैनियल वर्हमन ने लिखा है।

लेखक यूनैस्को सचिवालय के सदस्य हैं। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग से लाभ उठाने वाले यूनैस्को की सहायता से विभिन्न प्रदेशों में विज्ञान की विविध शाखाओं में की जाने वाली कार्य-वाइयों का बड़ा ही सजीव और तथ्यपरक विवरण प्रस्तुत किया है। उसकी रिपोर्ट स्वत: प्रेक्षण और विशेषज्ञों के साथ की गई चर्चाओं पर आधारित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरण के लिए ग्रौद्योगिकी के बम्बई संस्थान का विवरण "इंजीनियर का भारत" शर्षक से लिखा गया है ग्रौर इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार एक प्राचीन सभ्यता ग्रपने को ग्राधुनिक तकनीकों के ग्रनुकूल बना रही है।

"नाम के ग्रतिरिक्त ग्रौर सब गुणों में ग्रन्तर्राष्ट्रीय विश्व-विद्यालयों" लेख में विषय है उन वैज्ञानिक दृष्टि से विकसित देशों का योगदान, जो ग्रपने विश्वविद्यालयों ग्रौर प्रयोगशालाग्रों में विकासशील देशों के तरुण शोधकर्ताग्रों को प्रशिक्षण दे रहे हैं।

दूसरे ग्रध्यायों में विभिन्न प्रयोगों का वर्णन किया गया है। जैसे ट्युनिमिया के एक शोध केन्द्र में इंजीनियरों द्वारा खारे जल को सिंचाई के लिए प्रयोग करने का प्रयोग :—जिन प्रदेशों में भूकम्प बहुत ग्राते हैं वहाँ पर भूकम्प रोधी भवनों का निर्माण करके भूकम्प की हानि को सीमित करने से सम्बन्धित ग्रन्तर-राष्ट्रीय कार्य; ग्रौर हिममहासागर में सागर को विशाल सम्भव संसाधनों का ग्रभिलेखन ग्रौर विश्लेषण करने में लगे हुए प्रयोग-शाला जहाजों का कार्य।

जो कार्यवाइटां डेनियल वर्हमन ने बतलाई है वे ग्रन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का स्पष्ट प्रमाण है जिस पर १९६५ में संयुक्त राष्ट्र सबका ध्यान ग्राकर्षित करेगा।

"प्रभाव"

प्रभाव के ग्रन्त में हार्वर्ड विश्वविद्यालय में जनसंख्या ग्रध्ययन केन्द्र के निदेशक रोजर रेवल ने एक लेख सागर मापन शोध के सम्बन्ध में लिखा है। इसका शीर्षक है, "महासागर विज्ञान ग्रौर मनुष्य" (खण्ड १४ ग्रंक ३)

इस ग्रंक में रिची काल्डर के द्वारा "विज्ञान का सामान्य ग्रवधारण नामक लेख भी है। रिची काल्डर प्रख्यात विज्ञान लेखक हैं। मिस्टर काल्डर ने ग्राज के वैज्ञानिकों के बीच एक सुखद प्रवृति का उल्लेख किया है कि वे ग्रपने ग्रध्ययन क्षेत्रों को संकरा करते जा रहे हैं ग्रौर ग्रपनी निजी भाषा का ग्राविष्कार कर रहें हैं। सामान्य व्यक्ति को यह लगता है कि विज्ञान एक दूसरी दुनिया है ग्रौर इसलिए ग्रौर भी भनायक है क्योंकि समझ में नहीं ग्राती। फिर भी जैसा वे कहते हैं, हमारे जीवन, हमारी ग्राशाएँ ग्रौर हमारा जीवन ही विज्ञान के प्रयोग पर निर्भर है। सामान्य जनता को ऐसी भाषा में सूचना प्राप्त करने का ग्रधिकार है जिसे सब समझते हैं।

प्रमुख लेख में यूनैस्को के उपमहानिदेशक मिस्टर मैलकाम एस० ग्रादिसेशिया ने ग्रफीका में वैज्ञानिक शोध के विकास सम्बन्धी लागोस ग्रायोजना का वर्णन किया है ग्रौर ग्रपना मत प्रकट किया है। इस साहसी ग्रायोजना की सफलता ग्रन्त में ग्रफीका के द्वारा स्वत: निश्चित नियति ग्रौर ग्रफीका के बाहर के लोगों की सहायता पर निर्भर है।

सामाजिक तथा मानव विद्याएँ ग्रौर सांस्कृतिक कार्यवाइयाँ

सामाजिक ग्रौर मानव विद्याग्रों में शोध प्रवृत्तियाँ

ग्रन्तर्राष्ट्रीय समाज विज्ञान जरनल का हाल के ग्रंक (खण्ड १६ ग्रंक ४, १९६४) में सामाजिक ग्रौर मानव विद्याग्रों में शोध की प्रमुख प्रवृत्तियों का सर्वेक्षण करने की समस्याग्रों की चर्चा है।

१९६२ में महासम्मेलन में इन प्रवृत्तियों का ग्रध्ययन करवाने का एक प्रस्ताव स्वीकार किया था। पिछले वर्ष विशेषज्ञों के एक दल की बैठक इस ग्रध्ययन के लक्ष्य कार्य क्षेत्र ग्रौर तरीकों की परिभाषा प्रस्तुत करने के लिए हुई थी। जर्नल के इस ग्रंक में जो सामग्री दी गई है वह उस बैठक में प्रस्तुत ग्रनेक पत्रों में से ली गई है प्रकाशित लेखकों के लेखक इस प्रकार हैं।

पियर ग्रागर (फ्रांस), यूनैस्को के प्राकृतिक विज्ञान विभाग के भूतपूर्व निदेशक, ग्रब ग्रन्तरिक्ष शोध के योरोपीय केन्द्र के महासचिव; के० ग्रो० डाइक (नाइजीरिया) ग्रफीकियों की ग्रन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस के ग्रध्यक्ष ग्रौर प्रख्यात इतिहासकार, जूलियन हाकफेल्ड (पौलैण्ड) वारसा विश्वविद्यालय में समाज विज्ञान के ग्रध्यक्ष ग्रौर यूनैस्को समाज-विज्ञान विभाग के उपनिदेशक, दयाकृष्ण (भारत) राजस्थान विश्वविद्यालय के दर्शन के प्रोफेसर ग्रास्कर लंग (पौलैण्ड) पोलिश राज्य परिषद् के उप ग्रध्यक्ष, वारसा विश्वविद्यालय के ग्रर्थशास्त्र के प्रोफेसर ग्रौर पोलिश विज्ञान ग्रकादमी के सदस्य, पाल लजर्स फैल्ड (संयुक्त राज्य ग्रमरीका) कोलम्बिया विश्वविद्यालय में समाज-विज्ञान के प्रोफेसर ग्रौर ग्रमरीकी समाज वैज्ञानिक संस्था के भूतपूर्व ग्रध्यक्ष लार्ड लेवी स्ट्रार्स (फ्रांस) कालेज द फ्रांस में सामाजिक मानव विज्ञान के ग्रध्यक्ष, जांपियाजे (स्विटजरलैण्ड) जिनेवा विश्व-विद्यालय में प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के ग्रध्यक्ष ग्रौर ग्रन्तर्राष्ट्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा ब्यूरो के अध्यक्ष, जोजे लुई रोमेरे (अर्जेन्टीना) बोन एअर विश्वविद्यालय में दर्शन और साहित्य विभाग के डीन, ए० ए० जोरीकिन (मास्को के सोवियत विज्ञान अकादमी में दर्शन संस्थान में अध्ययन के निदेशक ।

समाज विज्ञान शब्दावली

यूनैस्को के तत्वावधान में समाज विज्ञान का एक शब्दकोश अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ है (समाज विज्ञान शब्दकोष तैविस्टोक प्रकाशन, ११ न्यू फैटरलेन लन्दन, ई० सी० ४) इसको नोटिंघम विश्वविद्यालय में समाज विज्ञान के प्रोफेसर जूलियस बोल्ट और विस्कौंसिन के बेलोआट कालेज के डीन विलियम एल काब ने संयुक्त रूप से बनाया है । इस खण्ड में ७५० पृष्ठ हैं और इसमें समाज-विज्ञान आर्थिक और राजनीतिक विज्ञान, सामाजिक मानव-विज्ञान और सामाजिक मनोविज्ञान के हजार से अधिक मूल शब्द हैं । इंगलैण्ड और संयुक्त राज्य अमरीका के इन शाखाओं के २७० विशेषज्ञों ने इस शब्दकोष में योग दिया है ।

इस शब्दकोष का प्रकाशन सामाजिक विज्ञान शब्दावली के मानकीकरण सम्बन्धी यूनैस्को कार्यक्रम का ही एक अंश है । फ्रांसीसी, स्पेनी और अरबी से प्रारम्भ करके अन्य भाषाओं में भी इसी प्रकार के शब्दकोष प्रकाशित किए जाएँगे ।

विश्व के पुस्तकालयों की संख्या

यूनैस्को की अंक शास्त्रीय वर्ष पुस्तक १९६३ अभी हाल में प्रकाशित हुई है। इसके अनुसार अब ७२ देशों में राष्ट्रीय पुस्तकालय हो गए हैं जिनका कार्य अपने-अपने राष्ट्र के दाय के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त करना और उनको बचा रखना है। संयुक्त राज्य कांग्रेस के पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या सबसे अधिक है । इसमें १९६० में १२०७५००० पुस्तकें थीं । सोवियत रूस में १६ राष्ट्रीय पुस्तकालय हैं, जिनमें कुल मिलाकर ६ करोड़ २० लाख पुस्तकें हैं । फ्रांस की राष्ट्रीय पुस्तकालय में ६० लाख पुस्तकें हैं । अन्य प्रमुख देशों में ब्रिटेन में तीन राष्ट्रीय पुस्तकालय और ९० लाख पुस्तकें हैं, जापान के राष्ट्रीय पुस्तकालय में ५२००००० पुस्तकें हैं। रोमानिया में २ पुस्तकालय और ८३००००० पुस्तकें हैं । और इटली के ७ पुस्तकालयों में ८० लाख पुस्तकें हैं । जिन देशों में ६० लाख पुस्तकों से कम हैं वे हैं, जर्मन संघ गणराज्य और पूर्व जर्मनी, जिनमें ४० लाख से कम हैं वह हैं चेकोस्लोवाकिया और २० लाख से कम वालों में दूसरे योरोपीय देश तथा चिली भारत न्यूजीलैण्ड और इजराइल हैं ।

वर्ष पुस्तक में विश्वविद्यालय और कालेजों के पुस्तकालयों, स्कूल पुस्तकालयों विशेष पुस्तकालयों और सामान्य पुस्तकालयों की संख्या भी दी है । विशेष महत्त्व की संख्याएं हैं जापान की विश्वविद्यालय पुस्तकालयों की (७४२ पुस्तकालयों में ३ करोड़ ५० लाख पुस्तकें) इंगलैण्ड में ६३२ पुस्तकालयों में २ करोड़ १० लाख पुस्तकें और यूगोस्लाविया तथा कनाडा जिनमें ३०० पुस्तकालयों से अधिक हैं ।

स्कूल पुस्तकालयों के सम्बन्ध में कुछ देशों में महत्त्वपूर्ण परिणाम रहे हैं । उदाहरण के लिए ईराक में ३२७५ स्कूल पुस्तकालय है, चीन (तैवान) में १८४३, जार्डन में १२४३ और संयुक्त अरब गणराज्य में ९२६ ।

सामान्य पुस्तकालयों के क्षेत्र में इण्डोनेशिया बहुत ऊपर है । उसमें १६३४ पुस्तकालय है और १० लाख से ऊपर पुस्तकें हैं । इजरायल में ६०० पुस्तकालय हैं और २५ लाख के लगभग पुस्तकें और कांगो (लियोपोल्डविल) में ४२७ पुस्तकालय हैं और ५ लाख से कुछ ऊपर पुस्तकें ।

जनसंचारण

नये शिक्षा तकनीकों के लिए यूनैस्को की प्रयोगात्मक प्रायोजना (डकार)

जन शिक्षा का अर्थ यह है कि सामान्य जनता को ऐसी शिक्षा सम्बन्धी कार्रवाई से सम्बद्ध करना जो उनकी विशेष आवश्यकताओं और समस्याओं के अनुकूल है । इसमें व्यक्तियों का ध्यान नहीं रखा जाता । समुदाय, जनजाति या गांव के द्वारा अथवा किस फैक्टरी या नगर के किसी खण्ड के समूहों का ध्यान रखा जाता है । इसमें व्यक्ति की प्रगति व्यक्तिगत रूप में नहीं होती वरन् उसके अपने समूह में उसके अपने मानवीय और सामाजिक संदर्भ में होती है । शिक्षा का अर्थ होता है स्त्रियों और पुरुषों को अपने समुदाय में साथ-साथ शिक्षित करना । उन्हें यह बतलाना कि वे अपनी भौगोलिक आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों की सीमाओं के भीतर कैसे अपने जीवन को अधिक अच्छा बना सकते हैं ।

जो साक्षरता कार्यक्रम नागरिक शिक्षा और रहन-सहन की परिस्थितियों में सुधार करने वाले तकनीकी प्रशिक्षण को सम्मिलित नहीं करता कह व्यर्थ की वस्तु है ।

आज जन शिक्षा में तकनीकों का विशेष कर टेलीविजन, रेडियो, फिल्म, फिल्म पट्टियों, विज्ञापनों और सचित्र मसौदों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे शिक्षण के दृश्य-श्रव्य उपकरणों का प्रयोग किया जा रहा है ।

दृश्य-श्रव्य साधनों का विशेष रूप से टैलीविजन का उपयोग करने वाले कार्यक्रमों की आयोजना किस प्रकार बनाई जाए कि अफ्रीका की विशेष सामाजिक और शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। इस प्रकार तकनीकी कठिनाइयाँ जैसे कि जलवायु सम्बन्धी परिस्थितियाँ, विद्युत का अभाव और शिक्षकों की कमी जो अफ्रीका में इन तरीकों के प्रयोग में बाधा पहुँचाते हैं, दूर की जा सकती हैं ।

इन प्रश्नों का उत्तर अफ्रीकी देश में किए गए एक प्रयोग के आधार पर ही मिल सकता है । और इसीसे यूनैस्को में सेनेगल में शिक्षा सम्बधी टेलीविजन और वयस्क शिक्षा के लिए दृश्य-श्रव्य सामग्री के उत्पादन और मूल्यांकन के सम्बन्ध में एक प्रयोगात्मक प्रायोजना चलाने का निश्चय किया ।

यह नया प्रयोगात्मक टेलीविजन स्टेशन साक्षरता और भाषा शिक्षण, स्वास्थ्य शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षण, कृषि और ग्रामीण जनसंख्या के लिए सामाजिक कल्याण सम्बन्धी कार्यक्रम प्रसारित करेगा ।

यह प्रयोगात्मक प्रायोजन ६ वर्षों तक चलेगी और इसमें पश्चिम अफ्रीका की परिस्थितियों में इस प्रकार के कार्यक्रम को तैयार करने और प्रसारित करने के उपस्करों के कार्यचालन की परीक्षा करने का अवसर मिलेगा । यह टेलीविजन स्टेशन जन शिक्षा सम्बन्धित सभी लोगों का मिलन स्थल होगा और इसमें प्रौढ़ शिक्षा में दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रदर्शन केन्द्र दृश्य-श्रव्य सामग्री को तैयार करने और उपयोग के लिए अफ्रीकी विशेषज्ञों को प्रशिक्षण देने का केन्द्र तथा इस क्षेत्र में शोध की सुविधाएं देने का केन्द्र भी होगा ।

Published by the Director UNESCO South Asia Science Co-operation Office, N-1, Ring Road, New Delhi and printed by Rakesh Press, Delhi. (Unesco Vritta Patrika, Vol. 11, No. 2, February, 1965.
Reproduction authorised : Credit line should read UNESCO.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

UNESCO

यूनैस्को वृत्तपत्रिका

यह समाचार पत्र संयुक्त राष्ट्रीय शैक्षणिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संस्था के विश्व भर के कार्यों का मासिक प्रतिवेदन है

न-१, रिंग रोड
नई देहली

मासिक बुलेटिन मार्च, १९६५ अंक ११, संख्या ३

गुरुकुल पुस्तकालय कांगड़ी

विषय सूची

१९६५ : अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष २

विज्ञान की अन्तर्राष्ट्रीय संभावनाएं
(नोरेयर एम० सिसाकिया) ३

कल्याण का आर्थिक पक्ष
(मालकम एस० आदिशेषिया) ६

विज्ञान और सामान्य मनुष्य [भाग २]
(रिची काल्डर) १२

विश्व भर में शिक्षा सम्बन्धी प्रगति १७

समाचार

शिक्षा १९
- शिक्षा की प्रादेशिक आयोजना
- प्रौढ़ शिक्षा

प्राकृतिक विज्ञान २०
- तटीय मरुस्थल

२२.५.६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९६५ : अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष

'हम संघर्षों की दुनिया में रहते हैं, और फिर भी वह दुनिया चलती आ रही है, निःसंदेह राष्ट्रों और व्यक्तियों के सहयोग के कारण। इस सहयोग के सम्बन्ध में बहुत कम ज्ञात है और बहुत ही कम चर्चा होती हैं परंतु संघर्ष की हर बात के बारे में बहुत ज्यादा कहा जाता है, और इसी से दुनिया में यह विचार भर गया है कि संघर्ष सतत चलते रहते हैं और हम नाश के कगार पर खड़े हैं। कदाचित अधिक सच्चा चित्र वह होगा जिसमें आज की दुनिया के सहयोग-तत्व सामने प्रस्तुत किये जायं और हमें यह विचार करने की प्रेरणा दी जाय कि दुनिया संघर्ष पर नहीं सहयोग पर टिकी हुई है।"

भारत के स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने इन्हीं शब्दों में संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित करते हुए विश्व-समुदाय का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित किया था कि देशों के बीच होने वाले वृहत सहयोगी कार्य के सम्बन्ध में मौन धारण कर लिया जाता है और उसके स्थान पर विश्व के संघर्ष की ओर बहुत अधिक जोर दिया जाता है।

फिर श्री नेहरू ने यह सुझाव दिया था कि संयुक्त राष्ट्र महासभा सभी देशों से प्रार्थना करे कि वे एक वर्ष शांति सम्बन्धी भाषणों के लिए नहीं "वरन् सभी क्षेत्रों में सहयोगी कार्रवाइयों को बढ़ाने के लिए लगायें। उनका विश्वास था कि सहयोग के लिए इस प्रकार एक वर्ष अर्पित करने से मनुष्य के विचार और कार्यशक्ति सहयोग के भाव की ओर प्रेरित हो सकते हैं, और अधिक सरलता से समस्याओं को सुलझाने और विश्व के संघर्षों को घटाने का वातावरण बन सकता है।

१९ दिसम्बर, १९६२ को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सर्व-सम्मति से इस अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष के विचार को स्वीकार किया और २१ नवम्बर, १९६३ को संयुक्त राष्ट्र की बीसवीं वर्ष १९६५ को अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष मनोनीत किया गया।

इस वर्ष को जुड़े हुए हाथों के प्रतीक और "सहयोग द्वारा शान्ति और प्रगति" का विषय ग्रहण करके मनाया जायगा। संयुक्त राष्ट्र के डाक प्रशासन द्वारा निकाले गए टिकटों और एक विशेष पदक द्वारा संयुक्त राष्ट्र की स्थापना का बीसवां वर्ष और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष मनाया जायगा।

संयुक्त राष्ट्र के विशिष्ट अभिकरणों, अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभिकरण, गैर सरकारी संगठनों और संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों से कहा गया है कि इस सहयोग वर्ष के लिए स्मारक योजनाओं से अपनी विशेष रुचियों और कार्रवाइयों को सम्बद्ध करें। सदस्य देशों से उन अनेकों बहुमुखी समझौतों की पुष्टि करने पर विचार करने को कहा गया है जो सभी सीमित क्षेत्र में ही लागू किए गए हैं जैसे सागर के सम्बन्ध में और मानव-अधिकार तथा संबम्धित क्षेत्रों के विषय में कानून।

यदि विश्व के अधिक-से-अधिक राष्ट्रिक अन्तर्राष्ट्रीय सह-योग की समस्याओं तथा उसकी उपलब्धियों उसकी आशाओं और सम्भावनाओं से अपने को अधिक प्रत्यक्षतः सम्बन्धित मानने लगेंगे तो अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष का लक्ष्य पूरा हो चुकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान की अन्तर्राष्ट्रीय संभावनाएं

[नोरेयर एम० सिसाकिया]

(अध्यक्ष यूनेस्को महासम्मेलन, तेरहवां अधिवेशन)

सभ्यता के इतिहास में विज्ञान हमेशा प्रगति की शक्ति रहा है। आज नयी सामाजिक परिस्थितियों में यह प्रत्यक्षतः उत्पादक शक्ति बन रहा है। विज्ञान और औद्योगिकी की उपलब्धियों के उपयोग से किसी-न-किसी रूप में प्रत्येक मानवीय कार्यवाही निकट रूप से सम्बन्धित है।

इस प्रकार दो समस्याओं का प्रमुख महत्व है, भौतिकी, रसायन और जीव-विज्ञान आदि विज्ञान की शाखाओं में सैद्धान्तिक मूल शोध का विस्तार और उत्पादन में विज्ञान का उपयोग।

जब गलवानी ने जीवित शरीरों में विद्युत तत्व का प्रसिद्ध आविष्कार किया था, उसके बाद से कितने ही दशकों बाद पहला विद्युत लैम्प बन सका था। आज कोई भी महत्वपूर्ण आविष्कार इतनी जल्दी उत्पादन की स्थिति तक पहुँच जाता है, कि आविष्कारक को भी महान् आश्चर्य होता है।

सभी लोग जानते हैं कि गणित के विकास का प्रभाव गणितीय तर्क-विज्ञान और साइबरमिटिक्स विद्युत यांत्रिकी की उपलब्धियों के साथ मिलकर संगणकों और स्वयंचालित यंत्र बनाते हैं जो विज्ञान और औद्योगिकी दोनों के ही इतने महत्वपूर्ण अंग हैं। सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक भौतिकी की उपलब्धियों ने ही मनुष्य को अणु की न्यूक्लीअर ऊर्जा का स्वामी बना दिया गया है, और अब उसको किस प्रकार ताप-न्यूक्लिअर प्रक्रियाओं पर नियन्त्रण प्राप्त करने में सहायता दे रहे हैं, जिससे वह शान्तिपूर्ण ऊर्जा के अनन्त स्रोत के रूप में प्रयुक्त किया जा सके।

आधुनिक विज्ञान की उपलब्धियों ने ब्रह्माण्ड के खोज का युग ला दिया है और इसमें सहायक हुए है, कृत्रिम उपग्रह, रॉकेट और अन्तरिक्ष यान और इससे विश्व के प्राकृतिक तत्वों के अधिक गहरे ज्ञान के आधार का निर्माण हो सका है; और इससे ऐसा लगता है, जैसे सौर-मण्डल के दूसरे ग्रह हमारे ग्रह के और निकट आ गए हैं। आधुनिक जीव-विज्ञान जीव-भौतिकी और सूक्ष्म जीव-विज्ञान के विकास में एण्टीबॉयटिक, विटामिन किण्वन और विभिन्न औषधियों से जो मानव-जीवन के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है, सम्बन्धित उद्योग की शाखाओं के विकास को आधार दिया है। इस प्रकार सैद्धान्तिक शोध की परिस्थितियाँ, व्यावहारिक वैज्ञानिक उपलब्धियों को प्रभावित करती है, तकनीकी प्रगति को सम्भव बनाती है और कभी-कभी ज्ञान की नयी शाखाओं और उत्पादन का निर्माण करती है।

जब आर्थिक स्वतन्त्रता संपूर्ण राजनीतिक स्वतन्त्रता की उपलब्धि के लिए अनिवार्य है तो आर्थिक प्रगति भी प्रत्येक देश में प्राकृतिक और व्यावहारिक विकास के बिना और परिणामों को व्यावहारिक रूप दिये बिना सोची नहीं जा सकती। प्रकृति के नियमित प्रारूपों का परीक्षण प्राकृतिक तत्वों पर मनुष्य के नियंत्रण को बढ़ाने वाले नये नियमों की खोज—जिससे कि वह प्राकृतिक संसाधनों को अधिक संगत रूप में उपयोग में ला सके और समृद्ध बना सके—यह सभी काम प्राकृतिक विज्ञानों का है। प्राकृतिक संसाधनों का ज्ञान विकासशील देशों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, जो अब औद्योगिक होते जा रहे हैं और अपनी कृषि व्यवस्था में परिवर्तन कर रहे हैं।

रसायन का विकास नितन्त अनिवार्य हो गया है। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान के द्वारा अधिक और अच्छे कपड़े बनते हैं, प्राकृतिक वस्तुओं की अपेक्षा अधिक मजबूत और अधिक कारगर नयी सामग्रियां बनती हैं, जिनसे खाद्य का संरक्षण हो सकता हैं और अधिक अच्छा खाना मिल सकता है। हाल के वर्षों में हम सभी को प्राकृतिक संयोगों के रसायन के विकास के बढ़ते हुए महत्व का ध्यान रहा है। उसके साथ ही जीव-रसायन संश्लेषण के तंत्र के अध्ययन और पौधों की तथा पशुओं की बीमारियों के नियन्त्रण के लिए प्रयुक्त रासायनिक तत्वों के धरती पर प्रयोग के महत्व का ज्ञान हो गया है।

अब उच्चकोटि की उत्पादनशीलता और कृषि की अधिक उत्पादनशीलता को बनाए रखना रासायनिक तत्वों के प्रयोग के बिना कठिन है। इसके साथ ही रसायनिक तत्वों के बिना समझे बूझे प्रयोग से मनुष्यों और पशुओं के स्वास्थ्य को खतरा होता है। इसीसे मृत्तिका जीव-विज्ञान और कोशिका जीव-विज्ञान तथा जीव-रसायन की समस्याएँ इतनी महत्वपूर्ण हैं, और उनका तत्काल परीक्षण होना चाहिए।

जीवित प्रकृति के नियमों के विस्तृत उपयोग सम्बन्धी नए औद्योगिक सिद्धान्त विशेष रूप से औद्योगिकी में निर्भरता और तन्त्रों तथा औद्योगिक पद्धतियों की प्रभावशालिता को बढ़ाने की समस्याए। इसी स्तर पर मस्तिष्क का जटिल अन्तर्शाखा अध्ययन विशेष महत्व की वस्तु बन जाता है।

विज्ञान और शिक्षा के बीच निकट संपर्क और हमारे आधुनिक समाज में विज्ञान का बढ़ते हुए योग के कारण यूनैस्को को विज्ञान को उतनी ही अग्रता देनी होगी जितनी अब तक शिक्षा को ही दी जाती थी। शिक्षा की प्रभावशालिता के सम्बन्ध में बात करना असंभव ही होगा, यदि उसके परिमाण तकनीकी और वैज्ञानिक आयोजनाओं से जुड़े हुए न हों और तकनीकी तथा वैज्ञानिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत न करते हों। इसी प्रकार शिक्षा का कारगर होना वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धि पर मिर्भर है।

अतीत में बहुत से खतरे बतलाए जाते रहे हैं और आज भी इन बातों को बहुत से लोग करते हैं कि पृथ्वी के ऊर्जा के स्रोत शीघ्रता से समाप्त होते जा रहे हैं। और हम लोग विस्तृत जनसंख्या के खिलाने में असमर्थ हो जायेंगे। प्राकृतिक विज्ञानों और औद्योगिकी वर्तमान उपलब्धियों ने इन डरों को दूर कर दिया है और दिखला दिया है कि निराशावाद की बातें निराधार हैं।

जैसा मैंने कहा है, भौतिकी में हाल की प्रगति ने ताप न्यूक्लिअर प्रतिक्रियाओं को नियन्त्रित करने के रास्ते खोल दिये हैं। इस समस्या का समाधान समस्त मानवता के लिए सभी समय तक ऊर्जा की सभी आवश्यकताओं को पूर्ण कर देगा। विश्व की समूची जनसंख्या के लिए पर्याप्त खाद्य संभरणों को जुटाने की सामर्थ्य के बारे में ये तथ्य प्रस्तुत किए जा सकते हैं। धरती की सम्पूर्ण कृषि-योग्य भूमि, मैदान और बाग मिलाकर १४ सौ मिलियन हैक्टर हैं। चराई की भूमि २६ सौ मिलियन हैक्टर है। अर्थात् यह सब मिलाकर समूचे स्थल क्षेत्र का ११ से १२ प्रतिशत है। हम मान लेते हैं कि २०वीं शताब्दी के अन्त तक यह आँकड़े ऐसे ही रहेंगे। उस समय तक इनके उत्पादन उसी स्तर तक पहुँच जायेंगे, जैसे अब भी अनेकों देशों में हैं, अर्थात् कृषि योग्य भूमि में प्रति हैक्टर तीक टन और चराई की भूमि में प्रति हैक्टर १ टन। यदि हम अपने आकलनों को इन न्यूनतम आंकड़ों पर भी आधारित करें तब भी २०वीं शताब्दी के अन्त तक समूचा उत्पादन मानक अन्न इकाइयों में सात हजार मिलियन टन होगा। और संयुक्त राष्ट्र द्वारा लगाए गए अनुमानों के अनुसार इस समय की पृथ्वी की जनसंख्या की आवश्यकता का दुगना होगा। इन आकलनों में महासागरों और सागरों के खाद्य संसाधन सम्मिलित नहीं हैं। वहीं पर पृथ्वी पर निर्मित और दैनिक द्रव्य का अधिकतर अंश पाया जाता है। अभी तक सागरों के जीव-वैज्ञानिक और खनिज संसाधनों का नाममात्र को ही उपयोग हुआ है। यह स्वाभाविक है कि पृथ्वी की शीघ्रता से बढ़ती हुई जनसंख्या का पूर्ण उपयोग करना चाहिए। विज्ञान और विज्ञान की द्रुत प्रगति और विभिन्न औद्योगिक विकासों के कारण यह अब सम्भव हो गया है। हाल के फ्रांसीसी फिल्म (सूर्यहीन विश्व) सागर और महासागर के संसाधनों की समृद्धि का पूरा ज्ञान कराती है और सागरीय जीवन की विशेषताएँ, विविधता और सौन्दर्य का भी दिग्दर्शन कराती है।

महासागरों की जीव-वैज्ञानिक समृद्धि प्रमुखत: खाद्य संसाधन हैं। वे प्रोटीनों का स्रोत हैं। जो अधिकतर खाद्य-पदार्थों में कम रहा करता है। वे पक्षियों और पशुओं के लिए भी मूल्यवान खाद्य हैं और अनेकों औद्योगिक प्रक्रियाओं का एक महत्वपूर्ण तत्व हैं। न्यूनतम आकलनों के अनुसार भी निकट भविष्य में महासागरीय जल-उत्पादनों की विश्व-प्राप्ति पचास मिलियन टन होगी। परन्तु यह कोई अन्तिम सीमा नहीं है। ये आँकड़े अत्यंत निकट भविष्य में प्रति वर्ष १०० मिलियन टन हो जा सकते हैं। पेरू का अनुभव जहां पिछले १० वर्षों में उसके मध्य भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में प्रशांत महासागर में पकड़ी जाने वाली मछलियाँ २०० गुनी हो गयी हैं, भावी संभावनाओं के प्रति विशेष संकेत करता है।

जल-संघटनों के द्वारा दैनिक द्रव्यों के उत्पादन सम्बन्धी नियमों का ज्ञान अनिवार्य है, यदि हम महासागर की समृद्ध जीव-वैज्ञानिक संसाधनों का उपयोग करना चाहें और उत्पादनशीलता को बढ़ाएँ। इस ज्ञान के बिना मछली पकड़ना या मछली पकड़ने के लिए स्थानों का पता लगाना असंभव हो जाएगा।

महासागरों के रासायनिक और खनिज संसाधन अनन्त हैं। सभी ज्ञात रासायनिक तत्व सागर जल में या महासागरों के तल में पाए जाते हैं। अभी तक अार्थशास्त्र और औद्योगिकी की वर्तमान परंपराओं के अनुसार सागर जल से केवल नमक, ब्रोमाइन, मैग्नीशियम और कैलशियम ही निकाला जाता है। परन्तु सागर और महासागर में लोहे और मग्नीज २०० हजार मिलियन टन है जबकि सागर तल में तेल और गैस के भण्डारों की तुलना महाद्वीपीय भण्डारों से की जा सकती है और यह भी सम्भव है कि उनसे अधिक ही हो।

सागरों और महासागरों के अन्दर और उनके खनिज तथा खाद्य संसाधनों का उपयोग बहुत-सी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं उठा देता है। यदि मछली पकड़ने के उद्योग को विकसित करना हैं, उपयोगी जातियों को विभिन्न जलवायुओं के के अनुकूल बनाना हैं, व्यर्थ के जीवों को हटाना है, और एक जाति से दूसरी जाति तक उद्योग को ले जाना है और क्षेत्र-क्षेत्र में ले जाना है तथा महासागर के संसाधनों को समाप्त होने से बचाना है और कच्ची सामग्री के नियमित स्रोत को बनाए रखना है तो इन समस्याओं का समाधान करना ही होगा। और इसमें यूनेस्को का महत्वपूर्ण भाग रहेगा।

दूसरे खण्ड में सागर जल के निर्खनिजीकरण से ताजे जल की मानवता की बढ़ती हुई माँग की पूर्ति की विस्तृत संभावनाएं उत्पन्न की जा सकती हैं। कुछ ही दिन पहले विश्व के अधिकतर भाग में जल की कोई कमी नहीं थी। इस समय ताजे जल की मांग बढ़ गयी है और इस सीमा तक बढ़ती जा रही है कि जल सम्बन्धी "अकाल" की समस्या उत्पन्न ही गयी हैं।

नगरों और ग्रामीण समुदायों के विस्तारण के लिए सार्वजनिक जल के संभरणों का आयोजन व्यक्तिगत उपभोग की वृद्धि के साथ ही चलता है। कृषि में अच्छी फसलों के लिए सिंचाई की आवश्यकता है इसका मतलब यह है कि अधिक-से-अधिक परिमाण में जल चाहिये। उद्योग विशेषतः रासायनिक उद्योग में अत्यधिक जल का प्रयोग होता है। उसी से जल का रूप और सागर जल के निस्यंदन का प्रश्न हमारे समय की सबसे महत्वपूर्ण वैज्ञानिक तकनीकी समस्याएँ हैं।

इन समस्याओं के समाधान के लिए परमाणु ऊर्जा का प्रयोग सबसे महत्व का है। अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और अनेकों देशों के वैज्ञानिकों द्वारा शोध से सागर जल की निर्खनिजीकरण शांतिपूर्ण उपयोगों के लिए परमाणु ऊर्जा के प्रयोग में एक प्रमुख लक्ष्य है। परमाणु ऊर्जा को अब मानव की भौतिक समृद्धि और सांस्कृतिक भण्डारों को नष्ट करने का सम्भाव्य अस्त्र नहो रहना चाहिए, वरन् मरुस्थलों को उपवनों में परिवर्तित करने और जल की मनुष्य की बढ़ती आवश्यकताओं की पूर्ति करने का साधन बनना चाहिए।

परन्तु सागर जल का निर्खनिजीकरण अब भी प्रति दिन के प्रयोग में नहीं आता। वर्त्तमान ताजे जल के संभरणों का संग्रह और संगत प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस समस्या के सफल समाधान का एक उदाहरण अस्वान उच्च बाँध का निर्माण है, जिसके द्वारा जल के कृषि सम्बन्धी और औद्योगिक प्रयोग और सस्ती जल-विद्युत की असीम सम्भावनाएँ उत्पन्न हो गयी हैं।

जल संभरण की समस्याएँ केवल इसी तथ्य के कारण जटिल नहीं हैं, कि आजकल जितने जल की आवश्यकता होती है, उतनी पहले कभी नहीं हुई। परन्तु इसलिए भी कि मनुष्य जिस जल को भाण्डागारों से निकाल लेता है, उसके स्थान पर दूषित जल ही उसमें जाने पाता है, जिसका अधिकांश विषैला होता है।

इस विषैलेपन के कारण पशु और वनस्पति के कुछ प्रकार नष्ट हो जाते है। उनकी उत्पादनशील को हानि पहुँचती है उनकी उर्वरता कम हो जाती है और उनकी सन्तति में उतनी अच्छी विशेषताएँ नहीं रहती। न्यूकिलअर अस्त्रों के प्रयोग के कारण अनेकों रेडियो—सक्रिय द्रव्य जल भण्डारों में गिर जाते हैं। इसीलिए सम्पूर्ण विश्व के लोगों के लिए परमाणु अस्त्रों के सभी प्रकार के परीक्षण को सम्पूर्ण रूप से रोक दिया जाना आवश्यक है। इसी से एक स्वच्छ वायु मण्डल, जल मण्डल और जीव-मण्डल के लिये संघर्ष सर्वाधिक महत्व की बात बन जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व-स्वास्थ्य-संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार जल द्वारा लायी गयी बीमारियाँ जिनमें टायफायड, पेचिश और हैजा आदि हैं प्रति वर्ष ५०० मिलियन लोगों को आक्रान्त करती है, और उनके कारण ५० लाख बच्चे मरते हैं। इस सम्बन्ध में अभी हाल के विश्व स्वास्थ्य सभा में यह निश्चय किया गया कि पीने के जल की स्वच्छता निश्चित करने के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम बनाए जाएँ। परन्तु छूत की बीमारियों को दूर करना केवल जल को दूषण से बचाने से ही नहीं हो सकता, वरन् उसके लिए कोशिका और पूरे शरीर में होने वाली जीव-रासायनिक और शरीर-वैज्ञानिक प्रक्रियाओं को भलीभाँति समझने की भी आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में संयुक्त राष्ट्र सरणी के विभिन्न संगठनों के बीच और अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों के बीच कार्यवाहियों के समायोजन का महत्व बढ़ता जा रहा है।

धरती विज्ञानों का विशाल और शीघ्रता से विकसित होने वाला वैज्ञानिक क्षेत्र ऐसा है, जहाँ अन्तर्राष्ट्रीय समायोजन विशेष रूप से आवश्यक है। आज भू-भौतिकी विशेषज्ञ इस बात पर सहमत हैं कि एक ही क्षेत्र में करवाए हुए प्रेक्षणों के द्वारा चाहे वह कितने ही सम्पूर्ण क्यों न हों, भू-पृष्ठ के विकास-सम्बन्धी नियमों का समझना नितान्त असम्भव है। केवल सन्तुलित और एक-सा प्रेक्षण, विश्व-भर में प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक प्रक्रिया का अध्ययन जिसमें सभी उपलब्ध तरीकों और तकनीकी साधनों का प्रयोग किया गया हो, भू-पृष्ठ में होने वाली प्राकृतिक प्रक्रियाओं के सम्बन्ध में मनुष्य की समझ को पर्याप्त बढ़ा सकते हैं। ऐसे उपायों का आयोजन करना विशेष महत्व का है, जिसमें मनुष्य इन विशाल शक्तियों पर स्वामित्व प्राप्त कर सके। ये प्रक्रियाएँ जो उससे कहीं अधिक ऊर्जा उत्पन्न करती हैं, जितनी हमने कृत्रिम रूप से की है।

अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सहयोग एक बड़े स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय भू-भौतिक वर्ष के बीच सफलतापूर्वक प्रारम्भ हुआ था और तब से नयी अन्तर्राष्ट्रीय प्रायोजनाओं के बीच चलता जा रहा है। उसका उद्देश्य केवल कुछ देशों में शोध-कार्य करवाना नहीं, वरन् शोध के नतीजों का प्रयोग सभी लोगों के रहन-सहन के स्तरों को सुधारने के लिए करना है।

यह कोई संयोग की बात नहीं है। कि इस स्थिति में यूनेस्को का प्रमुख काम करना है। धरती विज्ञानों के सम्बन्ध में ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रायोजनाओं जैसे ऊपरी पृष्ठ के अध्ययन के लिए अन्तर्राष्ट्रीय प्रायोजना अन्तर्राष्ट्रीय सागर मापनशोध, शान्त सूर्य के अन्तर्राष्ट्रीयवर्ष और हिम-शैलों, भूकम्पों और ज्वालामुखियों के अध्ययन के कार्यक्रम सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय प्रायोजनाओं के लिए यूनेस्को सहायता न केवल ऐसे वैज्ञानिक प्रेक्षणों को सम्भव बना देगी, जिससे सर्वोपरि सूचना मिलती है, वरन् उसके कारण ही विकासशील देशों में ऐसे प्रेक्षण आयोजित हो सकेंगे। उपयुक्त प्रेक्षणशालाओं, प्रयोगशालाओं और व्यवस्थाओं का निर्माण इन देशों में विज्ञान की सामान्य प्रगति और नये प्राकृतिक संसाधनों की शोध में सहायक होगी। प्रकृति पर सक्रिय स्वामित्व प्राप्त करने के लिए संस्थाएँ बनाई जायेंगी और यह अधिकार तभी कारगर हो सकता है जब विश्वव्यापी स्तर पर किया जाय।

भू-कम्प विज्ञान सम्बन्धी कार्यक्रम के अन्तर्गत यूनेस्को का कार्य विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गया है। भूकम्प-वैज्ञानिक शोध में और भूकम्प-रोधी भवन निर्माण में प्रगति सम्बन्धी एक सर्वोपरि आकलन बहुत से भू-कम्प प्रधान देशों में भेजे गये विशेषज्ञ मण्डलों के द्वारा किया गया है। इस प्रकार प्राप्त सूचना से जिन प्रदेशों में भू-कम्पों का खतरा सब से अधिक है, वहाँ की तात्कालिक समस्याओं को सुलझाना सम्भव हो सकेगा। खतरे के प्रदेशों के नक्शे में चिह्नित हो जाने से और रक्षात्मक तथा निर्माणात्मक विशेष उपायों से मानवीय जीवन की रक्षा होगी और वस्तुओं की क्षति भी रहेगी। इस क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग द्वारा सफल परिणामों की आशा करना पर्याप्त कारण है।

शिक्षा का महत्व सब से अधिक इस लोकप्रिय कहावत से प्रकट होता है कि निरक्षर व्यक्ति पर्वत के शिखर पर से भी कुछ नहीं देख सकता। शिक्षा का सर्वाधिक आर्थिक और सामाजिक महत्व है। विशेषकर आजकल जब मनुष्य की मानसिक और शारीरिक शक्तियों के सन्तुलित विकास से समाज के सभी खण्डों की आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए और उसी विकास को निरन्तर प्रगति का निश्चित आधार होना चाहिए। जन-शिक्षा के क्षेत्र में समस्याओं के सम्बन्ध में इन आर्थिक प्रभावों का प्रत्येक पक्ष अध्ययन करने योग्य है। इस सम्बन्ध में जो एक उदाहरण हम दे सकते हैं, वह है एस० जी० स्ट्रूमिलिन की कृति, यह सोवियत अकादमी के सदस्य हैं और उन्होंने शिक्षा विकास के आर्थिक परिणामों का आकलन करने का प्रयास किया है। प्रो० स्ट्रूमिलिन इस निष्कर्ष पर पहुँचे है—वर्ष तक प्रारम्भ शिक्षा प्राप्त किये हुए व्यक्ति के कार्य का मूल्य निरक्षर व्यक्ति से ४३ प्रतिशत अधिक है। माध्यमिक शिक्षा प्राप्त किए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए व्यक्ति का १०८ प्रतिशत अधिक होता है और उच्चतर शिक्षा प्राप्त मनुष्य के कार्य का मूल्य ३०० प्रतिशत अधिक होता है। इन आकलनों को आधार के रूप में लेते हुए हम यह देख सकते हैं कि शिक्षा पर खर्च किये गये धन से (लगभग २-३ हज़ार मिलियन) कुछ ही वर्षों में उससे कहीं अधिक उपलब्धि होती है (लगभग ७० हजार मिलियन)।

यदि शिक्षा को अधिक प्रभावशाली बनाना है तो उसको भली प्रकार आयोजित करना होगा। सामाजिक आर्थिक, जनांकिक, भौगोलिक, संगठनात्मक और दूसरे तथ्यों का ध्यान शिक्षा आयोजना में रखना होता है। दूसरे शब्दों में शिक्षा को राष्ट्रीय आर्थिक, विकास की सर्वोपरि आयोजना से निकट रूप से सम्बन्धित करता पड़ता है।

इस प्रश्न के सामाजिक और आर्थिक पक्षों का बहुत बड़ा महत्व है। औद्योगिक सम्बन्धों में परिवर्तनों और मशीनीकरण और उत्पादन के स्वचालन के बढ़ने के परिणामस्वरूप कार्य का रूप ही बदलता जाता है। आज उद्योग में अधिक उच्च प्रशिक्षण प्राप्त मजदूरों की आवश्यकता है, और तकनीकी शिक्षा को इस आवश्यकता की पूर्ति करनी होगी।

निरक्षरता के उन्मूलन और शिक्षा के द्रुत विकास के सम्बन्ध में सोवियत रूस और दूसरे देशों के अनुभवों से इस बात पर बहुत जोर करता है कि पढ़ना-लिखना और गणित सब से पहले बच्चे की मातृ-भाषा में पढ़ाया जाना चाहिए। इसी से तरुण और विकासशील देशों में प्रत्येक भाषा के लिये लिपि का निर्माण और प्रारम्भिक स्कूल के विद्यार्थियों को उनकी अपनी मातृ-भाषा में पढ़ाना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षण-कार्यक्रमों का पुनरीक्षण और तकनीकी सहायता का पूरा उपयोग न केवल प्रारम्भिक और उच्चतर शिक्षा के आगे विकास में योग देता है, वरन् वयस्क साक्षरता अभियानों के लिए भी सहायक होता है।

शिक्षा और वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास सम्बन्धी समस्याएँ प्रत्येक देश में वैज्ञानिकों और दूसरे विशेषज्ञों के प्रशिक्षण पर गम्भीरता से ध्यान दिये बिना सुलझायी नहीं जा सकती। प्रत्येक विकासशील देश के पास इसका अपना राष्ट्रीय वैज्ञानिक केन्द्र होना चाहिए कम उसका रूप विज्ञान अकादमी का हो या वैज्ञानिक परिषद् को इसके साथ ही आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के प्रमुख क्षेत्रों के लिए वैज्ञानिक शोध संस्थानों का एक जाल भी होना चाहिए। यूनैस्को को विकासशील देशों को विज्ञान के विकास के लिए एक राष्ट्रीय और प्रादेशिक संस्था बनाने में कारगर सहायता देना चाहिए।

यूनैस्को का सामाजिक विज्ञान कार्यक्रम बार-बार चर्चा का विषय बनता है। मुझे लगता है कि सामाजिक विज्ञानों में शोध कार्य और कार्यवाहियों की प्रभावशालिता को बढ़ाने का सब से अच्छा तरीका, शिक्षा विज्ञान और संस्कृतिक के विकास के लिए सामान्य और सम्पूर्ण निरस्त्रीकरण की विशाल सम्भावनाओं को स्पष्ट करना होगा।

हमको सभी देशों विशेष रूप से विकासशील देशों में शिक्षा कार्यक्रमों का खर्च उठाने और तकनीकी लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए आवश्यक संसाधनों पर विचार करना है। तभी हम समझ सकेंगे कि निःशस्त्रीकरण की उपलब्धि से कितनी महान सम्भावनाएँ उत्पन्न होंगी। निःशस्त्रीररण के सामाजिक, आर्थिक, साँस्कृतिक, वैज्ञानिक और तकनीकी परिणामों का अध्ययन; विकासशील देशों में उपनिवेशवाद के प्रभावों को दूर करने के उपायों का परीक्षण; जातीय भेदभाव और पूर्वागृह विरोधी अभियान को आगे बढ़ाना; विभिन्न विचारों, उपायों और सिद्धान्तों के बीच अधिक पारस्परिक सद्भावना को बढ़ाने के प्रयत्न, इन सभी से यूनैस्को को अपने संविधान द्वारा निश्चित की गयी समस्याओं को सुलझाने में सहायता मिलेगी।

कलाकृतियाँ तभी मूल्यवान होती हैं जब वे प्रसन्नता दे सकें। और लोगों के जीवन को अधिक समृद्ध बनाने तथा विश्व-इतिहास और विश्व की घटनाओं को ठीक-ठीक निर्णय देने में सहायता कर सकती हों। बहुत सीमा तक यही कारण है कि अतीत के महान् चित्रकारों की कृतियाँ अमर हो गयी हैं। इसके लिए हम माइस्यों की 'वीनस' का उदाहरण ले सकते हैं। वह यूनान में बनो और उसको पेरिस में रखा गया अब तो महाद्वीप से महाद्वीप में घूमती हुई वह विश्व की नागरिक बन गयी है। अथवा दूसरे रूप में आइस्टीन के फिल्म "बैटलशिप पाटेंमकिन" को लिया जाय, जिसको कई दशकों से अनेकों देशों में अतिरिक्त प्रशंसा मिल रही है। शायद यही "वैस्ट साइड स्टोरी" नामक फिल्म के लिए भी ठीक होगा।

प्रत्येक राष्ट्र के अपने प्रिय लेखक, चित्रकार और संगीतकार होते हैं। साहित्य और कला की वे कृतियाँ जिन्हें किसी भी राष्ट्र का आदर और स्नेह मिला है, समस्त मानवता का दाय बन जाती हैं। निश्चय ही यह बात इस तथ्य से प्रमाणित हो जाती है कि माइकल एंजिलो और शेक्सपियर, रेम्ब्रांट और बीठोवन, टैगोर और मैक्सिम गोर्की, रो दै और मार्क ट्वेन, विश्व के सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रों को आनन्द और प्रसन्नता देते हैं, और अभी तक अफ्रीका और लैटिन अमरीका की अनेकों जातियों के सांस्कृतिक दाय से क्या आनन्द प्राप्त करते हैं। यूनैस्को अपने कार्य को अधिक अच्छी तरह कर सकेगी यदि वह इस बात का निश्चय करने के लिए अपने सभी साधनों का प्रयोग करे कि मानवता के सांस्कृतिक मूल्य मानवतावादी सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने और शान्ति, मित्रता तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की संकल्पनाओं को फैलाने तथा सुदृढ़ करने का उपकरण है।

सम्पूर्ण विश्व का भविष्य और मानवता की सामाजिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति हमारी नयी पीढ़ी की शिक्षा पर निर्भर है। शान्ति तब तक नैतिक खतरे में रहेगी, जब तक जातीय पूर्वाग्रह और प्रतिशोधपूर्ण अथवा सैनिक विकास विजय प्राप्त करते रहेंगे। तरुण पीढ़ी की शिक्षा राष्ट्रों के बीच पारस्परिक सद्भावना, शान्ति व मित्रता की भावना से होनी चाहिए। इसमें राष्ट्रीय अन्तरों और राजनीतिक तथा धार्मिक विश्वासों के कारण कोई बाधा नहीं पड़नी चाहिये। यही आज यूनैस्को और हम सब का पवित्र कर्त्तव्य है।

जिस विश्व में हम रहते हैं उसका सही-सही आकलन करने पर हमें आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक अन्तर्विरोधों के अस्तित्व का पता चलता है। फिर भी समस्याओं को तय करने के लिए शक्ति का प्रयोग अब स्थानीय नहीं रह सकता है। सम्पूर्ण मानवता के लिए उसके भयंकर परिणाम होंगे। इसी से समस्याओं का निश्चय करने और आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक समायोजन और शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति का प्रयोग ही देशों के बीच के सम्बन्धों का सही रास्ता है। सभी देशों के मनुष्यों को परमाणु अस्त्रों के सभी प्रकार के परीक्षणों को पूरी तरह से रोक देने और सामान्य और सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण तथा समस्त मानवता की प्रगति के नाम पर विभिन्न सामाजिक पद्धतियों वाले देशों में आर्थिक सांस्कृतिक और वैज्ञानिक समायोजन को सरल बनाने के लिए पूरा-पूरा प्रयत्न करना चाहिए।

सामाजिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति की दृष्टि से देखे जाने पर मानवता के खाद्य और ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति छूत की बीमारियों को दूर करना, हृदय सम्बन्धी रोगों और कैंसर पर विजय, दीर्घ-जीवन की उपलब्धि और प्रसन्नतर जीवन शिक्षा विज्ञान और संस्कृति की अपूर्व प्रगति अब वास्तविक और निकट प्रतीत होने लगी है।

जीवन अपनी प्रकृति और तत्व में अन्तर विरोधी परन्तु आशावादी होता है। वह एक निर्बाध और विशाल सृजनात्मक प्रक्रिया का परिणाम है। हम सब को इस प्रक्रिया के विस्तारण और मानवता में मानवतावादी सिद्धान्तों को अधिक विस्तार से स्थापित करने के लिए निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए और इस सम्बन्ध में जो भी बाधाएँ आये उन्हें दूर करना होगा।

अब तक यह प्रकृत माना जाता रहा है कि सभी समय बीतने के साथ वृद्ध होते हैं, यह एक प्राकृतिक नियम था, परन्तु विज्ञान और मानवतावाद के सिद्धान्तों से युक्त मनुष्य इस प्राकृतिक तथ्य पर विजय प्राप्त कर रहा है। यूनैस्को समय के साथ वृद्ध नहीं होती, क्योंकि इसमें नये-नये सदस्य रोज सम्मिलित होते जा रहे हैं; इसके काम के तरीके अच्छे से अच्छे बनाए जा रहे हैं और इसके कार्य का अच्छा परिणाम हो रहा है। मैं अपना दृढ़ विश्वास प्रकट करना चाहता हूँ कि हमारा संगठन हमारे युग के उत्कृष्टतम उद्देश्यों—शान्ति को सुदृढ़ बनाने और शिक्षा-विज्ञान तथा संस्कृति के क्षेत्र में सफल समायोजन—की उपलब्धि में अधिक से अधिक भाग लेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्याण का आर्थिक पक्ष

[मालकम एस० आदिशेषिया]

उपमहानिदेशक

टोरण्टो विश्वविद्यालय, सामाजिक विद्या स्कूल की पचासवीं वर्षगाँठ के अवसर पर सामान्य विषय पर एक भाषण माला का आयोजन कर रहा है जिसका शीर्षक है "आधुनिक विश्व में कल्याण का अर्थ।" आमंत्रित वक्ताओं में एक समाज-वैज्ञानिक, एक राजनीतिक वैज्ञानिक, एक अर्थशास्त्री और एक न्यायशास्त्री हैं। १९ और २२ फरवरी को मि० मालकम एस० आदिशेषिया ने अर्थशास्त्री के रूप में इन विषयों पर दो भाषण दिये; "आर्थिक विचारों में कल्याण"; कुछ सूक्ष्म आर्थिक प्रस्ताव" और आर्थिक कार्य में कल्याण कुछ सूक्ष्म आर्थिक निष्कर्ष" पिछले भाषण से कुछ उद्धरण जिनमें एक विस्तृत विश्व संदर्श में विकास की समस्याओं पर विचार किया गया है, नीचे दिये जाते हैं।

रहन-सहन के स्तर

यदि हमारे विश्व का एक-तिहाई भाग धनी और आर्थिक दृष्टि से विकसित माना जाय तो दूसरे दो-तिहाई भाग को निर्धनता से पीड़ित और आर्थिक दृष्टि से विकसनशील कहना पड़ेगा।

योरोप, उत्तरी अमरीका और आस्ट्रेलेशिया में विश्व का एक-तिहाई समृद्ध लोग रहते है। उनमें प्रति व्यक्ति औसत आमदनी हजार डालर या उससे अधिक है, जबकि एशिया, अफ्रीका और लेटिन अमेरीका के देशों में जो कि विश्व के निर्धन दो-तिहाई भाग में आते हैं, औसत आमदनी सौ डालर या उससे भी कम है और यह औसत आमदनी का मापदण्ड सच्ची कल्याण कहानी नहीं बताता। संयुक्त राष्ट्र ने रहन-सहन के स्तर को किस प्रकार वर्णित किया है, उसके अन्तर्गत स्वास्थ्य, खाद्य और पोषण, शिक्षा नौकरी और नौकरी की स्थितियां, घर सामाजिक सुरक्षा, वस्त्र मनोरंजन और मानवीय स्वतन्त्रता यह सभी आते हैं। इनमें से पिछले दो किसी भी प्रति व्यक्ति मापदण्ड से मापे नहीं जा सकते।

एक और अधिक विश्वसनीय संकेतक है किसी भी देश के प्रगति और विकास का। विश्व में १९५०-१९६० के दशक में समूचे उत्पादन की प्रगति की दर चार प्रतिशत रही (समाजवादी देशों को छोड़कर, जहां गणना का आकार बिलकुल भिन्न है) विकसित देशों में प्रति व्यक्ति प्रगति की दर २·७ प्रतिशत है और विकासील देशों में २·२ प्रतिशत।

बचत की दर

किसी भी देश में प्रगति का अनुक्रम बचत और पूंजी-निवेश का काम हुआ करता है। सामान्य रूप से यह अनुमान लगाया जाता है कि सभी देशों में प्रगति के लिए आवश्यक पूंजी-निवेश की दृष्टि से राष्ट्रीय आय का कम से कम १०—१२ प्रतिशत बचना चाहिए। कम आय वाले देशों की बचत की दरों में बहुत अन्तर है। एशिया में राष्ट्रीय आय का १० प्रतिशत बचत होती है। इस आलकन में कोरिया, वियतनाम और लाओस जैसे युद्ध-पीड़ित क्षेत्रों को छोड़ दिया गया है। अफ्रीका में फ्रांसीसी-भाषी देशों में पाँच प्रतिशत है और अंग्रेजी-भाषी क्षेत्रों में १० प्रतिशत। लेटिन अमरीका में औसत १५ प्रतिशत है।

इसी से कम आय वाले देशों की जिनमें राष्ट्रीय आमदनी का १० से १२ प्रतिशत तक बचत में आता है, अपने विभिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकास के स्तरों पर सभी उद्यमों और पहले के या नए संस्थानों का प्रयोग बचत की दर बढ़ाने के लिए करना चाहिए ।

कृषि सम्बन्धी उत्पादन

प्रारम्भिक खण्ड में पिछले १९-२० वर्षों से विश्व प्रगति दर १·४ प्रतिशत है, और निर्माण-खण्ड में ३·४ प्रतिशत । जब कृषि-खण्ड इस अवधि में ६० प्रतिशत से भी कम विकसित हुआ है, निर्माण सम्बन्धी औद्योगिक खण्ड में ३०० प्रतिशत की वृद्धि हुई है । प्रगति सम्बन्धी अर्थ शास्त्र में सबसे तात्कालीन समस्या यही है कि कृषि खण्ड अपनी यह धीमी गति छोड़कर विकास का एक अभिकरण और योग देने वाली शक्ति बन जाये ।

निम्न आय वाले देशों में प्रगति की दर को बढ़ाने के लिए भूमि सुधार, कार्यवाही, निश्चित आर्थिक प्रोत्साहन, औद्योगिक ऋण तथा विक्रय की स्थितियों को सुधारने, तरीकों तथा इस खण्ड के लिए समुचित शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम के कृषि उत्पादन को बढ़ाना चाहिए ।

जनसंख्या की वृद्धि

विकासशील देशों में प्रारम्भिक वृद्धि की दर पर उनके जन-संख्या की विकास की दर के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। पिछली शताब्दी में इन देशों में जन-संख्या की स्थिति लगभग एक-सी ही थी उनकी जन्म और मृत्यु दर में ४ प्रतिशत का ही अन्तर था । परन्तु अब परिवहन के अधिक अच्छे साधनों के कारण खाद्य का अपेक्षाकृत समान वितरण होने लगा है, मृत्यु दर एक प्रतिशत घट गयी है । आधुनिक अस्पताल व्यवस्थाओं और छूत की बीमारियों के नियन्त्रण और निर्मूलीकरण के कारण और २ प्रतिशत की कमी हुई है । परिणामस्वरूप जन-संख्या की वृद्धि की दर अब तीन प्रतिशत रह गयी है ।

सामान्य रूप से विकासशील देशों के लिए नागरिक बेरोज-गारी और ग्रामीण अल्परोजगारी जन-संख्या की वृद्धि के ही परिणाम हैं । इससे कम आये वाले देशों को अपने विकास और प्रगति के हित में, जन-संख्या की प्रवृत्तियों सम्बन्धी नीति का निश्चित रोजगार की नीति के संदर्भ में करना आवश्यक है ।

व्यापार संतुलन

निर्धन देश विश्व- व्यापार के २० प्रतिशत में ही हिस्सा लेते हैं । यह प्रतिशत जो विश्व के दो तिहाई भाग को देखते हुए वैसी ही बहुत कम था , और भी घट रहा है । पिछले ३० वर्षों में निर्मित पदार्थ का निर्यात ३ प्रतिशत बढ़ा है, जब कि मूल पदार्थों का निर्यात में एक प्रतिशत की वृद्धि हुई है । १९५०-१९६० के दशक के लिए निर्मित पदार्थों की तुलना में २५ प्रतिशत की कमी हुई । इस बात का ध्यान रखते हुए कि अधिक आय वाले कुछ देश मूल पदार्थों का निर्यात करते हैं और कुछ विकासशील देश निर्मित पदार्थों का । कम आय आले देशों के लिए व्यापार संतुलन १९५०-१९६० के बीच १५ प्रतिशत घट गया था ।

घरेलू विक्रय को बढ़ाने के लिए और गौण तथा दूसरे खण्डों में विकास करने के लिए देशों में ऐसे पदार्थों का उत्पादन बढ़ाना चाहिए जो आयात किये जाने वाले पदार्थों का स्थान ले सकें । उनको वस्तुओं के निर्यात को बढ़ाना भी चाहिए और उसमें विविधता भी उत्पन्न करनी चाहिए ।

आयोजित विकास

अधिकतर देशों में विकास की आयोजना के लिए यही आवश्यक होगा कि प्रगति के सर्वोपरि अनुक्रम को मूल उत्पादन की धीमी वृद्धि दर से जोड़ा जाय, क्योंकि उसी खण्ड में विक्रय योग्य न्यूनतम अधिक होनी चाहिए, जिससे कि किसी भी प्रकार की अर्थ-व्यवस्था में सर्वोपरि विकास और प्रगति के लिए सुदृढ़ नींव बन सके ।

इस प्रकार की आयोजना का अर्थ यह है कि विभिन्न खण्डों में निश्चित अग्रताओं तथा लक्ष्यों से सम्बन्धित व्यय और पूंजी निवेश की समायोजित नीति रखी जाय ।

परन्तु आर्थिक-विकास की आयोजानओं के संचालन और कार्यान्विति में निर्णायत्मक तथ्य होती है मानव संशाधन । सभी विकासशील देशों में यह कम है । कुछ खण्डों में अपर्याप्तता रहने से विकास में बहुत बाधा पड़ती है ।

मानव संशाधनों के लिए पूंजीनिवेश, विशेषकर शिक्षा के खण्ड में, आर्थिक विकास के लिए बहुत महत्व का है । शिक्षा के सम्बन्ध में पूंजी·निवेश के सभी परिक्षणों में इन निवेशों की उपलब्धियों के महत्व का पता चलता है, जो पूंजी-निवेश, पूंजी या श्रम के सम्बन्ध में मिलते हैं । परन्तु शिक्षा सम्बन्धी पूंजी निवेश के नतीजे बहुत लम्बी अवधि में दिखलाई देते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा

शिक्षा को उत्पादक तत्व और उपभोग तत्व दोनों ही रूपों में लिया जा सकता है, क्योंकि एक ओर तो यह उत्पादन-कारकों की उत्पादन-शीलता को बढ़ाती है और दूसरी ओर रहन-सहन के स्तर में एक अनिवार्य तत्व बन जाती है। ये दोनों ही पक्ष समान रूप से अनुपूरक और प्रतियोगी हैं। वे अनुपूरक इस अर्थ में हैं कि समस्त शिक्षा संतोषजनक होती है और उससे किसी न किसी प्रकार उत्पादनशीलता बढ़ती है। वे प्रतियोगी इस अर्थ में है कि निर्धन देशों के लिए शिक्षा का उत्पादन-कार्य शिक्षा-स्तम्भ के विभिन्न मानवीय विषयवस्तु के रूप में अधिक ध्यान आकर्षित करता है। धनी देशों में शिक्षा के स्तर और विषय-वस्तु से उसके उपभोग पक्षों पर जोर दिया जाना प्रकट होता है।

जन-संख्या के संसाधनों, दूसरे संस्थात्मक तथ्यों और विभिन्न खण्डों में संसाधनों की माँग को ध्यान में रखते हुए शिक्षा को आर्थिक और सामाजिक निश्चित लक्ष्यों की पूर्ति करने के लिए राष्ट्रीय आर्थिक विकास के एक निश्चित अंश के रूप में आयोजित करना संभव है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में शिक्षा के इस समैकन के द्वारा विकासशील देशों में पाई जाने वाली स्थिति के उस दूषित वृत्त को तोड़ना सम्भव हो सकता है। कय आमदनी, कम बचत, कम उत्पादन-शीलता और फिर कम आमदनी और आत्मनिर्भर करने वाली प्रगति के लिए रास्ता खुल सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग

फिर भी अब यह विचार करना आवश्यक नहीं रह गया है कि प्रत्येक देश अपने लिए क्या कर सकता है। पिछले दो दशकों में विकास के प्रयोजन से अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एक वास्तविकता बन गया है। कम आमदनी वाले देशों में विकास में प्रमुख बाधा मानव-शक्ति के प्रशिक्षण के लिऐ आवश्यक पूंजी का अभाव है।

आज आर्थिक विकास के लिए सार्वजनिक धन विकसित देशों से विकासशील देशों को प्रति वर्ष ६ से ७ मिलीयन डालर तक दिया जा रहा है। और इस राशि में प्रति वर्ष १५ प्रतिशत वृद्धि हो रही है। विकासशील देशों में वार्षिक पूंजी-निवेश का यह एक-तिहाई भाग है। और लगभग आधी आर्थिक प्रगति में योग दे रही है।

संयुक्त राष्ट्र ने सभी विकसित देशों से प्रार्थना की है कि कम आमदनी वाले देशों के लिए सहायता और पूंजी निवेश की अपनी राष्ट्रीय आय का १ प्रतिशत अलग कर दें। इस स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय सहायता होने से विकासशील देशों को अपनी पूंजी-निवेश की संभावना को दुगुना करना और रहन-सहन के स्तर को दुगने से भी अच्छा करना सम्भव हो सकेगा।

परन्तु पूंजी का यह आदान इसी विश्वास के साथ कम आय वाले देशों में विकास के लिए कारगर हो सकता है कि इस सहायता का प्रत्येक डालर इस प्रकार निवेशत हो कि उससे उत्पादन हो सके। इसी कारण से प्रदाता अभिकरण चाहे बहु-मुखी या द्विमुखी इस बात पर आग्रह करते हैं कि आर्थिक सहायता लेने वाले देश के विकास-आयोजना के अनिवार्य अंश के रूप में चलायी गयी उच्च अग्रता प्रायोजनाओं के लिए ही स्वीकृत होनी चाहिए। डर यह है कि विदेशी सहायता का उद्योग गोण महत्व की प्रायोजनाओं के लिए मुख्य रूप से न कर लिया जाय। किसी भी देश में पूंजी निवेश की उत्पादनशीलता को निश्चित होना चाहिए, सहायता का स्रोत कुछ भी क्यों न हो। यही समस्त विकास और आर्थिक प्रगति का आधार है और फिर किसी भी समाज या संस्कृति में जिसमें स्त्री और पुरुष रहते हैं मानवीय कल्याण का आधार बन जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान और सामान्य मनुष्य (भाग २)

[रिची काल्डर]

ज्ञान और शक्ति प्राप्त करने के लिए खोज की मानवीय उत्सुकता विश्व भर की पुराण-कथाओं और आख्यानों में प्रतिबिम्बित है, और आज भी हमारे स्वभाव में दृष्टिगोचर होती है। प्रोमीथिमस ने देवताओं की अधिकारवस्तु अग्नि को चुराया और उसको मनुष्य के उपभोग में लाना चाहा, इसके लिए उसे भीषण दण्ड दिया गया। पण्डोरा ने अपने खिलण्डरेपन में भयानक शक्तियों को विश्व में उन्मुक्त कर दिया, उन पर उसका कोई नियन्त्रण न रह सका क्योंकि वह भी देवताओं के अधिकार क्षेत्र में था। परन्तु उसका कार्य संयोगिक और अनजाना था इसी से मानवता के पास कुछ आशा शेष रह सकी।

परन्तु फॉस्ट ने शैतान की आराधना देवताओं की शक्ति हड़पने के लिए की, यह कोई सांयोगिक बात न थी, परिणामस्वरूप उसे अनन्त दण्ड दिया गया। इसी प्रकार उपलब्धिपरक ज्ञान का सम्बन्ध बुराई और दण्ड से 'ईडन के उपवन की कहानी में भी मिलता है और इस प्राचीन मिस्री कहावत में भी: "जब मनुष्य यह भी सीख लेगा कि सितारों को कौन घुमाता है तो स्फिंक्स हंस पड़ेगी और पृथ्वी पर समस्त जीवन नष्ट कर दिया जाएगा।"

अधिकतर लोगों के अन्तर में इस प्रकार का भय पैठ जाता जाता है कि अज्ञान का पता लगाने से मानवता को एक प्रकार का अन्तरिक्षीय प्रतिशोध चुकाना होगा, और जैसा मनोवैज्ञानिक कहते हैं, "विचार और भावना के अधिक आदिम रूपों में लौट जाने की प्रवृत्ति के दर्शन न्यूक्लियर ऊर्जा के सम्बन्ध में सामान्य जन की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं में हो सकते हैं। इसको मनोवैज्ञानिक विन्यास में 'परावर्त्तन कहते हैं।

"अज्ञान में कोई सुरक्षा नहीं है। अक्तूबर १९५७ में विश्वस्वास्थ्य संगठन ने ऊर्जा के शान्तिपूर्ण प्रयोगों के मानसिक-स्वास्थ्य प्रश्नों का अध्ययन करने के लिए एक दल का संगठन किया जिसका एक सदस्य मैं भी था। इस दल द्वारा अध्ययन किए गए प्रश्नों में एक प्रश्न उदासीनता का भी था। ऐसा समझा जा सकता था कि यह प्रकार का भावात्मक ऊपरी खोल है परन्तु ऐसा नहीं है। यह तो "भयभीत होने का डर" है। लोग अबोले भय होने भर के लिए काफी जानते, अनुभव करते भर अनुमान करते हैं और वे ऐसे तथ्यों से बचते हैं जो इन भयों की पुष्टि करें अथवा उन्हें बढ़ा-चढ़ा दें उनकी प्रवृत्ति "परवाह नहीं" नहीं होती, "जानना नहीं चाहते" होती है। और मनोवैज्ञानिक यह स्वीकार करते हैं कि इस त्याग से आश्वासन नहीं वरन् एक प्रकार की आधि उत्पन्न होती है जो यदि संहति रूप में हो तो सामाजिक रोग बन जाती है। तर्क संगत भयों का होना असंगत भयों के होने की अपेक्षा कहीं अच्छा है।

और इस प्रकार न्यूक्लियर सम्बन्धी अंध विश्वास बढ़ गया। अंध विश्वास से संघर्ष करने का तरीका यही होता है कि उसका सामना तर्क से किया जाय। परन्तु यदि तर्क के संरक्षकों पर विश्वास न हो तब क्या किया जाय। अध्ययन दल को पता चला कि वैज्ञानिकों पर ही विश्वास नहीं है। अंशतः यह उस आदिम अनुभूति के कारण हैं कि वे ऐसी चीजों से छेड़छाड़ करते हैं जिनको उन्हें छूना नहीं चाहिए, परन्तु अंशतः उनकी प्रकट उपलब्धियों के कारण है क्योंकि लोग बम याद रखते हैं और पेनिसीलिन को भूल जाते हैं। और सबसे गम्भीर बात यह है कि वैज्ञानिकों के अभिप्रेरण पर अविश्वास किया जाता है।

यदि परमाणु ऊर्जा को रहस्य की मौन दीवारों के भीतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्मुक्त न किया गया होता, यदि प्रत्येक स्थान के वैज्ञानिकों के बीच स्वच्छंद विचार विनिमय होता रहता, तब शोध और मुक्ति की प्रक्रियायें "जनता के पास तक" पहुँच सकतीं और अग्नि को अधिकार में लेने के बाद से आज तक की सबसे बड़ी मानवीय उपलब्धि के लिए सामान्य जन को तैयार कर देती। इसके स्थान पर जनता के तैयार न होने के कारण एक बम के समान उनका विस्फोट हुआ। सैनिक भेद की परिस्थिति चलती रही और पहले बमों द्वारा उत्पन्न भय बने ही रहे क्योंकि और बड़े बड़े शस्त्रों का परीक्षण होता रहा।

वैज्ञानिक सरकारी नीतियों के प्रस्तुतकर्त्ता हो गए। उनके ऊपर न केवल अपने विशेषीकृत ज्ञान की सीमा में तथ्य प्रस्तुत करने का भार पड़ा बरन् उन तथ्यों को उस ज्ञान के पार उनका बाह्यकलन करने, उन पर निर्णय देने और मत प्रकट करने का भी दायित्व आ गया।

वैज्ञानिक और विज्ञान के प्रमाण का उपयोग हाल के वर्ष में नीतियों को आगे बढ़ाने या सहायता अथवा संविदा प्राप्त करने या सरकारी अभिकरणों या औद्योगिक संस्थाओं को दोषमुक्त याचनाएँ करने अथवा जनता को आश्वाशित करने के लिए ही किया जाता रहा है। इस तथ्य के कारण लोगों को उनके प्रेरक प्रयोजनों के सम्बन्ध में संदेह हो गया है और वे उनके तथ्यों की समेकता पर प्रश्न उठाने लगे हैं।

वैज्ञानिक के सामान्य जनता के साथ सम्बन्ध का विश्लेषण करने की अपेक्षा राजनीति के साथ वैज्ञानिक के सम्बन्धों का विश्लेषण करना और भी कठिन है। वह प्रेम—घृणा का सम्बन्ध हैं परमाणु ऊर्जा के मानसिक पक्षों के सम्बन्ध में विश्व स्वास्थ्य संगठन के अध्ययन दल की प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया है "विज्ञान और वैज्ञानिकों के विषय में राजनीतिक नेताओं की स्थिति अतिरिक्त कठिनाई से पूर्ण होती हैं। उनमें से बहुत कम लोगों के पास सम्पूर्ण वैज्ञानिक प्रशिक्षण होता है फिर भी उनकी ऐसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है जो धीरे धीरे वैज्ञानिकों द्वारा निर्मित हुई है और जिनके समाधान के लिए वैज्ञानिक विश्व के अन्तिम प्रभावों की कुछ संकल्पना होना आवश्यक है।

इस संकलपनात्मक पृष्ठ भूमि के अभाव के कारण बिना वास्तविक आयोजनाओं के कार्यक्रम बनाने की प्रवृत्ति हो सकती है और उसके कारण महान असुरक्षा का वातावरण हो सकता है।

"इसी रिपोर्ट में यह भी कहा गया है" आशंका उत्पन्न करने वाला एक दूसरा पक्ष उस व्यक्ति के सम्बन्ध में अनिश्चय भी है जिसके पास शक्ति है। एक प्रकार से राजनैतिज्ञों को वैज्ञानिक पर अधिकार होता है। दूसरे प्रकार से वह वैज्ञानिक पर निर्भर करता है और इसलिए उसके अधिकार में है। इस सम्बन्ध में आधुनिक विश्व में अनेकों देशों में एक बिलकुल नई स्थिति उत्पन्न हो गई है।"

विशेषज्ञ की इस निष्ठुर अधिकार का खतरा सचमुच सामान्य जन के लिए चिन्ता का विषय बन जाता है। वैज्ञानिक शिक्षा प्राप्त न किए हुए लोगों के पीछे अनजाने लोग निर्णय करने वाले हैं और उनकी समुदाय के सामने कोई जवाब देही नहीं है।

वैज्ञानिक सामान्य अवधारण का कार्य और भी अधिक बना देते हैं। ऐसे कथनों के बीच ढोलित रहते हैं जो एक ओर तो वैज्ञानिक क्षमता में सीमित हैं और दूसरी ओर ऊपर से तो विज्ञान का लबादा ओढ़े हुए हैं परन्तु वास्तव में मूल्य की अभिव्यक्ति अथवा नीतियों के निर्णय से सम्बन्ध रखते हैं।

मूल्य सम्बन्धी निर्णयों में से एक तो विकिरण की "सर्वाधिक क्षम्य मात्रा" सम्बन्धी संकलपना है, यह वैज्ञानिक सत्य के रूप में चला दी गई है। परन्तु वास्तव में यह विज्ञान से सम्बन्धित नहीं है वरन् खतरे के दर्शन से सम्बन्धित इसमें उतनी ही वैज्ञानिकता प्रणाली है जितनी किसी भी राज्य मार्ग पर ४० मील प्रति घण्टे गति सीमा में फिर भी वैज्ञानिक जिनमें कई प्रसिद्ध भी है इस प्रकार अधिकतम क्षाम्य मात्रा" की बात करते हैं कि मानों वह कोई वैज्ञानिक इकाइ हो। न्यूलियर अपवात जैसी बातों पर चर्चा करते समय जब वैज्ञानिक "अधिकतम क्षाम्य मात्रा" की बात करते हैं, तो जनता बौखला सी जाती है और वैज्ञानिक के प्रति उसका अविश्वास बढ़ जाता है।

नम्बर १९६३ में विश्व स्वास्थ्य संगठन, खाद्य कृषि संस्था और अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभिकरण ने जिनेवा में शान्ति के समय की दुर्घटनाओं में विकिरण के खतरों पर विचार करने के लिए एक बैठक बुलाई। यह बैठक परीक्षणों के बन्द कर देने के बाद ही हुई थी। इसी से सरकारी पदों पर नियुक्त वैज्ञानिक बात को टालने का या छुपा जाने का अथवा सरकारी तौर पर बिना सोचे समझे किसी बात को कह जाने पर सरकार से भर्त्सना प्राप्त करने से डर नहीं रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बैठक में मतैकता इस बात पर हुई कि जनसंख्या हित की दृष्टि से विकिरण की कोई मात्रा क्षम्य नहीं है न अधिकतम न न्यूनतम । प्राकृतिक विकिरण के अलावा जितना भी विकिरण होता है सब हानिकर है । यदि किसी अणु-केन्द्र प्रतिष्ठान में कोई किसी भी प्रकार का विकिरण होने लगे तो कोई भी यह नहीं कह सकता कि जब तक इसकी मात्रा उतनी है डरने की कोई बात नहीं । उस समय हरेक का कर्तव्य तत्कालिक रूप से यही होगा कि वातावरण प्रकृत हो जाए । इस प्रकार एक मिथ्या वैज्ञानिक इकाई जिसने १८ वर्षों से जनता को भूखा रखा था, छोड़ दी गई । यद्यपि इसकी उपयोगिता अब भी व्यक्तियों के न्यूलियर प्रयोगों के समय विकीरण से सुरक्षा के सम्बन्ध में रहेगी ।

एक शताब्दी पहले प्रसिद्ध फ्रांसीसी शरीर वैज्ञानिक लार्ड बरना ने एक घोषणा की थी जो उनके आधुनिक उत्तराधिकारियों के ध्यान देने योग्य है, "सच्चा विज्ञान हमको संदेह करने की और अज्ञान होने पर दूर रहने की शिक्षा देती है ।" जब समूचा सजीव वातावरण प्रयोगशाला बन चुका है तब वैज्ञानिकों को अपने ज्ञान की सीमा के भीतर सयंमित रहना चाहिए उनको जो वे नहीं जानते उसे स्वयं में स्वीकार कर लेना चाहिए । न्यूलियर अवपात एक ऐसा ही मामला है क्योंकि इसके सम्बन्ध में उनको दूसरी शाखाओं के विशेषज्ञों से भी पूछताछ कर लेनी चाहिए ।

लार्ड बरनार्ड का एक दूसरा कथन आधुनिक वैज्ञानिकों के दायित्वों से सम्बन्धित है " जब तुम अपनी प्रयोगशाला में प्रवेश करो तो कोट उतारने के साथ ही कल्पना को भी छोड़ दो । लेकिन वहाँ से चलने के बदले कोट के साथ ही और उसे भी धारण कर लो । प्रयोग के पहले और अन्तरालों में कल्पना को अपने को ढक लेने दो । परन्तु प्रयोग के बीच में उसे बिलकुल दूर कर दो, जिससे वह तुम्हारे और तुम्हारी प्रेक्षण शक्ति के लिए बाधक न बन सके "।

अपनी प्रयोगशाला के बाहर वैज्ञानिक को राजनीति धर्म या किसी भी सामाजिक विषय में कल्पना का प्रयोग करने का अधिकार है । वास्तव में यह तो उसका कर्तव्य है। उसको अपनी शोधों के उपोयग, गलत उद्योग दुरुपयोग और अनुपयोग की कुछ चिन्ता रहनी ही चाहिए । वह एक नागरिक है और सूचना के भंडार के रूप में उससे यह आशा की जाती है कि उस सूचना को सब के लिए सुलभ कर दें और दायित्व भावना से ऐसे तर्क प्रस्तुत करे जिनके आधार पर सामाजिक निर्णय समझदारी से किए जा सकें और जिनके बिना सामाजिक निर्णय न किए जा सके ।

आज अनेकों वैज्ञानिक, जिनमें बहुत प्रसिद्ध वैज्ञानिक भी हैं, इस दायित्व को पूर्णतया स्वीकार करते हैं । वे महान विषयों पर-उन विषयों पर जिनको विज्ञान स्वयं सामने लगाता है—पहल करते हैं परन्तु अदृश्य विशेषज्ञों के अधिकार प्राप्त करने की चेष्टा नहीं करते तथा अपने ज्ञान को सामान्य जन के मतों की अदालत में लाते हैं । पगवाश आन्दोलन इसी का विशिष्ट और प्रभावशाली उदाहरण है । इस प्रकार वैज्ञानिक अपने साथी मनुष्यों के जीवन और आजीविका की दृष्टि से एक बहुत ही शक्तिशाली और लाभकर लोबी बन सकते हैं ।

विज्ञान के सामान्य अवधारणा का मतलब उतना ही नहीं है जितना सामान्य प्रेस रेडियो, टेलिविजन या फिल्मों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है । इसमें अधिकतर अब बड़ी अच्छी तरह किया जा रहा है और सामान्य व्यक्ति को न केवल विज्ञान के उत्साहजनक विकासों वरन् वैज्ञानिकों के कार्य तरीकों का भी परिचय दे देता है, विज्ञान को सभी स्तरों पर समझा जाना है, यदि हम चाहते हैं कि विज्ञान का प्रशासन सरकारों सार्वजनिक संस्थाओं और उद्योग मण्डलों द्वारा प्रभावशाली ढंग से हो सके तो हमें उनको शिक्षित करना है, जिन्हें विज्ञानों के सम्बन्ध में निर्णय देने हैं और अग्रताएँ निश्चित करनी हैं । अधिकारी लोगों को इस बात के सम्बन्ध में पर्याप्त सूचना मिलनी चाहिए कि वैज्ञानकि किसविषय में बात कर रहा है, नहीं तो वे वैज्ञानिक के उत्साहों में बह जा सकते हैं या नये वैज्ञानिक पथ के प्रभाव में आ सकते हैं अथवा विज्ञान का नाम लेकर होने वाली गलत सलत बातों में भुलाए जा सकते हैं । होता यह है कि बहुत कुछ जो अच्छा है व्यर्थ हो जाता है क्योंकि जिन को निर्णय लेना है वे उसे ठीक से समझ नहीं पाते ।

समस्या सभी अवस्थाओं में शिक्षा की है जब लोग पूछते हैं 'बालक को विज्ञान किस आयु से पढ़ाना चाहिए' तो उत्तर बहुत सरल है—"जिस क्षण से बालक "क्यों" पूछता है तभी से बच्चे से यह नहीं कहना चाहिए कि जब तुम गति विज्ञान और बलगति विज्ञान के बारे में सब सीख लोगे, तो समझ लोगे, उसकी आधारभूत जिज्ञासा को प्रोत्साहित करना चाहिए । बचपन में विज्ञासा को अनुत्साहित करने का मतलब यह है कि अगले वर्षों में वैज्ञानिक उत्सुकता ही अनुत्साहत हो जाएगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी हाल में मुझ से एक शिक्षा सम्मेलन में सन २००० में सामान्य शिक्षा के अन्तर्गत विज्ञान के शिक्षण" के सम्बन्ध में बोलने को कहा गया। "मैंने कहा मैं आशा करता हूँ कि आज से ४० वर्ष बाद हम लोग सामान्य शिक्षा में विज्ञान को एक विषय के रूप में नहीं पढ़ायेंगे। परन्तु विज्ञान समूची शिक्षा में उसी प्रकार व्याप्त रहेगा जैसे शरीर में रक्त कोशिकायें। विशेषीकरण विद्यार्थी के जीवन में बहुत आगे चल कर आने दिया जाएगा। विश्वविद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी को वैज्ञानिक तरीकों का परिचय दे दिया जाएगा और ऐसी पृष्ट भूमि बना दी जाएगी जिससे चाहे वह वैज्ञानिक का जीवन नहीं अपनाये फिर भी विज्ञान मूल्यांकन कर सके।

आज के समय में प्रबुद्ध व्यक्ति की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह उन शक्तियों के बारे में समझे जो उनके जीवन में प्रमुख हैं और उसमें परिवर्तन करते हैं और उसके सभी पक्षों में संस्कृति को भी प्रभावित करें। प्रत्येक देश में यह शिक्षा जानकारों के लिए एक चुनौती है, चाहे वह विकासशील देश हों अथवा वैज्ञानिक और औद्योगिक दृष्टि से पूर्णतया विकसित देश।

इस सब में आधुनिक विज्ञान लेखकों का एक विशेष दायित्व है। वे काफी संख्या में नहीं है और उनमें से अधिकतर यहाँ पर कहे गये सामाजिक निरूपण के कार्य को समझते नहीं हैं और जो समझते भी हैं वे स्वीकार नहीं करते। बहुत से लेखक विज्ञान को लोक के निकट लाने का अर्थ सबसे हाल में बनाए गये किसी उपकरण, या हाल की किसी औषधि या किसी नये सिद्धान्त की व्याख्या को ही समझते हैं। यह तो विज्ञान लेखन का सबसे सरल प्रकार है।

यदि वैज्ञानिक जिसके पास तथ्य हैं धीरज वाला है और पत्रकार जिसको उन तथ्यों का सरलीकरण करना है, धीरज वाला है तो ऐसा कोई भी वैज्ञानिक आविष्कार नहीं हो सकता जो पहले देखने में कितना भी जटिल क्यों न लगे सामान्य पाठक को समझाया न जा सके। व्याख्याकार विज्ञान का वह ग्रेजुएट भी हो सकता है जिसको पत्रकारिता का प्रशिक्षण मिला हो, अथवा वह पत्रकार ही जिसके पास विज्ञान की आवश्यक पृष्ठभूमि हो। दोनों ही स्थितियों में उसके पास कठिन संकल्पनाओं को ऐसे रूप में उन पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का कौशल होना चाहिए, जो विज्ञान में विशेष रुचि नहीं रखते हों, कि उन्हें भी समझ में आ जाए।

व्याख्या के कई स्तर होते हैं, वैज्ञानिक जब अपनी वैज्ञानिक पत्रिका में अपने ही सहकर्मियों के लिए लिखता है तो कितनी भी जटिल शब्दावली का प्रयोग कर सकता है। यदि एक अधिक विस्तृत वैज्ञानिक समूह के लिए लिखता है तो उसको कम जटिल और अधिक वर्णनपरक होना पड़ता है। पर वह यह मान ले सकता है, (एक) कि वे मूल संकल्पनाओं से परिचित हैं, और (दूसरे) वे जो कुछ वह समझाना चाहता है, उस पर ध्यान देंगे।

इसके साथ ही साथ विज्ञान के विषय में भी पत्रिकाएँ होती हैं, इनमें कई प्रकार के वैज्ञानिक विषयों को ऐसे लोगों के लिए प्रस्तुत किया जाता है, जो वैज्ञानिक तो नहीं होते, परन्तु उसके सम्बन्ध में सूचना प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसी पत्रिकाएं बड़ा महत्वपूर्ण कार्य करती हैं, क्योंकि वे राजनीतिज्ञों, सरकारी नौकरों, कम्पनियों के निर्देशों और मानवीय विद्याओं के शिक्षकों को विज्ञान सम्बन्धी सूचनाएँ देती हैं। वे एक ऐसे शिक्षित वर्ग के लिए है, जो किसी भी विषय को समझने का प्रयास कर सकती हैं, यदि भाषा उनके सामने कठिनाई न रखे।

इसके अतिरिक्त गम्भीर समाचार-पत्र भी होते हैं, जो इन व्याख्याओं के लिए स्थान देते हैं और जिनके पाठक भी इन बातों पर ध्यान देते हैं, लेकिन तभी दे सकते हैं, जब वे प्रयुक्त शब्दावली से भली प्रकार परिचित कर दिये जाएँ। दूसरी ओर अधिक पढ़े जाने वाले समाचार-पत्र होते हैं, जिनका कार्य शिक्षा देने की अपेक्षा मात्र सूचना देना ही होता है। इसका मतलब यह हुआ कि उनको अनजाने में ही पाठकों को एक ऐसे विषय में रुचि लेने वाला बनाना पड़ता है, जिस पर वह बैठे ध्यान न देता।

और फिर 'हास्य पट्टिकाओं' का भी एक स्तर होता है, जिसको पूरी तरह से व्यर्थ नहीं समझा जा सकता। ब्रिटेन में एक पूरी पीढ़ी अन्तरिक्ष यात्रा के प्रारम्भ होने के सालों पहले से अन्तरिक्ष यात्रा के लिए तैयार थी। क्योंकि "डेनडेयर के कारनामे" नाम की पट्टिका में उसके सम्बन्ध में बहुत दिनों से चित्रित किया जा रहा था। बच्चे बड़ों की अपेक्षा समान अंकों, भारहीनता, परिक्रमापथों और उसके विभिन्न स्तरों के सम्बन्ध में अधिक जानते हैं। इसका ध्यान मुझे एक चौदह वर्षीय बालक ने दिलाया जिसने जिस दिन स्पुतनिक अन्तरिक्ष में गया था, मुझसे पूछा कि यह कैसे हुआ, मैंने उसको वर्षकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बूस्टर आदि के बारे में बतलाया, उसने बड़े विनीत भाव से मेरी बात सुनी और फिर कहा, "मैं यह सब कुछ जानता हूँ, लेकिन उसको वह उस विशेष परिक्रमा पथ में कैसे ले गए ?" वह औद्योगिकी की अपेक्षा विज्ञान में अधिक रुचि रखता था। और उसका शिक्षक था "डेनडेयर"। इस पट्टिका में बहुत पर्याप्त सूचना रखी गई थी। क्योंकि पत्रिकाओं और समाचार-पत्रों में फिल्मों, टेलीविजन और रेडियो सभी का योगदान रहता है, और उनके सम्बन्ध में वही बातें ठीक उतरती हैं।

परन्तु विज्ञान की व्याख्या मात्र पर्याप्त नहीं होती। उसको सामान्य लोगों के जीवन और अनुभव में भी ढालना होता है। इस युग में और समय में निरूपकों की आवश्यकता है।

हमारे समय की कठिन स्थिति संचारणों का टूट जाना है। न केवल राजनीति और भावादर्शों के क्षेत्र में वरन् विज्ञान के अत्यन्त महत्वपूर्ण क्षेत्र में हमारे जीवन, हमारी आशाएँ, मनुष्य जाति के रूप में हमारा बचा रहना, सब कुछ विज्ञान के प्रयोगों पर निर्भर है। प्रगति करने के लिए आवश्यक है, कि हम वैज्ञानिक आविष्कारों और ज्ञान का अधिक-से-अधिक प्रयोग करें। उन्नत देशों में विज्ञान की गति इतनी तेज हो गई है कि उस ज्ञान और उससे बनाई गई वस्तुओं के सम्बन्ध में पूरी-पूरी सूचना रखना लगभग असम्भव हो गया है।

विज्ञान औद्योगिक को मूल सत्य प्रदान करता है और औद्योगिकी विज्ञान को अधिक-से-अधिक सूक्ष्म उपकरण देती है। दोनों ही एक-दूसरे की गति को बढ़ाती हैं। प्रति वर्ष तीस लाख से भी ऊपर मौलिक वैज्ञानिक लेख-पत्र प्रकाशित किये जाते हैं। और प्रति पल यह वृद्धि हो रही है। सूचना के प्रवाह में बुद्धि डूबी जा रही है। विज्ञान की अनेकों शाखाएँ मार्ग से दूर पड़ जाती हैं और विचित्र पंथों द्वारा उत्साहित या निरुत्साहित की जा रही हैं, जो धन दाताओं को अनुपातहीन बजट प्रस्तुत करने की ओर प्रेरित करती हैं।

विज्ञान के बड़े-बड़े क्षेत्र अब भी सैनिक सुरक्षा के कटीले तारों में कैद हैं। बहुत कुछ औद्योगिक रहस्य के भीतर बन्द है और बहुत कुछ अति विशेषज्ञता की जटिलता में फँसा हुआ है। वैज्ञानिकों का एक दल यह नहीं जानता कि दूसरा क्या कर रहा है, चाहे उनके कार्य-क्षेत्र एक-दूसरे से मिले हुए हैं, और एक-दूसरे के कार्य के लिए इनका आलोचनात्मक महत्व हो।

प्रयोगात्मक ज्ञान के समुच्चय में हम प्राकृतिक दर्शन की बात ही भूल बैठें। १८वीं शताब्दी में जो समेकित दृष्टि से सबको आश्चर्यचकित कर देती, उसी से शोध के विभिन्न स्कूल अपने-अपने लक्ष्यों की पूर्ति करने में रत हैं। आज डिउआक्सी-रिबन्यूक्लिक अम्ल और परमाणु जीव-विज्ञान के अध्ययन का युग है। हम जीवन के रहस्य को बिना यह जाने कि उसको पा लेने पर हम क्या करेंगे पाने का प्रयास कर रहे हैं। अन्त-रिक्ष शोध के लिए ६ हजार मिलियन डालर प्रतिवर्ष खर्च किया जाता है। राष्ट्र अस्त्र-शस्त्रों पर ४५ हजार मिलियन डालर खर्च करते हैं।

विज्ञान के भीतर और मानव विद्याओं और विज्ञान के बीच संचार बहुत कम है। हम किस प्रकार लोगों को विज्ञान के सम्बन्ध में बतलाएँ जिससे कि निर्णय हो सके और वह देखें कि जिज्ञासा के अपरिहरणीय अविकारों और ज्ञान की पिपासा के बने रहने पर विज्ञान, जिसमें अच्छे और बुरे दोनों की ही सम्भावनाएँ हैं, मानवता के हित के लिए कैसे उपयोग में लाया जा सकता है।

क्योंकि हम लोगों को इस पृथ्वी की गुरुत्वावर्षण सीमाओं को तोड़ने के लिए मनुष्य की आकांक्षाओं को प्रोत्साहित अवश्य ही करना चाहिये, फिर भी क्या हममें अग्रताओं का उपयुक्त ज्ञान रह गया है। हमें इस पृथ्वी की समस्याओं पर कितना ध्यान देना चाहिये और कितने संसाधनों का व्यय करना चाहिये जिसमें आज तीन हजार मिलियन लोग रहते हैं और १९८० तक जो ४ हजार मिलियन रहेंगे उनकी परिस्थितियाँ हमारी परिस्थितियों की अपेक्षा मानव सीमा के अधिक उपयुक्त होंगी।

उदाहरण के लिए क्या खाद्य और जनता की समस्याओं की अपेक्षा अन्तरिक्ष यात्रा अधिक महत्वपूर्ण है? और आज की सभी आकर्षक प्रगतियों को देखकर हम कैसे वैज्ञानिक और औद्योगिक कारणों से उत्पन्न होने वाली समृद्धि और दो-तिहाई दुनिया की गरीबी की बीच की खाई को पाट सकते हैं।

फरवरी १९६३ में जिनेवा में अल्प उन्नत क्षेत्रों के लाभ के लिए विज्ञान और औद्योगिकी के उपयोग सम्बन्धी संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में बतलाया था कि हम क्या चाहते हैं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसकी आवश्यकता है ! यद्यपि हम खाद्य समस्याओं के लिए उसी प्रकार नये समाधान से प्रसन्न होंगे, जैसा सल्फा औषधियों एन्टीबायटिक या डी० डी० टी० में औषधि विज्ञान के सम्बन्ध में हुआ है। इस सम्मेलन से यह स्पष्ट हो गया कि उत्तर तो उपयोग करने के लिए तैयार हैं, और ज्ञान का प्रश्न नहीं है बल्कि इच्छा का प्रश्न है। और प्रश्न है उस ज्ञान, कौशल और संसाधनों के परस्पर बांट लेने का जो हमारे पास हैं।

यह अत्यधिक सार्थक सामाजिक निर्णय है, और इनको विज्ञान और उसके द्वारा सुलभ होने वाली वस्तुओं के परस्पर समुचित अवधारण पर आधारित करना चाहिये। यदि वैज्ञानिक और औद्योगिक क्रान्ति को बढ़ती हुई आशाओं की क्रान्ति को तत्व देना है तो जैसे-जैसे अधिक-से-अधिक देश स्वतन्त्र होते जाते हैं इस प्रकार के ज्ञान और कौशलों के अन्तरण को बड़ी शीघ्रता से किया जाना है।

विश्व भर में शिक्षा सम्बन्धी प्रगति

यूनैस्को महासम्मेलन में यूनैस्को के वर्तमान कार्य और उसकी भावी योजनाओं का पुनरीक्षण करते समय ९४ वक्ताओं ने अपने मत प्रकट किये—इनमें से ४७ शिक्षा मन्त्री थे। विश्व की शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं पर चर्चा करते समय प्रतिनिधियों ने अपने-अपने देश में विकास के सम्बन्ध में बतलाया। यहाँ हम इन चर्चाओं में से कुछ शिक्षा सम्बन्धी मुख्य बातें प्रस्तुत करते हैं।

कोस्टा रिका

कोस्टा रिका में शिक्षा को हमेशा उच्च अग्रता दी गई है। यहाँ पहले दोनों राष्ट्रपति स्कूल शिक्षक थे और १८६९ से प्रारम्भिक शिक्षा निःशुल्क रही है। तेरह वर्षों में (१९५०-६३) कोस्टा रिका में स्कूलों में ७-१२ वर्ष के विद्यार्थियों की संख्या २१ प्रतिशत बढ़ गई है (अब ८८% है)। आज २५ वर्ष से नीचे की आधी से अधिक जनसंख्या स्कूलों या विश्व-विद्यालयों में है।

कोरिया गणराज्य

(लगभग पचास लाख) प्रारम्भिक शिक्षा आयु के ९५ प्रतिशत बच्चे स्कूल जाते हैं। कक्षा की कमी को दूर करने के लिए दो तीन पारियों में स्कूल लगता है। कोरिया की साक्षरता दर बहुत ऊँची है (१० प्रतिशत)।

क्यूबा

राष्ट्र भर में विस्तृत आन्दोलन के कारण १९५८ में जो निरक्षरता २३ प्रतिशत थी वह अब ३·९ प्रतिशत रह गई है। १२६३ में सत्तर लाख जनसंख्या से बीस लाख व्यक्ति स्कूलों या विश्वविद्यालयों में पढ़ते हैं। १९५८ से प्रारम्भिक स्कूलों के उपस्कर अब दूने हो गए हैं। और ५,००० और कमरे बनवा लिए हैं। निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा के लिए बालकों की आयु अब ६ से ९ वर्ष कर दी गई है।

बल्गेरिया

१९३९ से विद्यार्थियों की संख्या दस गुनी हो गई है। हाल के आँकड़ों से पता चलता है कि पूरी जनसंख्या के साथ विद्यार्थियों के अनुपात के सम्बन्ध में बल्गेरिया विश्व में चौथे नम्बर पर है।

ट्यूनीसिया

१९६२ में प्रारम्भ की गई एक शिक्षा आयोजना नीति के अनुसार स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या तेजी से बढ़ी है। दस वर्ष पहले की अपेक्षा प्रारम्भिक स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या दूनी हो गई है और माध्यमिक स्कूलों में तिगुनी। आर्थिक और सामाजिक विकास की १९६५-६८ आयोजना में २५०,०००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषि और औद्योगिक मजदूरों के लिए साक्षरता कार्यक्रम भी है।

मेक्सिको

मेक्सिको में राष्ट्रपति गुस्तचो डोम्राज ओडीज हाल में एक आज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं जिसके अनुसार मेक्सिको में ५४६ माध्यमिक स्कूल बनाए जाएंगे। मेक्सिको में अब ४,००० प्रति वर्ष की दर से प्रारम्भिक स्कूल बनाये जा रहे हैं।

सऊदी अरब

लड़कियों के लिए शिक्षा सुलभ करने में जो प्रगति हुई है उसका पता पिछले तीन वर्षों में स्कूलों में लड़कियों की तिगुनी वृद्धि से लग सकता है। अन्धों के लिए चार स्कूल खोले गये हैं जिनमें से एक लड़कियों का है। जेदा में नया विश्वविद्यालय रियदा में उच्चतर तकनीकी संस्थान और धाहरान में एक विज्ञान संस्थान बनाया गया है।

वेनेजुला

वेनेजुला में साक्षरता आन्दोलन ने छः वर्षों में राष्ट्रीय निरक्षरता दर को ४७ प्रतिशत से घटाकर १३ प्रतिशत कर दिया है। पिछले पाँच वर्षों में प्रारम्भिक स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या दूनी हो गई है और ६००० से उपर कक्षाएँ बना ली गई हैं। सहयोगी शिक्षा संस्थान द्वारा संयोजित एक कार्यक्रम में २६,००० से ऊपर मजदूरों को प्रशिक्षण दिया गया है। अब संस्थान की आयोजना है कि ६०,००० तरुणों को व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाय।

ईरान

सैनिक अवस्था के माध्यमिक स्कूलों के ग्रेजुएट शिक्षा कोर में भर्ती किये जाते हैं। संक्षिप्त सैनिक शिक्षा और एक गहन शिक्षण क्रम के पश्चात् उन सैनिकों को बालकों तथा वयस्कों को पढ़ाने के लिए दूर-दूर गाँवों में चौदह महीनों के लिए भेज दिया जाता है।

उरुग्वे

रुउग्वे की निरक्षता-दर (९.६९ प्रतिशत) लैटिन अमरीका के सबसे कम है। यहाँ शिक्षा हर स्तर पर निःशुल्क है। अब बालकों में से ९५ प्रतिशत स्कूल जाते हैं। माध्यमिक स्कूलों की उपस्थिति की पिछले दो दशकों में चौगुनी हुई, ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत वृद्धि हुई है। विश्वविद्यालयों में ३५ प्रतिशत से ऊपर और माध्यमिक स्कूलों में ५३ प्रतिशत अध्यापक स्त्रियाँ हैं।

घाना

माध्यमिक स्कूलों और अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों के विज्ञान शिक्षकों को (केपकोष्ट के) विज्ञान शिक्षा के यूनिवर्सिटी कालेज मे प्रशिक्षण दिया जाता है। क्वाम नुक्राम विश्वविद्यालय के औद्योगिकी प्रभाग में प्राकृतिक संसाधनों का एक विभाग स्थापित किया जा रहा है, उसमें उच्च स्तर की विज्ञान शिक्षा दी जायगी।

ग्रीस

नये क़ानून के अन्तर्गत इन शिक्षा सुधारों की आयोजना है: प्रारम्भिक स्कूल से विश्वविद्यालय तक समस्त शिक्षा निःशुल्क होगी; अनिवार्य शिक्षा की आयु १५ वर्ष तक कर दी जायगी; जमीना और पत्रास में नये विश्वविद्यालय और एथेन्स में उच्चतर शिक्षण विज्ञान की एक संस्थान खोला जाएगा।

कांगों (ब्राज़ाविल)

६ और १४ वर्ष के सभी बच्चों के लिए पंचवर्षीय शिक्षा—आयोजना के अन्तर्गत शिक्षा का प्रबन्ध होगा। १९७३ के लिए राष्ट्रीय लक्ष्य यह है कि तब तक ५,००० कक्षायें और २,२०,००० विद्यार्थी हो जाएँ।

कांगों लोकतन्त्रीय गणराज्य

पिछले चार बर्षों में प्रारम्भिक स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या लगभग पाँच लाख बढ़ गई (अब २०,००,००० है)। और माध्यमिक स्कूलों की उपस्थिति चौगुनी हो गई है। कांगो में तीन विश्वविद्यालय और उच्चतर अध्ययन के दस संस्थान हैं।

लिबिया

माध्यमिक स्कूल शिक्षकों की कमी को पूरा करने के लिए सरकार ने यह निश्चय किया है कि औषधि और इंजीनियरी के अतिरिक्त और सब विश्वविद्यालय ग्रेजुयेट दो वर्षों तक माध्यमिक स्कूलों में पढ़ायेंगे। इस वर्ष यूनैस्को की सहायता से स्थापित औद्योगिकी संस्थान से उनके पहले विद्यार्थियों को इंजीनियरों की डिग्री मिलेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पेन

१९६४-६७ की राष्ट्रीय विकास आयोजना में १७,००,००० वयस्कों के लिए साक्षरता शिक्षा क्रमों को आयोजन सम्मिलित है। ५,००० शिक्षकों को साक्षरता—कक्षा तकनीकों में प्रशिक्षित किया गया है। शिक्षा अब १४ वर्ष तक अनिवार्य हो गई है। १५,००० नये स्कूल बनाने का कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया गया है।

गिनी

सप्त वर्षीय आर्थिक शिक्षा समायोजना के अन्तर्गत देश की १० प्रतिशत निरक्षरता दर को घटाने के लिए एक कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। पिछले छः वर्षों में प्रारम्भिक स्कूलों की संख्या पाँच गुनी हो गई है। (अब १४१९ स्कूल हैं) और स्कूलों में में उपस्थिति चौगुनी (अब १,७०,००० विद्यार्थी स्कूल जाते हैं।)

मलेशिया

मलेशिया के बजट का चौथाई भाग शिक्षा के लिए खर्च होता है। १९६१ में निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा के प्रारम्भ होने से स्कूली आयु के बच्चों मे से १४ प्रतिशत बच्चे स्कुल जाने लगे हैं।

समाचार

शिक्षा

शिक्षा की प्रादेशिक आयोजन

अरब राज्यों में शिक्षा सम्बन्धी कर्मी-वर्ग के उच्चतर प्रशिक्षण केन्द्र की प्रशासन-समिति का पाँचवाँ अधिवेशन बेरुत में २० से २३ जनवरी, १९६५ को हुआ। इसके पहले १८ और १९ जनवरी को केन्द्र की स्थाई समिति की ७वीं बैठक हुई थी।

प्रशासन-समिति ने शिक्षा सम्बन्धी आयोजना विषयक शोध के विकास कार्रवाहियों के लिए केन्द्र के इस कार्यक्रम को स्वीकार किया—शिक्षा-वृत्तियाँ; अध्यापक विनिमय; शोध-परिणामों का वितरण; केन्द्र के शिक्षकों और विद्यार्थियों तथा दूसरे विश्व-विद्यालयों के विद्यार्थियों को शोध सम्बन्धी सुविधायें देना। समिति ने केन्द्र और विभिन्न अरब राज्यों के बीच अधिक नियमित और निकट सम्पर्क बनाने के लिए सुझाए गए तरीकों का स्वागत किया, विशेषकर अध्यापकों और विद्यार्थियों के अध्ययन-मण्डलों का। अन्त में बैठक में केन्द्र के संगठन और कार्य के तरीकों में सुधार करने के लिए स्वीकृत प्रयत्नों पर संतोष प्रकट किया गया।

बेरुत केन्द्र के अतिरिक्त यूनैस्को नयी दिल्ली में १९६२ में स्थापित "शिक्षा सम्बन्धी आयोजना और प्रशासन के ऐशियाई संस्थान" को भी सहायता देती है। यह संस्थान भारत सरकार और यूनैस्को के बीच एक समझौते के अनुसार स्थापित किया गया था। बैंकाक डाकार और शान्तिआगो (चीली) में संयुक्त राष्ट्र प्रादेशिक आर्थिक आयोगों द्वारा स्थापित आर्थिक विकास सम्बन्धी प्रादेशिक संस्थानों के शिक्षा आयोजना खण्डों को भी यूनैस्को सहायता देती है।

प्रौढ शिक्षा

योरोपीय देशों में प्रौढ़ शिक्षा और अवकाश सम्बन्धी एक प्रादेशिक सम्मेलन प्राग (चैकोस्लोवाकिया) में २९ मार्च से ६ अप्रैल तक होगा। इसका आयोजन चैकोस्लोवाकिया के राष्ट्रीय आयोग द्वारा किया जायेगा और सदस्य-देशों की कार्यवाहियों में योग-कार्यक्रम के अन्तर्गत यूनैस्को इसको आर्थिक और तकनीकी सहायता देगी। यूनैस्को इस सम्मेलन के विषय में विशेष रूप से रुचि रखती है। क्योंकि यह आजकल अनेकों समाज-वैज्ञानिकों, शिक्षा विशेषज्ञों और सामुदायिक आयोजना-विशेषज्ञों द्वारा अध्ययन किये गये, आधुनिक जीवन की एक महत्वपूर्ण समस्या से सम्बन्धित है।

यह बैठक प्रादेशिक सम्मेलनों में से एक है जो योरोप में प्रौढ़ शिक्षा के विश्व सम्मेलन (मोन्ट्रियाल, १९०७) के बाद से आयोजित किये गये है। इन सम्मेलनों में औद्योगिक समाज में प्रौढ़ शिक्षा (हेम्बर्ग, १९६२) प्रौढ़ शिक्षा पर वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के प्रभाव (प्राग, १९६२) आगे आने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन में औद्योगिक समाज में अवकाश कार्यवाहियों सम्बन्धी विकास की मूल समस्याओं का अध्ययन करने का विचार है।

माता-पिता की शिक्षा-सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय संघ द्वारा आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन यूनैस्को की सहायता से २४ से २७ मई, १९६५ तक ब्रसल्स के पैलेद कौंग्रे में होगा। इस सम्मेलन का विषय होगा—"शीघ्रता से परिवर्तित होने वाले विश्व में पारिवारिक सम्बन्ध।"

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत यह विषय होंगे :

पारिवारिक सम्बन्धों में माता और पिता के दायित्वों का विकास ;

औद्योगीकरण और प्रवासन के प्रभाव ;

शिक्षा की संकल्पनाओं में परिवर्तन और उसके फलस्वरूप पड़ते हुए बच्चों के प्रति माता-पिता की मनोवृत्तियाँ ;

समूह का शिक्षात्मक प्रभाव और जीवन के समूहात्मक संगठन।

प्राकृतिक विज्ञान

तटीय मरुस्थल

मरु-प्रदेश वृत्त-पत्रिका के अन्तिम अंक में (अंक संख्या २६, दिसम्बर, १९६४) सम्भव विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों की हवाई सर्वेक्षण के अध्ययनों को समेकित सिद्धान्तों और उपायों सम्बन्धी सम्मेलन (तूलूस २१ से २८ सितम्बर, १९६४) और तृणमुक्त मिट्टी के सम्बन्ध में वाद-गोष्ठी (बुदापेस्ट ९ से २६ अगस्त, १९६४) की रिपोर्ट हैं। इसी वृत्त-पत्रिका में डा० पेबरिलमीस का "तटीय मरुस्थलों की निश्चित-विशेषताएं" नामक एक लेख भी है! प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग और विकास की दृष्टि से यह लेख सबकी रुचि का है। इस लेख के कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं।

विश्व के महान मरुस्थल सातों सागरों के किनारों तक १८,५०० मील की दूरी तक फैले हुए हैं। मरुस्थलों की यह सँकरी पट्टियाँ न केवल अपनी लम्बाई वरन अपनी निश्चित भौगोलिक विशेषताओं के लिए महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये पारम्परिक अन्तर्देशीय मरुस्थलों के भिन्न हैं। उनकी वर्तमान सामर्थ्य ही बहुत अधिक है, भावी संभावनाएँ तो असीम हैं।

जलवायु

इन मरुस्थलों की जलवायु सागर से प्रभावित हो जाती है। इसी से यहाँ पर बहुत अधिक गर्मी और बहुत अधिक ठंड नहीं पड़ती। जब हवाएँ किनारे की तरफ बहती हैं तब स्थली तापमानों पर जल का प्रभाव सबसे अधिक होता है। जब सागर का प्रभाव ठंडे जल की पट्टियों के कारण बढ़ जाता है—जैसे कि पश्चिमी तटों के मरुस्थलों में तब ठंडक के कारण वहाँ फसलों की संभावनाएँ बदलती हैं। उदाहरण के लिए जहाँ पर सहारा का रेगिस्तान अटलांटिक महासागर के निकट आता है। खजूरों को पर्याप्त गर्मी न मिलने के कारण उनकी उपज भी ठीक से नहीं होती। दूसरी ओर गर्म तटीय मरुस्थलों में पास के सागरों के गर्म होने के कारण जैसे की लाल सागर या परशिया की खाड़ी के कारण नमी बहुत अधिक बढ़ जाती है और यह नमी तीसरे पहर केवल सागर की हवा से ही कुछ कम होती है। सभी तटीय मरुस्थलों में अन्तर्देशीय मरुस्थलों की अपेक्षा वातावरण में नमी, कोहरा और ओस अधिक पड़ते हैं। किन्हीं-किन्हीं जगहों में नमी इतनी अधिक है कि शुष्कतर प्रदेशों में न उग सकने वाली वनस्पति यहाँ उगती है, जिसके कारण तटों पर अधिक चराई हो सकती है।

Published by the Director UNESCO South Asia Science Co-operation Office, N-1, Ring Road, New Delhi and printed by Rakesh Press, Delhi. (Unesco Vritta Patrika, Vol. 11, No. 3, March, 1965.

Reproduction authorised : Credit line should read UNESCO.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

UNESCO

यूनैस्को वृत्तपत्रिका

ऐन-१, रिंग रोड
नई देहली

यह समाचार पत्र संयुक्त राष्ट्रीय शैक्षणिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संस्था के विश्व भर के कार्यों का मासिक प्रतिवेदन है

मासिक बुलेटिन अप्रैल, १९६५ अंक ११, संख्या ४

विषय सूची

अफ्रीका में शिक्षा सम्बन्धी सूचना और शोध
रेने महू महानिदेशक २

भोजन और शिक्षा
फिलिप रू, यूनैस्को सम्पर्क अधिकारी (विश्व खाद्य कार्यक्रम) ४

शिक्षण मशीनें
टेड मोरेलो ८

पुर्तगाल यूनैस्को का सदस्य १४

समाचार

शिक्षा
विश्वविद्यालय और वयस्क शिक्षा १५
एशियाई प्रादेशिक संस्थान १५
शिक्षा आयोजना और प्रशासन का एशियाई संस्थान १६

प्राकृतिक विज्ञान
विज्ञान और निःशस्त्रीकरण १६
डा० वारेन वीवर को कलिंग पुरस्कार १७
मस्तिष्क शोध १७
अन्तर्राष्ट्रीय जल वैज्ञानिक दशक १७

सांस्कृतिक कार्यवाहियाँ
प्रतिनिधि कृतियों का यूनैस्को संग्रह १८
कलाचित्र संग्रह और रंगीन स्लाइडें १९
इंडैक्स ट्रांसलेशनम १९

जनसंचारण
पत्रकारिता प्रशिक्षण सम्बन्धी प्रादेशिक दृष्टिकोण २०

अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय
बिदेशों में छुट्टियाँ २०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफ्रीका में शिक्षा सम्बन्धी सूचना और शोध

रेने मह्यू

[महानिदेशक]

२७ फरवरी, १९६५ को यूनैस्को के महानिदेशक मि० रेने मह्यू ने अंकरा (घाना) में अफ्रीका में शिक्षा सम्बन्धी सूचना और शोध के प्रादेशिक केन्द्र के नये भवनों का उद्घाटन किया।

अपने भाषण में मि० रेने मह्यू ने १९६० में यूनैस्को महासम्मेलन के ११वें अधिवेशन में किये गए उस निर्णय का उल्लेख किया जिसके द्वारा महानिदेशक को "व्यक्ति और समाज की बदलती हुई आवश्यकताओं के अनुसार इन पाठ्क्रमों की स्वीकृति और माध्यमिक तथा प्रारम्भिक स्कूलों के पाठ्क्रमों के सुधार के लिए अफ्रीकी सदस्य देशों को सहायता प्रदान करने का" अधिकार दिया गया था। कुछ महीनों बाद मई, १९६१ में अदिस् अबाबा में अफ्रीका में शिक्षा विकास के सम्बन्ध में अफ्रीकी राज्यों के सम्मेलन ने यह सिफारिश की कि "अफ्रीकी शिक्षा अधिकारियों को पाठ्क्रम, पाठ्य-पुस्तकों और तरीकों के क्षेत्रों में शिक्षा की विषय-वस्तु का इस प्रकार पुनरीक्षण और सुधार करना चाहिए कि उसमें अफ्रीकी परिस्थिति, पाठकों के विकास, सांस्कृतिक दाय और औद्योगिक प्रगति की आवश्यकताओं का ध्यान रहे।" इन्हीं निर्णयों को कार्यान्वित करने के लिए अफ्रीका में शिक्षा सम्बन्धी सूचना और शोध के प्रादेशिक केन्द्र की स्थापना घाना सरकार के निमन्त्रण पर अंकरा में की गई थी।

महानिदेशक ने कहा "यह केन्द्र इस नगर में एक अस्थायी रूप से मिले हुए भवन में प्रारम्भ हुआ था। और यह अफ्रीकी देशों को उनके स्कूलों के अधिक सार्थक पाठ्यक्रमों का विकास करने के लिए यूनैस्को की सहायता का एक रूप है। इसके साथ ही सदस्य देशों की उस आशा की एक व्यावहारिक अभिव्यक्ति भी है कि इसकी सहायता से अधिक-से-अधिक अफ्रीकी देशों में पाठ्क्रयों के सुधार का वातावरण बन सकेगा। शिक्षण पाठ्यक्रमों के परिवर्तन और पुनरीक्षण से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में सम्बन्धित अनेकों समूहों और संस्थाओं का कार्य एक-दूसरे को लाभ कर होने की दृष्टि से समायोजित किया जाएगा। पाठ्यक्रमों के परिवर्तन के सम्बन्ध में नये अध्ययन और नई कार्रवाई को प्रोत्साहन मिलेगा। इन अध्ययनों और साक्षरता कार्यक्रमों के बौद्धिक आधारों के रूप में अफ्रीकी भाषाओं और संस्कृति की समस्याओं पर समुचित ध्यान दिया जाएगा। और अफ्रीकी स्कूलों के पाठ्यक्रम सांस्कृतिक संगठन और परिवर्तन के कारगर उपकरण बन सकेंगे।

समकालीन अफ्रीकी विकास का एक महत्वपूर्ण पक्ष है कि इसका रूप दोहरा है। एक ओर तो इसमें पारम्परिकता के विरुद्ध आधुनिकता का विद्रोह प्रतिबिम्बित होता है, दूसरी ओर अनिवार्यतः अफ्रीकी भावों की अभिव्यक्ति का प्रयत्न किया गया है। इस दोहरेपन का प्रभाव जीवन के दूसरे पक्षों की भाँति शिक्षा में भी अनुभव किया जा रहा है बल्कि शिक्षा में तो और भी ज्यादा। स्कूलों पाठ्यक्रमों में इस प्रकार के परिवर्त्तन करने के प्रयत्न बढ़ रहे हैं जो न केवल औद्योगिक युग में अफ्रीकी महाद्वीप की आर्थिक और सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करें, वरन् साथ ही अफ्रीकी विचारों और आकांक्षाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अधिक अच्छी तरह प्रतिविम्बित करे, राष्ट्रीयता एकता में योग दे और महाद्वीप भर में अफ्रीकी राष्ट्रों की महान् सामान्य नियति के भागीदार होने की भावना को शुरू करें। यह प्रक्रिया कुछ देशों में अधिक है और कुछ में कम। परन्तु यह कहा जा सकता है कि किसी भी देश में इतनी नहीं है कि उपयुक्त शिक्षण कार्यक्रम, पाठ्य-पुस्तकों और शिक्षण तरीकों का निश्चय हो जाए।

मेरा विश्वास है कि इस विकास में इस केन्द्र का महत्वपूर्ण योग होगा। इसी उद्देश्य से यह प्रयास करेगा कि अफ्रीका में पाठ्यक्रम शोध और समंजन के कार्यक्रमों की तालिका बनाए और उसका यह प्रयत्न होगा कि ऐसे कार्यक्रमों के बीच परस्पर सम्बन्ध बढ़े। उनके बीच ऐसे सहयोगी सम्बन्ध बन सकें जिससे पाठ्क्रमों के पुनरीक्षण में आगे व्यावहारिक कदम उठाए जा सकें। वर्त्तमान कार्यक्रमों में जिन विषय क्षेत्रों में अध्ययन नहीं किया गया है, उनमें अध्ययन प्रारम्भ किये जाएँगे। और सामान्य रूप से अफ्रीकी शिक्षा पर तथा विशेषरूप से अफ्रीकी पाठ्यक्रमों और अफ्रीकी भाषाओं के अध्ययन कार्यक्रमों के विषय में सूचना का वितरण करने वाले एक अभिलेखन व्यवस्था द्वारा परिणामों को सभी के लिए सुलभ बना दिया जाएगा। ऐसे कार्य का एक निश्चित उदाहरण अफ्रीकी माध्यमिक स्कूलों में विज्ञान शिक्षा का सर्वेक्षण है। इसको घाना विश्वविद्यालय के शिक्षा-संस्थाओं की सहायता से अंकरा केन्द्र ने संचालित किया है। इस सर्वेक्षण की रिपोर्ट शीघ्र ही प्रकाशित होगी।

यह बात तो स्पष्ट ही है कि भाषा सम्बन्धी कार्य सभी पाठ्यक्रमों का एक बहुत ही महत्वपूर्ण और अनिवार्य अंग होता है। यूनेस्को बहुत दिनों से अफ्रीका और दूसरे स्थानों में अनेक देशों में भाषा की विविधता से उत्पन्न होने वाली समस्याओं में रुचि लेती रही है, विशेषरूप से उन कठिनाइयों पर ध्यान देती रही है, जिनका अनुभव शिक्षा की प्रक्रिया में एक स्थानीय भाषा से विस्तृत संचारण की भाषा में जाने में होता है। शिक्षा सम्बन्धी प्रशासकों के सामान्य साक्षरता कार्य के लिए, भाषाओं का चुनाव करने और स्कूल शिक्षकों को शिक्षण माध्यम के शिक्षण को अधिक कारगर रूप से करने में सहायता करने के लिए ऐसी समस्याओं का अधिक गहराई से अध्ययन करना चाहिए। यह बात तो निश्चित ही है कि सामान्य साक्षरता कार्यक्रम या शिक्षण माध्यम के लिए भाषा का चुनाव करना सरकारों और केवल सरकारों का ही अधिकार और दायित्व है। केन्द्र तो केवल उन समस्याओं से सम्बन्धित अध्ययनों को प्रोत्साहन देकर इन अध्ययनों के परिणामों की सूचना देता है।

विश्वव्यापी साक्षरता के विश्व अभियान के प्रारम्भ के लिए रास्ता तैयार करने वाले प्रयोगात्मक कार्यक्रम के अंश के रूप में अफ्रीका में अध्ययनों को संचालित करने में केन्द्र के भाग लेने के लिए प्रबन्ध किया जा रहा है। अदिस अबाबा सम्मेलन के बाद से मैंने विभिन्न श्रोताओं का ध्यान शिक्षा सम्बन्धी अल्प विकास को समूचे अल्प विकास का एक महत्वपूर्ण तथ्य और उसका मूल कारण मानने की ओर आकर्षित किया है। वह महत्वपूर्ण तथ्य और मूल कारण निरक्षरता है। जिसके साथ ही बौद्धिक ऊर्जा के नष्ट होने और मानवीय संसाधनों के व्यर्थ जाने का प्रश्न सम्बन्धित है।

अब सामान्य निरक्षरता को दूर करना राष्ट्रीय प्रयत्नों पर ही निर्भर है। फिर भी मेरा यह विश्वास है कि इस समस्या के समाधान में सम्बन्धित प्रयत्नों में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सहायता का महत्वपूर्ण योग हो सकता है। यह केन्द्र उन अनेकों सरणियों में से एक हो सकता है, जिनसे होकर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग इस महाद्वीप के देशों के पास लाया जा सकता है।

घाना में सामुदायिक विकास कार्यवाहियों, जिनमें साक्षरता कार्यक्रम भी सम्मिलित हैं, के लिए पर्याप्त प्रयत्न किया है और उन्हें पर्याप्त सफलता भी मिली है। इसका अनुभव निश्चय ही लाभकर अध्ययन के लिए सामग्री प्रस्तुत करेगा। सफल होने के लिए इस केन्द्र को, जिन देशों की यह सेवा करता है, उनका निरन्तर समर्थन विशेषरूप से अपने मेजबान देश का समर्थन आवश्यक है। जिन भवनों का आज उद्घाटन हो रहा है वे घाना सरकार और यूनेस्को के बीच वर्तमान सहयोग और सद्भावना का प्रमाण हैं। वे इस बात के सूचक हैं कि यूनेस्को के भविष्य अथवा समूची संयुक्त राष्ट्र सरणी के भविष्य के सम्बन्ध में देश के इस भाग में विश्वास है और यूनेस्को के लक्ष्यों का भली-भाँति अवधारण किया जा रहा है।

यूनेस्को की ओर से मेरे लिए यह सम्मान की बात है कि इन भवनों को उतनी अवधि के लिए स्वीकार करूँ जो घाना सरकार और यूनेस्को के परस्पर समझौते से निश्चित की गई है, और इस आशा से करू कि जो कार्य इस स्थान पर किया जाएगा वह अफ्रीका में शिक्षा को—जो स्वतन्त्रता, शान्ति और मानवीय गरिमा का एक प्रमुख कारण होती है—विकसित करने का कार्य होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन और शिक्षा

फिलिप रू

[यूनैस्को सम्पर्क अधिकारी (विश्व खाद्य कार्यक्रम)]

यूनैस्को महा सम्मेलन के दूसरे अधिवेशन में भोजन और शिक्षा के निकट संपर्क का उल्लेख करते हुए एक प्रतिनिधि ने कहा हमारे विद्यार्थी स्कूल कैंटीन से दोपहर का भोजन पाने पर अधिक अच्छा काम करते हैं।"

योरप में औद्योगिक युग के प्रारम्भ से प्रारम्भिक शिक्षा के विस्तारण में स्कूल कैंटीनों का योग स्पष्ट हुआ हैं। माध्यमिक शिक्षा के विकास के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में बालकों के लिए भोजन की व्यवस्था की दृष्टि से अधिक से अधिक स्कूलों में कैंटीनें रखना आवश्यक हो गया है। और जैसे जैसे माध्यमिक स्कूल शिक्षा अधिक सुलभ होती गयी, अनेकों देशों में स्कूल की फीस और विद्यार्थी के भोजन के मूल्य के लिए शिक्षावृत्तियां देना प्रारम्भ हो गया। आज तो स्कूल भोजन की समस्याओं पर विचार किये बिना शिक्षा की समस्याओं पर विचार करना लगभग असम्भव हो गया है। कुछ विकासशील देशों में इस प्रयोजन के लिए अधिक धन देने की व्यवस्था करना असम्भव हैं और इसी कारण उन देशों में शिक्षा विकास के सामने यह एक प्रमुख बाधा है।

संयुक्त राष्ट्र खाद्य तथा कृषि संगठन द्वारा विश्व खाद्य कार्यक्रम की स्थापना से इस विषय में फिर ध्यान आकर्षित हुआ। दिसम्बर १९६३ में संयुक्त राष्ट्र महा सभा ने निरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष करने और स्कूलों में अनुपस्थिति कम करने के लिए खाद्य संभरणों के रूप में सहायता देने के महत्व पर जोर दिया। उसके बाद अभी हाल में यूनैस्को महा सम्मेलन में विश्व खाद्य कार्यक्रम द्वारा प्रारम्भ किये हुए प्रयोगों में शिक्षा मंत्रियों की विशेष रुचि पर जोर दिया गया और यह कहा गया कि यूनैस्को स्कूल और साक्षरता कार्यक्रमों के लिए खाद्य संभरण बनाएं। सम्मेलन ने विश्व खाद्य कार्यक्रम के सहयोग की एक सामान्य नीति की रूप रेखा बनाई।

ऐसे समय में जब संयुक्त राष्ट्र और खाद्य कृषि संस्था को १९६५ के बाद विश्व-खाद्य कार्यक्रम की भारी कार्यवाहियों के सम्बन्ध में निश्चय करना है यह उचित होगा कि पुराने अनुभवों का आलकन किया जाय और विश्व खाद्य कार्यक्रम के चलाने से उत्पन्न हुई नयी संभावनाओं, इसके संसाधनों की वृद्धि और पूंजी-निवेश के रूप में खाद्य संभरणों को प्रस्तुत करने की समस्याओं पर विचार कर लिया जाय।

आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए खाद्य सहायता

विश्व खाद्य कार्यक्रम की स्थापना दिसम्बर १९६० में संयुक्त राष्ट्र तथा खाद्य तथा कृषि संगठन द्वारा इस उद्देश्य से हुई थी कि आर्थिक तथा सामाजिक विकास के कार्यक्रम में किस प्रकार खाद्य संभरणों का अधिक से अधिक प्रयोग हो सकता है। उन तरीकों का अध्ययन किया जाए। इसके साथ ही यह भी पता चल गया था कि विश्व-खाद्य कार्यक्रम प्राकृतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपत्तियों के कारण खाद्य की कमी से पीड़ित देशों में सहायता दे। इस कार्यक्रम को तीन वर्षों की परिक्षण अवधि के लिए चलाने का निश्चय किया था और उसे ५ जनवरी १९६३ में प्रारम्भ किया गया। १ मार्च, १९६५ तक खाद्य सामग्री, सेवाओं और धन के रूप में ६० देशों से लगभग ९५०००००० डालर की सामग्री प्राप्त हो चुकी है। यह प्रयोग पर्याप्त सफल रहा है। इसी अवधि में द्विमुखी सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत दिये गये खाद्य-संभरणों का मूल्य अरबों डालर है। परन्तु यह योगदान कुछ विशेष खाद्य-कार्यक्रमों में किसी विशेष देश के अभाव को पूरा करने के लिए किया गया है। जब कि विश्व-खाद्य कार्यक्रम का उद्देश्य था उन विशेष प्रयोजनाओं को सहायता देना, जिनका कार्यचालन आर्थिक और सामाजिक विकास की योजनाओं का अंश था।

विश्व-खाद्य कार्यक्रम के निर्माण में एक और नयी बात है वह यह कि सरकारें पहली बार खाद्य-सामग्रियों का अन्तर्राष्ट्रीय प्रारक्षण स्थल बना रही हैं। इस सम्बन्ध में यह जान लेना रोचक होगा कि विश्व-खाद्य कार्यक्रम के संसाधन अधिकतर उन देशों से प्राप्त होते हैं, जिनमें बहुत अधिक अनाज है या जिनमें महत्वपूर्ण खाद्य-उद्योग हैं परन्तु फिर भी अनेकों विकासशील देशों में भी उसने योग दिया है। प्रदाता देशों की एकता के कारण विश्व-खाद्य कार्यक्रम अपनी प्रारम्भिक स्थिति में ही अनेकों प्रकार के खाद्य-पदार्थ प्रस्तुत कर सकता है। जिससे संतुलित आहार बनाया जा सकता है। यूनैस्को महा-सम्मेलन में कई वक्ताओं ने इस बात पर दुःख प्रकट किया था कि अनाज या पाउडर दूध की तुलना में प्रोटीन युक्त खाद्य-पदार्थ अधिक नहीं दिये जा सके हैं।

विश्व-खाद्य कार्यक्रम तथा यूनैस्को के बीच सहयोग

बोलीविया में १० ग्रामीण अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों में विद्यार्थियों की संख्या अगले दो वर्षों में ५० प्रतिशत बढ़ जायेगी, विश्व-खाद्य कार्यक्रम इन अतिरिक्त विद्यार्थियों के लिए आवश्यक खाद्य-सामग्रियाँ प्रस्तुत कर रहा है। अफगानिस्तान में काबुल के स्कूल छात्रावासों को विश्व-खाद्य कार्यक्रम से सहायता मिल रही हैं। मोरक्कों में १७ हजार कुरान शिक्षक निरक्षरता के विरुद्ध अभियान में भाग लेने वाले हैं। यह अभियान ३ वर्षों की अवधि के लिए ९ प्रान्तों में चलाया जायगा। इन शिक्षकों को अपने काम के लिए गेहूं और तेल मिलेगा।

अपने निर्माण के समय से विश्व-खाद्य कार्यक्रम सामाजिक और आर्थिक विकास के तत्वों के विषय में शैक्षणिक विकास से सम्बन्धित रहा है। १५ मार्च, १९६५ में ८५ संविदाएं समाप्त हो गयी हैं, इनमें से ११ ने शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रमों को लाभ पहुँचाया है। इसके साथ ही कई संविदाएं सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में सहायता देने के लिए जिनके अन्तर्गत महत्वपूर्ण शक्षणिक पक्ष भी हैं।

यह प्रयोग जिनका प्रभाव शिक्षण और प्रौढ़ शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पड़ता है विश्व खाद्य कार्यक्रम और यूनैस्को को विभिन्न परिस्थितियों में खाद्य-संभरणों के रूप में सहायता देने के कारण की प्रभावशालिता और प्रशासन की समस्याओं के सम्बन्ध में व्यावहारिक सूचना देगा। इस सूचना से १९६६ में यदि संयुक्त राष्ट्र और विश्व खाद्य संगठन विश्व खाद्य कार्यक्रम की कार्यवाहियों को आगे बढ़ाने का निश्चय करेंगे तो इन कार्यक्रमों को अधिक बड़े स्तर पर चलाया जा सकेगा। इस प्रकार की सावधानी बहुत अधिक भी लग सकती है। यह सच कि जिन छात्रवासों में घरेलू मितव्ययिता व्यवस्था है, रसोईघर और नष्ट होंने वाले खाद्य पदार्थों को सुरक्षित रखने की जगह है, उनमें विशेष कठिनाई नहीं होती। परन्तु अपना स्कूल बनाने वाले किसानों के काम के बदले में खाद्य का वितरण या शिक्षकों के प्रस्तुत करने के लिए खाद्य का वितरण एक-दूसरी ही समस्या हैं। जबकि अनेकों शिक्षक इस बात का विश्वास करते हैं कि वयस्क शिक्षा कार्यक्रमों में बहुत अधिक महीनों तक चल सकने के बाद भी जो बहुत से लोग छोड़ देते हैं उसका कारण अल्प-पोषण ही है तो ऐसा लगता है जैसे अब तक किसी ने भी खाद्य-पदार्थों के रूप में अनुपूरक शक्ति प्रदान करने की दृष्टि से निरक्षतार के विरुद्ध अभियान नहीं चलाया। माली सरकार विश्व-खाद्य कार्यक्रम के साथ इस सम्बन्ध में एक समझौते पर हस्ताक्षर कर रही है।

कार्यक्रमों के संभव प्रकार

इन अल्प अवधि प्रयोजनाओं का पुनरीक्षण करने के बाद महासम्मेलन में विश्व-खाद्य कार्यक्रम और यूनैस्को के बीच स्थापित संयोग का स्वागत किया और यह आशा प्रगट को कि विश्व-खाद्य कार्यक्रम को १९६५ के बाद अपनी कार्यवाहियाँ चलाने और अधिक संसाधन प्राप्त होंगे। सम्मेलन में विश्व-खाद्य कार्यक्रम के साथ आगे सहयोग की दृष्टि से अग्रताएं निश्चित की गई:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विश्व खाद्य-कार्यक्रम की सहायता शैक्षणिक विकास के दो प्रमुख खण्डों में प्राप्त करने का प्रयास किया जायेगा।

शिक्षकों और मध्यम श्रेणी के प्रशासनकर्मी वर्ग के प्रशिक्षण के लिए और साक्षरता आन्दोलनों का विशेष ध्यान रखते हुए वयस्क शिक्षा के लिए।"

इन दोनों खण्डों के बीच कई प्रकार के खाद्य-सहायता कार्यक्रमों पर विचार हो सकता है :

माध्यमिक स्कूलों शिक्षण प्रशिक्षण कालेजों या तकनीकी स्कूलों के छात्रावासों को सहायता जिससे उनमें विद्यार्थियों की संख्या तत्काल बढ़ सके।

छात्रावासों और स्कूल कैंटिनों में किये गये खर्च के लिए सरकारों को सहायता जिससे स्कूल निर्माण और स्कूल के उपकरणों के लिए सरकारों को अधिक खर्च करना सम्भव हो सकेगा।

प्रारम्भिक स्कूलों और गाँव में स्कूल कैंटीनों के निर्माण को स्वेच्छिक कार्यकर्ताओं के बीच खाद्य का वितरण करके और कैंटीनों में खाद्य सम्भरणों को प्रस्तुत करने से हो सकता है।

वयस्क शिक्षा कार्यक्रमों की प्रभावशालिता भाग लेने वालों और स्वेच्छिक शिक्षकों के बीच खाद्य-संभरणों के वितरण से बढ़ सकती है।

वयस्क शिक्षा, शिक्षकों अथवा युवक आन्दोलनों के नेताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संगठन करने वाले कुछ केन्द्रों का पूरा उपयोग तभी किया जा सकता है जब कि उन चीजों को अतिरिक्त खाद्य-सहायता दी जाय।

यह स्पष्ट है कि अधिक और विधिवत आहार से शैक्षणिक विकास को बढ़ाया जा सकता है। दूसरी ओर शिक्षा भी पोषण में सुधार करने में योग दे सकती है। स्कूल-कैंटीनों में बच्चे स्थानीय रूप से सुलभ खाद्य-सामग्रियों को अधिक अच्छा उपयोग करना सीख सकते हैं। और कैंटीन के साथ सब्जियाँ आहार को अधिक संतुलित बनाने के साधन प्राप्त हो सकते हैं।

प्रारम्भिक स्कूल से प्रारम्भ करके सदा ही विद्यार्थियों को संतुलित आहार के मूल तत्वों के सम्बन्ध में शिक्षित कर दिया जाना चाहिए। खाद्य कृषि संस्था, विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनैस्को द्वारा ऐसे शिक्षण को बढ़ाने की आयोजनाओं का अध्ययन हो रहा है।

विश्व खाद्य कार्यक्रम व्यावहारिक प्रयोगों के लिए सुविधाएँ जुटा कर इस कार्य को सहायता दे सकता है। वर्तमान कार्यक्रमों में खाद्य-संभरण को विस्तृत करने के लिए विश्व-खाद्य कार्यक्रम के द्वारा स्कूल कैंटीनों और छात्रावासों में दी गयी सहायता किस प्रकार एक समूची जनसंख्या के खाद्य-सम्बन्धी आदतों में सुधार कर सकती है। इस पर डाक्टों और शिक्षकों के समायोजन में खाद्य और कृषि संगठन के विशेषज्ञ शोध कर रहे है।

खाद्य सामग्री के रूप में सहायता की समस्या

खाद्य सामग्रियों का वितरण या उनको जमा करना, नकद वितरण या जमा करने से कहीं अधिक कठिन हैं। उनको एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना भण्डार में रखना, वितरण करना और कभी कभी तो प्रोसेस करना भी जरूरी होता है। इसी से खाद्य-निवेश कार्यक्रम के लिए न केवल खाद्य के संसाधन वरन् परिवहन के साधन और निधियाँ भी आवश्यक हो जाती है।

विश्व-खाद्य-कार्यक्रम के लिए जो खाद्य-सामग्रियाँ दी जाती हैं। ये प्राप्ता देश की सीमाओं तक या उसके बंदरगाहों में छोड़ दी जाती है। वहाँ से उस देश की सरकार उनके वितरण का दायित्व उठाती है। इस कारण सभी सामग्रियों के समायोजन की समस्या हो जाती है। संभरण विभिन्न देशों से भेजे जाते हैं, इसलिए सदा यह संभव नहीं होता कि अफ्रीका के किसी भी बंदरगाह में संयुक्त राज्य से गेहूँ नार्वे से मछली, फ्रांस से मक्खन और जर्मनी से मांस एक ही समय में पहुँच जाये।

गर्म और नम जलवायु में और परिवहन की कमी के कारण खाद्य सामग्रियों को सुरक्षित रखने में बड़ी कठिनाई पड़ती है। कई बार तो विश्व-खाद्य कार्यक्रम का सचिवालय इन समस्याओं को सुलझाने के लिए प्रायोजना के अध्यक्ष से अनुरोध करता हैं। परन्तु अन्तिम दायित्व सरकारों पर होता है। और उनका खर्च तभी ठीक माना जा सकता है, जब कार्यक्रम बहुत बड़ा हो। सामान्यत: यह कहा जा सकता है कि दो या तीन वर्षों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायता कार्यक्रम, जिसमें २००००० डालर से कम के खाद्य-सम्भरण होते हैं उससे बहुत कम लाभ होता है।

खाद्य-सम्बन्धी आदतें निषेध और कुछ विशेष वस्तुओं का न पा सकना कुछ और समस्याएँ खड़ी करता है। उदाहरण के लिए जिन लोगों को चावल ही खाने की आदत है, उनको गेहूँ में आकर्षण नहीं होता और डिब्बे में बंद मछली के उपयोग के लिए पहले ही सिखलाना पड़ता है।

छोटे देशों में ज्यादा खाद्य-सामग्रियों के जाने से सामान्य व्यापारिक कार्यवाहियों में गड़बड़ी हो सकती है।

संयुक्त राष्ट्र खाद्य-कृषि संगठन और विश्व-स्वास्थ्य संगठन और दूसरे विशेषीकृत अभिकरणों का इन सहायता की माँगों का परीक्षण कर लेने से इनमें से अधिकतर खतरे दूर हो जाते हैं।

विश्व खाद्य कार्यक्रम और यूनैस्को के बीच भावी सहयोग

संयुक्त राष्ट्र और खाद्य तथा कृषि संगठन १९६५ के बाद विश्व-खाद्य कार्यक्रम का भविष्य क्या हो इस सम्बन्ध में एक अन्तर-सरकारी समिति जिसकी बैठक अप्रैल में होगी, कि सिफारिशों पर कोई भी निर्णय विशेष रूप से नये कार्यक्रम के आकार और उसकी अवधि के सम्बन्ध में विश्व-खाद्य कार्यक्रम और यूनैस्को के बीच सहयोग के क्षेत्र को निश्चित करेंगे।

महासम्मेलन में यह इच्छा व्यक्त की कि विश्व-खाद्य कार्यक्रम को निरंतर कार्यवाही का रूप देना चाहेंगे। जब तक शिक्षा-सम्बन्धी कार्यक्रमों के लिए खाद्य संभरणों की सहायता एक पर्याप्त लम्बी अवधि के लिए न हो, तब तक उसको संगठित करना कठिन हो जाता है, उदाहरण के लिए विश्व-खाद्य-कार्यक्रम की सहायता स्कूल छात्रावासों के लिए बिलकुल ही अव्यावहारिक हो जायेगी, यदि उसको केवल एक या दो वर्षों के लिए ही देने का आश्वासन हो। क्योंकि माध्यमिक अध्ययन चार या पांच वर्ष तक चलता है। विश्व-खाद्य कार्यक्रम के कार्य-चालक निदेशक ने विश्व-खाद्य-कार्यक्रम की भविष्य सम्बन्धी अन्तरसरकारी समिति को अपनी रिपोर्ट में कम से कम पाँच वर्ष की अवधि तक दायित्व स्वीकार करने को कहा है।

महा-सम्मेलन द्वारा खाद्य कार्यक्रमों के लिए बहुत अधिक सीमा तक खाद्यसामग्रियों की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। यद्यपि कुछ वयस्क शिक्षा कार्यक्रमों के लिए शायद यह अधिक अच्छा होगा कि कुछ विशेष खाद्य-सामग्रियां ही दी जाएँ, परन्तु अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्र और दूसरे कर्मी-वर्ग के प्रशिक्षण केन्द्रों को शीघ्र नष्ट हो जाने वाली सामग्रियों के अतिरिक्त और सभी सामग्रियाँ पूरी दी जानी चाहिएँ। वर्तमान समय में यह निश्चय करना कठिन है कि अगले कुछ वर्षों में शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रमों के लिए उनसे सहायता माँगी जायेगी। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन और यूनैस्को के सचिवालयों ने अभी भोजन देने वाले व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों और स्कूल छात्रावासों की आवश्यकताओं का सर्वेक्षण करना प्रारम्भ किया है। इस सर्वेक्षण से यह पता चला जायेगा कि किन स्कूलों में लम्बी अवधि के लिए सहायता देने पर विद्यार्थियों की संख्या बढ़ जायेगी और यह भी पता लगाया जा सकेगा कि कितनी सहायता की आवश्यकता है।

इस प्रकार की सहायता के कुछ उपयोगों का अभी अध्ययन नहीं किया गया है और भविष्य में उनका पूरी तरह परीक्षण करना होगा। उदाहरण के लिए अधिक खाद देने पर छोटी स्कूल-भवन प्रायोजनाओं को प्रोत्साहन देने की सम्भावना का प्रयत्न अभी सीमित क्षेत्र में ही किया गया है।

परन्तु नयी सम्भावनाओं पर विचार करने से पहले यह निश्चित है कि यदि विश्व-खाद्य कार्यक्रम सहायता बनी रही तो अधिक से अधिक सरकारें—शिक्षा कार्यक्रम के लिए इसकी माँग करेंगी। यूनैस्को महा-सम्मेलन में अनेकों प्रतिनिधि मण्डल के प्रकथनों से यह बात निश्चित हो गयी।

इसी कारण से यूनैस्को सचिवालय विश्व-खाद्य कार्यक्रमों की सचिवालय से अधिक विस्तृत सहयोग की नींव रख रहा हैं। मिशनों के अध्यक्ष और इस क्षेत्र के विशेषज्ञ अभी से खाद्य-आवश्यकताओं के सर्वेक्षणों में सक्रिय भाग ले रहे हैं और अभी चल रहे प्रयोगों में आने वाली कठिनाइयों और उपलब्धियों का मूल्यांकन कर रहे हैं। यदि विश्व-खाद्य कार्यक्रम की कार्यवाहियाँ १९६६ में चलती रहीं तो उनकी प्रार्थनाओं को तैयार करने में ही सरकारों को सहायता देना इस सहयोग का अंश होगा।

विश्व-खाद्य कार्यक्रम के सहयोग द्वारा यूनैस्को शिक्षा विकास के एक ऐसे पक्ष को व्यावहारिक अभिव्यक्ति दे रही है जो उसके उद्देश्य का महत्वपूर्ण अंश है। यह स्पष्ट है कि कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदस्य देशों के लिए विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए भोजन की व्यवस्था करना बड़ी कठिन समस्या है और एक ऐसा आर्थिक भार है, जो शिक्षा के सामान्य खर्च में जुड़ हो जाता है। इस खर्च में सहायता देकर यूनैस्को को आशा है कि स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ेगी और सम्बन्धित देश अपने संसाधनों का अधिक अनुपात शिक्षकों की नियुक्ति, स्कूल-भवनों के निर्माण, साक्षरता-आन्दोलनों तथा सभी स्तरों पर शिक्षा के विस्तार पर खर्च कर सकेंगे।

अन्त में इस कार्य-चालन का एक प्रमुख मानवीय पक्ष भी है। खाद्य-कृषि-संगठन से इस कार्यक्रम में समायोजन करके जैसे कि इससे पहले भी किया है, परन्तु इस मामले में अधिक निकटता से यूनैस्को एक बार फिर सभी के रहन-सहन के स्तर में सुधार करने के लिए एक सार्वजनीन कार्रवाही में संयुक्त राष्ट्र-सरणी के सभी संस्थाओं के साथ अपना संयुक्त दायित्व फिर से दोहराती है।

शिक्षण मशीनें

टेड मोरेलो

ऐसे समय में जब शिक्षा के क्षेत्र में विश्वव्यापी परिवर्तन हो रहे हैं। एक अकेली शिक्षण-घटना ने न केवल व्यावसायिक व्यक्तियों का, वरन् सामान्य व्यक्तियों का ध्यान भी अपनी ओर आकर्षित किया है। यह घटना है शिक्षण मशीनों की क्रांति, बल्कि अधिक उपयुक्त यह होगा कि इसे "कार्यक्रम बद्ध शिक्षण" कहा जाय।

"कार्यक्रम-बद्ध शिक्षण" की कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियों के उल्लेख से यह पता चल सकता है कि स्वतः शिक्षण में इतना आकर्षण क्यों है।

दो या तीन वर्ष के बच्चों को इसके द्वारा पढ़ना और टाइप करना सिखाया गया है, बिना शिक्षक, पाठ्य-पुस्तक या घर के काम के आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों में एक ही शिक्षा-वर्ष में नवें क्लास का बीजगणित भी समाप्त कर लिया। मिशिगन विश्वविद्यालय के तीन विद्यार्थी इस मशीन के द्वारा पारम्परिक तरीकों से सीखने पर लगने वाले समय की अपेक्षा आधे समय में भलीभाँति स्पेनी भाषा बोलना सीख गये। ११ व्यक्तियों के दल ने प्रति दिन ६-७ घण्टे अध्ययन करके १० दिनों में इतनी रूसी सीखी, जितनी कालेज में पढ़ने पर डेढ़ शिक्षा—वर्षों में सीख पाते।

विशेष रूप से विकासशील देशों का उल्लेख करते हुए एक अधिकारी ने कहा "हमें विश्वास है कि कार्यक्रम बद्ध शिक्षण विश्व की शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाने में जादू की तरह काम कर सकता है।"

कार्यक्रम यह होता है कि शिक्षण सामग्री इस प्रकार से प्रस्तुत की जाय कि विद्यार्थी बिना किसी और की सहायता के और बिना गलती के एक प्रेरक तत्व-प्रतिक्रिया-पुरस्कार प्रारूप द्वारा एक विशिष्ट स्तर एक सीख ले। किसी भी कार्यक्रम के पीछे यह सिद्धान्त है कि सामग्री ऐसी होनी चाहिए जिससे किसी-न-किसी रूप में विद्यार्थी परिचित हों और इस प्रकार धीरे-धीरे छोटे-छोटे कदमों से उसको आगे बढ़ना चाहिए कि विद्यार्थी की प्रतिक्रियाएँ सही हों और वह आगे बढ़ सके। कार्यक्रम को पुस्तक के रूप में या मशीनी युक्तियों के द्वारा प्रस्तुत किया जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है और इसी से इन मशीनी युक्तियों का नाम शिक्षण मशीन पड़ गया है ।

व्यावहारिक रूप में कार्यक्रम बद्ध शिक्षण अभी अस्थाई और प्रयोगात्मक स्तर से आगे नहीं बढ़ा है । ऐसे लोग भी हैं जो कहते हैं कि यह इससे आगे कभी नहीं बढ़ेगा । क्योंकि इसमें शिक्षा की एकरूपता बिलकुल नहीं होती । फिर भी इसकी स्वीकृति के लिए बहुत प्रयत्न हो रहे हैं ।

इससे पहले शिक्षण में किसी भी नई बात ने इतनी चर्चा उत्पन्न नहीं की थी । एक सीमा पर वह लोग हैं जो शिक्षण मशीनों के सम्बन्ध में सनकीपन की हद तक उत्साहित हैं और दूसरी ओर वे हैं जो विविध कारणों से उतने ही उत्साह के साथ उनका निषेध करते हैं और बीच में शिक्षा विशेषज्ञ हैं जो अभी अनिश्चित हैं, सावधानी से देख रहे हैं, और कुछ शंकालु भी हैं । परन्तु इसके साथी ही उन्हें आशा भी है और वे यह विश्वास करने को उत्सुक हैं कि यह एक ऐसा मार्ग है जो सचमुच सीखने की ओर ले जाता है ।

अभी हाल की गणना के अनुसार संयुक्त राज्य अमेरिका में में ही शिक्षण मशीनें बनाने वाली १०० कम्पनियों की स्थापना हो चुकी है और यह संख्या बढ़ती जा रही है । मशीनों की इस बहुसंख्या को देखते हुए यह भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि शिक्षा-विशेषज्ञ आज इस बात पर भी एकमत नहीं है कि "किसको शिक्षा मशीन कहा जाय ।" फिर भी हावर्ड विश्व-विद्यालय के कार्यक्रम शिक्षण अधिकारी डा० डगलस पोरटर की परिभाषा कुछ ठीक है । वे कहते हैं, "शिक्षण मशीनें वह उपस्कार हैं जो विद्यार्थी के सम्मुख सही प्रतिक्रिया करते ही एक पुरस्कार प्रस्तुत करती हैं इस प्रकार शिक्षण के पारंपरिक को ही बदल देते हैं । इन सब उपस्कारों में ये तीन कार्यचालन विशेषताएं होती हैं ।

(अ) वे विद्यार्थी के सम्मुख समस्या सामग्री का एक क्रम प्रस्तुत करते हैं;

(ब) वे ऐसे माध्यम प्रस्तुत करती हैं जिनके द्वारा विद्यार्थी समस्या का सामाधान अंकित कर सके । और

(स) वे स्वत: और तत्काल समाधान के सही होने का निर्देश देतीं हैं ।

यह तथ्य कि एक विद्यार्थी अवसर स्पष्ट रूप में प्रतिक्रिया कर रहा है उसको तत्काल इस बात की जांच करने का अवसर दे देता है कि वह क्या सीख रहा है ? कक्षा के भाषण की स्थिति की अपेक्षा इस स्थिति में उसका सक्रिय सहयोग भी ध्यान के तनिक से भी अभाव का उसके सामने तत्काल स्पष्ट कर देता है । विद्यार्थियों के लिखित कार्य को जांचने का प्रभाव बहुत अधिक होता है, क्योंकि यह तत्काल सामने आता है । विद्यार्थी के कार्य में और उस कार्य को जाँचने के बीच में दिनों और हफ्तों का अन्तर नहीं होता जैसा कि लिखित परीक्षाओं में होता है । और अन्त में सही प्रतिक्रिया का तत्काल निश्चय हो जाने से विद्यार्थी पुरस्कृत, और आगे प्रयत्न करने के लिए प्रोत्साहित अनुभव करता है ।

स्वत: शिक्षण की एक बहुत महत्वपूर्ण विशेषता यह सत्य है कि वि़द्यार्थी अपनी गति से चल सकता है, न तो उसे धीमे सीखने वाले सहाध्यायियों के कारण रुकने की आवश्यकता है और न ही बिना तैयारी हुए आगे के पाठ पर जाने की ।

हावर्ड के एक मनोवैज्ञानिक डा० बी० एफ० स्किनर जो एक एक कदम सीखने का प्रदर्शन करने के लिए प्रयोगशाला के कबूतरों का प्रयोग करते थे, वे इस सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण बात कहते हैं ;

"मशीन तो अपने आप निश्चय ही सिखाती नहीं, वह केवल विद्यार्थी को उस व्यक्ति के सम्पर्क में ला देती है, जिसमें वह सामग्री तैयार की है जो मशीन में प्रस्तुत हैं । यह श्रम बचाने की युक्ति है क्योंकि इसके द्वारा एक कार्यक्रम बनाने वाला अनेकानेक विद्यार्थियों के संपर्क में आ सकता है ।"

'कार्यक्रमबद्ध शिक्षण केन्द्र' न्यूयार्क नगर में एक बिना लाभ पर चलने वाला शिक्षा-संगठन है । उसमें इस के सम्बन्ध में विश्वव्यापी स्तर पर सूचना दी जाती है । और उसमें शिक्षण मशीन के सम्बन्ध में यह कहा गया है :

"शिक्षण मशीन को पुस्तक पर जिल्द बांधने के समान समझा जा सकता है । इसी से अगर कोई बालक कुछ सीखता है तो वह उस मशीन में रखी गयी सामग्री के परिणामस्वरूप सीखता है न कि शिक्षण मशीन के परिणामस्वरूप । वास्तव में मशीन का इस प्रक्रिया से बहुत कम ही सम्बन्ध है । और बहुत बार तो वह आवश्यक भी हो जाता है ।"

फिर भी शोध से पता चलता है कि कार्यक्रम प्रस्तुतीकरण की यांत्रिकी का परिणामों पर कोई प्रभाव नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यक्रम बद्ध शिक्षण का यांत्रिक पक्ष विशेष रूप से संवेदनशील है। इस पद्धति को चलाने में रुचि रखने वाले शिक्षण-मशीन शब्द को पसन्द नहीं करते। वे कार्यक्रम बद्ध शिक्षण, स्वतः शिक्षण, या 'साइको मोटर' स्व-शिक्षण नामों के पक्ष में है। फिर भी सामान्य जनों के बीच प्रचलित सरल और सामान्य नाम शिक्षण मशीन ही है।

शिक्षण मशीन पारम्परिक 'विद्यार्थी कार्य पुस्तिका' से लेकर एक अत्यधिक जटिल यांत्रिक और विद्युतीय शिक्षक भी हो सकती है। जिसमें न केवल लिखित वरन् दृश्य श्रव्य सामग्री भी हो। विकास के विभिन्न स्तरों पर १०० नमूने हैं। जिनमें से आधे तो कम से कम सीमित रूप में या पूर्ण रूप में तैयार किये जाते हैं।

उसकी सरलता या जटिलता से कोई मतलब नहीं है। शिक्षण मशीन उतनी ही कारगर होती है जितनी वह शिक्षण सामग्री जो वह विद्यार्थी के सम्मुख प्रस्तुत करती है। प्रो० रॉबर्ट ग्लेजर जिन्होंने पिटसबर्ग विश्वविद्यालय में कार्यक्रम पुस्तकों का निर्माण किया है कहते हैं:—

यह एक तथ्य है कि सामग्री को कार्यक्रम में बद्ध करना कठिन कार्य है और मशीनों का बना देना उससे कहीं सरल है। यह बात इस तथ्य से और भी अधिक स्पष्ट हो जाती है कि वर्तमान समय में मशीनें कार्यक्रमों से कहीं ज्यादा हैं।

यह बात इससे और भी प्रमाणित हो गयी कि एक स्कूल बोर्ड में २० मशीनों के लिए ५ हजार डालर खर्च किए और तब उन्हें यह पता लगा कि कार्यक्रम ही सुलभ नहीं हैं।

बहुत से शोधकर्त्ता इस बात पर संतुष्ट हैं कि अब इस सम्बन्ध में कोई संदेह नहीं रहा है कि कार्यक्रमबद्ध शिक्षण कारगर होता है। (एक प्रयोगकर्त्ता कहता है कि रद्दी कार्यक्रम भी बहुत अच्छे शिक्षक का काम करता है) अब कार्यक्रमबद्ध शिक्षण को कारगर बनाने की अपेक्षा अब ऐसी सामग्री तैयार करने पर जोर दिया जाता है जो बिना निरर्थक और हानिकर गलतियों के विद्यार्थी को इच्छित दिशा में भेज सके।

ठीक ठाक कार्यक्रम वह है जो बहुत ही अच्छी तरह तैयार किया गया है और दृढता से जिसका परीक्षण हुआ है। कार्यक्रम तैयार करने वाला पहले इसको एक विद्यार्थी पर करके देखता है और जब तक इच्छित प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं होती तब तक कुछ बातें जोड़ता और कुछ बातें निकालता जाता है। एक-एक करके १० दूसरे विद्यार्थी इस सामग्री पर काम करते हैं और इसका फिर आवश्यकतानुसार पुनरीक्षण किया जाता है। इसके बाद कार्यक्रम का समूह रूप में परीक्षण किया जाता है। और फिर यह एक कार्यक्रम परीक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत जिन विद्यार्थियों ने भाग लिया था, उनके समान बौद्धिक स्तर वाले ६८ प्रतिशत विद्यार्थियों को पढ़ाने में कारगर होता है।

स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के संचारण-शोध संस्थान के निर्देशक विलबर स्ट्रेम कहते हैं। "इस बात के सम्बन्ध में सदा ही बहुत निश्चित माना जाता रहा है कि किसी भी औसत विद्यार्थी को शिक्षण देने की एक विशेष शिक्षण के लिए उचित अवस्था क्या है।" पर वह इस सम्बन्ध में पूछते हैं कि :

"मान लीजिए कि विद्यार्थी का तैयार होना केवल सामग्री पर ही नहीं वरन् शिक्षण तरीके पर भी निर्भर करता है। उदाहरण के लिए मान लीजिए कि एक विद्यार्थी सामान्य ढंग की पढ़ाई में १०वीं कक्षा में ही रेखागणित पढ़ने के लिए तैयार है परन्तु दूसरे ढंग से पढ़ने पर उसे दूसरी कक्षा से ही रेखागणित पढ़ाया जा सकता है। मान लीजिए कि सोवियत रूस में बुद्धिमत्ता के परीक्षण कम से कम किए जाते हैं। और जब एक बच्चा एक व्याख्या या एक संकल्पना को नहीं समझ पाता तो वह उसका दोष उस बच्चे की बुद्धि की कमी पर नहीं वरन् कुछ हद तक उस तरीके पर डाला जाता है जिसमें वह सामग्री सिखाई जा रही है। मान लीजिए परीक्षण बनाने वाले अपने काम को यह न समझें कि उन्हें अयोग्यों में से योग्यों को ढूंढना है वरन् यह कि शिक्षण के वे तरीके निकालने हैं जो विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के अनुकूल होंगे।

कार्यक्रमों को दो श्रेणियों में रखा जा सकता है। पंक्तिबद्ध और शाखायुक्त। पंक्तिबद्ध कार्यक्रम विद्यार्थी को सही प्रतिक्रिया की ओर कदम-कदम करके ले जाता है, और कभी-कभी तो काफी स्पष्ट से तरीकों द्वारा उसको बताता भी रहता है, संकेत भी देता रहता है। डा० स्किनर पंक्तिबद्ध कार्यक्रम के प्रमुख प्रस्तावक हैं। वे कहते हैं कि "सामान्यतः शिक्षकों की यह इच्छा होती है कि विद्यार्थियों से कुछ गलती हो। यदि सभी विद्यार्थी प्रश्नों का उत्तर दे देते हैं तो शिक्षक प्रश्नों को थोड़ा कठिन बना देते हैं। शिक्षण मिशीनों में विद्यार्थियों को सही होने के सभी अवसर दिये जाते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाखा-युक्त कार्यक्रम में जो विद्यार्थी सही उत्तर दे देता है वह तने के रास्ते से अगले प्रश्न पर पहुँच जाता है परन्तु यदि उसका उत्तर गलत हो जाता है तो वह एक व्याख्यात्मक सामग्री प्रस्तुत करने वाली शाखा पर आ जाता है जो उसकी गलती को ठीक करने की पृष्ठ-भूमि प्रस्तुत कर देती है। जैसे ही वह सहायक सामग्री समझ लेता है वह पुनः शिक्षण के प्रमुख स्रोत पर प्रश्न-प्रश्न से चलता हुआ आ जाता है। दूसरे शब्दों में विद्यार्थी के सम्मुख या तो शोधक सामग्री प्रस्तुत की जाती है या अधिक आगे की सामग्री जल्दी-जल्दी रखी जाती है।

कार्यक्रम बद्ध पाठ्य-पुस्तकें सबसे अधिक प्रयोग के तरीकों में से हैं। वास्तव में तो यह कहा जा सकता है कि आजकल पाठ्यक्रमों में केवल उन्हीं का प्रयोग स्वीकृत है। जैसा कि एक शोध दल ने कहा है "कार्यक्रम बद्ध पाठकों में अपनी प्रतिक्रिया के पहले ही सही उत्तर का पता लगा लेने से विद्यार्थी को उसकी विवेक बुद्धि ही रोक सकती है।" दूसरी ओर मशीनों में बेईमानी का कोई साधन नहीं होता। उनमें समस्याएँ एक-एक करके सुलझाई जाती हैं और उत्तर तब तक छिपे रहते हैं, जब तक विद्यार्थी अपनी ओर से प्रत्युत्तर नहीं दे लेता।

पाठ्यक्रम सामग्री को प्रस्तुत करने की दूसरी युक्तियों में स्मृति ढोल, घूर्णनचक्र, फिल्म अनुक्रम, स्लाइडें, सूची-कार्ड और चुम्बकीय टेप-रिकार्ड भी हैं।

डा० पोरटर की कार्यचालन विशेषताओं के रूप में समस्या जिस रूप में प्रस्तुत की जाती है वह मशीन के नमूने पर निर्भर करती है। परन्तु सामान्यतः समस्या एक छोटे कथन या प्रश्न से लेकर अनेकों उद्धरणों तक हो सकती है। यह युक्ति प्रतिक्रिया प्रस्तुत करने के पहले ही सीखने वाले को प्रस्तुत कर देने के लिए अथवा वह एक निश्चित समय के अन्तराल में दूसरे प्रश्न पर जा सकता है। विद्यार्थी की प्रतिक्रिया का दूसरा कदम अनेकों प्रकार से उठाया जा सकता है। और यह है मशीन के प्रारूप पर निर्भर है। विद्यार्थी एक शब्द या उद्धरण लिख सकता है। एक छेद कर सकता है या बटन दबा सकता है या जैसा भी प्रबन्ध मशीन में हो उस ढंग से अपनी प्रतिक्रिया सूचित कर सकता है। उत्तर की युक्तियाँ एक ओर बहुमुखी चुनाव और दूसरी ओर निर्मित प्रतिक्रिया के बीच होती हैं।

अन्तिम कदम समाधान के सही होने का निश्चय और पुरस्कार प्रयुक्त युक्ति के रूप पर निर्भर होता है। सामान्यतः अधिक कार्यक्रम को स्पष्ट करने के द्वारा विद्यार्थी की प्रतिक्रिया को निश्चित करता है और उसको पर्याप्त पुरस्कार भी देता है। परन्तु पुरस्कार कभी-कभी बिजली जलने, घण्टी बजने, दृश्य-श्रव्य मूल्यांकन विशेष रूप से छोटे बच्चों के लिए मिठाई, संगमरमर के टुकड़े या छोटे टुकड़ों या खिलौनों के रूप में हो सकता है।

नीचे मूल गणित के लिए एक सरल स्व-शिक्षण वृत्ति का कदम-कदम का संचालन दिया हुआ है। इस युक्ति में एक कार्ड-बोर्ड की जिल्द के भीतर १२ पत्ते होते हैं। इस जिल्द में एक खिड़की होती है जिसमें पत्ते का एक टुकड़ा दिखाई देता है। इसमें एक सांचे में एक प्रश्न या शिक्षण उद्धरण या दोनों होते हैं और दूसरा सांचा विद्यार्थी की प्रतिक्रिया के लिए खाली छूट जाता है, जब एक सांचे का काम हो जाता है तो विद्यार्थी दूसरा सांचा निकाल लेता है। और पहले सांचे का उत्तर नीचे से निकल आता है। तथा एक नया प्रश्न शिक्षण-उद्देश्य और दूसरे प्रश्न के लिए खाली जगह निकल आती है।

उदाहरण के लिए पहले सांचे में यह है : "गणित में हमें संस्थाओं को समझना और उनके अर्थों को पूरी तरह से जान लेना होता है तभी हम सही उत्तर प्राप्त कर सकते हैं।"

क्योंकि यह केवल निर्देश सामग्री मात्र है अतः उत्तर बक्स में इतना ही लिखा होता है। दूसरे सांचे पर जाओ। दूसरे सांचे में लिखा होता है जब हम गणित में अंकों को (बीच में जगह छूटी होती है) लेते हैं तो हमें सही उत्तर मिल जाएँगे (खाली जगह को भरिये)। साथ के बक्स में विद्यार्थी को 'समझ' लिखना होता है। दूसरे पत्ते पर आ जाता है जिसमें तीसरा सांचा दिखाई देता है उसमें दूसरे सांचे के प्रश्न का सही उत्तर होता है और न ही शिक्षण सामग्री ही। जिस रूप में संख्याएँ रखी जाती हैं उसको हम एक पद्धति कहते हैं। चौथे सांचे में लिखा होता है। जब हम संख्या पद्धति को समझ लेते हैं तब हमें (सही-गलत) उत्तर मिल जाते हैं। ठीक शब्द चुनो : उत्तर बक्स में विद्यार्थी लिखता है "सही" और जब वह पांचवें सांचे में जाता है और "सही" शब्द को देखता है तो पुरस्कृत अनुभव करता है।

किसी भी स्थिति में कार्यक्रम बद्ध शिक्षण न केवल एक विद्यार्थी को यह सिखाता है कि क्या सीखना है वरन् यह भी कि कैसे सीखना है। इसका अन्तर इस प्रकार से एक शिक्षक और गृह शिक्षक के रूप में देखा जा सकता है। दोनों ही तथ्यों को प्रस्तुत करते हैं। लेकिन गृह शिक्षक विद्यार्थी को सीखने में सहायता भी देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि इस पद्धति में ध्यान इस बात पर केन्द्रित किया जाता है कि विद्यार्थी को सही प्रतिक्रिया पर ले जाया जाता है, इसी से कार्यक्रम बद्ध शिक्षण का अनिवार्य अंग सूचना देना भी हो जाता है। अच्छे और अपर्याप्त सूचकों के विशेष उदाहरणों के रूप में पिट्स बर्ग में शोध के अमरीकी में शिक्षण और शिक्षा के सहायक कार्यक्रम निदेशक डा० डेविड जे० क्लाज इन समस्याओं की सूची प्रस्तुत करते हैं उदाहरण (क) फारनेहाइट और सेंटीग्रेट तापमान हैं। केलविन एक……है।

उदाहरण (ख) फारनेहाइट और सेंटीग्रेट तापमान हैं। केलविन भी एक……है।

डा० क्लाज का कहना है कि उदाहरण (क) उचित संकेत से युक्त सांचा नहीं है। वह शिक्षण में सहायक होने की अपेक्षा एक परीक्षा-प्रश्न की भाँति है।

वे कहते हैं—एक शब्द 'भी' के ही जोड़ देने से उदाहरण (ख) एक बहुत अच्छा प्रश्न सांचा बन जाता है। किसी भी विद्यार्थी के लिए चाहे उसने केलविन शब्द पहले कभी न देखा हो उसका गलत उत्तर देना कठिन है।

स्वशिक्षण युक्तियों से हम क्या आशा कर सकते हैं। अधिकतर कार्यक्रम बद्ध शिक्षण के तीन स्तर बतलाए जाते हैं। सबसे नीचे स्तर पर शब्द, गणित, शब्दावृत्ति और इतिहास तथा भूगोलों के मूल तथ्यों का रटना होता है। इससे आगे वह संकल्पनात्मक सीखना होता है, जिसमें विद्यार्थी न केवल तथ्यों को रटता है वरन् कार्यक्रम के अन्तर्गत आने वाली समस्याओं और उदाहरणों को समझने के योग्य हो जाता है। भौतिकी आंकिकी और अर्थशास्त्र इस दिशा में चुनौती प्रस्तुत करते हैं। उच्चतर शिक्षण स्तर सृजनात्मक विचार और निर्णय जैसी क्षमताओं के शिक्षण का होता है।

डा० क्लाज कहते हैं "शिक्षा के इसी स्तर पर स्व-शिक्षण की सबसे बड़ी सफलता हो सकती है। इस क्षेत्र में कार्यक्रम को विकसित करने की सम्भावनाएँ दो सामान्य प्रशिक्षणों से प्राप्त की गई हैं। पहले तो हमें यह समझने के लिए पर्याप्त तथ्य हैं कि सृजनशीलता और निर्णय शक्ति शिक्षित व्यवहार के उदाहरण हैं। दूसरे हमारे पास इस सूचना के भी प्रमाण हैं कि इन व्यवहारों को सिखाया जा सकता है। जो शेष रह जाता है वह केवल यन्त्र कीसमस्या है। अर्थात् इन व्यवहारों को ठीक ठीक निश्चित करना और तब स्वशिक्षण तरीकों और युक्तियों द्वारा विद्यार्थी में इन व्यवहारों की स्थापना करना।"

फिर भी इसी बिन्दु पर अनेकों शिक्षा जानकार शिक्षण मशीनों के प्रति उत्साहियों से अलग हो जाते हैं। क्योंकि परिमाणात्मक शिक्षण में इस युक्ति के नमा को मानते हुए भी वे गुणात्मक विषयों में इस मशीन के कारगर होने में सन्देह करते हैं।

उपलब्ध कार्यक्रमों की संख्या के अनुसार यह कहा जा सकता है कि एक क्षेत्र में अभी गणित की ही प्रधानता है, क्योंकि यह एक ऐसा विषय है जो एक-एक कदम पर सीखने योग्य सही उत्तरों का विषय है और इसलिए कार्यक्रम बद्ध शिक्षण के अन्तर्गत सरलता से आ जाता है। इसके बाद पढ़ने और वर्णनावृत्ति के लिए अंग्रेजी का नम्बर आता है और इसके बाद मनोविज्ञान, विदेशी भाषाएँ और भौतिकी का।

दक्षिण कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में शिक्षण मशीन के शोधकर्त्ता डा० एडवर्ड बी० साई कहते हैं "शायद यह कहना ठीक ही होगा कि अगले कुछ वर्षों में हमारे स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले हर विषयों के लिए कार्यक्रम शिक्षण सम्भव हो सकेगा।

न्यूयार्क विश्वविद्यालय के कुलपति डा० जार्ज डी सोडार्ड इसके विपरीत मत रखते हैं। वे कहते हैं कि मशीन का तथ्यों सूत्रों, शब्द समूहों और व्याकरण के नियमों के शिक्षक का रूप तो ले सकता है लेकिन उन्हें डर है कि इस प्रकार के शिक्षण तरीकों से बच्चे की विचारशक्ति उसकी सृजनात्मक और निर्माण-आत्मक प्रक्रियाओं को प्रोत्साहन तो नहीं ही मिलता उनको हानि पहुँचाती है। डा० स्टौडर्ड कहते हैं उस मशीन की अपेक्षा जो बच्चे में सूचना तो भर देती है, परन्तु किसी प्रकार के मानसिक लगाव से दूर कर देती है। वह शिक्षक कहीं अच्छा है जिसपर बालक को खीझ आती है।

स्वशिक्षण के प्रति सबसे अधिक विरोध अर्थशास्त्र पर आधारित है। अनेको शिक्षक इस बात से भयभीत हैं कि मशीनें उसका स्थान ले रही हैं। एक ने तो अपनी शत्रुता यहाँ तक प्रकट की कि कार्यक्रम बद्ध शिक्षण से शिक्षित विद्यार्थियों की कक्षा में से ३० प्रतिशत को अनुत्तीर्ण कर दिया। और दो स्थानों पर स्कूल-प्रशासकों ने कक्षाओं से कार्यक्रम बद्ध शिक्षण का निषेध करने के लिए कानून की माँग की है।

माता-पिता और सामान्य जनों के बीच विरोध इस भावात्मक आधार पर होता है कि उन्हें डर रहता है कि विद्यार्थी और शिक्षक के बीच पारम्परिक सम्बन्ध नष्ट हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोधियों की दोनों ही श्रेणियाँ स्वाचलन को शत-प्रतिशत एक मशीनी शिक्षापद्धति के रूप में देखते हैं।

इस पद्धति के प्रस्तावक इन भयों को निराधार समझते हैं। उत्तर देते हैं कि मशीनें हों या न हों, कार्यक्रमों के द्वारा शिक्षकों को उस यान्त्रिक शिक्षणों से शिक्षणों के उबा देने वाले कार्यों से मुक्ति मिल सकती है, जिनसे वे अधिक प्रेरणादायक और विचर-उतेजक कार्यवाहियाँ कर सके जो शिक्षक का सच्चा काम है। ये शब्द "ओहायो राज्य विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक डा० एस० एल० प्रेस के हैं। वे सामान्यतः शिक्षण मशीन की क्रान्ति के जनक माने जाते हैं।

एक शिक्षा विशेषज्ञ ने मशीन की रक्षा में कहा है: "किसी भी मानव को अपनी शक्तियाँ वह काम करने में नष्ट नहीं करनी चाहिएँ, जो ४० पृष्ठों या दो फोनोग्राफ से हो सकता हैं। क्योंकि वैयक्तिक शिक्षण मूल्यवान है और वह कर सकता है, जो तुस्तकें और उपकरण नहीं कर सकते। उसको अपने विशेष कार्य के लिए बचा रखना चाहिए। अच्छे से अच्छा शिक्षक पुस्तकों और उपस्करों का प्रयोग करता है और उसके साथ ही अपनी अन्तर्दृष्टि सद्भावना और आकर्षण शक्ति का भी।

स्वशिक्षण तब भी निश्चित रूप से स्वीकरणीय हो जाता यदि उसका केवल यही लाभ होता कि यह विश्व के बालकों को शिक्षित करने में जल्दी करेगा। (केलीफोनिया विश्वविद्यालय के शिक्षा मनोवैज्ञानिक डा० ए० ए० लम्ब्सस्टेन का पूर्व अनुमान यह है कि मशीनों द्वारा अत्यधिक बुद्धिमान व्यक्ति अपनी स्कूल शिक्षा १४ वर्ष की अपेक्षा १० वर्ष में ही समाप्त कर लेगा) परन्तु सत्य तो यह है कि कार्यक्रम बद्ध शिक्षण दूसरे कारणों से भी अत्यधिक आकर्षक है :

विश्व में अधिक से अधिक शिक्षकों की आवश्यकता है। कार्यक्रम बद्ध शिक्षण उपलब्ध शिक्षकों के काम को ही विस्तृत करने का रास्ता बताता है। बड़े बड़े स्कूल भवनों के निर्माण के बढ़ते हुए खर्चे स्कूलों को गरीब और बहुत से विकसित देशों की पहुँच से भी दूर कर देते हैं। और इसलिए वे मशीनें जो साधारण भवनों या घर पर भी प्रयुक्त हो सकती है बजट की दृष्टि से वरदान सिद्ध होती हैं। इन और दूसरे कारणों से आकर्षित होकर लेटिन अमरीका, एशिया- अफ्रीका और यूरोप के शिक्षा विशेषज्ञ इस क्षेत्र में विकास को बड़े ही उत्सुक भाव से देख रहें हैं। पहले प्रयोगात्मक कदम अब तक स्वीडेन, फ्रांस, इंगलैण्ड, जापान, पश्चिम जर्मनी, दक्षिण अफ्रीका और नाइजीरिया में उठाये जा चुके हैं।

कंपाला, (यूगेंडा) के माकेरेर कालेज के प्रो० आर्थर फ्रेंच कहते हैं कि अफ्रीकी शिक्षा-विशेषज्ञों के बीच इस सम्बन्ध में गहरी रुचि है। और वे यह भी कहते हैं कि शिक्षण मशीनों के खर्चे से बहुत से प्रशासक डर रहे हैं। कार्यक्रम बनाने वाले व्यावसायिक दृष्टि से शिक्षण-मशिनों के निर्माताओं से संबद्ध नहीं है। इस बात पर सहमत है कि नवोदित देशों में इस समय मशीनी युक्तियों पर अत्यधिक खर्च करना बुद्धिमानी की बात न होगी। कार्यक्रम बद्ध शिक्षण केन्द्र के अध्यक्ष पी० केनेथ कामोस्की कहते हैं :"

"हम उस देश की सहायता नहीं करेंगे जो ध्यान लगाकर पारम्परिक पाठ्यपुस्तकों को बनाने या प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। उनको यह बतलाने से कोई लाभ नहीं होगा कि हमारे पास अधिक अच्छी पुस्तकें हैं (जिनका खर्चा बहुत ज्यादा है।) वास्तव में हम कार्यक्रमबद्ध शिक्षण के उत्पादनों पर अर्थात् कार्यक्रम बद्ध पाठकों और शिक्षण युक्तियों पर जितना कम जोर देंगे, उतना ही अच्छा होगा। एक चीज तो यह है कि शिक्षण-मशीनें आज देशों को विकसित करने में सहायक न होंगी उसका कारण यही है कि वे इस देश में चल नहीं सकती। क्योंकि वे यहाँ के लिए पर्याप्त रूप से बनाई नहीं गई। और मशीन की त्रुटि हो जाने पर उसके निर्माण स्थल से इतनी दूर कितनी कठनाई होगी कि उसका प्रयोग करना ही मूर्खता है।

तात्कालिक भविष्य के लिए मि० कोमोस्की कहते हैं "जोर इसी बात पर देना चाहिए कि जिस तरह कार्यक्रम बद्ध शिक्षण के सिद्धान्त हर शिक्षण स्थिति कौर हर सुलभ माध्यम के लिए प्रयुक्त किया जा सकतें हैं। इस प्रकार का दृष्टिकोण कार्यक्रम बद्ध शिक्षण के विश्वव्यापी प्रयोग की सम्भावना के सम्बन्ध में दो महान् अज्ञात समस्थाओं के समाधान के प्रति उद्दिष्ट हैं। (अ) कहां तक कार्यक्रम बद्ध शिक्षण जो अभी तक पूरी तरह से अमरीकी है, दूसरे राष्ट्रों व अंग्रेजी भाषी राष्ट्रों के भी उपयुक्त कैसे बनाया जा सकता है। (ब) अमेरिका में प्रारम्भिक कार्यक्रम शिक्षण के लिए उपयुक्त कितने सिद्धान्त दूसरे राष्ट्रों, संस्कृतियों और शिक्षा-स्तरों के लोगों के लिए दूसरी भाषाओं में अपने-अपने कार्यक्रमों का निर्माण करने के लिए उपयुक्त होंगे।

इस बात को स्वीकार करते हुए कि कार्यक्रम बद्ध शिक्षण के सम्बन्ध में इससे ज्यादा कुछ नहीं मालूम है कि वह कारगर होता है। फिर भी इस क्षेत्र में शिक्षा-मनोवैज्ञानिकों का यह विश्वास है कि यह अज्ञान के विरुद्ध विश्व-व्यापी संघर्ष में एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्यधिक शक्तिशाली एक नया अस्त्र है और इस बात का ध्यान करते हुए कि साक्षरता और औद्योगिक के शिक्षण के लिए विश्व की आवश्यकता इतनी विशाल है कि उसको ठीक से समझा जा सकता । डा० स्क्रैम कहते हैं :

क्या कार्यक्रम बद्ध शिक्षण का बुद्धिपूर्ण उपयोग उस कार्य के लिए आवश्यक समय और धन की बचत करता है, जो भी कार्यक्रम बद्ध शिक्षण से परिचित हो और जिसमें भी नये राज्यों की आवश्यकताओं को निकट से देखा है वह इस शिक्षण की उपलब्धियों के प्रति बहुत ही आशावान है । इन देशों में शिक्षकों की बहुत कमी है और यह अच्छे शिक्षकों को बढ़ाने की एक युक्ति है । इन देशों में सीखने की बहुत सी प्रेरणाएँ हैं । यह एक युक्ति है जिससे इन प्रेरणाओं का लाभ उठाया जा सकता है, जिन देशों को बहुत अधिक विशेषज्ञ और विशिष्ट शिक्षण की आवश्यकता है, जो अवसर उनके शिक्षकों की योग्यता के अनुकूल नहीं होती । अनेकों एक कमरे वाले स्कूल ऐसे शिक्षकों के अन्तर्गत संचालित होते हैं, जिनको स्वयं ही चार या छः वर्ष की शिक्षा प्राप्त हुई हैं । ऐसे एक कमरे के स्कूलों में शिक्षण सुविधाओं को सुनिर्मित कार्यक्रमों के एक छोटे से पुस्तकालय से भी कितना बढ़ाया जा सकता है ।"

पुर्त्तगाल यूनैस्को का सदस्य

पुर्त्तगाल संयुक्त राष्ट्र की शिक्षा विज्ञान और साँस्कृतिक संगठन (यूनैस्को) का सदस्य देश बन गया है । ११ मार्च को पुर्त्तगाल सरकार ने यूनैस्को संविधान पर दस्तखत किये और अपने स्वीकृति उपकरण लंदन के विदेश कार्यालय में जमा कर दिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार

शिक्षा

विश्वविद्यालय और वयस्क शिक्षा

वयस्कों की शिक्षा के सम्बन्ध में विश्वविद्यालयों के योग का एक विश्व सम्मेलन विश्वविद्यालय वयस्क शिक्षा की अन्तरराष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा यूनैस्को की तकनीकी और आर्थिक सहायता से २० से २७ जून तक हमुलबीक कोपेनहेगेन के निकट डेनमार्क में एक विश्व सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा।

वयस्क शिक्षा में विश्वविद्यालयों के योग का अध्ययन पहले भी १५ सितम्बर, १९५५ तक इंगलैंड में और १८ जनवरी से फरवरी, १९६४ तक सिडनी आस्ट्रेलिया में प्रादेशिक बैठकों में किया जा चुका है। पहली बैठक निरन्तर शिक्षा सम्बन्धी शोध से सम्बन्धित था और दूसरी इस शिक्षा में विश्वविद्यालयों और स्कूलों के योगदान से। परन्तु यह पहली बार है कि एक विश्व-सम्मेलन में संपूर्ण प्रश्न पर विस्तृत अध्ययन किया जायेगा, और इसलिए यूनैस्को की दृष्टि से इस बैठक विशेष का महत्व है।

सम्मेलन की कार्य-सूची में चर्चा के प्रमुख विषय यह होंगे :—

शिक्षा और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना; निरन्तर शिक्षा की संकल्पना; विश्वविद्यालयों का योग; विश्वविद्यालय और सामाजिक परिवेश; और "जनता विश्वविद्यालय" तथा डेनमार्क का सामाजिक परिवेश।

विश्व विद्यालय वयस्क शिक्षा की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस का स्को के साथ परामर्शक सम्बन्ध है। विश्व के निम्नलिखित प्रदेशों में इसकी २७ सदस्य संस्थाएं हैं : अफ्रीका (६), अरब राज्य (२), एशिया (२), योरप (९) लेटिन अमरीका और केरीबियन (३), उत्तरी अमरीका (२)। इस कांग्रेस की स्थापना संयुक्त राज्य अमेरिका में १९६० में हुई थी इसका उद्देश्य यह है कि विश्व के प्रत्येक भाग में विश्व विद्यालयों द्वारा चलाई गयी वयस्क शिक्षा किसभी पक्षों का अध्ययन किया जाय। इस उद्देश्य से इसका प्रयत्न यह रहता है कि इन कार्यवाहियों द्वारा विश्वविद्यालय वयस्क शिक्षकों के बीच संचारण बढ़ायें। इस काम में लगे हुए लोगों को शिक्षा का आयोजन करने वाले विश्वविद्यालयों की एक निदेशिका बनाना और उसका निरन्तर पुनरीक्षण; विश्वविद्यालय वयस्क शिक्षा की एक अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका और दूसरे प्रकाशनों का आयोजन विश्वविद्यालय बयस्क शिक्षकों की प्रादेशिक और अन्तर्राष्ट्रीय बैठकों का संयोजन। पुस्तकालय केन्द्रों और प्रादेशिक सूचना का निर्माण और विश्वविद्यालय वयस्क शिक्षकों के बीच विनिमय को प्रोत्साहन।

एशियाई प्रादेशिक संस्थान

बैंकाक के एशियाई शिक्षा प्रादेशिक कार्यालय के कार्यों को इस प्रकार निश्चित किया गया :

(अ) शिक्षा के क्षेत्र में एशिया में यूनैस्को के प्रादेशिक और उप-प्रादेशिक कार्यक्रमों से सम्बन्धित कार्यवाहियों का निर्देश करना और उन्हें प्रोत्साहन देना। इस उद्देश्य से कार्यालय के निदेशक पर निम्नलिखित प्रादेशिक संस्थानों के कार्य के अवीक्षण और प्रोत्साहन का दायित्व होगा। नयी दिल्ली के शिक्षा आयोजना और प्रशासल सम्बन्धी एशियाई संस्थान, बांडुंग के स्कूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवन, शोध के एशियाई संस्थान और फिलिपाइन के पेजन नगर के शिक्षक शिक्षा-विशेषज्ञों के प्रशिक्षण सम्बन्धी एशियाई संस्थान।

(ब) नवम्बर, १९६५ में निश्चित एशियाई शिक्षा-मन्त्रियों की तैयारी और इस सम्मेलन में किये गये निर्णयों की कार्यान्विति।

(स) यूनैस्को प्रधान कार्यालय से निर्देश मिलने पर एशियाई आर्थिक आयोग और बैंकाक के संयुक्त राष्ट्र बाल कल्याण निधि के प्रादेशिक कार्यालय से मिशनों का संचालन।

(द) प्रधान केन्द्र से निर्देश मिलने पर शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय आयोजनाओं के सम्बन्ध में यूनैस्को कार्यवाहियों से सम्बन्धित तदर्थ मिशनों का संचालन।

इन कार्यों के अन्तर्गत प्रारम्भिक, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा तथा वयस्क शिक्षा कार्यक्रम और युवक कार्यवाहियाँ आ जाती हैं।

मि० राजाराय सिंह (भारत) जो पहले शिक्षा आयोजन के यूनैस्को सचिवालय कार्यलय में थे पहली अप्रैल,१९६५ से बैंकाक कार्यालय के निदेशक बन गये हैं।

शिक्षा आयोजना और प्रशासन का एशियाई संस्थान, (नई दिल्ली)

२० नवम्बर, १९६४ से १९ फरवरी, १९६५ तक शिक्षा अधीक्षकों का दूसरा प्रशिक्षण क्रम हुआ। इन देशों से भाग लेने वाले आये थे—अफगानिस्तान, कम्बोडिया, श्रीलंका, चीन गणराज्य, भारत, इण्डोनेशिया, लाओस, मलेशिया, फिलिपाइन, थाईलैण्ड और वियतनाम।

फिलिपाइन के किजान नगर के शिक्षकों और शिक्षा जानकारों की एशियाई संस्था द्वारा आयोजित तीसरा प्रशिक्षण क्रम २ मई को समाप्त होगा। इसमें इन देशों के प्रशिक्षणार्थी भाग ले रहे हैं : अफगानिस्तान, चीन गणराज्य, इण्डोनेशिया, ईरान, कोरिया गणराज्य, मलेशिया, नेपाल, फिलिपाइन और थाईलैंड। वर्तमान समय में संस्थान से सम्बद्ध संस्थाएँ १३ सदस्य देशों में हैं।

स्कूल भवन शोध के एशियाई संस्थान का पहला प्रशिक्षण क्रम १८ सितम्बर से १८ दिसम्बर, १९६४ तक हुआ। इसमें इन-इन देशों के प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया : श्रीलंका, भारत, इण्डोनेशिया, पाकिस्तान, फिलिपाइन, और थाईलैण्ड।

एशिया में राज्यों के आर्थिक आयोजना मन्त्रियों और शिक्षा मन्त्रियों, के सम्मेलन का संयोजन यूनैस्को द्वारा एशियाई आर्थिक आयोग के सहयोग से बैंकाक के शांतिथम हाल में २२ से २९ नवम्बर, १९६५ तक होगा। इसका प्रमुख उद्देश्य है कि एशिया के अर्थिक विकास की सम्भावनाओं का अध्ययन, शिक्षा विकास या आयोजन करने वाले सदस्य देशों के लिए आवश्यक सहायता की सिफारिश और कराची आयोजन की कार्यान्विति में इन देशों द्वारा की हुई प्रगति का अध्ययन।

प्राकृतिक विज्ञान

विज्ञान और निःशस्त्रीकरण

यूनैस्को भवन, पेरिस में १५ से १९ मार्च तक वैज्ञानिकों के एक दल की बैठक हुई। इसमें वैज्ञानिक और औद्योगिक शोध के वकास पर निशस्त्रीकरण के दीर्घावधि परिणामों का अध्ययन किया गया। इस दल में विभिन्न देशों से ये-ये लोग थे : प्रो० जे० डी० बर्नाल, (इंग्लैंड), प्रो० डायमिज़ ब्लास्कोविक (चैकोस्लोवाकिया), प्रो० कार्ल डब्ल्यू० ड्यूश (संयुक्त राज्य अमेरिका), औटोमुलवॉक (नीदरलैंड), एन० सी० औटीनो (कीनिया), पिऐर पिगानिओल (फ्रांस), रज़ीउद्दीन सिद्दीकी (पाकिस्तान), और जार्जी जैकेजिट (हंगरी) इस बैठक में कई सिफारिशें की गयीं, जिनको प्रो० ब्लास्कोविक और प्रो० बर्नाल द्वारा तैयार किए गए कार्य-पत्रकों के साथ वेनिस में ११ से १९ अप्रैल, तक विज्ञान और विश्व मामलों पर १४वें पगवॉश सम्मेलन के सम्मुख प्रस्तुत किए जायेंगे।

इन सिफारिशों की भूमिका में दल ने अपना यह विश्वास प्रकट किया है कि "मानवता के संरक्षण के लिए निशस्त्रीकरण एक अनिवार्य आवश्यकता है। और अगले कुछ वर्षों में इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त प्रगति की जा सकती है।"

"विशेष रूप से यह दल सैनिक तैयारियों के वर्तमान प्रभावों के सम्बन्ध में चिंतित रहा है, क्योंकि उनमें विज्ञान के अधिकतर संसाधन प्रयुक्त हो जाते हैं। और इस प्रकार मानवता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाभ के लिए इसके प्रयोग करने के लक्ष्य विकृत होते जा रहे हैं।" विज्ञान को इन लक्ष्यों के प्रति बढ़े हुए संसाधनों के साथ लौटने का अवसर देकर निशस्त्रीकरण वैज्ञानिक शोध के सभी क्षेत्रों के अधिकाधिक सुविधाएँ दे सकता है।

दल ने इन विषयों की तात्कालिक अध्ययन के लिए सिफारिश की ;

निशस्त्रीकरण द्वारा मुक्त होने वाले वैज्ञानिक संसाधनों का संभाव्य संभरण ;

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वैज्ञानिक जन-शक्ति के वियोजन के विषय में चुने हुए देशों का अनुभव ;

प्रमुख वैज्ञानिक नागरिक क्षेत्रों और वर्त्तमान तथा प्रस्तावित अन्तर्राष्ट्रीय प्रायोजनाओं की वैज्ञानिक जन-शक्ति और खर्च की आवश्यकताएँ।

भविष्य में अध्ययन और कार्य के लिए दल ने इन-इन बातों में वैज्ञानिक जन-शक्ति और उपस्कारों के योग की सिफारिश की :

सरकारों द्वारा प्रस्तावित "अन्तरण प्रायोजनाएँ" जिसमें शुद्ध वैज्ञानिकता और विस्तृत सामाजिक और लोकप्रियता का संयोजन होगा।

विशाल इंजीनियरी कार्यों के सम्बन्ध की राष्ट्रीय आयोजनाएं जिनके लिए कई देशों में सैनिक संरचना विशेष उपयुक्त हो सकती है :

महत्वपूर्ण परिस्थिति विज्ञान सम्बन्धी और जनांकिक समस्याओं के विषय में प्राकृतिक और सामाजिक वैज्ञानिकों के मिले-जुले दलों द्वारा संयुक्त अध्ययन की राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय आयोजनाएं।

विकसित देशों से विकासशील देशों में वैज्ञानिक और औद्योगिक जन-शक्ति और संसाधनों के अस्थायी अंतरण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय आयोजनाएं ;

परिचर्चाओं के बीच दल के कुछ सदस्यों ने अन्तरिक्ष शोध की एक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम की संभावना का सुझाव दिया।

सैन्यवियोजन की व्यवहारिक समस्याओं का भी परीक्षण हुआ। यह स्वीकार किया गया कि जबकि कुछ सेनाओं में विशिष्ट कर्मी-वर्ग काफी अनुपात में है जिसका उपयोग तत्काल वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के लिए किया जा सकता है कुछ और सेनाएं ऐसी भी हैं, जो ग्रामीण जनता से बना ली गयी हैं। लाखों सैनिकों का ऐसी कृषि-प्रधान अर्थ-व्यवस्था में अचानक लौटकर जाना जो कि उन्हें खपा भी नहीं सकती, एक गम्भीर कठिनाई उत्पन्न कर सकता है। इसी से इतनी महान-जन-शक्ति के विशाल सार्वजनिक कार्यों के लिए उपयोग की आयोजन भी पहले से कर लेनी होगी।

डा० वॉरेन वीरव को कलिंग पुरस्कार

विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए दिए जाने वाले अन्तर्राष्ट्रीय कलिंग पुरस्कार के १३वें विजेता डा० वॉरेन वीवर हैं। कलिंग पुरस्कार को १९५१ में एक भारतीय उद्योगपति मि० विजयानन्द पटनायक ने प्रारम्भ किया था, और इसका प्रदान यूनेस्को द्वारा नियुक्त अन्तर्राष्ट्रीय जूरी द्वारा किया जाता है।

डा० वीवर का जन्म १८९४ में हुआ। वे विज्ञान की प्रगति के अमेरिकी संस्था के भूतपूर्व सभापति रह चुके हैं, और एक प्राध्यापक, प्रशासक तथा विज्ञान को लोकप्रिय बनाने वाले के रूप में काफी विख्यात हैं।

मस्तिष्क शोध

अन्तर्राष्ट्रीय मस्तिष्क शोध संगठन की त्रैमासिक वृत्ति-पत्रिका का नवम्बर १९६४ के अंक में (खण्ड ३, सं०४) मस्तिष्क शोध के सम्बन्ध में विश्व संसाधनों और आवश्यकताओं के सर्वेक्षण के परिणाम दिए हैं। इसमें इस सम्बन्ध की प्रयोगशालाओं की सूची दी हुई है। कनाडा में ३५ प्रयोगशालाएँ फ्रांस और मोनाको में मिलाकर ४४, जिसमें से १ मोनाको में है।

अन्तर्राष्ट्रीय मस्तिष्क शोध संगठन की सदस्यता अब ३९ देशों में ६३५ विशेषज्ञों ने स्वीकार की है।

अन्तर्राष्ट्रीय जल वैज्ञानिक दशक

अन्तर्राष्ट्रीय जल वैज्ञानिक दशक की समायोजक समिति की पहली बैठक यूनेस्को भवन पेरिस में २४ मई से ३ जून १९६५ तक होगी। इस समिति की स्थापना यूनेस्को महासम्मेलन ने अपने १३वें अधिवेशन में की थी।

महासम्मेलन द्वारा स्वीकृत धाराओं के अनुसार यह परिषद् सम्पूर्ण दशक कार्यक्रम की कार्यान्विति का अधीक्षण संगठनात्मक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से करेगी, इस कार्यक्रम के विकास और परिवर्त्तन सम्बन्धी प्रस्तावों का अध्ययन करेगी, अनेकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशों के हित को वैज्ञानिक प्रायोजनाओं का सुझाव देगी, इस दशक के संदर्भ में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का समायोजन करेगी, दशक से सम्बधित राष्ट्रीय और प्रादेशिक प्रायोजनाओं के विकास में सहायता देगी और इस कार्यक्रम की सफल कार्यान्वित के लिए यह आवश्यक व्यावहारिक या वैज्ञानिक उपाय अपनाएगी।

इस परिषद में महासम्मेलन द्वारा पहली अवधि के लिए चुने गये २१ सदस्य देश हैं; अलजीरिया, अर्जेन्टाइना, आस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चैकोस्लोवाकिया, फ्रांस, जर्मन संघ गणराज्य, भारत, इंडोनेशिया, जापान, मैक्सिको, नाइजीरिया, पाकिस्तान, सैनेगल, सूडान, स्वीडन, रूस, इंग्लैंड संयुक्तराज्य अमेरिका और यूगोस्लाविया।

पहले अधिवेशन में परिषद से इस सदक के कार्यक्रय को चलाने के लिए आवश्यक प्रारम्भिक उपाय करने और सहयोगी प्रायोजनाओं प्रादेशिक अथवा अन्तर्राष्ट्रीय के सम्बन्ध में आवश्यक समितियों और कार्य-दलों की स्थापना करेगी।

आर्थिक संसाधन

सभी तटीय मरुस्थल सागर के संसाधनों से आर्थिक लाभ उठा सकते हैं। बहुत आदिम जातियों के लोग भी इन मरुस्थलों में शेलफिश दकड़ते रहे हैं। विशेष प्रकार की शेलफिश के लिए परशिया की खाड़ी, कैलिफोर्निया की खाड़ी, कोलम्बिया के गोआ हीरा पैनिनसुला और उत्तर-पश्चिम आस्ट्रेलिया के तटीय मरुस्थलों में गोताखोरी बहुत दिनों से होती रही है। नीपिया के तटीय मरुस्थलों में स्पंज के लिए गोता लगाने की प्रथा प्रचलित है। इसी प्रकार मछलियों के लिए प्रयत्न करने से एक नौ-वहन अर्थम्यवस्था का विकास होता है। कभी-कभी तो इसको स्थानीय तटीय-प्रदेश से बहार के भागों से निर्देश और आर्थिक सहायता मिलती है। सागर के उत्पादनों को सुरक्षित करने के लिए, सुखाने के लिए मरुस्थल में काफी स्थान मिल जाता है। और वहां पर हुआ खाद्य अथवा स्पंज व्यापारिक प्रयोजनों से दूर-दूर ले जाया जाता है। सेवार तटीय मरुस्थलों का कम प्रयुक्त होने वाला संसाधन है, परन्तु इसके भी खाद से लेकर खाद्य पदार्थों तक अनेकों उपयोग हो सकते हैं।

सागर जल के उपयोग के सम्बन्ध में प्राकृतिक वाष्पन द्वारा नमक बनाने का काम तटीय मरुस्थलों में एक सामान्य उद्योग बन गया है। उस उद्योग के लिए वे उपयुक्त भी हैं। कुछ सीमा तक ज्वार की शक्ल का प्रयोग कुछ नम प्रदेशों में किया गया है। तटीय मरुस्थलों में यह एक समर्थ संसाधन है। विशेष रूप से वहां जहां पर ज्वारभाटे बहुत आते हैं। जैसे भारत और पाकिस्तान सीला पर कच्छ की खाड़ी का तट या मैक्सिकों में कैलिफोर्निया की खाड़ी का तट।

तटीय मरुस्थलों का सबसे बड़ा सम्भव लाभ यह है कि वहां से असीमित मात्रा में ताजे जल के संसाधनों को प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु इसके पहले इसके खर्चे में बहुत अधिक कमी करनी पड़ेगी तभी निर्स्यसित सागर जल का प्रयोग व्यापारिक फसलों की सिंचाई के सिए किया जा सकेगा और तटीय मरुस्थलों के बीच बड़े बड़े नखलिस्तान बनाये जा सकेंगे।

सांस्कृतिक कार्यवाहियां

प्रतिनिधि कृतियों का यूनैस्को-संग्रह

भारतीय माला :

प्रतिनिधि कृतियों के यूनैस्को संग्रह की भारतीय माला में अभी हाल में सामान्य पाठक के लिए २ अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। तुलसीदास की कवितावली, १७वीं शताब्दी के प्रारम्भ में लिखी गयी एक भक्ति-कविता ; और इससे बहुत पहले की शासन के सिद्धान्तों के उदाहरण रूप में लिखी हुई कहानियों का संग्रह: पंचतन्त्र।

तुलसीदास शैक्सपियर के लगभग समकालीन थे। वे विशेष रूप से रामायण के हिन्दी रूपान्तर के लिए विख्यात हैं। यह एक धार्मिक पुराण-काव्य है, जिसका विषय है हिन्दू देवता, विष्णु का राम के रूप में अवतार। कवितावली, कवि की वृद्धावस्था में लिखी गयी है। इसको दो भागों में बाँटा जा सकता हैं, पहले में राम के जीवन की घटनाएं हैं और दूसरे में कुछ अन्य विषय हैं, जो तुलसी के अपने जीवन के अन्तिम जीवन की घटनाओं से सम्बन्धित हैं।

डा० एफ० आर० आलचिन ने विस्तृत भूमिका में इस कविता की आर्थिक और ऐतिहासिक और धार्मिक पृष्ठभूमि की व्याख्या की और कवि के जीवन के कुछ थोड़े से ज्ञात तथ्यों का संक्षिप्त विवरण दिया है। डा० ऑलचिन के अनुसार समूचे उत्तर भारत में अपने जीवन काल और उसके बाद से अब तक तुलसीदास की लोकप्रियता का कारण उनकी कुटियों का धार्मिक महत्व ही नहीं है वरन् यह तथ्य भी है कि वे अत्यधिक उत्कृष्ट कवि हैं। डा० ऑलचिन लिखते हैं : "कवितावली साहित्यिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रौर ठेठ भाषा के मिश्रण में लिखी हुई है। उसके कवि की प्रतिभा ही इसी प्रकार की थी। मेरा उद्देश्य यह रहा है कि कविताओं के अर्थ बतला दें और जहाँ तक सम्भव हो, कवि द्वारा प्रयुक्त शब्दों के आपेक्षिक गुण को स्पष्ट कर दें।"

यह अनुवाद यूनेस्को और साहित्य अकादमी (भारत) के संयुक्त तत्वावधान में हुआ है।

पंचतन्त्र (पाँच पुस्तकें) का विश्व के इतिहास में हिन्दू साहित्य की किसी भी अन्य कृति की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मूल संस्कृत संस्करण के सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक यही पता है कि वह पाँच सौ ईसवी के पहले लिखा गया था। छठी शताब्दी में इसका अनुवाद पहलवी भाषा में हुआ। और उसी के बाद से ओल्ड सीरियाई भाषा अरबी (आठवीं शताब्दी) में यूनानी भाषा में (११वीं शताब्दी), पुरानी सिलेबिक या बल्गेरियाई भाषा में और हीब्रू में (१२-१३वीं शताब्दी) और लैटिन में हुआ। इसके ५० भाषाओं से भी अधिक में २०० भिन्न संस्करण वर्तमान हैं।

इस कृति को अर्थ—व्यावहारिक ज्ञान की एक पाठ्य-पुस्तक माना गया था। अर्थ-धर्म—धार्मिक और नैतिक उचित आशा तथा काम (प्रेम) के साथ मानवीय इच्छा के तीन प्रमुख लक्ष्यों में से एक माना गया है। संक्षिप्त भूमिका में एक विद्वान् ब्राह्मण तीन मूर्ख राजकुमारों को कहानियों के द्वारा शासन की कला सिखाने का निश्चय करता है। कहानियों की नीति कथन, नैतिकता से सम्बन्धित नहीं। उनमें जीवन के मामलों में धूर्तता और व्यावहारिक ज्ञान को बहुत अच्छा माना गया है। उनमें से बहुत हिन्दू परम्परा का अंश बन गये हैं, और कुछ मूल संग्रह से निकल कर परिवर्तित रूप में दूसरी संस्कृतियों की लोक-कथाओं में सम्मिलित हो गए हैं।

संस्कृत से इसका अनुवाद सब से पहले १९२४ में "पंचतन्त्र पुनर्निमित" नाम से येल विश्वविद्यालय के स्व० प्रो० फेंकलिन एलबर्टन द्वारा प्रकाशित किया गया था और अब सामान्य पाठक के लिए प्रतिनिधि कृतियों के यूनेस्को संग्रह के अन्तर्गत फिर से प्रकाशित हुआ है।

कला चित्र-संग्रह और रंगीन स्लाइडें

आस्ट्रिया—मध्ययुगीन भित्ति-चित्र

यूनेस्को विश्व-कला के स्नेह-चित्र संग्रह में आस्ट्रियन कला के अल्पज्ञात पक्ष के सम्बन्ध में पता चलता है। इसमें जिन भित्ति चित्रों की अनुकृतियाँ दी हुई हैं वे गिरिजाघरों और पर्वतों के पूजा-स्थलों से लिए गए हैं। इनमें से सब से पुराना है १०८९ (लैण्ड बैंक: ऊपरी आस्ट्रिया) सब से इधर का है लगभग १२८० का (क्रैम्स: निचली आस्ट्रिया) यह एक ऐसा प्रदेश था, जहाँ वैलीस और यूगोस्लाविया द्वारा वाइजेंटियम की कला का प्रवेश हुआ था।

लैम्बैक और पुर्ग की ११वीं शताब्दियों की कृतियों में बाइजेण्टाइम प्रभाव स्पष्ट हैं। गुर्क और सेको के बाद के भित्ति-चित्रों में पश्चिमीय गोथिक कला की ओर विकास स्पष्ट है।

कैथोलिक योरप और कट्टर पूर्व के प्रति इन चित्रों के झुकाव से पूर्व और पश्चिम के कलात्मक विनिमयों पर नया प्रकाश पड़ता है।

तुर्किस्तान : प्राचीन लघु चित्र

यूनेस्को के कला स्लाइडों के संग्रह में १३वीं से १८वीं शताब्दी की तुर्की पाण्डुलिपियों से लिये गये लघु चित्रों की रंगीन स्लाइडों की एक नयी माला प्रकाशित हुई है।

तुर्की पाण्डुलिपियाँ सुल्तानों के पुस्तकालयों में रहती थीं और सामान्य जनता के लिए सुलभ नहीं थीं। इस माला के सब से पहले लघु चित्रों में फ़ार्सी, मंगोल और चीनी प्रभावों के चिन्ह मिलते हैं। १५वीं शताब्दी के बाद से निश्चित तुर्की शैली स्पष्ट होती है। यहाँ पर बड़े ही गम्भीर रंगों में बंजारों के जीवन को यथार्थवादिता से चित्रित किया गया है।

ओटोमन साम्राज्य के अन्तर्गत सैनिक और सामाजिक जीवन के दृश्य अथवा लोकप्रिय उत्सवों के दृश्य बाद की कृतियों में भी मिलते हैं। कलात्मक मूल्यों के अतिरिक्त ये चित्र महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अभिलेख हैं।

कला-स्लाइडों के यूनेस्को संग्रह में अभी हाल की एक चित्र-माला ट्यूनिसिया के प्राचीन मोजोइक की है। प्रत्येक सैट में तीस रंगीन स्लाइडें हैं और एक व्याख्यात्मक पुस्तिका।

इनडैक्स ट्रांसलेशनम

इस माला में सोलहवाँ संस्करण अभी यूनेस्को द्वारा प्रकाशित हुआ है। इस पुस्तक-सूची में १९६३ में प्रकाशित ३५१४३-अनुवादों की सूची दी हुई है। इसमें कुछ पहले के अनुवाद भी दिये हैं, जो सूची में अंकित नहीं किये गये थे। यह पुस्तक सूचियाँ फ्रांसीसी वर्ण-क्रम के अनुसार देशों में विभाजित हैं और विश्व डैसीमल वर्गीकरण के दस प्रमुख शीर्षकों के अन्तर्गत दी गयी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन संचारण

पत्रकारिता प्रशिक्षण संबंधी

प्रादेशिक दृष्टिकोण

पत्रकारिता में प्रशिक्षण के सम्बन्ध में ४ अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियाँ इस वर्ष कीटो (इक्वादोर) के पत्रकारिता के उच्चतर अध्ययन सम्बन्धी लैटिन अमरीकी केन्द्र द्वारा इस वर्ष लैटिन अमरीकी देशों में आयोजित की जा रही हैं। पहली गोष्ठी १८ से २२ जनवरी तक कोलंबिया, इक्वादोर, पनामा, पेरु और बेनेजुला के पत्रकारिता प्रशिक्षार्थी अध्यापकों और विशेषज्ञों के लिए मेडेलिन कोलम्बिया में आयोजित की गई। दूसरी मैक्सिको में २२ से २६ फरवरी तक हुई जिसमें कोस्टारिका, डोमेनिकन गणराज्य, अलसलवादोर, ग्वातेमाला, हैती, होंडुरस, मैक्सिको और निकारागुआ के ऐसे ही दल सम्मिलित हुए। अगली गोष्ठी बोन ऐयर में अर्जन्तीना बोलीविया, पैरागवे और यूरुगवे के प्रतिनिधियों के लिए होगी। और रिओदजनेरों में चौथी गोष्ठी होगी जिसमें ब्राजील से लोग आयेंगे। इन चार बैठकों में जिस विषय पर विचार किया जा रहा है, वह है—"पत्रकारिता शिक्षा और सूचना माध्यमों की वर्तमान स्थिति।"

अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय

"विदेशों में छुट्टियाँ"

विदेशों में छुट्टियों का १७वां संस्करण अभी थोड़े दिनों में अंग्रेजी, फ्रांसीसी और आस्ट्रेली में प्रकाशित होगा। इस खण्ड में १९६५ में विश्व के हर भाग में होने वाली विविध शिक्षात्मक और सांस्कृतिक कार्यवाहियों के सम्बन्ध में सूचना दी गई है जिससे कि तरुण विदेशों में अपनी छुट्टियों को अध्ययन और शिक्षात्मक यात्रा के लिए उपयोग कर सकें।

९६ देशों में प्रधान केन्द्रों वाले ९५० संगठनों और संस्थाओं में अपनी कार्रवाहियों के सम्बन्ध में सूचना दी है। इन कार्र-वाहियों में विदेशों में अध्ययन और यात्रा की सुविधाएँ देने वाली अनेकों अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षात्मक विनिमय योजनाएँ छुट्टियों के शिक्षाक्रम, ग्रीष्म स्कूल और वाद-गोष्ठियाँ, अध्ययन दौरे, तरुणों और विद्यार्थियों के लिए छात्रावास, ग्रीष्म शिविर और केन्द्र, अन्तर्राष्ट्रीय स्वेच्छा कार्य शिविर के सम्बन्ध में सूचना सम्मिलित है।

इसके साथ ही विदेशों में छुट्टियों में कई देशों और प्रदेशों में छुट्टियों की कार्यवाहियों के लिए सुलभ आर्थिक सहायता के सम्बन्ध में भी सूचना दी गई है।

~~~~~~

Published by the Director UNESCO South Asia Science Co-operation Office, N-1, Ring Road, New Delhi and printed by Rakesh Press, Delhi. (Unesco Vritta Patrika, Vol. 11, No. 4, April, 1965.

Reproduction authorised : Credit line should read UNESCO.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
~~~~~~

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

UNESCO

यूनैस्को वृत्तपत्रिका

एन-१, रिंग रोड
नई देहली

यह समाचार पत्र संयुक्त राष्ट्रीय शैक्षणिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संस्था के विश्व भर के कार्यों का मासिक प्रतिवेदन है

मासिक बुलेटिन | मई, १९६५ | अंक ११, संख्या ५

6/8/65

विषय सूची

विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का अर्थ और मूल्य
—-रेने मह् २
विज्ञान और विकास ५
विश्व खाद्य कार्यक्रम ८
अवकाश और वयस्क शिक्षा ९
प्रजाति की संकलपना के प्रति जीववैज्ञानिक दृष्टिकोण १३
सचिवालय समाचार १७
महानिदेशक का कार्यालय
एशियाई प्रादेशिक केन्द्रों और संस्थाओं का सर्वेक्षण आयोग
पैक्स रोमाना के प्रति महानिदेशक का सन्देश
प्राकृतिक विज्ञान
अफ्रीका के लिए विज्ञान और औद्योगिकी का प्रादेशिक केन्द्र
विज्ञान शिक्षण
सांस्कृतिक कार्यवाहियाँ
"लेखन कला"
जनसंचारण
विश्व में रेडियो और टेलीविज़न
जनसंचारण के लिए व्याबसायिक प्रशिक्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय का अर्थ और मूल्य

—रेने मह्‌ महानिदेशक

विकास को प्रोत्साहन देने की कार्रवाई किसी भी प्रकार नई घटना नहीं है। नया यह है—और इस बात को हमें कभी नहीं भूलना चाहिए—कि अब सहायता प्राप्त करने वाले देश स्वतन्त्र हो चुके हैं और इस प्रकार विकास का अर्थ नया हो गया है। अब संसाधनों के विकास का प्रश्न नहीं है। वरन् राष्ट्रों को जैसे उन्हें रहना चाहिए, अर्थात् मानवी अधिकारों और राज्य के कानूनों के अनुसार रहने में सहायता देने की है। मुक्त और स्वतन्त्र राज्यों के सम्बन्धित होने के कारण विकास की समस्या अब प्रमुखत: एक नैतिक दायित्व हो गया है। आज मूल संकल्पना लोगों की आवश्यकता की है। पहले तो विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का अर्थ यह है कि स्त्री-पुरुषों पर अपनी आवश्यकता को पूरी करने के लिए अपने अधिकारों का उपयोग करने में सहायता देना एक नैतिक दायित्व है।

दूसरे स्वतन्त्र राज्यों की समानता के सिद्धान्त के प्रति भी इससे आदर की भावना व्यक्त होती है। सभी स्वतन्त्र देशों की स्थिति सिद्धान्ततः समान है। परन्तु वस्तुस्थिति देखने पर हम जानते हैं कि वे समान नहीं हैं। परिणामस्वरूप विकास की सहायता का उद्देश्य उन राज्यों के बीच की बड़ी-बड़ी असमानताओं को जीतने का रहता है जो कानून से बराबर माने जाते हैं। और यहीं पर विकास की सहायता का दूसरा पक्ष देखने में आता है क्योंकि यह असमानता आतंकित करने वाली है और इसके कारण तनाव की स्थिति रहती है और शान्ति को खतरा होता है। इसलिए विकास की सहायता न केवल मनुष्यों और सरकारों के कर्त्तव्यों को पूरा करने का साधन है, वरन् तनावों के विरुद्ध और युद्ध के विरुद्ध एक सुरक्षा आश्वासन भी है।

सहायता से सहयोग की ओर

इस प्रकार विकास की सहायता के ये दो मूल पक्ष हैं। विकासशील देशों को सहायता इसलिए देनी चाहिए कि यह एक नैतिक दायित्व है। उनके निवासियों के लिये मानवीय अधिकारों की संकल्पना में अन्तर्भूत सभी अधिकारों का उपभोग करते हुए स्वतन्त्र व्यक्तियों की भाँति रहना सम्भव होना चाहिए। दूसरे उनको दी हुई सहायता युद्ध के विरुद्ध या युद्ध के खतरों के विरुद्ध एक आश्वासन है। क्योंकि हम यह विश्वास नहीं कर सकते कि वर्तमान महान् असमानताएँ जो कि इसलिए और भी अधिक आतंकित करती हैं कि वे अधिकारों की समानता का विरोध रूप हैं, अगर बनी रहीं तो शान्ति के लिए खतरा न होगा।

विकास की समस्या विश्व राजनीति की समस्या है जिससे हम सभी लोग सम्बन्धित हैं। यह केवल बहुत से लोग दरिद्रता में रहे हैं इसलिए उनको सहायता देकर अपनी नैतिक चेतना को समझाने का मामला नहीं है। न इतना ही है कि अपनी मानसिक शान्ति के लिए हमें इसको एक ठीक ठीक आश्वासन नीति के रूप में अपना लेना चाहिए। जैसे हमें अपने को चोरी या आग लग जाने के खतरे से मुक्त करने के लिए उनका बीमा करा लेते हैं। यद्यपि हमें निश्चय होता है कि चोरी या आग की कोई सम्भावना नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय जीवन को जैसा हम जानते हैं, विकास की समस्या उसका एक मूल तत्व है। उसकी विशालता और परिणामों के कारण यह समस्या आज अलग-अलग शक्तियों की वे चाहे कितने भी महान् क्यों न हो, नीतिएँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से सुलझायी नहीं जा सकतीं। यह एक ऐसी समस्या है जिसको विश्व स्तर पर सुलझाना होगा।

इस पर मैं इतना और कहना चाहूँगा कि इन कारणों से हमें विकास की सहायता पर एक बिल्कुल भिन्न दृष्टिकोण से विचार करना होगा। प्रारम्भ करते ही यह स्पष्ट हो जाएगा कि सहायता कि भावना पुरानी हो गई है और पहली चीज जो मैं आप लोगों से कहना चाहूँगा वह यह है कि आप सहायता के रूप में न सोचने का प्रयास करें। हमें सहयोग के रूप में सोचना होगा। हमें यह नहीं सोचना है कि कुछ देश हैं जो देते हैं और दूसरे हैं जो पाते हैं। और केवल दो ही प्रकार के देश हैं। और इस प्रकार दो अलग-अलग प्रकार के देशों के बीच सम्पर्क बनाएँ जाते हैं। इसके विपरीत प्रक्रिया सहयोग की होनी चाहिए, परस्पर सम्बन्धों की होनी चाहिए।

सहयोग का संगठन

मेरा व्यक्तिगत रूप से यह विश्वास है कि निकट भविष्य में हमें दूसरा ही विचार, दूसरी संकल्पना विकसित करनी होगी जिसे मैं अधिक मूल और अधिक यथार्थवादि मानता हूँ। वह है संगटन की संकल्पना। उदाहरण के लिए किसी भी देश में अल्प-विकसित और उच्चतम विकसित क्षेत्र होते हैं। यदि अत्यन्त विकसित अंशों की सहायता नहीं करते तो समूचे देश के रहन-सहन का स्तर गिर जाता है। यदि हम किसी भी देश के विशेष खण्ड में विकास की समस्या को सुलझाते हैं तो हमारा उद्देश्य यही होना चाहिए कि देश को सम्पूर्ण रूप से संगठित किया जाए। परन्तु मेरा विश्वास है कि बहुत जल्दी ही हम सहयोग के इस स्थानीय और राष्ट्रीय संकल्पना मे ऊपर उठ जाएँगे और तब भी हम सच्ची समस्या को सुलझाएंगे जो है सम्पूर्ण विश्व में मानवता को संगठित करना।

समस्या यह है कि समूची धरती के बारे में सोचा जाए। मानवता को स्थितियों और भौतिक, ऐतिहासिक, और आर्थिक परिस्थितियों की सम्पूर्ण विविधता में देखा जाए। मानवता को एक विषय के रूप में लिया जाए धरती को घर के रूप में और सम्पूर्ण पृथ्वी को एक राष्ट्र के रूप में जिसका नियमित संगठन करना है। मुझे लगता है कि केवल तब भी हम लोग विकास की समस्या को तर्क संगत ढंग से समझ सकेंगे और अनेक तर्क संगत समाधान प्राप्त कर सकेंगे।

हमें ऐसी कल्पना कभी नहीं करनी चाहिए कि जो सहायता देते हैं उनको यह अधिकार भी हो जाता है कि उस सहायता का क्या किया जाए, इसका निर्णय करें। जैसा मैंने प्रारम्भ में ही कहा था कि हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि अब हम स्वतन्त्र मनुष्यों की बात कर रहे हैं। ऐसे राज्यों के सम्बन्ध में सोच रहे हैं जो स्वतन्त्र हैं और रहना चाहते हैं। स्वतन्त्र व्यक्ति का यह अधिकार है कि वह अपने सम्बन्ध में खुद निर्णय ले सकें, भले ही कठिनाइयाँ या गलतियाँ हों। स्वतन्त्रता और क्या है, यदि गलती करने की सम्भावना हो। हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि हमें किसी देश के संसाधनों का विकास करना है। यह कभी नहीं कहना चाहिए कि दुख की बात है। हम यहाँ ऐसे ऐसे कर सकते थे। या यह जगह बांध बनाने के लिए कितनी बढ़िया है। निश्चय ही कृषि में वृद्धि, सड़कों और रेलों का विस्तार सब कुछ होना चाहिए। परन्तु यह बातें सुधार, ऊर्जा साधनों में केवल साधन हैं। समस्या को सुलझाने के तरीके हैं। हमें सोचना है मनुष्यों के बारे में। विकास अपने में ही कोई उद्देश्य नहीं है वह तो वह साधन है जिससे मनुष्य अपने को विकसित करता है, अपनी आशाओं को पूरा करता है। विकास का उद्देश्य मनुष्य है। वह विकास का अभिकर्ता नहीं। अर्थशास्त्र को मनुष्य की गरिमा और न्याय की सेवा करनी चाहिए और हमें एक क्षण को भी यह नहीं सोचना चाहिए कि हमारा काम साधनों तक सीमित है। साधन और संसाधन यद्यपि अनिवार्य हैं, उनकी पूरी उपयोगिता तभी होती है जब मानव की चेतना में उनकी प्रतिक्रिया होती है।

यूनैस्को का कार्य

इसलिए यूनैस्को का कार्यक्षेत्र बड़े महत्व का है क्योंकि आपको इसका विश्वास होना चाहिए कि विकास की समस्याओं की सम्पूर्ण जटिलता में से शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति की समस्याओं से अधिक मूल और कोई समस्याएँ नहीं है। इन्हीं में सच्चा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग विकास का साधन बन सकता है। मानव की चेतना में उसकी प्रतिक्रिया उत्पन्न हो सकती है।

यहाँ मैं शिक्षा के सम्बन्ध में कुछ शब्द कहना चाहूँगा। यह शिक्षा ही है जो विकास में मानवीय तत्व को मूल्य प्रदान करती है और जिससे मनुष्य अपने इतिहास को आकृति देने में सफल होता है। जब तक शिक्षा का विकास नहीं होता देश विकसित कभी नहीं हो सकता। यदि आप चाहें कि किसी देश के संसाधनों के विकसित होने के विचार को विकास की सच्ची संकल्पना का स्थान मिले, अर्थात् मनुष्यों में इस प्रकार प्रगति हो कि वे अपनी नियति का निर्माण स्वयं कर सकें तब आपको उन्हें शिक्षित करना होगा। अच्छी शिक्षा के द्वारा ही मानवीय संसाधनों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक से अधिक उपयोग किया जा सकता है। विकासशील देशों में मानवीय संसाधनों की बहुलता है।

विज्ञान के सम्बन्ध में ही यह कहा जा सकता है कि उसी के द्वारा मनुष्यों की प्रकृति को अपने काम में लेने का अधिकार प्राप्त होता है। और इसीसे उसके द्वारा यह देश आन्तरिक विकास की स्थिति प्राप्त कर सकते हैं, जिनकी प्रेरणा भीतर से ही उत्पन्न होती है। जब तक इन देशों में शोध और शिक्षण दोनों ही रूपों में विज्ञान का संगठन नहीं किया जाता, जब तक की यह बाहर से जादुई सूत्रों के संग्रह के रूप में ले लिया जाता है, तब तक देश पर निर्भर और अल्पविकसित ही रहेंगे, चाहे वे अपने उत्पादन को बढ़ा ही लें। अत: विकसित और अल्पविकसित देशों के बीच प्रमुख अन्तर यही है कि विकसित देशों में वैज्ञानिक सभ्यता आ गई है। अल्प विकसित देश जब तक अपने विकास की नींव नही रख लेंगे, वे सदा ही विदेशों पर निर्भर रहेंगे और कभी मुक्त न होंगे। परिणामस्वरूप वे वह लक्ष्य प्राप्त न कर सकेंगे, जिसको मैंने वर्तमान स्थिति में विकास के प्रमुख उद्देश्यों के रूप में रखा है। अर्थात् विश्व भर में मनुष्यों और राज्यों के बीच स्वतन्त्रता की स्थापना। इसलिए विज्ञान यूनैस्को और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए एक अत्यधिक कार्य का क्षेत्र है। व्यक्तिगत रूप से जब मुझे अपनी यात्राओं के दौरान मन्त्रियों से यूनैस्को कार्रवाइयों के क्षेत्रों को वे क्या अग्रताक्रम देना चाहते हैं, इस सम्बन्ध में चर्चा करने को मिलती है, तब मेरे ऊपर इस बात का प्रभाव पड़ता है कि उनका उत्तर होता है, "विज्ञान और भी अधिक विज्ञान। हम अपना विज्ञान लाना चाहते हैं।" यह कार्य उन्हीं के हितों के लिए न होगा वरन् अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लक्ष्य को पूर्ण करेगा क्योंकि विज्ञान वस्तुपरता और सार्वभौमिकता की चेतना का विकास करने में सहायता देता है।

जहाँ तक संस्कृति का सम्बन्ध है, यह शायद सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है, संस्कृति को एक विलास वस्तु के रूप में अधिक मूल वस्तुओं से गौण वस्तु के रूप में लेना बहुत बड़ी गलती होगी। संस्कृति से ज्यादा मूल और कोई तत्व नहीं है क्योंकि यही वह स्रोत है जहाँ से हमारे सम्पूर्ण जीवन के मूल निर्धारित होते हैं। आप में से जिनका सम्पर्क विकासशील देशों से रहा है, उन पर संस्कृति को दिए हुए महत्व का प्रभाव अवश्य ही पड़ा होगा। जहाँ भी मैं गया हूँ, लोगों ने संस्कृति को अपने गर्वशाली अतीत की परम्पराओं का संरक्षण करने के साधनरूप में और राष्ट्र या देशवासियों की आध्यात्मिक वैयक्तिकता को बनाए रखने के साधना के रूप में संस्कृति को महत्व देने पर जोर दिया है। और संस्कृति ही वह तत्व है, जिससे विकासशील देशों को वर्तमान इतिहास का निर्माण करने में केवल उसे स्वीकार कर लेने में नहीं सफलता मिलती है। मैं इसके आगे भी कहना चाहूंगा। इन देशों की सबसे महत्वपूर्ण और गहरी आकाँक्षा यही है कि निकटभविष्य में वे विश्वव्यापी सभ्यता में नए मूल्यों का योगदान करें। आजकल वे लोग अपने पारम्परिक मूल्यों का समंजन करने की जटिल प्रक्रिया में लगे हुए हैं जिनको वे करीब करीब भूल गए हैं। उनके सामने सामान्यत: विदेशी वैज्ञानिक और तकनीकी सभ्यता के मूल्य सामने है जिनको उन्हें अपनाना है। जब वे मानवता के दाय में अपने सांस्कृतिक मूल्यों का योग दे सकेंगे तभी उनको सच्ची समानता की गरिमा प्राप्त हो सकेगी क्योंकि जो सदा लेता ही रहता है वह समान नहीं हुआ करता। वह देश जो इस समय दरिद्र है, देने की आकाँक्षा रखते हैं और यदि आप उनके साथ ऐसा व्यवहार करेंगे, जैसे वे केवल लेते ही हैं, वह आप की भूल होगी। एक पक्षीय उदारता का परिचय देकर आप अनजाने ही उनका अपमान भी कर सकते हैं। उनको सबसे अधिक प्रसन्नता इसी बात से होगी, जब आप उनसे कोई चीज लेकर उसके लिए उन्हें धन्यवाद देंगे। वह दिन अभी नहीं आया है, लेकिन जल्दी ही आएगा। यूनैस्को विशेष रूप से सांस्कृतिक स्तर पर पारस्परिक सम्बन्ध बनाने की इच्छा रखती है। जैसा कि प्रैसिडेंट सेंगोर ने कहा है, यूनैस्को देने और पाने का मिलन स्थल बनी हुई है। दान और उदारता विशेष अधिकार के रूप में ही होने चाहिएँ। इसी से मैं विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को इतना महत्व देता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान और विकास

विज्ञान और औद्योगिकी के उपयोग सम्बन्धी संयुक्त राष्ट्र सलाहकार समिति का तीसरा अधिवेशन यूनैस्को भवन, पैरिस में ३० मार्च से ६ अप्रैल १९६५ तक हुआ। इस समिति में १८ विशेषज्ञ थे और इस पर आधुनिक विज्ञान और औद्योगिकी को विकासशील देशों में आर्थिक और सामाजिक प्रगति का काम करने के सर्वोत्तम साधनों के सम्बन्ध में आर्थिक और सामाजिक परिषद् को सिफारिशें प्रस्तुत करने का दायित्व है।

समिति के प्रति अपने भाषण में महानिदेशक मिस्टर रेने महू ने कहा कि विज्ञान के क्षेत्र में यूनैस्को का कार्य दो प्रमुख सिद्धान्तों पर आधारित है। ज्ञान का वितरण और विकास के लिए ज्ञान का उपयोग। मिस्टर महू ने इस पर भी जोर दिया कि शुद्ध विज्ञान और व्यावहारिक विज्ञान के बीच कोई विरोध नहीं होना चाहिए। यूनैस्को की कार्यवाहियों का उद्देश्य यह था कि गहराई में इस प्रकार के परिवर्त्तन किए जाएँ जो ज्ञान और सिद्धान्तों के सीमित अन्तरणों के ऊपर से भी विकासशील देशों में विज्ञान को एक आर्थिक और सामाजिक तथ्य के रूप में प्रतिष्ठापित कर दें। विश्व के विकासशील देशों में विज्ञान को बाहर से आया हुआ कोई जादू नहीं परन्तु भीतर से उपजी हुई संस्कृति होना चाहिए।

यूनैस्को के वैज्ञानिक कार्यक्रम में महानिदेशक ने सामान्य मूल कार्रवाइयों और विकास के लिए विज्ञान के उपयोग के अधिक प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित कार्यवाहियों के बीच अन्तर स्पष्ट किया। पहली विज्ञान के शिक्षण, वैज्ञानिक अभिलेखन का संगठन, वैज्ञानिक उपकरणों का घरेलू उत्पादन और सर्वोपरि आर्थिक विकास के सन्दर्भ में विज्ञान की आयोजना से अधिक विशेष रूप से सम्बन्धित हैं। जहाँ तक विकास के लिए विज्ञान और औद्योगिकी के उपयोग का सम्बन्ध है, मिस्टर महू ने समिति को बताया कि यूनैस्को अब तीन विभिन्न स्तरों पर काम कर रही है।

विकासशील देशों के उद्देश्यों पर ठीक-ठीक परिभाषा और आवश्यकताओं का मूल्यांकन सलाहकार मिशनों के द्वारा अथवा प्रादेशिक सम्मेलनों के द्वारा किया जाता है। इस वर्ष लैटिन अमरीका में और एशिया में १९६७ में होने वाली प्रादेशिक सम्मेलनों के साथ ही प्रादेशिक सम्मेलन भी होते रहेंगे।

औद्योगिकी विशेषज्ञों, इंजीनियरों और वैज्ञानिकों का प्रशिक्षण;

अन्तरशाखा आधार अथवा प्रादेशिक स्तर पर या विज्ञान की कुछ नई शाखाओं में शोध का संगठन।

विज्ञान शिक्षण की समस्या पर विशेष रूप से उल्लेख करते हुए मिस्टर महू ने औद्योगिक क्रान्ति लाने की आवश्यकता पर जोर दिया क्योंकि पारम्परिक शिक्षण के तरीके अब अपर्याप्त सिद्ध हो चुके हैं। जिस रूप में विज्ञान शिक्षा का ऐसा सुधार हो सकता है वह नीचे दिए हुए लेख का विषय है। यह लेख विज्ञान की प्रगति के यूनैस्को विभाग द्वारा संयुक्त राष्ट्र की सलाहकार समिति को प्रस्तुत किए गए एक लेखपत्र पर आधारित है।

विज्ञान शिक्षण का नया दृष्टिकोण

आर्थिक विकास और विज्ञान तथा औद्योगिकी के बीच सम्बन्ध इतना निकट का है कि अल्प विकसित देश की परिभाषा एक ऐसे देश के रूप में दी जा सकती है जिसमें वैज्ञानिक और तकनीकी उपस्करों का अभाव हो।

औद्योगिकी के लाभ स्पष्ट हैं: उच्चतर जीवन स्तर, औषधि व्यवस्थाएँ, गृह-व्यवस्था, खाद्य और वस्त्र तथा परिवहन और संचारण के आधुनिक साधन। ये लाभ किस प्रकार प्राप्त किए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा सकते हैं जिस देश में प्राकृतिक संसाधन बहुलता से पाये जाते हैं वह मोटर-कार और रैफ्रिजरेटर, हवाई-अड्डे और सड़कें, रेडियो और टैलीविजन केन्द्र और अस्पताल खरीद सकता है। वह उन्हें बने-बनाए बाहर से आयात भी कर सकता है। परन्तु यह आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने का तरीका नहीं है। इसके लिए किसी भी देश को एक ठीक-ठीक वैज्ञानिक संगठन की स्थापना करनी होगी और उसमें सब से पहले वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को प्रशिक्षण देना होगा, जिनमें न केवल विदेशी सहायता से बने हुए बांध और सड़कें तथा टैलिविजन केन्द्रों को ठीक बनाए रखने की व्यवस्था हो वरन् जो राष्ट्र की वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति के लिए समुचित योगदान भी दे सकें। कोई भी देश विज्ञान की उपलब्धियों का पूरा लाभ तब तक नहीं उठा सकता जब तक उसके पास विज्ञान की नीति का निर्देशन करने के लिए एक सरकारी मण्डल विभिन्नत कनीकी क्षेत्रों में प्रशिक्षित वैज्ञानिक और विशेषज्ञ, विज्ञान और औद्योगिकी में उच्चतर प्रशिक्षण सुविधाएँ, माध्यमिक स्कूलों में विस्तृत विज्ञान शिक्षण और सभी बच्चों को विज्ञान के मूल तत्वों का ज्ञान कराने की क्षमता रखने वाली एक स्कूल पद्धति आदि न हों।

विज्ञान के लाभ

आर्थिक लाभ बहुत ही स्पष्ट हो जाते हैं क्योंकि औद्योगिकी की भाँति ही वे रहन-सहन के स्तर के रूप में नापे जा सकते हैं। परन्तु विरले ही देश इतने समृद्ध हैं कि अन्तकाल तक वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियों का आयात करते रहें। इसलिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक देश अपने मानवीय संसाधनों का उपयोग करे। वह ऐसे वैज्ञानिकों को प्रशिक्षण दे जिनमें सुलभ प्राकृतिक संसाधनों के मूल्यांकन और उपयोग की क्षमता हो और तेल तथा कोयले के वर्तमान भण्डार चुक जाने पर नए संसाधनों का पता लगाने की क्षमता भी हो।

विज्ञान के सांस्कृतिक लाभ सभी को सब समय के लिए प्रभावित करते हैं। किसी भी व्यक्ति के वस्त्र पहनने में, उसके खाने में, उसके रहने की परिस्थितियाँ, मकान, बिजली परिवहन के साधन, मनोरंजन और संचारण जीवन के सभी पक्ष वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति से प्रभावित होते हैं। वैज्ञानिक शिक्षण के बौद्धिक लाभ अज्ञान, अन्धविश्वास और अज्ञात के भय को जीतने में अतीत की भाँति अब भी प्राप्त होते हैं क्योंकि ये बातें अब भी दुनिया से लुप्त नहीं हुईं। अन्त में विज्ञान के नैतिक लाभ इसका उपयोग करने वाले लोगों में वस्तुपरता और ईमानदारी, आत्मनिर्भरता, दूसरों में विश्वास और सत्य की सेवा करने वाले एक अन्तर्राष्टीय समुदाय का सदस्य होने की भावना उत्पन्न करते हैं।

विज्ञान शिक्षण की समस्याएँ

एक समय ऐसा आएगा जब स्कूलों में आज की अपेक्षा चौगुने विद्यार्थी होंगे। बल्कि विकासशील देशों में तो दस गुने विद्यार्थी हो जाएँगे। वैज्ञानिक अभिलेखन प्रति आठ वर्षों में दूना हो जाता है। अर्थात् एक मनुष्य के जीवन काल में पाँच गुना बढ़ रहा है। इन परिस्थितियों में चुनाव करना अनिर्वाय है और अनिवार्यतः कई प्रश्न उठते हैं: क्या पढ़ाना जाना चाहिए, किस प्रकार के विद्यार्थियों के लिए कैसे उपायों का प्रयोग करना होगा और कब और कौन से लक्ष्य दृष्टि में हैं।

क्या मूल विज्ञानों को पढ़ाना अधिक अच्छा होगा या व्यावहारिक विज्ञानों को जैसे कि स्वचालकों की यांत्रिकी। स्वभावत; विकासशील देशों में विशेषज्ञ मैकैनिकों की जरूरत है। लेकिन जिस मैकैनिकों को वैज्ञानिक प्रशिक्षण प्राप्त हो चुका है, वह न केवल अपना खुद का काम ज्यादा अच्छी तरह करेगा बल्कि नई विशेषज्ञता भी प्राप्त करने योग्य होगा, अगर ऐसा अवसर आ जाए। एक और पूर्णतया सैद्धान्तिक प्रशिक्षण और दूसरी ओर केवल व्यावहारिक शिक्षा के बीच पाठ्यक्रमों के विभिन्न स्तरों पर क्या संतुलन बनाए रखना चाहिए।

कुछ अध्यापक सोचते हैं, वे पढ़ा रहे हैं, जबकि उन के विद्यार्थियों में से कोई भी कुछ सीख नहीं पाते और कुछ विद्यार्थी विश्वास करते हैं कि वे पूर्णतया अपने आप सब कुछ सीख सकते हैं। विज्ञान शिक्षण में अध्यापक के पढ़ाने में, व्यक्तिगत अध्ययन और व्यावहारिक प्रयोगों तथा दृश्य-श्रव्य साधनों-विशेषकर टैलीविजन के उपयोग का क्या अनुपात होना चाहिए।

विज्ञान की शिक्षा में यह बात अनिवार्य है कि विद्यार्थी जिस व्यवसाय को आगे चलकर अपनाना चाहते हैं, उसका ध्यान रखा जाए। जिनको आगे चलकर शोधकार्य करना है, उनके लिए विज्ञान का विस्तृत और सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। इंजीनियरों डाक्टरों और विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों के लिए अधिक विशेषीकृत प्रशिक्षण की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी सरकारी नोकरियों या व्यापार में जाना चाहते हैं, उनके सम्मुख विज्ञान की सामान्य पृष्ठभूमि स्पष्ट होनी चाहिए। विद्यार्थी कोई भी जीविका का साधन क्यों न चुने, विज्ञान के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस युग में उसे वैज्ञानिक दृष्टि से अनपढ़ नहीं रखा जा सकता अतः किस बिन्दु पर आकर विशिष्टीकरण या चुनाव होना चाहिए, अथवा बौद्धिक परिपक्वता के किस स्तर तक पहुँचकर होना चाहिए और परिपक्वता की इस स्थिति का निश्चय कैसे किया जा सकता है।

यही कुछ प्रश्न हैं जिनमें से अधिकतर अन्त निर्भर हैं। यदि विज्ञान शिक्षा को एक तर्क संगत आधुनिक और कार्यचालन के आधार पर संगठित करना है जिससे कि प्रत्येक देश में स्वतः विकास हो सके तो इन प्रश्नों का उत्तर देना होगा। यह उत्तर वैज्ञानिकों के बीच समायोजन और वैज्ञानिक प्रगति के उच्चतर स्तर पर काम करने वाले शोधकर्त्ताओं, शिक्षा आयोजकों और सरकारी नौकरों, जीविका सलाहकारों और शिक्षा मनोवैज्ञानिकों तथा विज्ञान शिक्षकों के समायोजन पर ही निर्भर होने चाहिएँ। इस समायोजन का आधार जितना ही विस्तृत होगा, उतनी ही उसके सफल होने की सम्भावना होगी। आदर्श स्थिति तो यह है कि इसका संगठन विश्वव्यापी स्तर पर किया जाए।

विज्ञान के शिक्षण में क्रान्ति

दूसरे विश्व युद्ध के बाद से विकासशील देशों में अनेकों वैज्ञानिक और शिक्षक विज्ञान पाठ्यक्रम के सुधार का काम कर रहे हैं, जिसमें युद्ध पूर्व वर्षों की तुलना में विज्ञान की विषय वस्तु और उपाय दोनों ही रूपों में हुई असाधारण प्रगतियों को ध्यान में रखा जाएगा। आज विकासशील देश उन सुधारों का पूरा लाभ उठा सकते हैं, जो दूसरे देशों ने बहुत लम्बे और कठिन प्रयत्न के बाद प्राप्त किए हैं। आज तक कोई व्यक्ति चन्द्रमा पर नहीं जा सका। कोई कैंसर के कारण का पता नहीं लगा सका और उसके लिए कारगर दवा नहीं निकाल सका। हम अब भी स्वचालन की असीम सम्भावनाओं का उपयोग करने का तरीका नहीं जानते और परमाणु ऊर्जा के शान्तिपूर्ण उपयोग के सम्बन्ध में कहना ही क्या है। अनेकों रूपों में हम अब भी एक विज्ञान विस्फोट की देहलीज पर खड़े हैं और औद्योगिक सभ्यता के बीच के प्रारम्भ को ही देख रहे हैं। भावी वैज्ञानिकों को ऐसी स्थिति का सामना करने की शिक्षा मिलनी चाहिए जो काफी समय तक निरन्तर परिवर्तन की स्थिति में रहेगी।

विज्ञान शिक्षण के नए दृष्टिकोण के सिद्धान्त इस प्रकार निर्दिष्ट किए जा सकते हैं:

(१) विज्ञान अब वर्तमान अपरिवर्तनीय तथ्यों का एक स्थायी रूप नहीं माना जाता है वरन् उस विश्व का पता लगाने का एक साधन माना जाता है जो अभी पूरी तरह ज्ञात नहीं है लेकिन परीक्षण और ज्ञान के द्वारा ज्ञात हो सकता है।

(२) विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य अब परीक्षाओं के मानदण्डों पर आधारित कार्यक्रमों का शिक्षण ही नहीं रह गया है जिसमें दृष्टि विशेषीकरण की ओर रहती थी वरन् अब वह उद्देश्य है समय की लम्बी शृंखला में स्वीकृत वैज्ञानिक संकल्पनाओं और सामान्य सिद्धान्तों का शिक्षण और परस्पर समंजन को बढ़ाना।

(३) अमूर्त समस्याओं का अध्ययन और भाषण जो पहले विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य माने जाते थे, उनका स्थान अब विज्ञान की सच्ची समस्याओं के प्रति जिज्ञासा की भावना के प्रोत्साहन ने ले लिया है।

(४) अब विद्यार्थियों के सम्मुख रटने के लिए शिक्षक के द्वारा प्रदर्शन नहीं किए जाते, प्रत्येक विद्यार्थी को अपने आप प्रयोगशाला में प्रयोग करना पड़ता है और इस तरह वह अपनी योग्यता और क्षमता के सम्बन्ध में जान सकता है।

(५) शिक्षकों को इस बात का प्रशिक्षण देना होगा कि वे अपने विद्यार्थियो को स्वीकृत तथ्य न बतलाएँ वरन् उनको स्वयं वैज्ञानिक विश्व के सम्बन्ध में अपने आप पता लगाने दें।

इससे अध्यापक की स्थिति नीची नहीं होती। सम्भवतः विद्यार्थी इसी पाठ्य पुस्तक या फिल्म से कार्यक्रमबद्ध प्रशिक्षण अथवा प्रयोगशाला के प्रयोगों से कुछ तथ्य अधिक अच्छी तरह सीख लेगा। लेकिन शिक्षक को व्यक्तिगत रूप से सीखने में विभिन्न तत्वों को संगठित और समेकित करना होगा। इस स्थिति में शिक्षक को तथ्यों को दोहराने से अधिक महत्वपूर्ण काम करना है। उसको शिक्षकों को प्रेरणा देने, निर्देश देने और उनको सहायता देने की अपनी क्षमता का अधिक-से-अधिक प्रयोग करना है और नई शिक्षण सामग्रियों में सुधार और विकास भी करना है।

विश्वव्यापी कार्य की आवश्यकता

अब विज्ञान शिक्षा के विकास और आधुनिकीकरण के लिए एक सुनियोजित विश्वव्यापी प्रयत्न के लिए उपयुक्त समय प्रतीत हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र की आर्थिक और सामाजिक परिषद् में १७ अगस्त १९६४ को स्वीकृत संस्ताव नं० १०४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में (उद्धरण चार) में "विकासशील देशों के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण के नए तरीकों का अग्रता क्रम से अध्ययन करने" की सिफारिश की है

यूनैस्को इन समस्याओं में सक्रिय रूप से लगी हुई है। १९६३ से लैटिन अमरीका में भौतिकी के नए दृष्टिकोणों पर एक प्रादेशिक प्रयोगात्मक प्रायोजना चल रही है। १९६५-६६ के बीच यूनैस्को रसायन शिक्षण के लिए एशिया में और प्राणि-वैज्ञानिक शिक्षण के लिए अफ्रीका में इसी प्रकार की योजनाएँ चलाएंगी और १९६७-६८ में गणित के शिक्षण से सम्बन्धित प्रायोजना चलाने की आशा है।

निकट भविष्य में यह भी सम्भव हो सकता है कि मूल विज्ञानों के शिक्षण में सहयोग का एक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम चलाया जा सके। उदाहरण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय भू-भौतिक वर्ष के समान अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षण वर्ष चलाया जा सके।

इस प्रकार की प्रायोजना स्पष्टतः तभी सम्भव होगी, जब इसकी आयोजना और कार्यचालन, तकनीकी सहायता के विस्तारित कार्यक्रम और विशेष निधि तथा दूसरे विशिष्ट अभिकरणों, वैज्ञानिक संघों की अन्तर्राष्ट्रीय परिषद्, शिक्षण व्यवसाय के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन और राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान अकादमियों, वैज्ञानिक शोध परिषदों, शिक्षा मन्त्रालयों, विज्ञान शिक्षण आयोगों और इसी प्रकार की दूसरी संस्थाओं से समायोजन किया जाए।

प्रारम्भिक स्थितियों में उद्देश्य यह होगा कि माध्यमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण और सस्ती सामग्रियों तथा कार्यक्रमों को तैयार किया जाए। यह सामग्रियाँ प्रारम्भिक स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय तक और प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के लिए अर्थात् शिक्षण के सभी स्तरों पर आवश्यक हैं।

जहाँ तक विज्ञान शिक्षण का सम्बन्ध है, यह स्वीकार किया जाता है कि "कि सभी देश अभी किसी-न-किसी रूप में विकास की स्थिति में ही हैं। इस क्षेत्र में विश्व-व्यापी स्तर पर एक समायोजित कार्यक्रम के द्वारा विज्ञान के नेताओं और सामान्य जनता के बीच जो खाई बढ़ती जा रही है, वह कम हो जाएगी। यह सभ्यता के लिए अच्छा होगा कि विज्ञान की बड़ी-बड़ी प्रगतियों को सामान्य व्यक्ति आश्चर्य और भय की मिश्रित भावना से नहीं, समझने की भावना से देखें।

विश्व खाद्य कार्यक्रम

वृत्त पत्रिका के पिछले अंक में विश्व खाद्य कार्यक्रम और यूनैस्को के बीच सहयोग के प्रारम्भ और उद्देश्यों का सर्वेक्षण था। उसमें कार्यक्रम की प्रशासन समिति की बैठक की घोषणा हुई थी। इसी बैठक में विश्व खाद्य कार्यक्रम की संरचना और भावी कार्यवाहियों के सम्बन्ध में सिफारिशें की जानी थीं। समिति की बैठक रोम में २१ मार्च से १४ अप्रैल तक हुई थी। इनकी सिफारिशों पर जून में खाद्य और कृषि संगठन की परिषद् ने और जुलाई में संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद् में अध्ययन किया जाएगा। अन्तिम निर्णय नवम्बर में संयुक्त राष्ट्र महासभा के थोड़े दिनों बाद खाद्य कृषि संगठन के सम्मेलन में किया जाएगा। अन्तरसरकारी समिति ने सर्व सम्मति से यह सिफारिश की कि जब तक खाद्य संभरणों के रूप में सहायता उपयोगी और सम्भव समझी जाए, तब तक विश्व खाद्यकार्यक्रम की कार्रवाइयाँ चलती रहनी चाहिएँ। यदि आवश्यक हो तो इस कार्यक्रम की संरचना में कुछ परिवर्तन किए जा सकते हैं।

अन्तर्संस्था सहयोग की दृष्टि से यह जान लेना महत्वपूर्ण होगा कि समिति के मत में विश्व खाद्य सहायता को संयुक्त राष्ट्र सरणी के संगठनों के द्वारा सहायता के पूरे कार्यक्रम के अंश रूप में माना जाए। इसको संयुक्त रूप से करना होगा और इसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्देश्य यह होगा कि विभिन्नि जनसंख्याओं में आपत्कालीन स्थिति में खाद्य सम्भरण भेजे और आर्थिक और सामाजिक-विकास को उन प्रयोजनाओं में योग दे जिनसे पोषण का कुछ सम्बन्ध होता है। इन प्रायोजनाओं में साक्षरता शिक्षण और स्कूल निर्माण विशेष महत्वपूर्ण हैं। इसके साथ ही स्कूल आयु के बच्चों को भी खाद्य सम्भरणों के रूप में विशेष रूप से सहायता देनी होगी।

यदि अन्तरसरकारी बैठक की सिफारिशें अन्तिम रूप से मान ली गईं तो उनके द्वारा अगले वर्ष विश्व खाद्य कार्यक्रम और यूनैस्को के बीच सहयोग का क्षेत्र विस्तृत हो जाएगा।

अवकाश और वयस्क शिक्षा

वयस्क शिक्षा और अवकाश पर एक प्रादेशिक सम्मेलन प्राग में २९ मार्च से ६ अप्रैल १९६५ तक चेकोस्लोवाकिया सरकार और उसके राष्ट्रीय आयोग के द्वारा यूनैस्को के योग कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित की गई है। इसने २४ योरोपीय सदस्य देशों, ८ गैर सरकारी संगठनों, यूनैस्को विश्व स्वास्थ्य संगठन और अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सम्मेलन के प्रारम्भिक अधिवेशन में यूनैस्को के महानिदेशक मिस्टर रेने महू ने कहा : "आधुनिक समाजों में जहाँ स्कूल बाह्य शिक्षा भविष्य में पूरी शिक्षा की भाँति ही महत्वपूर्ण कार्य करेगी, वयस्क शिक्षा की सबसे पहली प्रवृत्ति व्यक्तिगत आकांक्षाओं को पूर्ण करना और समुदाय के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की आवश्यकताओं को पूरा करना होगा। इस प्रसंग में अवकाश की संकल्पना केवल विश्राम के अर्थ में ही नहीं होती वरन् सृजनात्मक क्षमता की अभिव्यक्ति के रूप में भी होती है इसी कारण रुचि, न्याय और तार्किक भावना का विकास करने के लिए अनेकों प्रकार की कार्रवाइयों की सुविधा देकर अवकाश समय के उपयोग का आयोजन करना आवश्यक है।

स्वभावत: इसके कारण अनेकों अत्यन्त जटिल तकनीकी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं : समुचित अवकाश सुविधाओं जैसे सांस्कृतिक केन्द्र, खेल के मैदान, पुस्तकालय, संग्रहालय, सिनेमा-क्लबों आदि की आयोजना। यह उन औद्योगिक देशों में और भी आवश्यक है जहाँ नगर के समुदायों में द्रुत विकास हो रहा है : विशिष्ट शिक्षा जानकारों और नेताओं का प्रशिक्षण। जल संचारण के आधुनिक तकनीकों का संगत उपयोग और यह निश्चय करने वाले उपाय कि कुछ कम सुविधा प्राप्त वर्ग जैसे स्त्रियाँ, बड़े लोग और ग्रामीण जन संख्या को वयस्क शिक्षा कार्यक्रमों से पूरा लाभ उठाने की सुविधा हो। अवकाश समय का संगठन करने की तकनीकी समस्याओं का समाधान तभी किया जा सकता है जब वे उपायगत समाज वैज्ञानिक शोध के अंग रूप में अपने मानवीय संदर्भ में देखी जाएँ। इसीको सांस्कृतिक विकास के अन्तिम नैतिक विकल्पों के सम्बन्ध में निदेशक और सहायक के रूप में लेना चाहिए।

सामान्य रिपोर्ट

रिपोर्ट लेखक—ब्रायन ग्रूम ब्रिज (ब्रिटेन)

अवकाश एक समस्या नहीं है, बल्कि उपलब्धि है। अतीत में जिनके पास अबकाश था वे उसे एक विशाल बहुमत को कष्ट देकर उसका आनन्द लेते थे। आज सभी को अवकाश मिलता है और सभी के पास अधिक अवकाश की सम्भावनाएँ भी हैं।

सभी वयस्कों को अपने देश के सांस्कृतिक जीवन में पूरी तरह से भाग लेने और अपने व्यक्तित्वों का पूरा-पूरा विकास करने का पूरा अधिकार है, परन्तु यदि अवकाश न हो, तो यह अधिकार निरर्थक हो जाता है। अवकाश ही में इस अधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का उपभोग कर सकने की सम्भावना है। लेकिन सभी देशों में वस्तुस्थिति सम्भाव्य स्थिति के बहुत पीछे है। यही कारण है कि अधिकतर अवकाश को ही एक समस्या कहा जाता है। जब उसका अर्थ केवल यही होता है कि विश्वभर में उसको मानव जीवन को संकुचित क्षेत्र से विस्तृत क्षेत्र में ले जाता है। परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से यह इतना नया है कि अभी इसका उपयोग कैसे हो, इस सम्बन्ध में कोई निश्चय नहीं हो सका। यह स्थिति वयस्क शिक्षा के सम्मुख महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व और अवसर रख देती है। यदि इसको उस रूप में कारगर होना है तो उसको अर्थ व्यवस्था के एक अलग खण्ड के रूप में नहीं दिया जाना है, वरन् सांस्कृतिक और समाजिक जीवन के अनिवार्य अंग के रूप में और आर्थिक विकास एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में किया जाना है।

अवकाश के रूप

अवकाश विश्राम और मनोरंजन के लिए, व्यक्तिगत विकास के लिए और सामाजिक कार्यों के लिए होता है। वयस्क शिक्षा इससे सम्बधित है क्योंकि वह व्यक्तियों को अपने को अधिक अच्छी तरह समझने में सहायक हो सकती है और अपने परिवारों तथा समाज की आवश्यकताओं का उत्तर देने में सहायक हो सकता है। इसके साथ ही विभिन्न प्रकार के अवकाश के बीच चुनाव भी करने में मदद दे सकती है।

वयस्क शिक्षा मनोरंजन से सम्बन्धित है। उसको चाहे मन-बहलाव या व्यक्तित्व के गहरी सम्पूर्ति के रूप में माना जाए जिससे स्त्री-पुरूषों को कला-कौशल, खेलों और दूसरी सामाजिक कार्यवाहियों के बारे में सीखने का मौका मिलता है और ऐसी निपुणता प्राप्त करने का अवसर मिलता है जिससे उन्हें आनन्द मिल सके।

सबसे स्पष्ट रूप से यह विकास से सम्बन्धित है। अवकाश के द्वारा वयस्क अपने को कार्य के अधिक योग्य पाते हैं। वे अपनी प्रारम्भिक स्कूल शिक्षा की कमियों को दूर कर सकते हैं उच्चतर योग्यता प्राप्त कर सकते हैं और ज्ञान में प्रगति से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। अथवा केवल सीखने के आनन्द के लिए ही सीख सकते हैं। उनके दिमाग शिक्षा के अनुशासन से अधिक तीक्ष्ण बन जाते हैं। उनके भाव कला-कृतियाँ बनाने या उनका आनन्द लेने से समृद्ध होते हैं और उन्हें सामाजिक जीवन में अधिक पूर्णता से भाग लेने का अवसर मिलता है।

वयस्क शिक्षा जन-संख्या के विभिन्न खण्डों के लिए उनकी परिस्थितियों आयु और पारिवारिक जीवन में उनके योग के अनुसार विभिन्न प्रकार से इन उद्देश्यों की पूर्ति कर सकती है। अवकाश समय में मनुष्य बिलकुल खाली होता है। इसलिए बिना वयस्क शिक्षा के यह खालीपन भार भी बन जा सकता है। वयस्क शिक्षा से कार्यों के बीच में चुनाव किया जा सकता है, अपनी प्रतिभाएँ विकसित की जा सकती हैं और परिणामों का आनन्द लिया जा सकता है।

शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताएं

व्यवहार में व्यक्तिगत विकास और सामाजिक जीवन में योग की सम्भावनाएँ अपर्याप्त सुविधाओं से नष्ट हो जाती हैं। अनेकों देशों में सामान्य शिक्षा पद्धतियाँ समकालीन विश्व के योग्य नहीं हैं और जीवन पर्यन्त शिक्षा को जारी रखने के लिए ठीक ढंग से तैयार नहीं करतीं। वयस्क शिक्षा की स्थिति अधिकतर केन्द्रीय नहीं रहती और उसके तरीके कारगर नहीं होते। वयस्क शिक्षा की प्रगति मूल रूप से वयस्क शिक्षा विशेषज्ञों के होने पर निर्भर करती है जो संगठक भी हों और शिक्षक भी, जिससे उस व्यवस्था को प्रेरणा दी जा सके, बनाए रखा जाए और उस व्यवस्था का विस्तार किया जाए। वयस्क शिक्षा का विकास अनेकों केन्द्रों की स्थापना पर भी निर्भर है जो उस समय खुले रहें जबकि लोग उनका उपयोग कर सकें। व्यावसायिक कर्मी वर्ग में विशिष्ट प्रशासनिक या योग्यताएं होने के साथ-साथ दूसरों में आन्तरिक निर्देशन की शक्तियों का विकास करने की क्षमता भी होनी चाहिए। जिन परिस्थितियों में वे काम कर रहे हैं, उनका समाज वैज्ञानिक ज्ञान होना चाहिए और विशेष रूप से अवकाश आवश्यकताओं की बहुलता और स्त्री-पुरुषों की रूचियों की समझ होनी चाहिए जिससे वे भाग लेने वालों के लिए वयस्क शिक्षा के विविध कार्यक्रमों का संचालन कर सकें।

अवकाश की नीति

जीरी कोटासैक ने लिखा है, "यद्यपि ज्ञान उच्चतम मानवीय गुण है फिर भी यह सच्चे अर्थों में कार्य नहीं है वरन् एक स्थिति है। प्रत्येक मानवीय कार्य उसका प्रकार चाहे जो भी हो, ज्ञान और कार्य की एकता बतलाता है। ज्ञान जितना भी बढ़ा-चढ़ा होगा कार्य भी उतना ही अच्छा होगा।

वयस्क शिक्षा विविध आंशिक रूप से-ज्ञान प्राप्त करने की साधना भी है और कार्य का एक अवसर भी। जहां तक यह ज्ञान की प्राप्ति की सुविधा जुटाता है। वहाँ तक इसको वह प्रशिक्षण कहा जा सकता है जो किसी न किसी प्रकार के कार्य की ओर ले जाता है। यह महत्वपूर्ण है कि वह आधारित कार्य की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुविधाएं सैद्धान्तिक शिक्षा के साथ ही विकसित हों। उदाहरण के लिए सितारों का अध्ययन करना और उनको दूरवीक्षण यंत्र से देखना सम्भव होना चाहिए। अर्थ व्यवस्था का अध्ययन करना और उसको व्यवहार में लाने की सुविधा होनी चाहिए और बर्तन बनाने के केवल क्लास ही नहीं रखने चाहिएँ, बर्तन बनाने के स्टूडियो भी होने चाहिए। डाक्टर का मूल्य अधिकतर उस यात्रा के लिए शिक्षा की दृष्टि से तैयार किए जाने पर बढ़ जा सकता है। इसका मतलब यह है कि सुविधाओं को काम चलाऊ और अल्प-क्षेत्र आयोजना या तदर्थ निर्णयों पर सीमित नहीं होना चाहिए। सुविधाओं का विस्तृत से विस्तृत क्षेत्र होना चाहिए।

सांस्कृतिक सुविधाओं के संतुलित विकास के लिए यह आवश्यक है कि सरकारें आवश्यकताओं को पहले से समझाने और उनका विशलेषण कर सकें। और फिर इन आवश्यकताओं को उपयुक्त स्तर पर पूरा कर सकें। विशिष्ट विकासों के बारे में पहले से बतलाना कठिन या असम्भव ही होगा क्योंकि अवकाश के प्रयोगों को अनायासता का अवसर भी देना होगा। सामान्य रूप से तीन मूल अवश्यकताएँ देखी जा सकती हैं। नगरों और औद्योगीकृत ग्रामीण क्षेत्रों दोनों में ही कलाकेन्द्रों, खेल के मैदानों और अवकाश तथा वयस्क शिक्षा के लिए आवश्यक दूसरे भवनों के लिए स्थान सुरक्षित रहना चाहिए।

वयस्क शिक्षा जानकार और सांस्कृतिक विकास कार्यकर्ता विशेष देश की परिस्थितियों के अनुसार पर्याप्त संख्या में नियुक्त और प्रशिक्षित किए जाने चाहिएं। इन आयोजनाओं को कार्यान्वित करने के परिणामों का मूल्याँकन करने के लिए भी पर्याप्त शोध कर्ता होने चाहिएं।

अवकाश की आयोजना नियन्त्रण नहीं करती। वह किसी भी कार्य के लिए प्रेरणा और अनुमति देती है। इस या दूसरे क्षेत्रों में वयस्क शिक्षा का यह काम होना चाहिए कि स्त्रीयों और पुरूषों के भीतर आयोजना और कार्यान्विति की प्रक्रियाओं को समझने, इनमें भाग लेने और उनकी आलोचना करने की क्षमता उत्पन्न कर दे।

योरोप का नया युवक समुदाय

वयस्क शिक्षा के बहुत से प्रयोजन और कार्य हैं। उनमें से सभी की उपलब्धि अवकाश के समय के उपयोग द्वारा हो सकती है। इसको अब यह कार्य एक पूर्णतया नवीन स्थिति में करने होंगे। पहले के समाजों में कार्य श्रम के संकीर्ण विभाजन पर आधारित था और अवकाश बहुत ही नियमबद्ध होता था। अब जैसा कि अवकाश प्राप्त के बाद होता है, मनुष्यों को अपने को पहचानने और अपनी क्षमताओं को विकसित करने का अवसर एक ऐसे सामाजिक वातावरण में मिलता है जिसमें वह जितना प्राप्त कर सकते हैं, उतना दे भी सकते हैं।

सामाजिक समंजन की प्रक्रिया सरल नहीं होती। लेकिन अनुभवों की तुलना करके सूचना का विनिमय करके शोध कार्य के परिणामों में हिस्सा बटाकर और कार्यों में सामायोजन कर के योरोप के देश एक दूसरे की सहायता कर सकते हैं। जैसे मिस्टर रेने महू ने भविष्य वाणी की थी, "पुराने योरोपीय महाद्वीप में नए जीवन का संचार हो गया है, और उसमें एक नई पीढ़ी उभर रही है, जो विश्व के सामने मानव की गरिमा और प्रसन्नता का उदाहरण रख सकती है"। विनिमय की प्रक्रियाएँ सरल परन्तु नियमित होनी चाहिएं। उपायों को सच्चे हृदय से किया जाना चाहिये। उनके पीछे कोई प्रशासकीय उद्देश्य नहीं होने चाहिएं।

वयस्क शिक्षा और अवकाश का समय शून्य में नहीं रहा करता, उसको कार्य द्वारा सम्भव बनाया जाता है। परन्तु प्रगति और विकास की वही शक्तियाँ जिनसे अवकाश सम्भव होता है, धीरे-धीरे कार्य का ही मानवीकरण करती जा रही हैं। यह एक ब्रिटिश लेखक डेलाई बर्न ने ३० वर्ष पहले समझ लिया था : "हम अब एक नए युग के प्रारम्भ में हैं, जिसमें कोई भी पुरूष और स्त्री कार्य और अवकाश दोनों ही अर्थों में पूरा जीवन जिएगा और समय का विभाजन आपत्तिजनक और अमहत्वपूर्ण अर्थात् कार्य जिसको करने की इच्छा नहीं है और अवकाश जिसकी कोई आवश्यकता नहीं है, के बीच में नहीं होगा।"

सुझाव

सम्मेलन में सदस्य देशों और अन्तर्राष्ट्रीय सदस्यों तथा इस समस्या से सम्बन्धित दूसरी संस्थाओं द्वारा कार्य के लिए बहुत से सुझाव दिए हैं। उनमें से प्रमुख ये थे :

अवकाश समय के उपयोग के सम्बन्ध में सामान्य रूप से बहु-राष्ट्रीय तुलनात्मक अध्ययन करवाना और विशेष रूप से अर्थ-व्यवस्था के उन खण्डों में जहाँ तकनीकी विकास बहुत द्रुत-गति से हो रहा है अवकाश और व्यावसायिक प्रशिक्षण के सम्बन्ध का अध्ययन ;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनिक और साप्ताहिक आधार पर काम के घण्टों के आयोजन और स्वचालन नए उत्पादन तकनीकों से उत्पन्न कार्य के स्वरूप में परिवर्तन का अध्ययन ;

व्यावसायिक और सांस्कृतिक विकास के लिए अवकाश के समय का अच्छा से अच्छा उपयोग किस प्रकार से किया जा सकता है, इसका परीक्षण ;

स्त्रियों को लाभ पहुँचाने के उपाय। इस बात पर विशेष ध्यान रखते हुए कि नौकरी करने वाली स्त्रियाँ दो काम करती हैं। और स्त्री को इसलिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए कि वह अपनी शिक्षा और घरेलू काम करने के बीच में चुनाव करें ;

ऐसे अधेड़ व्यक्तियों की समस्याओं पर अध्ययन जिनको अवकाश समय के उपयोग का कोई पूर्व अनुभव नहीं है और उनकी आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त उपस्कर की शोध ;

व्यक्तियों के लिए उच्चतर व्यावसायिक योग्यताओं को प्राप्त करने के लिए और अपनी संस्कृति को बढ़ाने के सुलभ अवसरों के सम्बन्ध में सूचना का विस्तृत विसरण;

संस्कृति के विसरण के उपकरण के रूप में टैलीविजन के अध्ययन की तैयारी ;

वयस्क शिक्षा के वर्तमान तरीकों की एक सूची और मूल्यांकन करने का प्रयास ;

शिक्षा प्रयोजनों के लिए पर्यटन विनिमयों को प्रोत्साहन और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को बढ़ाने की दृष्टि से भी ;

वयस्क शिक्षा अवकाश और संस्कृति के केन्द्रों के लिए अवधि बजटों का अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन और इस क्षेत्र में राज्य, स्थानीय जनता और निजी संगठनों के कार्यों का अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन।

सम्मेलन ने यूनैस्को से कहा कि एक ऐसी योरोपीय संस्था का निर्माण किया जाए जिस पर इन-इन कामों का दायित्व हो। परीक्षण की हुई समस्याओं पर अभिलेखन का वितरण। सम्मेलन द्वारा बतलाए गए अध्ययनों को करवाना या उनको प्रोत्साहन देना और उनके परिणामों को स्पष्ट करना। अध्ययन किए हुए प्रश्नों पर बैठकों का संगठन और समुचित संस्थाओं के साथ सहयोग करना। इन सब कार्यवाहियों में यूनैस्को भी भाग लेगी।

अन्त में सम्मेलन ने सरकारों को आमंत्रित किया कि वयस्क शिक्षा पद्धतियों को व्यक्तियों और दलों की आवश्यकताओं तथा औद्योगिक और सामाजिक परिवर्तनों के अनुकूल समंजित करके वयस्कों को सामान्य और विशिष्ट दोनों प्रकार की ही शिक्षा सुविधाएँ दी जाएँ ;

शिक्षा और संस्कृति के विभिन्न रूपों के लिए आर्थिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक बाधाओं को हटाकर अधिक सुलभ बनाना। बचपन से ही स्त्री पुरूषों को अवकाश समय के सांस्कृतिक उपयोग के लिए तैयार करना। काम के घण्टों के बीच में ही तनख्वाह घटाए बिना काम करने वालों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण क्रमों को प्रारम्भ करना और वयस्क शिक्षा क्रमों में स्कूल शिक्षा में दी जाने वाली उपाधियां प्रदान करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजाति की संकल्पना के प्रति जीववैज्ञानिक दृष्टिकोण

प्रजातिवाद एक ऐसी विचार सरणी की अभिव्यक्ति है जो मूलतः तर्कसंगत प्रतीत नहीं होती। घृणा और प्रजाति-सम्बन्धी भावना वैज्ञानिक दृष्टि से भ्रामक विचारों पर आधारित हैं। और अज्ञान के कारण बने रहते हैं। वे वैज्ञानिक रूप से ऐसे ठीक विचारों से भी लिए जा सकते हैं, जोकि अपने संदर्भ के बाहर या तोड़मरोड कर प्रस्तुत किए जाते हैं, जिससे गलत निष्कर्ष निकलते है। इन गलतियों को स्पष्ट करने के लिए और विभिन्न वैज्ञानिक शाखाओं के निष्कर्षों के ज्ञान को बढ़ाने के लिए यूनैस्को ने १९५० में विभिन्न देशों के (ब्राजील, फ्रास भारत, मैक्सिको न्यूजीलैण्ड, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमरीका) के वैज्ञानिकों की एक बैठक का संयोजन किया था जो प्रजाति सम्बन्धी भिन्नताओं की प्रकृति और महत्व के सम्बन्ध में घोषणा करे।

इन विशेषज्ञों द्वारा तैयार किया हुआ मसौदा यूनैस्को द्वारा १९५० में प्रकाशित हुआ था जिसका सभी लोगों में अच्छा स्वागत हुआ था। लेकिन मानव-वैज्ञानिकों और जनन-वैज्ञानिकों ने इसकी आलोचना यह कहते हुए की थी कि इससे जीव-वैज्ञानिक तथ्य के रूप में प्रजाति की संकल्पना और सामाजिक तत्वों के रूप में प्रजाति की संकल्पना के बीच गड़बड़ी उत्पन्न होती है।

इसलिए यूनैस्को ने १९५१ में दूसरा सम्मेलन बुलाया था। इस बार उसमें केवल भौतिक मानव-विज्ञान और मानव जनन-विज्ञान के विशेषज्ञ थे। इस सम्मेलन में एक नया मसौदा तैयार किया गया जिसमें पहले घोषणापत्र के प्रमुख निष्कर्ष वैसे के वैसे ही रखे गए। कुछ गौण निष्कर्षों में थोड़ा सा संशोधन कर दिया और कुछ बातें छोड़ दी गईं। इस नए घोषणा पत्र का मसौदा ५० जनन वैज्ञानिकों और मानव वैज्ञानिकों के पास टिप्पणियों के लिए भेजा गया और इस परिक्षण के परिणाम जिसमें टिप्पणियाँ भी थीं और विरोधी आलोचनाएं भी, जाति संकल्पना शीर्षक के पुस्ताकार प्रकाशित किए गए।

उसके बाद से यूनैस्को का कार्य प्रमुखतः प्रजाति के सामाजिक पक्षों की ओर केन्द्रित रहा है। दूसरी ओर पिछले १५ वर्षों में मानव जीव विज्ञान के क्षेत्र में हुई वैज्ञानिक प्रगति से यह स्पष्ट हो गया है कि १९५१ के घोषणा पत्र को नये अध्ययन और नई जीव-वैज्ञानिक शोधों के अनुसार उसका परीक्षण आवश्यक है। यह भी अनुभव किया जाता है कि इसके क्षेत्र को कुछ बातों को उसमें और जोड़कर जो उसमें पहले नहीं थीं, अर्थात् अन्तरप्रजातीय स्थितियों में प्रजाति पूर्वाग्रह की प्रकृति और रूप का निरूपण करके इसके क्षेत्र में विस्तार करना चाहिए।

इसलिए यूनैस्को ने निश्चय किया कि दो बैठकें बुलाई जाएँ। एक १९६४ में जिसमें जीव-वैज्ञानिक पक्षों पर विचार हो और दूसरी १९६६ में जिसमें समस्या के सामाजिक और नैतिक पक्षों पर विचार किया जाए और एक प्रकथन तैयार किया जाए जिसमें १९६४ की बैठक के परिणामों को लेते हुए प्रजाति की समस्या के जीव वैज्ञानिक और सामाजिक दोनों ही पक्षों को ले लिया जाए।

मास्को में अगस्त १९६४ में मानव-वैज्ञानिक और नृवंश वैज्ञानिक अध्ययनों की सातवें सम्मेलन के बाद इन बैठकों में से पहली बैठक हुई। इसमें १७ देशों के मानव वैज्ञानिक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नृवंश वैज्ञानिकों ने भाग लिया था (बेलजियम, ब्राजील, कनाडा, चेकोस्लोवाकिया, जर्मन संघ गणराज्य, फ्रांस, भारत, जापान, मैक्सिको, नाइजीरिया नार्वे, पोलैंड, सेनेगल, इंगलैण्ड, संयुक्त राज्य अमरीका, रूस और वेनेजुला)।

आठ अधिवेशनों में मानवीय प्रजातियों के अध्ययन से सम्बन्धित प्रमुख समस्याओं सम्बन्धी २५ रिपोर्टों पर विचार किया गया। अन्तिम दो अधिवेशनों में एक घोषणा पत्र सर्व सम्मति से स्वीकृत किया गया। इसी घोषणा पत्र के मसौदे में १९६६ में प्रजाति-पूर्वाग्रह के सम्बन्ध में नए घोषणा पत्र के जीव-वैज्ञानिक तत्व होंगे।

एक बार मानव-वैज्ञानिकों के बीच विचार-विनिमय का प्रमुख उद्देश्य यह था कि यह निश्चय किया जाए कि मनुष्य का एक ही पूर्वज था या कई थे। क्या विभिन्न प्रजातियां एक ही प्रकार के बन्दर से प्रादुर्भुत हुई या अनेकों प्रकार से। आज इस प्रश्न को अन्तिम रूप से निश्चित माना जा सकता है। इसको १९६४ की मास्को बैठक में उठाया भी नहीं गया। इस घोषणा पत्र मात्र में टिप्पणी के रूप में पहले के विचार-विनिमयों का सार रूप में कहा गया है सभी जीवित मानव एक ही जाति के हैं, इसका नाम है हेमो सेपियन और उनका उद्भव एक ही सामान्य स्थल से हुआ है।

सबसे अधिक विचार जाति कल्पना के स्वरूप से सम्बन्धित हुये। यह सोचा जा सकता है कि इस प्रश्न पर किसी विचार विनिमय की आवश्यकता नहीं है। सभी लोग जानते हैं कि जहां तक भौतिक विशेषताओं का सवाल है विश्व के विभिन्न भागों में लोगों में परस्पर काफी अन्तर है। जैसे उनका रंग, उनके बाल या उनके नाक-नक्शे। यह सच है कि जो विशेषता एक सी है उनकी संख्या कहीं अधिक है और यह भी सच है कि यह सामान्य विशेषताएँ जीव वैज्ञानिक दृष्टि से भिन्न विशेषताओं की अपेक्षा अधिक महत्व की हैं। इसके साथ ही भिन्नताएँ तो हैं और एक दृष्टि में ही देखी जा सकती है। उदाहरण के लिए यदि हम कांगों के स्वीडन के और मंगोलों के अलग-अलग दलों को देखें तो हम उनको अलग-अलग समझ लेंगे। उनको भिन्न प्रकार के वस्त्र पहनने या बोलने की कोई आवश्यकता नहीं है। उनकी भौतिक विशेषताओं से ही हम उनका अन्तर समझ लेंगे।

जबकि सभी लोग इस बात पर एकमत हैं अनेकों मानव वैज्ञानिक अब एक दूसरे निश्चित तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। उदाहरण के लिए यदि कोई नील नदी से नील नदी के डेल्टा तक, उसके बाद एशिया के अरब देशों से होते हुए तुर्किस्तान, बलेरिया, रूमानिया और उक्रेन से उत्तरी रूस तक जाए और फिर मंगोलिया की ओर चले तो इस रास्ते में विभिन्न निवासियों की भौतिक विशेषताओं में अन्तर दिखलाई नहीं देगा।

परन्तु यदि कोई इस यात्रा के प्रारम्भ मध्य और अन्त में मिलने वाले लोगों की तुलना करे तो अन्तर स्पष्ट हो जाएगा। इसलिए प्रजातीय वर्गीकरण के विरोधी कहते हैं की निश्चित वर्गों में मानवता का विभाजन वैज्ञानिक दृष्टि से ठीक नहीं है।

दूसरी ओर वे लोग जो विश्वास करते हैं कि मानव प्रजातियों को विभिन्न इकाइकों के रूप में स्वीकार करना ही चाहिए, यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि किसी भी प्रकार की घटना के बीच अन्तरण स्थितियों में इस घटना की वास्तविकता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। यात्री को किन्हीं भी दो निकट के बिन्दुओं पर जलवायु में या वहाँ के जीव जन्तुओं में कोई अन्तर नहीं मिलेगा फिर भी प्रदेशों का वर्गीकरण लाभकर है और जलवायु तथा जीव जन्तुओं के ज्ञान के लिए आवश्यक भी है। वर्गीकरण को ठीक मानने वाले पूछते हैं, पर्वत और घाटी के बीच की विभाजक रेखा कहाँ है, फिर भी कोई विभाजक रेखा न दिखलाई पड़ने के कारण पर्वतों और घाटियों के भेद को अस्वीकार नहीं करता।

वर्गीकरण के विरोधी यह कहते हैं कि भौतिक विशेषताएं न केवल स्थान में परन्तु समय में भी बदलती हैं। मध्य योरोप में जैसे कि दूसरे प्रदेशों में भी मानव केवल पिछली आठ शताब्दियों में अधिक गोल हो गया है। लेकिन इधर फिर उसमें अधिक लम्बे होने की प्रवृति दिखलाई दे रही है। कुछ देशों में पिछले १०० वर्षों में औसत कद १० सेंटीमीटर बढ़ गया है। इसी प्रकार के और दूसरे परिवर्तन भी हुए हैं। इसी प्रकार वर्गीकरण के विरोधी सभी प्रकार की भौतिक विशेषताओं के सम्बन्ध में व्यक्तिगत भिन्नताओं पर भी जोर देते हैं।

उदाहरण के के लिए अजरबैजान के लोगों के बीच चेहरे की चौड़ाई कजाकों के चेहरे से एक सेंटीमीटर कम होती है। लेकिन यह माप एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति पर बदलती है और कुछ अजरबैजानियों का चेहरा कजाकियों के चेहरे से अधिक चौड़ा होता है। वर्गीकरण के मानने वाले इसको स्वीकार करते हैं परन्तु यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि कभी कभी, बल्कि बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार, स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक लम्बी ही देखी गई हैं लेकिन वे पूछते हैं कि क्या इस कारण से इस स्पष्ट तथ्य को अस्वीकार कर दिया जाएगा कि पुरुष स्त्रियों से अधिक लम्बे होते हैं।

इस बात को स्वीकार करते हुए कि प्रजातीय वर्गीकरणों के महत्व के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मत हैं। मास्को की बैठक में भाग लेने वालों ने कुछ निष्कर्षों पर पहुँचना सम्भव माना। इन निष्कर्षों में यद्यपि सभी मतान्तर दूर नहीं किए जा सकते थे फिर भी इससे यह निर्देश अवश्य ही मिला कि मतों का समंजन किया जा सकता है।

उनके घोषणा पत्र में एक बात यह थी कि निश्चित प्रवृतियों के रूप में विशेषताओं को प्रस्तुत करने के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मानव-प्रजातियाँ सभी समय उद्भव और विलय की प्रक्रिया में रहती हैं। इस घोषणा-पत्र में एक बात और भी अधिक महत्व की है। यह कहा गया है कि मानव में कुछ भौतिक विशेषताएँ ऐसी हैं जिनका हरेक परिस्थिति में मानव-जाति की रक्षा के लिए जीव वैज्ञानिक मूल्य है। जिन भिन्नताओं पर जातीय वर्गीकरण आधारित हैं वे इन विशेषताओं को प्रभावित नहीं करते और इसलिए बीच वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किसी भी प्रकार एक या दूसरी प्रजाति की भिन्नता या उच्चता की बात करना सम्भव नहीं है।

मास्को बैठक में भाग लेने वाले सभी विशेषज्ञ जीव विज्ञान के क्षेत्र में विशेषज्ञ थे। परन्तु कोई भी सच्चा वैज्ञानिक सर्वेक्षण एक ही विज्ञान के संधार में सीमित नहीं किया जा सकता। मानवों से चर्चा करने वाले जीव-वैज्ञानिक सामाजिक अस्तित्व के तत्व की अपेक्षा नहीं कर सकते। जैसाकि घोषणा पत्र में निर्दिष्ट किया गया है सामाजिक व्यक्तित्व के कारण ही मानवीय विकास में कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं दृष्टिगोचर होती हैं जो मानवों की विशिष्ट विशेषताएँ हैं। घोषणा पत्र में आगे कहा गया है निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि विविध परिस्थितियों में सामान्य समंजन क्षमता विशिष्ट परिस्थियों में समंजनों की अपेक्षा अधिक स्पष्ट है।

मनुष्य और दूसरे सब जीव वैज्ञानिक जीवों के बीच यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण जीव वैज्ञानिक तर्क हैं और यह मनुष्य की प्रकृति और उसके सामाजिक जीवन से प्रादुर्भूत होता है। घोषणा पत्र की यह बात भी ध्यान में रखने योग्य है। लम्बे वर्षों में किसी भी क्षेत्र में मनुष्य ने जो प्रगति की है वह अधिक-से-अधिक संस्कृति और सांस्कृतिक उपलब्धियों के अन्तरण पर आधारित है। जनन सम्बन्धी विशेषताओं के अन्तरण पर नहीं। इसलिए आज के मनुष्य में प्राकृतिक चुनाव की विशेषता में परिवर्तन हो गया है।

प्रजातिवाद एक ऐसी पद्धति है जो वैज्ञानिक तथ्यों को झुठलाती है और मनुष्य में पशुओं के समान तत्व ही मानती है।

इसलिए १९६४ को मास्को बैठक में स्वीकृत घोषणा पत्र के जीव वैज्ञानिक तथ्य प्रजाति वाद के विरोध में एक बाधा हैं। मनुष्य प्रमुखतः सामाजिक जीव है और उसके इतिहास की मूल प्रकृति सामाजिक तथ्यों द्वारा निश्चित होती है।

जैसाकि भली प्रकार ज्ञात है जब भी प्रजाति वादी शक्ति में होते हैं, तो वे यही चाहते हैं कि भिन्न प्रजाति के मनुष्यों को परस्पर विरोधी बनाएँ और मानवीय प्रजातियों की स्वाभाविक मिश्रण प्रक्रिया को रोकने के लिए हर सम्भव उपाय का प्रयोग करें। विज्ञान को झुठलाने के लिए प्रजातिवादियों का बड़ा प्रिय तकनीक यह है कि यह बात निश्चय पूर्वक है कि अन्तरप्रजातीय विवाह हानिकर हैं। और ऐसे विवाहों से उत्पन्न होने वाले बालक शारीरिक और मानसिक अभावों से ग्रस्त होते हैं।

यहाँ पर इस घोषणा पत्र में निश्चित रूप से कहा गया है "यह कभी प्रमाणित नहीं हुआ कि अन्तरप्रजातीय सम्बन्ध मानवता के लिए जीव वैज्ञानिक दृष्टि से हानिकर हैं। इसके विपरीत यह मानवीय दलों के बीच जीव वैज्ञानिक सम्पर्कों के बनाए रखने में योग देते हैं और इस प्रकार विविधता में भी मानव जाति की एकता में योग देते हैं।" इस बात का ध्यान रखते हुए कि व्यक्तिगत आनुवंशिक विशेषताएं स्वाभाविक रूप से बच्चों को प्रभावित करती हैं (यह हो सकता है कि इस प्रकार की कुछ विशेषताओं के संयोजन से हानिकर परिणाम हो) यह घोषणा पत्र इस बात पर जोर देता है कि यह प्रश्न प्रजातीय भिन्नताओं का नहीं है और इसलिए विभिन्न प्रजाति के व्यक्तियों के बीच अन्तर्विवाहों का निषेध करने या प्रजाति के आधार पर उसके विरुद्ध सलाह लेने का कोई जीव वैज्ञानिक आधार नहीं है।

इस घोषणा पत्र में एक बार फिर जोर दिया गया है कि जातीय भिन्नताएँ राष्ट्रीय धार्मिक भाषा सम्बन्धी या सांस्कृतिक भिन्नताओं से मिलती नहीं हैं। यहाँ पर भी सामाजिक घटनाओं का प्रजातीय अर्थात् जीव-वैज्ञानिक भिन्नताओं के निर्माण में प्रभाव होता है। जो मनुष्य एक भाषा बोलते हैं और एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृति में होते हैं, उनमें परस्पर विवाह करने की प्रवृति होती है और इसलिए यह होता है कि बच्चों में एक ओर तो एक सी भौतिक विशेषताएं होती हैं और दूसरी ओर एक सी भाषा सम्बन्धी या संस्कृति की विशेषताएं भी होती हैं। परन्तु इनके बीच कोई कार्य-कारण की शृंखला नहीं है और इसलिए जनन सम्बन्धी आनुवंशिकता के प्रभाव को साँस्कृतिक विशेषताओं का कारण नहीं माना जा सकता।

प्रजातिवादी कहते हैं कि मानसिक विशेषताओं की दृष्टि से प्रजातियाँ समान हीं हैं जो मनोवैज्ञानिक १९६६ के घोषणा पत्र को तैयार करेंगे वे इस बात पर विचार करेंगे फिर भी मास्को बैठक में जीव वैज्ञानिक प्रजाति पक्ष के इस प्रमुख पक्ष को छोड़ नहीं सके।

मानव-जाति की कुछ प्रमुख शारीरिक प्रवृतियों के समान बौद्धिक विकास की जन्म-गत क्षमता उन जीव-वैज्ञानिक विशेषताओं के कारण है जो विश्व-व्यापी हैं। क्योंकि उन्हीं के कारण किसी भी प्राकृतिक या सांकृतिक परिस्थिति में रहकर मनुष्य अपने को बनाए रख सकता है। आज विश्व के किसी भी भाग के लोगों में सम्भयता के किसी भी स्तर तक पहुँच सकने की समान जीववज्ञानिक सम्भावनाएं है। विभिन्न राष्ट्रों के लोगों की उपलब्धियों में जो अन्तर होते हैं, उनका कारण उनका सांस्कृतिक इतिहास है।

"कुछ मनोवैज्ञानिक प्रवृतियाँ कभी-कभी विशेष लोगों की विशेषताएं मानी जाती हैं। यह कथन ठीक हो या न हो जब तक प्रमाण नहीं मिल जाता, हम इन प्रवृत्तियों को आनुवंशिक तथ्यों के कारण मानने का कोई आधार नहीं देखते।

सर्वोपरि बुद्धि और सांस्कृतिक विकास और क्षमता से सम्बन्धित आनुवंशिका सम्भावनाओं के क्षेत्र में और नहीं भौतिक प्रवृत्तियों के क्षेत्र में हीन और उच्च प्रजातियों की संकल्पना को उचित माना जा सकता है।"

जिन मानव वैज्ञानिकों और जीव वैज्ञानिकों ने इस घोषणा पत्र के जीव वैज्ञानिक तथ्यों को स्वीकार किया उन्होंने इसको केवल वैज्ञानिकों के रूप में ही नहीं वरन् मनुष्यों के रूप में भी किया। मास्को बैठक में भाग लेने वालों ने अपने कार्य के इस मानवीय पक्ष पर जोर देने की इच्छा से घोषणा-पत्र को इन शब्दों से समाप्त किया, " ऊपर दिए गए जीव वैज्ञानिक तथ्य प्रजाति वाद के पूर्णतया विरोधी हैं। प्रजातिय सिद्धान्तों का किसी भी प्रकार से वैज्ञानिक आधार नहीं माना जा सकता और मानव वैज्ञानिकों को यह प्रयत्न करना चाहिए कि उनके शोधों के परिणामों को ऐसे पूर्वाग्रह रूप में प्रयुक्त किया जाए कि उनसे अवैज्ञानिक लक्ष्यों की पूर्ति हो सके।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचिवालय समाचार

महा निदेशक का कार्यालय

एशियाई प्रादेशिक केन्द्रों और संस्थाओं का सर्वेक्षण आयोग

यूनैस्को के एशियाई राष्ट्रीय आयोगों के चौथे प्रादेशिक सम्मेलन में स्वीकृत एक संस्ताव के अनुसार महानिदेशक ने यह निश्चय किया है कि निम्नलिखित संस्थाओं केन्द्रों का निरक्षण किया जाएगा : एशिया में शिक्षा का प्रादेशिक कार्यालय, बेंगकाक, शिक्षा आयोजना और प्रशासन का एशियाई संस्थान, नई दिल्ली शिक्षक शिक्षा जानकारों के प्रशिक्षण का एशियाई संस्थान, केजोन सिटी, स्कूल भवन निर्माण शोध का एशियाई प्रादेशिक संस्थान, बांडुंग, दक्षिण एशिया में सामाजिक और आर्थिक विकास का शोध केन्द्र, नई दिल्ली। पठन सामग्री का प्रादेशिक केन्द्र, कराची। दक्षिण एशिया विज्ञान सहयोग कार्यालय, नई दिल्ली और विज्ञान तथा औद्योगिकी का दक्षिण पूर्व एशिया प्रादेशिक केन्द्र, जकर्ता।

इस उद्देश्य को दृष्टि में रखते हुए महानिदेशक ने एशियाई सदस्य देशों और यूनैस्को के विभागों के निदेशक तथा सहायक महानिदेशकों से कहा है कि उन केन्द्रों के कार्य करने के सम्बन्ध में रिपोर्ट दें।

इसके साथ ही उन्होंने उप महानिदेशक और शिक्षा के सहायक महानिदेशकों का एक आयोग बनाया है जो इन केन्द्रों की कार्यवाहियों का उस स्थान पर ही निरीक्षण करेगा और क्या कदम उठाने चाहिएँ, इस सम्बन्ध में निश्चित सुझाव प्रस्तुत करेगा।

यह आयोग २८ जुलाई से १३ अगस्त तक एशिया का दौरा करेगा। इसका प्रमुख कार्य कार्यक्रमों और काम के तरीकों का परीक्षण केन्द्रों और संस्थाओं के बजट और खर्चे और अनेकों कार्यवाहियों के खर्चे, उनकी प्रशासनिक संरचना और कानूनी स्थिति तथा यूनैस्को सचिवालय के साथ उनके सम्बन्ध का परीक्षण करना होगा। अपने उद्देश्यों के अनुसार वे उनके कारगर होने का भी मूल्यांकन करेंगे। इसके साथ ही सदस्य देशों के लिए वे जो सेवाएँ करते हैं और उनके कार्यचलन खर्चे आदि। आयोग महानिदेशक को उन उपायों के सम्बन्ध में सुझाव देगा जिनको वह इस मूल्यांकन के आधार पर उचित समझेगा।

पैक्स रोमाना के प्रति महानिदेशक का संदेश

महानिदेशक ने पैक्स रोमाना के प्रति निम्नलिखित संदेश भेजा :

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष मनाने का निश्चय करके पैक्स रोमाना ने अन्तर्राष्ट्रीय असहयोग और संयुक्त राष्ट्र सरणी की संस्थाओं के प्रति अपने झुकाव का और भी प्रमाण दिया है क्योंकि संयुक्त राष्ट्र सरणी ने १९६५ को इसी रूप में मनाने का निश्चय किया है।

पिछले दो दशकों की जिन महत्वपूर्ण घटनाओं के कारण अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वास्तविक बन सका है, उन्होंने हर दिन इस बात को अधिक स्पष्ट कर दिया है कि ऐसा सहयोग राष्ट्रों के बीच एक आवश्यकता है और प्रत्येक व्यक्ति की भाव-चेतना की मागों के अनुकूल है। इन घटनाओं में मानवीय भ्रातृत्व के आदर्श को सार्थकता प्रदान की है और उन्होंने इस आदर्श की सेवा में उन संसाधनों, तकनीकों और संगठन को प्रस्तुत कर दिया है जो इसके लिए आदर्श थे।

इसलिए यह उपयुक्त कार्य है और इसको परिश्रम और हार्दिक विश्वास के साथ किया जाना चाहिए, जैसे कि समस्त मानवीय प्रयत्नों को। अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष को मनाने में मुझे आशा है कि पैक्स रोमाना अपनी लम्बी परम्पराओं और अपने तरुण सदस्यों की उदारता का लाभ सबको देता रहेगा।

प्राकृतिक विज्ञान

अफ्रीका के लिए विज्ञान और औद्योगिक का प्रादेशिक केन्द्र :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महासम्मेलन द्वारा स्वीकृत २.११३ संस्ताव के अनुसार और कीनिया सरकार के साथ किए गए एक समझौते के अनुसार नेरोबी में अफ्रीका के लिए विज्ञान और औद्योगिकी का प्रादेशिक केन्द्र स्थापित किया गया है।

यह केन्द्र इन देशों की सेवा में होगा

(अ) काहिरा केन्द्र द्वारा सेवाएँ न प्राप्त करने वाले अफ्रीकी सदस्य देश, बुरूंदी, कैमरून, केन्द्रीय अफ्रीका गणराज्य, छड, कांगो (ब्राजाविल), कांगो (लियोपोल्डविल), दाहोमी, इथियोपिया, गैबन, घाना, गिनी, आइवरी कोस्ट, कीनिया, लाइबीरिया, मैडागास्कर, मलावी, माली, मॉरीतानिया, नाइजर, नाइजीरिया, रूवान्दा, सेनेगल, सियरा लियोन, सोमालिया, तान्जानिया, टोगो, यूगाण्डा, अपर वोल्टा, जेम्बिया।

(ब) सहायक सदस्य मोरीशस

(स) अफ्रीकी प्रादेशिक कार्रवाइयों में भाग लेने के लिए महासम्मेलन द्वारा अधिकार-प्राप्त दूसरे देश (संस्ताव १३ सी। ५-६१) : गेम्बिया (फरवरी १९६५ से स्वतन्त्र) बासूतोलैण्ड, बेकुवानालैण्ड, स्वाजीलैण्ड।

इसके कार्य इस प्रकार होंगे : सामान्यत: केन्द्र पर अफ्रीका में विज्ञान और औद्योगिकी के क्षेत्र में प्रादेशिक कार्रवाइयों को कार्य-चालन और अधीक्षण का दायित्व होगा। भले ही इन कार्रवाहियों को आर्थिक सहायता, सामान्य बजट, तकनीकी सहायता के बिस्तारित कार्यक्रम या विशेष निधि कहीं से भी मिले।

(ब) विशेष कार्यों के बीच केन्द्र पर प्रादेशिक स्तर पर अफ्रीका में वैज्ञानिक शोध और प्रशिक्षण के विकास की लागोस आयोजना को कार्यान्वित करने का दायित्व भी होगा।

(स) राष्ट्रीय विज्ञान नीतियों और वैज्ञानिक तथा तकनीकी कर्मी वर्ग से सम्बन्धित अध्ययनों और सूचना के विनिमयों तथा सर्वेक्षणों में भाग लेना। जहाँ तक वे प्रादेशिक या उप-प्रादेशिक शोध-संस्थानों के निर्माण या विस्तारण को प्रभावित करते हैं।

(द) प्रधान कार्यालय की प्रार्थना पर यह उपर्युक्त देशों में विज्ञान और औद्योगिकी के विकास से सम्बन्धित सभी कार्य पूरे करेगा।

मिस्टर अलेन गिल (फ्रांस) इस केन्द्र के निदेशक होंगे। उन्होंने अपना कार्य १२ अप्रैल १९६५ से प्रारम्भ किया।

विज्ञान शिक्षण

मूल विज्ञानों के शिक्षण कार्यक्रम के अंश रूप में यूनैस्को विकसित देशों में वैज्ञानिकों, शोधकर्त्ताओं और शिक्षकों के लिए विश्वविद्यालय वाद गोष्ठियों के आयोजन में भाग लेती है। १९६५-१९६६ के शिक्षा वर्ष में अभी यह कार्यगोष्ठिया होने का निश्चय किया गया है :

रासायनिक इंजीनियरी और भौतिक रसायन—तकनीकी विश्वविद्यालय काल्ड्स रूहे, जर्मन संघ गणराज्य, ६ सितम्बर १९६५ से १५ जुलाई १९६६ तक। यह वाद गोष्ठी जर्मन में होगी (भाग लेने वालों के लिए ३ मई से ४ सितम्बर १९६५ तक जर्मन भाषा का एश शिक्षाक्रम चलाया जाएगा)।

भूमि विज्ञान और पादप जीवविज्ञान—सेविल और ग्रेनेडा स्पेन के विश्वविद्यालयों ने २१ अक्टूबर १९६५ से २१ मई १९६६ तक यह वाद गोष्ठी स्पेनी भाषा में होगी (नाम लिखाने के लिए प्रार्थना-पत्र १५ जून के पहले प्रोफेसर एमीलियो फर्नान्देस दालियानो, इंस्टीट्यूट ऑफ बौटैनिको, ए० जे० कवनील, प्लाजा डी मोरिलो, २ मैड्रिड १४) भौतिकी : उपसल्ला विश्वविद्यालय स्वीडन में १ सितम्बर १९६५ से १ जुलाई १९६६ तक। शोध प्रायोजनाओं में भाग लेना। यह वाद गोष्ठी उपसल्ला भौतिकी संस्थान की कार्यवाहियों से सम्बन्धित अध्ययनों में लगे हुए विश्वविद्यालय शोधकर्त्ताओं के लिए है।

जीव विज्ञान में आधुनिक समस्याएँ—प्राग विश्वविद्यालय चेकोस्लोवाकियां में अक्टूबर ६५ से १५ अक्टूबर ६६ तक। यह गोष्ठी अंग्रेजी में होगी। इसके लिए प्रार्थना पत्र १५ जून के पहले अकेडमेशियन ईवान माले अणु जीव विज्ञान संस्थान बुडेजोविका, १०८३, प्राग-४, को भेजी जानी चाहिए।)

इन वाद-गोष्ठियों में एम० एस-सी० के बराबर डिग्री रखने वाले वैज्ञानिक भाग ले सकते हैं। इसमें जो लोग भाग लेंगे, उन्हें यात्रा-व्यय दिया जाएगा। परन्तु यह अनुदान इन वाद गोष्ठियों का आयोजन करने वाले राष्ट्रीय अधिकारियों द्वारा दिए जाएँगे, यूनैस्को द्वारा नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक कार्यवाहियाँ

"लेखन कला"

यूनैस्को की एक यात्रा- प्रदर्शनी लेखन कला नाम की है। वह अब सदस्य देशों के बीच यात्रा कर रही है। इसमें लेखन के विभिन्न स्वरूपों और इतिहास का उदाहरण प्रस्तुत करने वाले ५० चित्र हैं। लेखन, संचारण और अभिव्यक्ति का वह साधन है जिसका विकास मानवीय सभ्यता से जुड़ा हुआ है।

पहले चित्रों में दिखलाया गया है कि लेखन को प्रतिदिन के जीवन में क्या भाग होता है। प्रदर्शनी के केन्द्रीय अंश में इन प्रमुख शीर्षकों के अन्तर्गत लेखन का विकास प्रस्तुत किया गया है: सुमेरिया में लेखन का आविष्कार, कूनीफार्म चिन्ह, मिस्री लिपि, हीब्रू, अरबी, भारत तिब्बत तुर्किस्तान इंडोचाइना और इंडोनेशिया की लिपियाँ, चीनी अक्षर, चीन और जापान में लेखन कला। मैक्सिको की सभ्यताओं की चित्रलिपियाँ, वर्णमाला का प्रादुर्भाव और विसरण, फोनीशी, यूनानी, एत्रुसकन, रोमन, जर्मन और स्लाव वर्णमालाएँ। मध्ययुग की पाण्डुलिपियाँ: कागज, ब्लाक की छपाई और सचल टाइप। टूटी हुई लिपियाँ, गोल लिपियाँ और संस्थाएँ तथा शून्य का आविष्कार। अन्तिम खण्ड में लेखन के उपयोगों को व्यक्त किया गया है: लिखना और पढ़ना सीखना आधुनिक छपाई के तकनीक, समाचार-पत्र और विज्ञापन-पत्र लेखन और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का मानकीकरण, कला के रूप में लेखन और ललित कलाओं में लेखन, संचारन के विकास में प्रमुख सोपान।

प्रदर्शनी का सूची-पत्र जिसमें विभिन्न चित्रखण्डों से चुने हुए उदाहरणों की प्रति कृतियाँ प्रस्तुत की गई हैं, यूनैस्को द्वारा अभी हाल में अंग्रेजी और फ्रांसीसी में प्रकाशित हुई है। भूमिका एम्स्टर्डम में स्टीडलिक संग्रहालय के भूतपूर्वक निदेशक मिस्टर डबलू जे सेंडबर्क जिन्होंने इस प्रदर्शनी की योजना बनाई और इसके प्रस्तुतीकरण समायोजन किया। यह महत्वपूर्ण प्रश्न उठाते हैं: "जब डिक्टाफोन कलम से होड़ लेने लगा है, जब अंकन पुस्तकालय सामान्य पुस्तकालयों की अपेक्षा अधिक बढ़ते जा रहे हैं, जब समाचार-पत्रों का स्थान रेडियो और टैलीविजन लेते जा रहे हैं तब क्या लेखन की इस प्रदर्शनी का परम्परा को जानने के अतिरिक्त और कोई प्रयोजन नहीं है।" मिस्टर सेंडबर्ग विश्वास के साथ जवाब देते हैं कि निरक्षरता के उन्मूलन के संदर्भ में मनुष्य को उसी प्रारम्भिक स्थिति से निकालने में सहायता करने में लेखन का स्थायी महत्व हो सकता है।

प्रोफेसर इतीम्बल भूमिका में लेखन के दोहरे महत्व पर जोर देते हैं। लेखन संचारण का साधन भी है और एक कला रूप भी और कहते हैं कि लिपियों के विभिन्न प्रकार और सौन्दर्य के बीच प्रारम्भ से ही या यों कहें कि जन्म से ही सम्बन्ध है। वे आगे कहते हैं, लेखन में सौन्दर्य का प्रयत्न किसी भी एक जाति या एक राष्ट्र तक सीमित नहीं है।

इस सूची-पत्र में एक प्रख्यात भाषा वैज्ञानिक प्रोफेसर मार्सल पोहेन द्वारा लिखित लेखन के इतिहास की रूपरेखा दी गई है। थोड़े से पृष्ठों में प्रोफेसर पोहेन वर्तमान समय तक लेखन के उद्भव, प्रगति और प्रमुख विकासों का संक्षिप्त परन्तु विस्तृत सर्वेक्षण प्रस्तुत करते हैं। वर्तमान समय में टेलीफोन, सिनेमा, रेडियो टेलीविजन और मैग्लेटोफोन लेखों समाचार पत्रों, पाठ्य पुस्तकों, और मनोरंजन की पुस्तकों के क्षेत्र में आ रहे हैं।

डब्लू से सैंडबर्ग द्वारा उठाए गए प्रश्न का प्रोफेसर पोहेन उत्तर देते हैं: "लेखन की स्थिति कुछ ऐसे उपयोगों के कारण जो पुस्तकों के पहले इसके होते थे, अब भी सर्वोपरी रहेगी। वे है अधिकार देने के मामले। निश्चित किए हुए संचारण, समझौते औपचारिक स्मरण-पत्र या निर्णय और धार्मिक पुस्तकें।

कहां तक भाषा की यांत्रिक ध्वन्यंकन का प्रभव इन उपयोगों पर पढ़ेगा और कहाँ तक लेखन, हस्त लेखन या टाइप का लेखन विभिन्न ध्वन्यकनों की तैयारी के लिए प्रयुक्त होता रहेगा ये ऐसे प्रश्न है जिनका उत्तर भविष्य ही देगा।

जन संचारण

विश्व में रेडियो और टेलिवीजन

रेडियो प्रसारण सभी क्षेत्रों में विशेष रूप से विकासशील देशों में निरन्तर विस्तार हो रहे हैं। आज विश्व भर में रेडियो सैटों की संख्या (चार सौ मिलियन के ऊपर) दस वर्ष पहले से ६० प्रतिशत अधिक हैं। आजकल प्रति सौ व्यक्तियों पर औसतन तेरह रेडियो सैट हैं।

इसके साथ ही सुविधाओं के वितरण में निश्चित अन्तर दिखलाई देते हैं। अफ्रीका एशिया सप्रति सौ व्यक्तियों पर औसतन दो रेडियों सैट ही हैं। यूनैस्को द्वारा कहा गया था कि कम से कम प्रति सौ व्यक्तियों पर पांच रेडियो सैट जरूरी होने चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके विपरीत ओशनिया और रूस में प्रति सौ व्यक्ति पर २१ योरोप में २३ और उत्तरी अमेरिका में ७२ रेडियो सैट हैं।

विश्व भर में १२६०० ट्रान्समीटरों का प्रयोग होता है। एक दशक पहले की अपेक्षा यह संख्या दूनी है। इनमें से २० प्रतिशत योरोप में है। अर्थात् विश्व भर में ट्रान्समीटरों में से केवल २७ प्रतिशत अफ्रीका एशिया और लेटिन अमेरिका में है। और जो हैं वे भी कम शक्ति के हैं।

फिर भी टेलिवीजन की चुनौति के बावजूद विकासशील देशों में सूचना सुविधाओं के विस्तारण के लिए रेडियो को अग्रता दी जा रही हैं और यह स्पष्ट है कि रेडियो आयाम और मितव्ययिता के कारण अपना अकेला ही स्थान रखता है।

टेलिवीजन सैटों की संख्या प्रति सौ व्यक्तियों में अफ्रीका में ·०५ और उत्तरी अमेरिका में २४·५ है। १९६३ में विश्व भर में १३० मिलियन टेलिवीजन सैट थे और टेलिवीजन के ट्रान्समिटरों की संख्या २३८० थी। इसमें से ११६० योरोप में थे। १९५० में योरोज में केकल १५ ट्रान्समिटर थे। (विश्व रेडियो और टेलिविजन यूनैस्को १९६५ से)।

जन सचारण के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण

हाल के वर्षों में पत्रकार के कार्य और दायित्व पर्याप्त बढ़ गए हैं। उसका कारण है विज्ञान और औद्योगिकी की प्रगति, जन संचारण साधनों का विस्तार, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन और जनता की रूचियों का विस्तारण।

आधुनिक पत्रकार के लिए आवश्यक है कि वह बुद्धिमानी से अनेकों विषयों के सम्बन्ध में रिपोर्ट प्रस्तुत कर सके, समकालीन घटनाओं को समझ सके और उन्हें ठीक-ठीक प्रस्तुत कर सके। उसका काम केवल सूचना देना नहीं है बल्कि अपने पाठकों अथवा श्रोताओं को निर्देश देना भी है।

विकासशील देशों में जनसंख्या के आधुनिकीकरण के राष्ट्रीय प्रयत्नों में भाग लेने और प्रगति में बाधक होने वाली परम्पराओं और रीतियों में परिवर्तन करने का महत्वपूर्ण कार्य पत्रकार कर सकता है और उसे करना भी चाहिए।

इस प्रकार व्यवसायिक पत्रकार को यूनीवर्सिटी तक ही विशेष शिक्षा और जन-संचारण के सिद्धान्तों व सामाजिक मूल्य का विशिष्ट ज्ञान होना चाहिए। व्यवहारिक पक्ष में उसको पत्रकारिता के मूल तकनीकों का अनुभव और एक या दूसरे प्रकार के जन-संचार साधनों के प्रयोग का विशिष्ट ज्ञान होना चाहिए।

एक पुस्तिक जन संचारण के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण शीर्षक से (जनसंचारण सम्बन्धी रिपोर्ट और लेख पत्रों की माला में अंक ४५) अभी हाल में यूनैस्को के द्वारा प्रकाशित हुई है। इसमें विभिन्न अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रमों के सम्बन्ध में सूचना दी गई है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्रीय अधिकारियों अथवा अन्तर्राष्ट्रीय व्यावसायिक संगठनों दारा यूनैस्को की सहायता से आयोजित किये जाते हैं।

Published by the Director UNESCO South Asia Science Co-operation Office, N-1, Ring Road, New Delhi and printed by Rakesh Press, Delhi. (Unesco Vritta Patrika, Vol. 11, No. 5, May, 1965.

Reproduction authorised : Credit line should read UNESCO.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

UNESCO

ऐन-१, रिंग रोड
नई देहली

प्रो० वादीन के सोवाकीन
मि० वासीली वी० वाखुश्व
मि० जी० ए० मोजेव
इटली) मि० जोर्जियो सिर.ग्रोलो

महानिदेशक की मौखिक रिपोर्ट

महानिदेशक ने कार्यकारी मण्डल के सामने १ जनवरी १९६५ से मण्डल के सत्तरवें अधिवेशन प्रारम्भ तक की अवधि की एक मौखिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने प्रारम्भ में यह कहा कि उनकी रिपोर्ट यूनैस्को की कार्रवाइयों का पूरा और वस्तुपरक

मासिक बुलेटिन जून, १९६५ अंक ११, संख्या ६

पुस्तकालय गुरुकुल काँगड़ी
६।८।६५

विषय सूची

कार्यकारी मण्डल का सत्तरवां अधिवेशन २
विकासशील देशों में माध्यमिक शिक्षा (डब्ल्यू० जे० एलिस) ८
पत्रिका प्रेस और शिक्षा (टॉर जसदेल) ११
अंतरिक्ष में मेरे पहले कदम (एलेक्सी लिओनोव) १४
सचिवालय समाचार १८
महानिदेशक का कार्यालय
प्राकृतिक विज्ञान
भूकम्प विज्ञान और भूकम्प इंजीनियरी सलाहकार समिति की पहली बैठक
अल-सत्वादोर को भूकम्प वैज्ञानिक मिशन
ज्वार का पूर्वानुमान
सांस्कृतिक कार्रवाइयां
पुरा-संग्रह पुस्तकालय और पुस्तकाध्यक्ष स्कूलों की निर्देशिका
जन संचारण
पुस्तकों का प्रोत्साहन
सूचना का मुख्य प्रभाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके विपरीत ग्रोशनिया ग्रौर रूस में प्रति सौ व्यक्ति पर २१ योरोप में २३ ग्रौर उत्तरी ग्रमेरिका में ७२ रेडियो सैट हैं।

विश्व भर में १२६०० ट्रान्समीटरों का प्रयोग होता है। एक दशक पहले की ग्रपेक्षा यह संख्या दूनी है। इनमें से २० प्रतिशत योरोप में है। ग्रर्थात् विश्व भर में ट्रान्समीटरों में से

ग्राधुनिक पत्रकार के लिए ग्रावश्यक ग्रनेकों विषयों के सम्बन्ध में रिपोर्ट प्रस्तुत घटनाग्रों को समझ सके ग्रौर उन्हें ठीक-ठी उसका काम केवल सूचना देना नहीं है बलि श्रोताग्रों को निर्देश देना भी है।

कार्यकारी मण्डल का सत्तरवां अधिवेशन

यूनैस्को कार्यकारी मण्डल का सत्तरवां ग्रधिवेशन यूनैस्को भवन, पेरिस में २६ ग्रप्रैल से १६ मई ६५ तक हुग्रा। इसके ग्रध्यक्ष श्री मोहम्मद ग्रलफ़ासी (मोरक्को) थे ग्रौर इसमें चार उपाध्यक्ष थे—डा० ग्रतीलियो बेलग्रोरो मैनी (ग्रर्जन्तीना) मिस्टर एथनैंस जोजा (रूमानिया), डेम मेरी गिलन स्मीटन (इंगलैंड) ग्रौर प्रोफ़ेसर बेदरेत्तीन तसेल (तुर्किस्तान)। महा-सम्मेलन के ग्रध्यक्ष प्रो० नोरेयर एम० सिसाकियाँ इस ग्रधिवेशन में उपस्थित थे।

मण्डल के सदस्य ग्रौर उनके सहायक जिन्होंने इस ग्रधिवेशन में भाग लिया, उनकी सूची नीचे दी जाती है :

सदस्य	सहायक
मिस्टर जियादा ग्ररबाब (सूडान)	श्री शफ़ीक शौकी
डा० मोशे ग्रविदोर (इजराइल)	श्री डैविड एरियल
मिस्टर ग्रामादू हम्पाते बा (माली)	
मि० बर्नार्ड बार्बी (स्विट्ज़रलैण्ड)	मि० जॉर्जे शावाज़
ग्रादरणीय विलियम बैंटन (संयुक्त राज्य ग्रमरीका)	डॉ० रॉबर्ट् एच० बी० वेड मि० कोल्टर डी० हाइलर मि० कार्टर एच० हिल्स
मि० जूलियन केन (फ्रांस)	मि० ग्रोलिवियर द सेव मि० जूल्स ब्यूरो
प्रो० पॉलो ईद बेरेदो कारनीदो (ब्राजील)	मि० मालियो वीरा-ड-मेलो
मि० सेमुग्रल जे कुकी (नाइजीरिया)	मि० एफ० ई० ग्रर्चीबोंग मि० ग्रो० ग्रो० ग्रादेसोला
मि० बर्नर्ड बी० दादेव (ग्राइवरी कोस्ट)	
डा० ग्रटीरियो डेलग्रोरो मैनी (ग्रर्जेन्टीना)	डा० रिकार्डो पिलादो सलास डा० जोजे एच लेडेजमा मि० जेबियर फर्नान्दे
डा० हिल्डिग ईक (स्वीडेन)	मि० गोरां हैसेलमार्क
मि० मोहम्मद ग्रलफ़ासी (मोराक्को)	
मि० विलियम ए० एतीकी मुबूमोग्रा (कैमरुन)	मि० गैसपर्ड तोवो ग्रतंगाना
मि० जुवेनाल हरनान्दे (चिली)	मि० जॉर्ज एडवर्डस्
डा० मागदा जोबोरु (हंगरी)	मि० ग्रान्द्रे जादोर
मि० एथेनेज़ जोजा (रूमानिया)	प्रो० वैलेंटीन लिपाती
मि० प्रेम एन० कृपाल (भारत)	बी० एन० मल्हन
डा० हान्स जोचित जॉन मरकाट (जर्मन संघ गणराज्य)	डा० एन्ट एण्ड सीमन डा० रेनेट एटलिग
मि० डेनियल फ़िनांगा (जंजानिया संयुक्त गणराज्य)	मि० मैथ्यू जी० केयूजा
डा० सर्वत ग्रोकासा (संयुक्त ग्ररब गणराज्य)	डा० सैला एल० दीन टूयूफ़िफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रो० अलक्सांद्र पैट्रोव (सोवियत रूस) — प्रो० वादीन के सोवाकीन
मि० वासीली बी० वाखुव्व
मि० जी० ए० मोजेव

मि० ज्ञान फ्रैंको (इटली) — मि० जोर्जियो सिराग्रोलो
मिसेज़ मारिया लुइसा पारोनेतो वेलियर

मि० एस० एम० शरीफ (पाकिस्तान) — मि० सैयद वलीउल्लाह

डेम मेरी गिलन स्मीटन (इंगलैण्ड) — मि० एंबलर आर० टामस
मि० एल० सी० जे० मार्टिन
मिस शर्ली गिटन
मि० एवजी० हरेल

मि० तातसुओं सुयामा (जापान) — मि० मसामी ओटा
मि० होरोशी कीडा

मि० जहांगीर तफ़ाजोली (ईरान) — मि० फैरीदून होवेदा
मि० हसन सफ़री

प्रो० ओतीलिया ए० द० तजीरा

प्रो० वेदरैतीन तंसेल (टर्की)

मि० अलबर्टो वैगनेर डीरेना (पेरू) — मि० सीज़ार मीरो
मि० फैलिक्स अलवारेज ब्रन

डा० सिल्वियो जवाला (मैक्सिको) — डा० मैनुअल अलकाला
मि० रोडोल्फो नावारेथ

यूनैस्को कार्यकारी मण्डल में इन लोगों का औपचारिक ढंग से स्वागत किया गया —

११मई को सोवियत अंतरिक्ष यात्री मिसेज़ वैलैंतीना तेरेश्कोवा निकोलेवा और कर्नल निकोलेव ।

१२ मई को समुद्र पार विकास मन्त्री (इंगलैण्ड) मिसेज़ बार्बरा कासी ।

महानिदेशक ने कार्यकारी मण्डल के सामने १९६४ के बीच यूनैस्को की कार्यवाईयों के सम्बन्ध में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसके साथ ही उन्होंने पहली जनवरी १९६५ से लेकर मण्डल के सत्तरवें अधिवेशन के प्रारम्भ होने तक की अवधि की एक मौखिक रिपोर्ट भी प्रस्तुत की ।

महानिदेशक की मौखिक रिपोर्ट

महानिदेशक ने कार्यकारी मण्डल के सामने १ जनवरी १९६५ से मण्डल के सत्तरवें अधिवेशन प्रारम्भ तक की अवधि की एक मौखिक रिपोर्ट प्रस्तुत की । उन्होंने प्रारम्भ में यह कहा कि उनकी रिपोर्ट यूनैस्को की कार्रवाइयों का पूरा और वस्तुपरक लेखा नहीं होगा बल्कि उनके अपने दृष्टिकोण से यूनैस्को का एक सम्पूर्ण चित्र होगा । महानिदेशक ने यूनैस्को की सामान्य नीति, कार्यक्रम के कार्यचालन में विशेष महत्व के विभिन्न पक्षों और कुछ बजट तथा प्रशासन सम्बन्धी प्रश्नों का उल्लेख किया ।

यूनैस्को के कदम अब वास्तविकता पर हैं

माल्टा और पुर्तगाल के यूनैस्को में शामिल हो जाने और इण्डोनेशिया के यूनैस्को छोड़ने के निश्चय का उल्लेख करते हुए महानिदेशक ने अपनी रिपोर्ट के पहले अंश में सदस्य देशों में अपनी उपमहानिदेशक की और सहायक महानिदेशकों की मिशनों की चर्चा की । महानिदेशक ने इन देशों की यात्रा की थी : भारत, घाना, गिनी, माली, कनाडा, मोरक्को और चेकोस्लोवाकिया । इन यात्राओं में उनके सामने जो बात सबसे अधिक स्पष्ट हुई, वह यह थी कि यूनैस्को की जड़ें इन देशों में मजबूत होती जा रही हैं, उसी तरह जैसे एक पोधा लगाये जाने पर मिट्टी से जड़ पकड़ लेता है । विकासशील देशों के लिए यूनैस्को निकट सुहृद बन गई है, क्योंकि वह स्पष्टतया व्यावहारिक कार्य कर रही है और उन्होंने यह भी कहा कि विकसित देशों में यूनैस्को से यह समझा जाता है कि उसको अपने उद्देश्य का पूरा ज्ञान है और उसका मूल्य और उसकी प्रभावशीलता सिद्ध हो चुकी है ।

जैसे-जैसे यूनैस्को की कार्य-चालन कार्यवाहियाँ विकसित होती जाती हैं, परिणामों का निरीक्षण और मूल्यांकन और भी अधिक आवश्यक होता जाता है इसी से यह निश्चय किया गया था कि एशियाई प्रादेशिक केन्द्रों का एक नियमित सर्वेक्षण करवाया जाए । विश्व के दूसरे प्रदेशों में भी इसी प्रकार के सर्वेक्षण किये जाएँगे ।

इन यात्राओं के बीच महानिदेशक को कार्यक्रम की वास्तविक संकलपना पर विचार करने का अवसर मिला । यूनैस्को की सच्ची संकलपना यह है कि उसे सदस्य देशों की कार्यवाहियों के लिए एक विश्व व्यापी सधार रूप में होना चाहिए । आवश्यकता इस बात की है कि महासम्मेलन में स्वीकृत अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम को ११९ राष्ट्रीय कार्यक्रमों में अंतरित किया जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तभी यह संस्था वह हो सकती है। जो इसे होना चाहिए, अर्थात राज्यों के बीच सहयोग की एक सरणी। यही वह दृष्टिकोण है जिससे भावी विश्व व्यापी कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए।

इसके पश्चात् महानिदेशक ने मण्डल के सामने यूनैस्को और इन अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के बाच सहयोग की रूपरेखा प्रस्तुत की : तकनीकी सहायता के विस्तारित कार्यक्रम, विशेष निधि और पुनर्निर्माण तथा विकास का अन्तर्राष्ट्रीय बैंक।

कार्यक्रम का कार्यचालन

अपनी रिपोर्ट के दूसरे अंश का परिचय देते हुए महानिदेशक ने मण्डल के सदस्यों से यह कहा कि वे सचिवालय की कार्यवाहियों का पूरा लेखा प्रस्तुत नहीं करेंगे, वरन उनके ऊपर कुछ टिप्पणियाँ ही देंगे। उनके कथन का प्रमुख भाग शिक्षा से सम्बन्धित था।

शिक्षा

आज की दुनिया में तीन विस्फोटक तत्व हैं, जनसंख्या की वृद्धि व तीव्र गति—जिससे तकनीकी ज्ञान पुराना पड़ता जाता है और तकनीकी प्रगति होती है—और राजनैतिक उन्नयन इन तत्वों के कारण मानवता का सम्पूर्ण परिवर्तन हो रहा है और इसी से शिक्षा में भी सम्पूर्ण और आमूल परिवर्तन होना पड़ेगा। शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं का एक राजनैतिक पक्ष भी हो जाता है, क्योंकि यह राज्यों और उनके नागरिकों के जीवन को प्रभावित करती है। शिक्षा में इस परिस्थिति के चार प्रमुख पक्ष हैं जो यूनैस्को की कार्यवाहियों में प्रधान स्थान रखते हैं।

पहली समस्या साक्षरता शिक्षण की है। इस सम्बन्ध में महासम्मेलन द्वारा स्वीकृत प्रयोगात्मक विश्व कार्यक्रम की प्रशंसा इस बात पर बहुत हुई है कि उसमें साक्षरता और आर्थिक तथा सामाजिक विकास के निकट सम्बन्ध की वास्तविक स्वीकृति है और इस समस्या पर समझदारी का दृष्टिकोण अपनाया गया है। शिक्षा के विकास में अग्रताओं का प्रश्न सबसे गम्भीर कठिनाइयाँ प्रस्तुत करता है। नैतिक दृष्टिकोण से प्रारम्भिक शिक्षा को अग्रता देने के पक्ष में एक बड़े ही शक्तिशाली आन्दोलन के चिन्ह स्पष्ट हैं। बहुत से देशों की स्वतन्त्रता प्राप्ति के कारण यह सम्भव हो गया है कि उनके वास्तविक मानवता के मूल अधिकारों के रूप में शिक्षा के प्रति उत्साहपूर्वक अपनी आकांक्षाएं प्रकट करें। फिर भी आर्थिक विकास की दृष्टि से माध्यमिक शिक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए क्योंकि इसी स्तर पर मध्यवर्गीय कर्मीवर्ग के विकास को द्रुत करने और राजनैतिक स्वतन्त्रता के लिए एक वास्तविक आधार प्रस्तुत करने का प्रशिक्षण लिया जा सकता है। नैतिक और नागरिक आवश्यकताओं तथा आर्थिक और राजनैतिक आवश्यकताओं के बीच चुनाव करना बहुत असम्भव है क्योंकि अन्ततः दोनों को ही सन्तुष्ट करना है, राष्ट्रिकों की आवश्यकतायें पूर्ण करनी हैं और मध्य वर्ग को प्रशिक्षित भी करना है।

इस प्रश्न पर यूनैस्को को अपने विशेष स्तर पर काम करना है अर्थात् तकनीकी वस्तुपरकता के स्तर पर। उसे सदस्य देशों को शिक्षा के गुण में सुधार करने में सहायता करनी होगी। वास्तव में शिक्षा समाज की आवश्यकताओं के पर्याप्त अनुकूल नहीं है। यह तथ्य कुछ विचित्र बातों को उत्पन्न करता है। जैसे कि अनेक वे विद्यार्थी जो बिना अपनी शिक्षा पूरी किये ही छोड़ देते हैं उनको उपयोगी बनाने में आर्थिक पद्धति की असफलता। शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रमों को इस प्रकार सुधारा जाना चाहिए कि सामान्य माध्यमिक शिक्षा से तकनीकी माध्यमिक शिक्षा में जाया जा सकें। विकास के लिए शिक्षा के योगदान को प्रभावित करने वाली प्रमुख समस्याओं में यह एक हैं।

शिक्षा के विकास में आवश्यक तकनीकी क्रान्ति तीसरा पक्ष है। न केवल शिक्षा को जनसंख्या में वृद्धियों के साथ चलना चाहिए, वरन् स्कूलों को भी जीवन के अनुसार ही ढालना चाहिए। शिक्षा में प्रेषणीयता होना आवश्यक है। आज की शिक्षा में दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग शिक्षा के सहायकों के रूप में नहीं उनके मूल तत्वों के रूप में किया जाता है। लेकिन महानिदेशक ने कहा कि साक्षरता कार्यक्रमों और दृश्य-श्रव्य साधनों का विरोध करने से बढ़कर मानवता के प्रति और कोई अपराध नहीं हो सकता? "किसी को भी यह कहने का क्या अधिकार है कि कुछ लोगों को पढ़ना और लिखना नहीं सीखना चाहिए क्योंकि उनके पास एक रेडियो या टेलीविजन सैट है।

शिक्षा में अन्तिम व मुख्य समस्या जिस पर 'अवकाश और वयस्क शिक्षा सम्बन्धी प्राग सम्मेलन' में जोर दिया गया था, वयस्क शिक्षा के अन्तर्गत आने वाली कई शिक्षा सम्बन्धी कार्रवाइयाँ हैं। वर्तमान समय में 'निरन्तर शिक्षा' के नाम से शिक्षा को एक संश्लिष्ट रूप में स्वीकार किया जा रहा है जिसके अन्तर्गत स्कूली शिक्षा, वयस्क शिक्षा और अवकाश समय के उपयोग सभी आते हैं। मनुष्य के इस सम्पूर्ण प्रशिक्षण के अन्तर्गत दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग भी सम्मिलित होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यक्रम के दूसरे पक्ष

यूनैस्को के कार्यक्रम के दूसरे पक्षों के सम्बन्ध में महानिदेशक ने संक्षेप में चर्चा की। विज्ञान के सम्बन्ध में उन्होंने वैज्ञानिक और औद्योगिक शोध के विकास के लिए निःशस्त्रीकरण के दीर्घावधि प्रभावों पर विशेषज्ञों की बैठक, विज्ञान और औद्योगिकी के उपयोग के सम्बन्ध में आर्थिक और सामाजिक परिषद् की सलाहकार समिति के तीसरे अधिवेशन का और अन्तर्राष्ट्रीय जल वैज्ञानिक दशक की पहली बैठक का उल्लेख किया।

सांस्कृतिक कार्रवाइयों के सम्बन्ध में उन्होंने नूबिया के स्मारकों को बचाने के अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन की सफलता पर जोर दिया और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष में उसके कार्य के लिए जन संचारण विभाग की प्रशंसा की, और अन्त में मण्डल का ध्यान अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय विभाग द्वारा संग्रहीत अन्तर्राष्ट्रीय विनिमयों की यूनैस्को हस्त-पुस्तिका के चतुर्भाषीय प्रकाशन पर आकर्षित किया।

आर्थिक और प्रशासकीय प्रश्न

महानिदेशक ने अपनी मौखिक रिपोर्ट के अन्त में नियमित बजट, तकनीकी सहायता के विस्तारित कार्यक्रम और विशेष निधि से प्राप्त धन के उपयोग का लेखा प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मेरे लिए यह भावनाएँ सुखद हैं कि यूनैस्को अब जड़ पकड़ रही है और आगे बढ़ रही है और समकालीन विश्व में अपना स्थान ग्रहण कर रही है। मेरा यह भी विश्वास है कि यूनैस्को अपने को स्पष्ट कर रही है इसका एक प्रभाव है अपनी विशेष कार्रवाइयों से अलग यह एक शक्ति है, निस्सन्देह एक नैतिक शक्ति है और एक ऐसी शक्ति है जिसका कि महत्व है, और यही वह बात है जो मैं आप लोगों से कहना चाहता हूँ। निश्चय ही समस्याएँ हैं, विशेष रूप से प्रशासन तन्त्र के सम्बन्ध में और उस प्रशासन तन्त्र को नये कामों को समंजित करने के सम्बन्ध में। लेकिन यह समंजन हो रहा है और विश्वास कीजिए यह सरल नहीं है। इस सम्बन्ध में मैं आपके द्वारा सभी सदस्य देशों से यह अपील करूँगा कि मुझे यूनैस्को सचिवालय के लिए अच्छे-से-अच्छे व्यक्ति प्रदान करें क्योंकि मेरा यह विश्वास है कि सदस्य देश यूनैस्को को तीन प्रकार से योग दे सकते हैं न केवल आर्थिक योग, जिसके बारे में इतना कुछ कहा जाता है, बल्कि व्यक्तियों और विचारों के सम्बन्ध में भी योग। इस समय जब यूनैस्को अपनी उपयोगिता और अपनी प्रभावशीलता सिद्ध कर चुकी हैं, तब मुझे लगता है कि व्यक्तियों और विचारों के रूप में योगदान यूनैस्को के लिए अधिक आवश्यक है क्योंकि उसे प्रेरणा, बुद्धि और प्रतिभा की आवश्यकता है।

कार्यकारी मण्डल के निर्णय

यूनैस्को की सामान्य नीति और कार्यक्रम के कार्यचालन के सम्बन्ध में कार्य सूची के प्रश्नों पर कार्यकारी मण्डल द्वारा किये गए महत्वपूर्ण निर्णयों का सार दिया जा रहा है।

सदस्य देशों से सम्बन्ध

कार्यकारी मण्डल ने इण्डोनेशिया सरकार के यूनैस्को छोड़ने के निर्णय पर खेद प्रकट किया और यह आशा प्रकट की कि जितनी जल्दी हो सकेगा इण्डोनीसिया यूनैस्को के कार्यों में सक्रिय सहयोग देना प्रारम्भ कर देगा। मण्डल ने महानिदेशक को दक्षिण पूर्व एशिया में विज्ञान और औद्योगिकी के प्रादेशिक केन्द्र और स्कूल भवन निर्माण शोध संस्थान के सम्बन्व में की गई कार्यवाहियों के बारे में अगले अधिवेशन में रिपोर्ट देने के लिए कहा।

महानिदेशक ने पुर्तगाल के यूनैस्को के सदस्य बन जाने के परिणामों का परीक्षण किया। औपनिवेशिक देशों और राष्ट्रिकों को स्वतन्त्रता देने के सम्बन्ध में संयुक्त राष्ट्र महासभा की घोषणा का स्मरण करते हुए और जन-शिक्षा सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के विषय में महासम्मेलन द्वारा तेरहवें अधिवेशन में स्वीकृत संस्ताव की भावना का स्मरण करते हुए मण्डल ने महानिदेशक को पुर्तगाल सरकार को इस बात का अधिकार देने के लिए आमन्त्रित किया कि यूनैस्को के सामान्य लक्ष्यों और उद्देश्यों के दृष्टिकोण से पुर्तगाली प्रशासन के अधीन अफ्रीकी उपनिवेशों में शिक्षा की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करें। मण्डल ने उनसे यह भी प्रार्थना की कि इस अध्ययन के परिणाम प्राप्त होने और मण्डल द्वारा उनके परीक्षण तक महासम्मेलन या कार्यकारी मण्डल के निर्णयों के अनुसार पुर्तगाल को कोई भी आमन्त्रण न दिए जाएँ।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से सहयोग

यूनैस्को के प्रति विशेष रुचि रखने वाले संयुक्त राष्ट्र और उसकी विशिष्ट अधिकरणों के अभी हाल के निर्णयों पर कार्यकारी मण्डल ने ध्यान दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मण्डल ने दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की वर्णभेद नीतियों के सम्बन्ध में विशेष समिति द्वारा यूनैस्को से मांगी गई रिपोर्ट तैयार करने का महानिदेशक को अधिकार दिया।

औद्योगिक विकास के लिए एक विशिष्ट अभिकरण की प्रस्तावित स्थापना का परीक्षण करने के बाद मण्डल ने महानिदेशक को संयुक्त राष्ट्र महासचिव को यह सूचना देने के लिए कहा कि यूनैस्को का यह विचार है कि यदि औद्योगिक विकास के लिए एक नये अधिकरण की स्थापना होनी है तो उसके आधारभूत सिद्धान्त इस प्रकार होने चाहिएँ जिससे उन क्षेत्रों में द्वित्वीकरण न हो जिनके सम्बन्ध में संयुक्त राष्ट्र सरणी के यूनैस्को और दूसरे संगठन कार्य करते हैं और यह नया अधिकरण इन अभिकरणों के निकट सहयोग से अपना कार्य करे।

विशेष निधि के सहयोग के सम्बन्ध में मण्डल ने निधि के प्रबन्ध निर्देशक के कथन पर ध्यान दिया जिसमें यह कहा गया था कि साक्षरता शिक्षण की प्रयोगात्मक प्रायोजनाओं और प्राकृतिक संसाधनों के विकास सम्बन्धी प्रायोजनाओं को सहायता देने के लिए विशेष निधि द्वारा विचार किया जाएगा।

मण्डल ने यह निश्चय किया कि इन अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों को ब श्रेणी (सूचना और परामर्श सम्बन्ध) में ले लिया जाए :

वैज्ञानिक कार्यकर्त्ताओं का विश्व संघ,

तरुण व्यक्तियों के लिए पुस्तकों का अन्तर्राष्ट्रीय मण्डल।

सामान्य नीति

महासम्मेलन द्वारा स्वीकृत संस्ताव के अनुसार कार्यकारी मण्डल ने अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक सहयोग के सिद्धान्तों पर गम्भीर घोषणा पत्र का प्रारम्भिक मसौदा तैयार करने के लिए महानिदेशक को आमन्त्रित किया। इस मसौदे में अब तक तैयार किये गए मसौदों पर काम करने वाली विभिन्न समितियों और कार्य-दलों की टिप्पणियों का ध्यान रखा जाएगा और इस प्रारम्भिक मसौदे को सदस्य देशों के साथ इसकी पूरी पृष्ठ भूमि देते हुए भेजा जाएगा जिससे महासम्मेलन के चौदहवें अधिवेशन में इसका सम्पूर्ण मसौदा प्रस्तुत किया जा सके।

इसलिए बोर्ड ने यह निश्चय किया कि अपने १२ सदस्यों की एक विशेष समिति बनाई जाए जो महानिदेशक के प्रारम्भिक मसौदे और सदस्य देशों की टिप्पणियों के आधार पर इसका अन्तिम मसौदा तैयार करें। यह मसौदा मण्डल के सामने प्रस्तुत किया जाएगा और मण्डल अपनी टिप्पणियों के साथ उसको महासम्मेलन को प्रस्तुत करेगा। कार्यकारी मण्डल ने ब्राजील के प्रतिनिधि मि० पॉलो ई द वेरेडो कारनीरो द्वारा प्रस्तुत एक स्मरण-पत्र पर विचार किया जिसमें यह कहा गया था कि शान्ति के आयोजन और संगत संगठत की दृष्टि से यूनैस्को महानिदेशक के लिए एक सलाहकार समिति का निर्माण किया जाए।

इस स्मरण-पत्र में प्रस्तुत की गई समस्याओं के मूल-महत्व और विस्तार को स्वीकार करते हुए मण्डल ने महानिदेशक से इस प्रश्न का अध्ययन करने और उसके ७१वें अधिवेशन में आगे कार्यवाही करने के लिए एक रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा।

महानिदेशक की रिपोर्ट

कार्यकारी मण्डल ने यूनैस्को की १९६४ की कार्रवाइयों के सम्बन्ध में महानिदेशक की रिपोर्ट पर विचार किया। इसमें कहा गया कि यूनैस्को का कार्यक्रम १९६४ में सन्तोषप्रद ढंग से कार्यान्वित हुआ। विशेष रूप से यह कि इस वर्ष कार्यकारी मण्डल द्वारा स्वीकृत कार्यक्रम के पुनः संगठन और नवीकरण की तैयारी के लिए पर्याप्त उपाय किये गये।

कार्यकारी मण्डल ने कुछ यूनैस्को कार्यक्रमों के कार्य-चालन के प्रभाव और प्रभावशालिता का कई उपायों द्वारा मूल्यांकन करने की महानिदेशक की इच्छा को स्वीकार किया। विशेष रूप से इन प्रायोजनाओं पर। लैटिन अमरीका में प्रारम्भिक शिक्षा का विस्तार और सुधार पूर्वी और पश्चिमी सांस्कृतिक मूल्यों के परस्पर अवधारण सम्बन्धी प्रमुख आयोजना और एशिया में यूनैस्को द्वारा स्थापित या सहायता प्राप्त प्रादेशिक संस्थान।

महानिदेशक की मौखिक रिपोर्ट सुनने के बाद मण्डल ने इस कथन के गुणात्मक दृष्टिकोण की प्रशंसा की। यह दृष्टिकोण १९६४ की कार्रवाइयों सम्बन्धी छपी हुई रिपोर्ट का अनुपूरक था और इस मण्डल के विचार योग्य प्रमुख प्रश्नों पर जोर दिया गया था।

मण्डल ने यह विचार किया कि भविष्य में इसमें उन समस्याओं का अध्ययन किया जाना चाहिए जो महासम्मेलन द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वीकृत कार्यक्रम के कार्यचालन के बीच हमारे युग को समझने और यूनैस्को के कार्यक्रमों के नवीकरण के लिए विशेष महत्वपूर्ण हो जाते हैं। विशेष रूप से सदस्य देशों की शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने का प्रश्न। और वे समस्याएं जो अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष मनाने में विशेष महत्व की हैं।

भावी कार्यक्रम

कार्यकारी मण्डल ने महानिदेशक से १९६७-१९६८ के प्रस्तावित कार्यक्रम में मण्डल के सदस्यों के दृष्टिकोण और सुझावों को ध्यान में रखते हुए महत्वपूर्ण नवीनताओं पर अपने अध्ययन और विचार जारी रखने को कहा।

महानिदेशक द्वारा संस्तावित नवीनताएँ इन क्षेत्रों में यूनैस्को की कार्रवाइयों को बढ़ाएँगी: लड़कीयों और स्त्रियों के लिए शिक्षा की सुलभता, अन्तर्राष्ट्रीय तरुण स्वैच्छिक सेवा, कृषि सम्बन्धी शिक्षा और कृषि वैज्ञानिक शोध, अभिलेखन, शिक्षा के विस्तारण के प्रभाव और शिक्षा में आवश्यक पूँजीनिवेश पर प्रभाव तथा जनांकिकीय तत्वों पर शिक्षा सम्बन्धी विकास के प्रभाव का अध्ययन।

कार्यक्रम की कार्यान्विति

शिक्षा में भेदभाव के विरोधी संगमन और सुझाव की कार्यान्विति के सम्बन्ध में सदस्य देशों की समय-समय की रिपोर्टों को प्रस्तुत करने के सम्बन्ध में महानिदेशक द्वारा महासम्मेलन को प्रस्तुत की गई आयोजना का अध्ययन करने के बाद और इस प्रश्न पर महासम्मेलन द्वारा स्वीकृति संस्ताव पर विचार करने के बाद कार्यकारी मण्डल में इस बात को सर्वाधिक महत्व दिया कि सदस्य देश इस संगमन और संस्ताव की सभी धाराओं के सम्बन्ध में एक निश्चित परिपत्र में समय समय पर पूरी रिपोर्ट दें।

मण्डल में विचार किया कि इस समय इन रिपोर्टों की अवधि का निश्चय करना जल्दबाजी होगी और महानिदेशक से यह कहा कि इस सम्बन्ध में प्रश्नावलियाँ तैयार की जाएँ जो सदस्य देशों के पास इस प्रार्थना के साथ भेजी जाएँ कि उनके उत्तर १० महीनों के अन्दर आ जाने चाहिएँ।

कार्यकारी मण्डल ने अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन और यूनैस्को के महानिदेशकों द्वारा संयुक्त रूप से तैयार किये गये शिक्षकों की व्यावसायिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति सम्बन्धी एक सुझाव के सम्बन्ध में स्वीकृत कार्य विधि को मान लिया। मण्डल ने कहा कि १९६४ के द्वितीय भाग में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन और यूनैस्को के सभी सदस्य देशों और सहायक देशों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन इस झुकाव के मसौदे को अन्तिम रूप देने के लिए बुलाया जाए।

मण्डल ने जब सदस्य देशों और सहायक सदस्य देशों से यह अपील की कि तेहरान में ईरानी सरकार के आमन्त्रण पर ८ से १९ सितम्बर को होने वाली निरक्षरता उन्मूलन विश्व कांग्रेस में अपने शिक्षा मन्त्रियों को साक्षरता शिक्षण के प्रश्नों के विशेषज्ञों के साथ भेजे। मण्डल ने उस सम्मेलन की कार्यसूची और अस्थायी नियमों को स्वीकृति दी और उन अर्न्तसरकारी और गैर सरकारी संगठनों की सूची भी बनाई गई जिनको प्रेक्षक भेजने के लिए आमन्त्रित किया जाएगा।

मण्डल ने अफ्रीका में स्कूल पाठ्यक्रम सुधार के सम्बन्ध में सलाहकारों के दल का संगठन करने की स्वीकृति दी।

मण्डल में लैटिन अमरीका के शिक्षा मन्त्रियों और आर्थिक आयोजना मन्त्रियों के सम्मेलन के लिए सदस्य देशों, सहायक सदस्य देशों और संगठनों तथा संस्थाओं को भेजे जाने वाले निमन्त्रणों के सम्बन्ध में कई उपाय स्वीकार किये। इसमें इस सम्भावना का ध्यान रखा गया कि लैटिन अमरीका आर्थिक आयोग इस सम्मेलन को यूनैस्को के साथ संगठित करे।

मण्डल ने अरब देशों में शिक्षा मन्त्रियों और आर्थिक विकास के मन्त्रियों के सम्मेलन के सम्बन्ध में भी किसी प्रकार का कार्यवाही स्वीकृत की।

मण्डल ने महानिदेशक को यह अधिकार दिया कि १९६५-६६ के स्कूल वर्ष में कांगों के गणराज्य को सामान्य माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण और तकनीकी स्कूलों की सेवाओं को बनाए रखने की दृष्टि से सहायता दी जाए।

कार्यकारी मण्डल ने प्राकृतिक संसाधन शोध सम्बन्धी सलाहकार समिति के निर्णयों को स्वीकृति दी।

मण्डल ने ट्रीस्ट के अणु केन्द्रीय भौतिकी के राष्ट्रीय संस्थान और अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभीकरण के बीच सैद्धान्तिक भौतिक क्षेत्र में प्रशिक्षण के सम्बन्ध में समझौते का मसौदा स्वीकार किया।

उसने विज्ञान और औद्योगिकी के उपयोग सम्बन्धी लेटिन अमरीकी सम्मेलन के लिए भेजे जाने वाले निमन्त्रणों के सम्बन्ध में कार्यवाही स्वीकृत की।

मण्डल ने महानिदेशक को यह अधिकार दिया कि पश्चिम अफ्रीका की राष्ट्री भाषाओं की वर्णमाला के एकीकरण के लिए अनिवार्य कार्यवाही की जाए।

मण्डल ने यह निश्चय किया कि उसका इकहत्तरवां अधिवेशन मंगलवार ५ अक्तूबर १९६५ से प्रारम्भ होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकासशील देशों में माध्यमिक शिक्षा

यूनैस्को और विशेष निधि के बीच सहयोग

डब्ल्यू० जे० एलिस

सदस्य देश सम्बन्ध ब्यूरो

यदि कोई व्यक्ति विकासशील देशों के वर्तमान आर्थिक विकास कार्यक्रमों से ऊपरी तौर से भी परिचित हो तो उसके लिए यह स्पष्ट हो जाएगा कि हम आज ऐसी दुनिया में रहते हैं जिसमें आवश्यकता के प्रति सजगता आ गई है। भोजन और आश्रय की प्रारंभिक आवश्यकताओं के साथ-साथ अब एक और मूल आवश्यकता है जिसको हम वैज्ञानिक आवश्यकता भी कह सकते हैं और वह है शिक्षा की आवश्यकता। यह आश्चर्य की बात है कि आर्थिक विकास के प्रमुख तत्व के रूप में शिक्षा की संकल्पना अभी नयी है। इसके परिणामस्वरूप विकास में सहायता के लिए अनेकों राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रायोजनाओं के आयोजकों और कार्य चालकों ने अभी हाल ही में उसे पूरी तरह स्वीकार किया।

मई १९६० तक संयुक्त राष्ट्र विशेष निधि की प्रशासन परिषद ने अपने प्रबन्ध निर्देशक के प्रस्ताव को स्वीकृति दी कि इस प्रकार की सहायता के लिए योग्य मानी जानी वाली प्रायोजनाओं के लिए अधिक उदार नीति अपनाई जाए। प्रबंध निर्देशक ने निर्दिष्ट किया कि अनुभव से यह स्पष्ट हो गया है कि दुनिया जिन देशों में शिक्षा का स्तर इतना नीचा है कि वह आर्थिक विकास के लिए एक प्रमुख बाधा बन जाता है, वहां विशेष निधि को माध्यमिक शिक्षा का विकास करना उचित है। विशेष निधि का यह विश्वास है कि ऐसी स्थिति वहां हो सकती है, जहां प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों के अनुपात में माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों की संख्या एक निश्चित अनुपात से कम हो जाती है। ऐसी स्थिति में और यह स्थिति अधिकतर अफ्रीकी देशों में है। विशेष निधि का यह अनुभव था कि उसको माध्यमिक शिक्षा में सहायता देने के लिए विशेष रूप से सावधानी से चुने हुए क्षेत्रों में कुछ अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान बनाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

यूनैस्को पर जिन प्रायोजनाओं का भार दिया जाता है, उसमें से २५ प्रतिशत माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण संबंधी होती हैं। यदि हम विशेष निधि के कुल कार्यक्रम को देखें जिसमें ४८५ प्रायोजनाएं स्वीकृत हुई हैं, जिनकी कार्यान्वित संयुक्त राष्ट्र के १० अभिकरण करेंगे तो हमें पता चलेगा कि समूचे बजट का ५ प्रतिशत भाग माध्यमिक शिक्षा अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए निश्चित है।

अफ्रीका में विशेष निधि प्रायोजनाएं

यूनैस्को ने यह निश्चय किया है कि अफ्रीका के लिए अध्यापक प्रशिक्षण के क्षेत्र पर अधिक जोर देना चाहिए। यूनैस्को को उस महाद्वीप में जिन ३२ विशेष निधि प्रायोजनाओं का भार सौंपा गया है, उनमें से १९ अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना के लिए हैं। इनमें से १५ संस्थान अब चालू हो गए हैं और इनमें २५०० भावी अध्यापक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

इसकी जितनी आवश्यकता है, और इन शिक्षा-क्रमों में शामिल होने की जितनी इच्छा है, वह पूर्वी नाइजीरिया में कोवेरी के कालिज से स्पष्ट होती है। वहां मई १९६५ में शुरू होने वाले शिक्षा वर्ष में ३००० विद्यार्थियों ने आवेदन पत्र दिये, जबकि वहां १५० जगहें थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफ्रीका में माध्यमिक शिक्षा की बढ़ी-चढ़ी आवश्यकता की कुछ संकल्पना प्रस्तुत करना महत्वपूर्ण होगा। जन-शक्ति की कम से कम आवश्यकता को पूरी करने के लिए अनेकों अफ्रीकी देश १९६५ और १९७० के बीच माध्यमिक स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या दूनी या तिगुनी करने की आयोजना बना रहे हैं। सामान्य रूप से इसका यह भी मतलब है कि शिक्षकों की संख्या में आनुपातिक वृद्धि होगी यदि हम योरोप और उत्तरी अमरीका के साथ अफ्रीका की स्थिति की तुलना करें जहां की जनसंख्या दूनी है, हमें पता चलेगा कि योरोप और उत्तरी अमरीका में उच्चतर अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों की संख्या में अफ्रीका से ३०० गुनी ज्यादा है (इसमें संयुक्त अरब गणराज्य और दक्षिण अफ्रीका गणराज्य शामिल नहीं हैं) दूसरे शब्दों में जहां योरोप के लिए अनुपात १ : १२०० है, वहां अफ्रीका में १ : १५०००० है। यह आवश्यकता बहुत बड़ी है। इतनी बड़ी है कि वर्तमान संसाधानों से पूरी नहीं की जा सकती। फिर भी विशेष निधि की सहायता इसके लिए प्रमुख योगदान है।

प्रत्येक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान के लिए विशेष निधि का योग ५ वर्षों की अवधि में लगभग एक मिलियन डालर होगा। अपनी ओर से प्राप्ता सरकारें समूचे प्रायोजना खर्च में से बहुत काफी योग देती हैं। अधिकतर तो वह राशि विशेष निधि द्वारा दी गई राशि से दूने से भी अधिक होती है। यह योग भवनों, कर्मी, वर्गों और स्थानीय रूप से प्राप्त उपस्कर के रूप में होता है। इस स्थिति का पूरा ज्ञान होने के लिए आवश्यक है कि यह उल्लेख किया जाए कि इनमें से बहुत सी आवश्यकताओं को पर्याप्त द्विमुखी सहायता प्राप्त होती है और विकास निधियों के लिए दूसरे स्रोत भी हैं, जैसे विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय विकास संस्था और प्रादेशिक विकास बैंक)।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि विशेष निधि इस बात का निश्चय करना चाहती है कि जो आर्थिक सहायता वह देती है उसका उपयोग अधिक से अधिक लाभ के लिए किया जाता है इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए विशेष निधि सहायता अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों, विदेशों में अध्ययन के लिए शिक्षा-वृत्तियां और प्रायोजना के लिए अनिवार्य परन्तु प्राप्ता देश में प्राप्त होने वाली सामग्री और सेवाओं की व्यवस्था। अध्यापक प्रशिक्षण प्रायोजनाओं में बजट का लगभग ७५ प्रतिशत विशेष सेवाओं और ७ से १० प्रतिशत उपस्कर के लिए और ५ से १० प्रतिशत शिक्षा प्रवृत्तियों के लिए होता है। शेष विभिन्न व्यवस्थाओं और प्रधान कार्यालयों के खर्च के लिए प्रयोग किया जाता है।

अध्यापक प्रशिक्षण के अफ्रीकी संस्थान

१९ प्रायोजनाओं के लिए शिक्षा की विभिन्न शाखाओं में लगभग २१३ विशेषज्ञों की आवश्यकता होगी और वे लोग आयोजना निर्देशन, शिक्षण और शोध के लगभग ७१५ मानव वर्षों के बराबर काम करेंगे। लगभग २२५ शिक्षा-वृत्तियां दी जाएंगी और इसको सम्भव बनाने के लिए पौने दो मिलियन डालर का उपस्कर भी सुलभ बनाया जाएगा।

यदि वर्तमान आयोजनाएं सफल हुई तो यह अनुमान लगाया जाता है कि ५ वर्ष की अवधि में इन सब प्रायोजनाओं के द्वारा ६००० से ६५०० अध्यापकों तक को प्रशिक्षण मिलेगा और वही आगे चलकर भावी शिक्षकों को प्रशिक्षण देने वाले होंगे। शिक्षा में इस प्रकार के पूंजी निवेश के लिए इस कार्यक्रम में विशेष निधि को प्रत्येक अध्यापक पर तीन हजार डालर खर्च करना होगा। लेकिन यह इस प्रकार का अनुभव प्रस्तुत करेगा जो संख्यों के रूप में नहीं नापा जा सकता। इसके साथ ही इतने पुस्तकालय और प्रयोगशालायें हो जाएंगीं जो शिक्षकों के अनेकों भावी दलों को लाभ पहुँचाएंगीं।

अध्यापक प्रशिक्षण के अफ्रीकी संस्थानों की स्थापना इन-इन स्थानों पर हुई है: कैमरून, कांगो (ब्राजाविल) कांगो (लियोपोलडविल) इथियोपिया, घाना, आइवरी कोस्ट, मेडागास्कर, माली, मोरक्को, नाइजीरिया (४ संस्थान) जाम्बिया, रोडेसिया, सिअरा, लिओन, सेनेगल, सूडान, तंजानिया और ट्यूनीशिया के संयुक्त राज्य। हमें यह स्मरण है कि यह देश अपनी स्वतंत्रता के पहले अंग्रेजी व फ्रांसीसी शिक्षा पर-पराओं या पद्धतियों से प्रभावित थे और इसके परिणामस्वरूप इन देशों के साथ इनके दृढ़ बंधन हो गये हैं। इसीलिए शिक्षा के वर्तमान प्रारूप भी इन्हीं सरणियों पर आधारित हैं जैसाकि इन दोनों भाषाओं पर हैं। इसलिए हमें पता चलता है कि आज यह संस्थान दो निश्चित दलों में बंट जाते हैं, यूनैस्को की प्रायोजनाओं का एक प्रमुख लक्ष्य यह है कि इन दोनों को मिला दिया जाए और प्रत्येक देश में अपनी आवश्यकताओं के अनुकूल शिक्षा की एक पद्धति बनाई जाए।

सभी संस्थानों के लिए उद्देश्य यही है। भली प्रकार प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों को कला, दृश्य-श्रव्य तरीकों, सम-कालीन परिस्थिति, नाटक, शिक्षा, शिक्षा मनोविज्ञान, इतिहास भूगोल, भाषाएं, गणित, संगीत, भौतिक शिक्षा, और विज्ञानों की शिक्षा दी जाए। विद्यार्थी अधिकतर वहीं रहते हैं और दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या तीन वर्ष की अवधि की शिक्षा प्राप्त करते हैं। विद्यार्थियों का चुनाव सावधानी से किया जाएगा, उनके पास पश्चिमी अफ्रीका स्कूल सर्टिफिकेट, कैम्ब्रिज स्कूल सर्टिफिकेट या बैकलोरियेट माध्यमिक स्कूल सर्टिफिकेट होने चाहिएं। जो काम करने वाले शिक्षक योग्य माने जाएंगे और जिन दूसरों में भी क्षमता का परिचय मिलेगा, उनको इन स्कूलों में शामिल किया जाएगा। प्रत्येक संस्थान १५० से ४५० विद्यार्थियों तक को जगह दे सकेगा और प्रदर्शन तथा शिक्षण अभ्यास की व्यवस्था होगी। इनमें से कुछ संस्थानों में शोध भी होगी। उदाहरण के लिए मेडागास्कर में एक शोध विभाग होगा जिसके तीन खण्ड होंगे अर्थात् दृश्य-श्रव्य साधन, शिक्षा मनोविज्ञान और भाषा-शिक्षण।

कर्मी वर्ग की समस्याएं

जैसाकि भली प्रकार अनुमान लगाया जा सकता है, इस प्रकार के उद्योग में बहुत सी प्रमुख समस्याएं हैं और उसमें सबसे अधिक गम्भीर है, पर्याप्त योग्यता प्राप्त करने की कमी। उस प्रवर कर्मी वर्ग की जिसको यूनैस्को सहायता की अवधि की समाप्ति के बाद संस्थान के कार्य को चलाने और बनाये रखने के लिए प्रयुक्त करना होगा। कर्मी वर्ग की इस गंभीर कमी का मतलब यह भी है कि विदेशों में जा कर उच्चतर प्रशिक्षण लेने के लिए शिक्षा वृत्तियां दिये जाने योग्य व्यक्तियों की ही कमी है। उपयुक्त विद्यार्थियों की सुलभता उतनी बड़ी समस्या नहीं है, यद्यपि आवश्यक योग्यताओं से युक्त विद्यार्थियों को पा लेना भी मुश्किल हो जाता है।

सब मिलाकर भौतिक सुविधाएं पर्याप्त हैं और अनेकों देशों में सरकारों ने विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए बहुत ही अच्छे भवन और छात्रावास प्रस्तुत किये हैं। उपस्कर बहुत काफी नहीं होता, लेकिन विशेष निधि की सहायता के द्वारा उपयुक्त पुस्तकालय, क्लास-रूप और प्रयोगशालाएं धीरे-धीरे सुलभ हो जाएंगीं। यह पहले कहा जा चुका है कि इन संस्थानों के लिए २०० से अधिक विशेषज्ञों की आवश्यकता है जो उनकी आयोजनाएं बनाएं और संचालित कर दें। इस काम के लिए योग्य विशेषज्ञों को ढूंढना सचमुच एक समस्या है। यह तो स्मरण रखना होगा कि अधिक विकसित देश अधिक द्रुत गति से विकास कर रहे हैं और उनके लिए भली प्रकार योग्यता प्राप्त कर्मी वर्ग की अधिक संख्या में आवश्यकता है इस कारण जब नियुक्ति की बात आती है तो अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बहुत ही कमी हो जाती है। और इसीके साथ किसी विशेष पद पर रखे जाने लिए आवश्यक अनुभव और योग्यता की सयस्या भी है। भाषा के कारण और कठिनाई पड़ती है। इसलिए इस सब में एक कठिन और अपरिचित स्थिति से समंजित होने और एक विदेशी वातावरण में दूसरों को समझने और उनके अनुकूल बनने की क्षमता भी आवश्यक है। इन सभी तथ्यों के कारण सुलभ लोगों की संख्या कम हो जाती है।

इन कठिनाइयों के बावजूद जो अनिवार्य और जिनकी आशा भी की जा सकती थी, उनमें से अधिकतर संस्थानों ने सचमुच सफलता प्राप्त करने का कोई बहुत जल्दी की जाने वाली बात नहीं की। जिस प्रकार प्रारम्भ हुआ है वह उस विकास का बहुत छोटा सा अंश है जो बहुत निकट भविष्य में दिखलाई देगा। अन्तर्राष्ट्रीय सहायता के इस प्रश्न का महत्व अधिक विकास के सर्वोपरि कार्य में कम नहीं समझा जाना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रिका प्रेस और शिक्षा

टॉर जसदेल

[निदेशक, जनसंचारण विभाग]

जन संचारण विभाग निदेशक मि० टोर जसदेल पत्रिका प्रेस की पन्द्रहवीं अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में यूनैस्को के प्रतिनिधि थे। यह काग्रेस रोम में २७ से २६ अप्रैल १६६५ तक हुई।

बैठक में अपने भाषण को मि०.जसदल ने यह कहते हुए प्रारम्भ किया 'यूनैस्को के सभी उद्देश्यों की उपलब्धि के लिए आर्थिक और सामाजिक प्रगति के रूप में जन संचारण माध्यमों का विकास आवश्यक है, परन्तु शिक्षा सम्बन्धी कठिनाई ही सबसे बड़ी है और इसी के लिए सबसे ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने यूनैस्को और पत्रिका प्रेस के अन्तर्राष्ट्रीय संघ के दृष्टिकोण की समानता का उल्लेख किया। इस संघ का उद्देश्य यह है कि सूचना के मुख्य प्रवाह द्वारा शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति का विकास करे। और यह उन पहले गैर-सरकारी संगठनों में से है, जिनसे यूनैस्को के औपचारिक परामर्श सम्बन्ध बनाने थे। दोनों संस्थाओं के बीच सहयोग में प्रमुखतः पत्रिकाओं और छपी सामग्री के अन्तर्राष्ट्रीय संचरण को सुविधा देना, पत्रकारों की व्यावसायिक प्रशिक्षण को सुधारना और अभी हाल में अल्प-विकसित देशों में जन-संचारण माध्यमों के विकास को प्रोत्साहन देता रहा है।

जन संचारण माध्यम और निरन्तर शिक्षा

अपने प्रमुख विषय पर आते हुए मि० जसदेल ने कहा :

'शिक्षा को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विकास का एक अनिवार्य तत्व माना गया है। शिक्षा का एक पक्ष ज्ञान का संग्रह है। आज निश्चित रूप से अधिक से अधिक लोग अनेक विषयों को ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। अर्थशास्त्री इस बात पर सहमत है कि यह प्रक्रिया उत्पादनशीलता को प्रोत्साहन देती है। विज्ञान और औद्योगिकी हमारे समाज का समूचा आधार ही धीरे-धीरे बदल रही है और तकनीकी ज्ञान उत्पन्न करने में भी सहायक हो रही है। इसलिए ज्ञान के परिचरण को द्रुत बनाना हमारे समाज की एक प्रमुख आवश्यकता हो गई है। अन्त में गणतन्त्र इस बात पर निर्भर करता है कि नागरिक को सभी प्रवृत्तियों का सम्पूर्ण ज्ञान हो और यह सामान्य ज्ञान के आधार पर उन सबको सार्थक रूप से समझने की क्षमता रखता हो जिससे वह अपने गणतन्त्रीय अधिकारों का पूरा उपयोग कर सके।

यदि इसको दूसरे ढंग से रखा जाए तो यह कहा जाएगा कि यदि व्यक्ति अपने को निरन्तर बदलते हुए समाज से समंजित नहीं कर सकता तो उनका सम्पर्क उन वास्तविकताओं से छूट जाएगा। जो आज जिवन को प्रभावित करती हैं। ज्ञान आज पहले की अपेक्षा कहीं जल्दी पुराना पड़ जाता है। कोई शिक्षा कभी खत्म नहीं होती। आज हर जगह विज्ञानों के सम्बन्ध में या समूचे विश्व के संबंध में निरन्तर शिक्षा की आवश्यकता है। व्यक्ति के लिये अपने सूचना भण्डार को ताजा करना और बड़ा बनाना और कभी-कभी तो पूरी तरह से बदल देना आवश्यक हो जाता है। इस प्रक्रिया में पत्रिका प्रेस का एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य है जैसा कि निरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष में भी इसका हाथ रहता है। आज की दुनिया के सात सौ मिलियन निरक्षरों के लिए पत्रिका प्रेस ज्ञान के बड़े-बड़े झरोखे खोल देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वयस्कों की अनौपचारिक शिक्षा में जन-संचारण साधन एक प्रकार के भवनहीन स्कूल बनते जा रहे हैं, जिनके बीच अधिकतर मनुष्य अपने जीवन का अधिक बड़ा भाग बिताते हैं। यदि वे जितना चाहते हैं उतनी शिक्षा प्राप्त करेंगे तो उन्हें जन-संचारण साधनों पर ही निर्भर करना होगा। परन्तु आज जीवन के प्रत्येक अंश में हमारे रहने के ढंग से लेकर हमारे सोचने के ढंग तक ये साधन क्या काम कर रहे हैं और कितनी अच्छी तरह। सूचना व्यावसायिकों का काम क्या है। हमारी चर्चा के लिए यह प्रश्न महत्वपूर्ण है। मैं सोचता हूँ कि हम सब इस बात पर सहमत होंगे कि जब अधिकतर लोग अपने स्कूल की जब उच्चतर शिक्षा समाप्त कर लेते हैं उसके बाद सूचना, ज्ञान और नये विचारों के लिए उनका प्रमुख स्रोत ये संचार साधन ही होते हैं। इस प्रकार संचार साधन कुछ तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा संचालित उपस्कर ही नहीं हैं, अपने में वे उत्पादक भी हैं। वे विचारों के उत्पादक मौलिक निर्माणों के केन्द्र और विस्तृत अर्थ में शिक्षा की शक्ति हैं। इससे तो इन्कार किया ही नहीं जा सकता कि जब औपचारिक स्कूल शिक्षा समाप्त हो जाती है तब अपने अधिकतर विचार और सांस्कृतिक अनुभव हम विभिन्न जन-संचार साधनों से प्राप्त करते हैं। सूचना और सांस्कृतिक मूल्यों के परिणाम के साथ साथ संचार साधनों का गुण भी उनके शिक्षा की दृष्टि से कारगर होने के लिए बड़ा महत्वपूर्ण होता है। यह बात पत्रिका प्रेस के लिए विशेष महत्व की है और वह लोकप्रिय शिक्षा में एक शक्ति के रूप में से विशेषकर अल्प-उन्नत क्षेत्रों में बड़े महत्व का है।

एक शिक्षक के रूप में पत्रिकाओं के लाभ

विकासशील देशों में पत्रिका प्रेस के विशिष्ट कार्य की चर्चा करने के पहले हम शिक्षा के क्षेत्र में उसके कार्य को देख लें। हम लोगों को पहले इस बात पर विचार करना चाहिए कि पत्रिका प्रेस क्यों शिक्षकों के कार्य को पूरा करने की योग्यता रखता है। क्यों लाखों लोग स्वेच्छा से दिन प्रतिदिन इससे प्राप्त होने वाली शिक्षा की खोज करते हैं।

दूसरे शब्दों में पत्रिका प्रेस की ऐसी कौन सी विशेषताएँ हैं जो पाठकों की शिक्षा को चालू रखने में सहायता करते हैं। यद्यपि मैं समझता हूँ कि मैं एक बड़े कुशल व्यावसायिक दल के सामने बात कर रहा हूँ जो अपने माध्यम की सम्भावनाओं से भली प्रकार परिचित है फिर भी मेरा विचार है कि पत्रिका प्रेस के लाभों को याद कर लेना और कैसे इन लाभों का आगे की शिक्षा में उपयोग हो सकता है यह विचार करना अच्छा होगा।

पहले तो पत्रिका दैनिक समाचार-पत्र और पुस्तक के बीच में है। इसका अर्थ यह है कि इसमें दैनिक समाचार पत्र की सामयिकता नम्यता और लोकप्रियता के साथ-साथ पुस्तक की गहराई और स्थाई मूल्य भी रहते हैं। पत्रिका प्रेस इसीलिए अधिक विस्तृत जनता में ज्ञान और सद्भावना को प्रोहत्साहन देने के लिए अत्यधिक उपयुक्त है, विशेष रूप से उन देशों में जहाँ समाचार पत्र कम हैं, जहाँ कागज की कमी है या परिवहन की सुविधाएँ नहीं है या साक्षर जनता पुस्तकें खरीदने की क्षमता नहीं रखती, वहाँ पत्रिका प्रेस अधिकतर लोगों के लिए जिनको दैनिक पत्र या पुस्तकें खरीदने की सुविधा नहीं है, एक-मात्र पठन सामग्री रह जाती है।

दूसरे पत्रिका एक विशेष प्रकार का प्रकाशन है। पाठक उसको कहीं से खरीदता है या उसका नियमित ग्राहक बन जाता है क्योंकि वह उसकी किसी विशेष आवश्यकता की पूर्ति करती है वह आवश्यकता कुछ भी हो विज्ञान की या कथा कहानियों की राजनैतिक टिप्पणियों की या आर्थिक समाचार फैशन या हास्य कथाएँ पाठक जल्दी ही अपनी पत्रिका के साथ बड़े निकट का सम्बन्ध रखने लगता है। उसको उससे ज्ञान प्राप्त होता है वह उससे मनोरंजन भी प्राप्त करता है और सूचना भी लेता है। और अपने विस्तृत अर्थ में यही शिक्षा भी है। जहाँ तक पत्रिका और उसका पाठक मनोवैज्ञानिक स्तर तर समय पाते हैं, उनमें परस्पर आदर भाव होता है।

एक विशाल संस्था के नेताओं के रूप में आप अपने पाठकों के साथ किस प्रकार का सम्बन्ध रखना चाहते हैं और किस उद्देश्य से यह तो आप के निश्चित करने की बात है। मेरा काम तो पत्रिका और शिक्षा के बीच का सम्बन्ध निर्दिष्ट करना है। पत्रिकाओं का अपने पाठकों के साथ जो सम्बन्ध होता है, उसका ज्ञान मुझे है क्योंकि मैं खुद भी पत्रिकाओं का पाठक हूँ। इसलिए जो मैं खुद कह सकता हूँ वह यही है कि जैसे विद्यार्थी और शिक्षक के बीच में सम्बन्ध होता है, लगभग उसी तरह पत्रिका और पाठक के बीच में भी है। और आज की आवश्यकताओं के संदर्भ में यह सम्बन्ध बड़ा सार्थक भी हो सकता है।

पत्रिका की शिक्षक के रूप में जो तीसरी विशेषता यह है कि वह सुलभ होती है। इस रूप में तो यह मानव शिक्षक की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छी है। सभी संचार साधनों की अपेक्षा पत्रिकाओं का समय काफी लम्बा होता है उसे देर तक और बारबार पड़ा जा सकता है। क्योंकि बासी समाचार पत्र की भाँति कल की पत्रिका पढ़ने में कोई लज्जा नहीं है। क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रिका का प्रकाशन अधिक समय लेता है, उसकी सामग्री को अधिक सुनियोजित और विचारित ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है। एक ऐसे शिक्षक की भाँति जो अपने भाषण की अच्छी तरह तैयारी करता है। विद्यार्थी इसकी आशा रखते हैं। और मेरा विश्वास है कि पत्रिका के पाठक भी सम्पादक से यह आशा करते हैं कि वह उनको आज की द्रुत गति से चलने वाली दुनिया के विचारों और घटनाओं का विचारपूर्ण संगत और संतुलित विवरण प्रस्तुत करे।

इससे इधर हाल के विकास पर ध्यान जाता है। पत्रिका उपयोगी लेखों और पुस्तकों से उद्धरण प्रस्तुत करती है और पाठक का ध्यान उस प्रकार के साहित्य की ओर आकर्षित करती है जिसमें उनकी रुचि हो सकती है। यश भी शिक्षा है विशेषकर ऐसे समय में जब कि कोई भी व्यक्ति अपने व्यावसायिक क्षेत्र में बिना इस विशिष्ट सेवाओं की सहायता लिये हुए शीघ्रता से होने वाले विकासों पर ध्यान नहीं रख सकता।

आज का पाठक चाहे वह विशेषज्ञ हो चाहे सामान्य पाठक हो, एक और सेवा को भी बहुत पसन्द करता है। और वह है पुनःमुद्रण। पत्रिकाओं के यह पुनः मुद्रित लेख जिल्द बंधवा कर रखे जा सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर आसानी से देखे जा सकते हैं। शिक्षा के साथ इसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्पष्ट है। इन सभी लाभों के साथ अगर हम यह बहुत महत्वपूर्ण तथ्य जोड़ दें कि पत्रिका का पाठक अपनी गति से पढ़ता है और अपनी क्षमता के अनुसार जल्दी या धीरे-धीरे सूचना प्राप्त करता है तो आपके सामने यह स्पष्ट हो जाएगा कि पत्रिका सभी प्रकार की बुद्धि ज्ञान और रुचि के लाखों पाठकों की निरन्तर शिक्षा की प्रक्रिया ले किस प्रकार कारगर हो सकती है।

नव-साक्षरों के लिए पत्रिकाएं

यदि पत्रिकाओं से शिक्षा को सहायता मिलती है तो यह प्रश्न सहज ही सामने आता है कि आजकल पत्रिकाएँ वह काम कहाँ तक कर रही हैं। क्या वह ठीक-ठीक हो रहा है। उसको पूरा करने में क्या अभाव हैं। पत्रिका प्रैस के लिए अन्तर्राष्ट्रीय कार्य की क्या सम्भावना है और भविष्य के लिए क्या सम्भावना है। यह प्रश्न प्रमुखतः आपके होंगे। शायद आप मुझे कुछ उत्तर देने के लिए भी आज्ञा देंगे।

अन्तिम प्रश्न का उत्तर पहले देते हुए में यह कहूंगा और जोर देकर कहूंगा कि पत्रिका प्रैस का कार्य और चाहे जो कुछ हो, समय और औद्योगिक प्रगति के साथ कम नहीं हो रहा। इसके विपरीत जन संचारण साधनों में अब जो क्रान्तियाँ हो रही हैं, इसके कारण इसकी विशेषताएँ और प्रभाव और भी स्पष्ट हो रहे हैं।

इसलिए मैं तो एक विशेष क्षेत्र इंगित करना चाहूँगा, जिससे पत्रिका प्रैस का महत्वपूर्ण कार्य हो सकता है। यहाँ मैं विकासशील देशों की विशेष समस्याओं पर वापस आना चाहता हूँ और विशेष रूप से ज्ञान के द्वार पर खटखटाते हुए नव-साक्षरों की आवश्यकताओं का उल्लेख करूंगा। निरक्षरता से संघर्ष करने के लिए बड़े-बड़े अभियान चलाये गये। उनमें से बहुत से सफल भी हुए। मगर केवल निरक्षरता कम करने तक ही। साक्षरता का जो अधिक सार्थक पक्ष है, जिसको हम शिक्षा कहेंगे, वह इन देशों में फैल नहीं सकी। इसके कारण हैं और बहुत महत्वपूर्ण कारण यह है कि संसाधनों की कमी है और नव-प्राप्त ज्ञान को व्यक्तिगत लाभ के लिए प्रयुक्त करने की सुविधाएँ नहीं हैं।

यह स्पष्ट है कि पठन सामग्री के बिना नव-साक्षर वयस्क शिक्षा कक्षाओं में सीखे हुए ज्ञान का अभ्यास और उपयोग नहीं कर सकते। साक्षरता शिक्षण निश्चय ही असफल रहेगा जब तक उसके साथ-साथ नये पाठकों के लिए साहित्य नहीं जुटेगा। नव साक्षरों के लिए नियन्त्रण शब्दावली सुन्दर और आकर्षक बड़े टाईप, सुन्दर चित्रों से युक्त और बहुत सी खाली जगह से युक्त पत्रिकाओं की आवश्यकता है। और इसी प्रकार स्थानीय या प्रादेशिक सामान्य पत्रिकाएं हैं जो नई कुशलता प्राप्त लोगों के लिये निरन्तर पठन सामग्री प्रस्तुत करते हैं। ग्रामीण पाठक जो संख्या में सबसे अधिक हैं, उनकी विशाल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विशेष परिवर्तन करने होंगे। उनके लिए पत्रिका-प्रैस समान रूप से शिक्षा और मनोरंजन प्रस्तुत कर सकता है।

यह एक क्षेत्र हैं, जिसके लिए अधिक अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सहायता की आवश्यकता है। मेरा प्रस्ताव यह नहीं है कि किसी भी देश में इस समस्या को दूसरे देशों से पत्रिकाएँ प्रस्तुत करके सुलझाया जा सकता है। पत्रिकाओं का उत्पादन स्थानीय रूप से होना चाहिए। परन्तु मैं विश्वास करता हूँ कि आपका संगठन और सदस्य विकासशील देशों में स्वस्थ-पत्रिक प्रैस की स्थापना में आने वाली प्रमुख बाधाओं को दूर करने में समर्थ है। जिन प्रश्नों पर तात्कालिक ध्यान देना होगा वे हैं अनेकों देशों से तकनीकी, ग्राफिक और सम्पादकीय कर्मीवर्ग का प्रशिक्षण कागज जुटाना, छोटे छपाई उद्यमों की स्थापना अच्छी पत्रिकाओं के प्रकाशन को अधिक सरल और सस्ता बनाने वाले नये तकनीकों के प्रयोग का शिक्षण।

आपके संघ और हमारी यूनैस्कों के सामने यह एक चुनौती है। यह चुनौती हम सबके प्रति है। अपने पिछले सहयोग की भावना से हम इस दिशा में भी संयुक्त प्रयत्न करें, ऐसी मेरी कामना है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तरिक्ष में मेरे पहले कदम

एलेक्सी लिग्रोनोव

जब मैं अंतरिक्ष के शून्य में तिरता हुआ अंतरिक यान को देख रहा था तो वह दृश्य इतना अविस्मरणीय था कि मैं तो उस पर कभी विश्वास ही न कर पाता, परन्तु उड़ान लेने के सामने के कुछ क्षण और उड़ान के प्रशिक्षण लम्बे महीनों के स्मरण हो आने के कारण ही मुझे उस पर विश्वास करना पड़ा। वास्काड द्वितीय बड़ी ही भव्यता के साथ अंतरिक्ष में तैर रहा था। और उसके मुँह के पास लगे हुए कुछ तार अंतरिक्ष के शून्य को भेजते हुए किसी दैत्य की मूँछों के समान कटे हुए थे। उसके छिद्र प्रत्येक गति को देखने वाले विशाल आँखों की भाँति प्रतीत होते थे। टैलीविजन और कैमरा के लैंस मेरी ओर लगे हुए थे।

मेरे सामने कालापन था। एक बहुत ही गहरा काला आसमान जिसमें तारे चमक रहे थे, लेकिन टिमटिमाते नहीं थे, स्थिर प्रतीत होते थे। सूरज भी वह नहीं लगता था जैसा पृथ्वी से दिखाई देता है। उसके चारों ओर कोई प्रकाश-मण्डल नहीं था। ऐसा लगता था जैसे आसमान के काले मखमल में जड़ा हुआ एक चमकदार गोला। अंतरिक्ष एक तलहीन खाई के समान प्रतीत होता था। अब कभी ब्रह्माण्ड को पृथ्वी पर से भी पुराने रूप में देखना सम्भव नहीं होगा।

हमारे नीचे हमारा ग्रह पृथ्वी तिरता हुआ प्रतीत होता था। वह गोल नहीं मालूम होता था, बल्कि बिलकुल चिपटा। क्षितिजों के निकट की गोलाई से ही स्पष्ट होता था कि पृथ्वी गोल है। मेरे चारों ओर जो दृश्य था, वह किसी विज्ञान कथा पर आधारित फिल्मी दृश्य के समान प्रतीत होता था वहाँ पर केवल फिलम का संगीत नहीं था। ऐसी ही आश्चर्यजनक परिस्थिति में मुझे काम करना था।

अन्तर्ग्रहीय शोध का विकास बहुत ही तीव्र गति से हो रहा है। चार वर्ष पहले मेरे देशवासी यूरी-गागारिन ने अन्तरिक्ष में केवल १०८ मिनट बिताये। आज अन्तरिक्ष यान कई दिनों तक की उड़ानें लेते हैं। और अब अन्तरिक्ष में उड़ानें लेने वाले केवल एक पाइलट ही नहीं होता। पिछले अक्तूबर में वाशकाड प्रथम में उसके उड़ाके ब्लाडीमीर कोमारोव के साथ-साथ एक वैज्ञानिक कोंस्टैन्टिन फियोफिस्टोव और एक डाक्टर बोरिस येगोरोव भी थे।

भविष्य में अन्तरिक्ष यान चक्कर लगाने में अधिक से अधिक समय लगायेंगे और एक ही समय में कई चक्कर लगा सकेंगे। उसके भीतर बैठे हुए लोगों की संख्या भी बढ़ जाएगी। वैज्ञानिक अन्तरिक्ष में स्टेशन बनाने का प्रयास भी किये जा रहे हैं। मनुष्य स्वभावतः दूसरे ग्रहों की शोध करना ही चाहेंगे।

परन्तु यदि इसे सम्भव बनाना है तो मनुष्य को वहीं अन्तरिक्ष में ही बड़े-बड़े अन्तरिक्ष यान संघटित करने होंगे। उसके लिए अन्तरिक्ष में चक्कर लगाती हुई प्रयोगशालाओं में जाकर उनका संचालन कर सकना सम्भव होना होगा और ऐसी परिस्थिति उत्पन्न होने पर एक जहाज से दूसरे जहाज में जाना भी। तथा अर्न्तग्रहीय उड़ानों में दूसरे मनुष्यों से सम्पर्क स्थापित भी करना होगा। ऐसा सम्भव होने के लिए मनुष्य को अपना अन्तरिक्ष यान छोड़ना सीखना था। परन्तु यह प्रश्न उठा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या मनुष्य के लिए अन्तरिक्ष यान को छोड़कर जीवित रहना सम्भव है। अगर हाँ तो क्या वह अन्तरिक्ष में कुछ काम कर सकता है। उदाहरण के लिए क्या वह अन्तरिक्ष यानों को संघटित करने का कार्य वहाँ कर सकता है।

रूस के एक महान वैज्ञानिक कोंस्टैंटिन सियोल्कोवस्की ने १९२६ में इन प्रश्नों के उत्तर के रूप में ये बातें कहीं थीं।

"पृथ्वी की अपेक्षा अन्तरिक्ष में सभी प्रकार का काम करना सरल है। एक तो प्रयोजनाओं के आकार की कोई सीमा नहीं है और नाजुक से नाजुक सामग्री का प्रयोग किया जा सकता है क्योंकि अन्तरिक्ष का कोई भार नहीं होता। इसलिये किसी चीज के टूटने का डर नहीं होता। दूसरे मनुष्य किसी भी स्थिति में काम कर सकता है। अन्तरिक्ष में उदग्र या अनुप्रस्थ सतहें नहीं हैं। न ही कुछ ऊपर और नीचे है। मनुष्य वहाँ गिर नहीं सकता।

भारी से भारी चीज भी काम करते समय किसी पर गिरकर उसे कुचल नहीं सकती क्योंकि वहाँ कोई चीज गिरती ही नहीं। कोई भी चीज किसी दूसरी चीज के ऊपर भार नहीं हो सकती। वहाँ की वस्तुएँ चाहे कितनी भी बड़ी और भारी क्यों न हों, हल्के से स्पर्श से ही हटाई जा सकती हैं। आवश्यकता केवल किसी भी वस्तु के भारत और उसकी आकृति के आनुपातिक हल्के से ठेलदेने की है और फिर वे चीजें निरन्तर गति करती रहेंगी।"

यह एक सिद्धान्त ही था जिसको उन्होंने यांत्रिकी के नियमों के अपने ज्ञान पर आधारित किया था लेकिन व्यवहार में उसकी पूर्ति नहीं हो सकी थी।

कृत्रिम सैटेलाइटों और मानव-संचालित अन्तरिक्ष यानों की उड़ानों के परिणामस्वरूप वैज्ञानिकों ने सैद्धान्तिक रूप से अन्तरिक्ष में मनुष्य के प्रवेश के सम्बन्ध में सभी समस्याओं का वर्णन कर दिया। उन्हें अन्तरिक्ष की विभिन्न परिस्थितियों का ज्ञान था। विकिरण की गहनता भारहीनता का प्रभाव आदि। लेकिन कोई भी यह नहीं जानता था कि ब्रह्माण्ड के शून्य में मनुष्य की भारहीनता की और प्रतिक्रिया क्या होगी।

पावेल बेल्याये (वास्कोड द्वितीय के संचालक) और मेरा १८ मार्च की उस उड़ान के लिए चुने जाने का सौभाग्य हुआ जिसका उद्देश्य यही था कि इन प्रश्नों के पहले उत्तर प्रस्तुत करें और वैज्ञानिकों के अनुमानों और आकलनों की परीक्षा व्यवहार में करें। हमारा विश्वास है कि हमने इन समस्याओं का समाधान किया है और हमारी उड़ान के प्रति जो आशाएँ की गई थीं उनको उचित सिद्ध किया है।

जो हुआ वह यह था :

जब जहाज अन्तरिक्ष में पहले चकर में आया उसके दो ही मिनट बाद में अन्तरिक्ष में अपने संतरण की तैयारी करने लगा। अन्तरिक्ष के सौन्दर्य और भव्यता को देखने का कोई समय नहीं था। उसके लिए उद्देश्य के समाप्त होने तक की प्रतीक्षा करनी थी।

पृथ्वी पर उड़ान की शिक्षा लेते हुए हमने बार-बार अन्तरिक्ष में कदम रखने वाले मनुष्य के शारीरिक स्थिति का नियमन करने वाली सरणियों और वायु बंध नियन्त्रणों की परीक्षा की थी और निर्गम तथा पुनः प्रवेश की प्रक्रियाओं के रिहर्सल किये थे। हमने उनकी परीक्षा वास्तविक परिस्थितियों में की थी। फिर भी जब जहाज अपने पहले चक्कर में था तो हमने फिर एक बार उसका रिहर्सल किया।

जब हम कमचाटका के ऊपर थे, तो संचालक बेल्यामेव ने वायुयान से बाहर जाने के लिए मुझे तैयार करना प्रारम्भ किया। उन्होंने मुझे वह सिलेण्डर पहना दिया जिस में वायु थी। मैंने अपने अन्तरिक्ष वस्त्रों के साथ सांस लेने के मिश्रण के सम्पर्कों की परीक्षा कर ली। बेल्यायेव ने वायुबंध का आंतरिक दरवाजा खोल दिया। हमने साथ-साथ अपने वस्त्र में वह डोरी बांध ली जो हमें उस अन्तरिक्ष यान से जोड़े रखेगी। इसी डोरी में टैलीफोन का वह तार भी था जो यान और पृथ्वी के साथ मेरा सम्पर्क बना। मैं अपनी जगह से उठा और वायु-बंध के कक्ष में तैर आया।

मैंने संचालक को हाथ से इशारा किया। भीतरी दरवाजा मेरे पीछे बन्द हो गया। बैल्यामेव ने तत्काल वायु कक्ष को खाली करना शुरू किया जिससे कियान के बाहर के भार के साथ सन्तुलन हो जाए। मैं इसको होते हुए अनुभव कर सकता था क्योंकि मेरा अन्तरिक्ष वस्त्र फूलता जा रहा था। अचानक वायुबंध का बाहरी दरवाजा अन्तरिक्ष में खुल गया। उस कक्ष में सूर्य के प्रकाश की तीव्रता फैल गई। प्रकाश इतना उज्ज्वल था कि ऐसा लगता था मानो निकट ही कोई बहुत बड़ी टार्च से वैल्डिंग कर रहा हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने दरवाजे के पास से अपना सिर थोड़ा सा निकाला। हम भूमध्य सागर के ऊपर थे। मुझे उस कक्ष को छोड़ने और अन्तरिक्ष से यान तथा पृथ्वी को देखने की जल्दी थी। लेकिन बेल्यायेव ने मुझे रोका। हमें अपनी समय-सारणी का अनुसरण बिल्कुल ठीक-ठीक करना था।

हम लोग सिफरोपोल के ऊपर नहीं पहुँच पाये थे, जब बेल्यावेव ने मुझे बाहर जाने का इशारा दिया। जाने की अधीरता में मैं बड़ी तेजी से कक्ष से निकला जैसे बोतल सैंडाट निकलती है। नीचे मेरे बिल्कुल नीचे कर्च था। मैंने काला सागर देखा, नौवोरोसिस्क के निकट की खाड़ी का नीला फैलाव देखा और बादलों से ढकी हुई काकेशस पर्वतमाला देखी। सभी कुछ बड़ी अच्छी तरह दिखाई पड़ रहा था। मैंने बहुत काफी उड़ानें ली हैं। ५५० घण्टों से भी अधिक उड़ा हूँ, लेकिन मुझे लगा कि अन्तरिक्ष से हर चीज वायुयान की अपेक्षा ज्यादा अच्छी तरह दिखाई देती है। उदाहरण के लिए मैंने स्पष्टतः देखा कि सूची प्रदेश में बहुत ही उज्ज्वल और धूप भरा मौसम था।

मुझे पता लगा जैसे मैं चक्कर खा रहा हूँ और इसको रोकने की मुझ में क्षमता नहीं थी। मुझे यही अनुभव वहाँ भी हुआ था जब हम भारहीनता की प्रयोगशाला में यान से निर्गम और पुनः प्रवेश का रिहर्सल कर रहे थे। इसलिए मैंने इसके बारे में कुछ नहीं किया। केवल चक्करों के कम होने के लिए अपनी डोरी के खिंचने की प्रतीक्षा करता रहा और जैसा मैं सोचता था मैंने देखा कि वह गति धीरे-धीरे रुक रही थी। यद्यपि मैं अब भी चक्कर खा रहा था, मैं इसको रोक सकता था अगर मैं अपनी डोरी को जोर से पकड़ लेता। लेकिन मुझे चक्कर खाना ज्यादा अच्छा लगा क्योंकि मैं उससे ज्यादा अच्छी तरह देख सकता था।

नीचे हमारे देश के दक्षिण की भव्य हरी-भरी पर्वतमालाएँ दिखाई दे रही थीं। मैंने वोल्गा को पहचाना, फिर यूराल को देखा और उसके बाद साइबेरिया की विशाल नदियें। ओब और येनिसी।

मैंने उस चल-चित्र कैमरा के लैंस रक्षक को हटा दिया जिसको अन्तरिक्ष की शून्यता में मेरी गति के चित्र लेने थे। वह कैमरा वायुबंध के किनारे पर एक विशेष स्टैंड पर रखा हुआ था। एक क्षण बाद अपने को आगे ले जाने के लिए मैंने डोरी को जरा तेजी से खींच दिया और तब लगा कि जैसे जहाय मेरे ऊपर आ रहा है। मैंने उसको अपने हाथों से हटा दिया। नहीं तो वह मेरी टोपी से टकरा जाता। अपनी बाहें फैलाकर मैं उसके प्रभाव को दूर कर सका। यह स्पष्ट है कि जब मनुष्य अन्तरिक्ष की असाधारण परिस्थितियों के अनुकूल अपने को बना लेता है तो वह पर्याप्त समायोजित और निश्चित ढंग से संतरण कर सकता है।

अब मैं अन्तरिक्ष में तिर रहा था तो मैं बराबर पावेल बेल्यायेव और पृथ्वी से सम्पर्क रहा। मैंने यूरी-गागारिन से बातचीत की जन्तरिक्ष अड्डे के नियन्त्रण कक्ष में ड्यूटी पर था। मैंने रेडियो मास्को को हमारे यान के चलने की घोषणा करते सुना।

जब मैं येनिसी के ऊपर था तो संचालक बेल्यायेव ने मुझे जहाज में पुनः प्रवेश करने का इशारा दिया। मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा था और अन्तरिक्ष से वापस लौटने की जल्दी में बिल्कुल नहीं था। इसलिए मैंने वायु-कक्ष के किनारे से एक बार फिर अपने को खींचा क्योंकि मैं यह पता लगाना चाहता था कि एक दम से बाहर निकलने के बाद क्यों चक्कर लेने पड़ते हैं। यह पता लगा कि यह चक्कर खिंचाव के कोण और अन्तरिक्ष कैपसूल की धुरी के सम्पर्क में उसकी तनिक भी स्थान परिवर्तन के कारण हो जाते हैं।

उसके बाद मैंने संचालक बेल्यायेव की आज्ञा का पालन किया और यान की ओर बढ़ने लगा। रास्ते में मैंने कैमरा भी उठा लिया था।

मैं उस वायु-कक्ष में सीधे घुसना चाहता था लेकिन यह बहुत ही कठिन हुआ मेरा अन्तरिक्ष वस्त्र बहुत फूल गया था इसलिए मैं एक दम से भीतर नहीं जा सका। उस वायु-कक्ष में फिर पहुँचने के लिए मुझे अपनी सारी शक्ति का प्रयोग करना पड़ा लेकिन जल्दी ही में पावेल बेल्यावेव के साथ उस कक्ष में था।

इस प्रकार वह प्रयोग खत्म हुआ जिसमें एक मनुष्य एक कैपसूल से अन्तरिक्ष में निकल सका। मैं अपने कक्ष के बाहर २० मिनट रहा था। इस बीच वाशकाड द्वितीय भूमध्य सागर से बहुत दूर जा चुका था। अब हम लोग प्रशान्त महासागर के पास आ रहे थे।

क्या मुझे डर लग रहा था।

मुझ से अक्सर भेद से प्रश्न किया गया है कि क्या मुझे डर लग रहा था? जब मैंने अन्तरिक्ष में प्रवेश किया तो क्या मैं यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोच रहा था कि मेरे जीवन को कुछ खतरा है। प्रत्येक बार मेरा उत्तर यही रहा है, नहीं मुझे डर नहीं लगा। अच्छा तो मुझे डर नहीं लगा।

चक्कर लगाते हुए मेरी अन्तरिक्ष वस्त्र सूर्य की किरणों, विकिरण, तापमान के अचानक अन्तरग और दूसरी खतरे की चीजों से बचाता था। परन्तु मुझे अपने अन्तरिक्ष वस्त्रों और उस यान में रखे हुए सब उपस्करों पर भरोसा था। मेरे विश्वास का कारण था उड़ान के पहले का महीनों लम्बा प्रशिक्षण।

अन्तरिक्ष उड़ान प्रशिक्षण के सोवियत स्कूल का एक महत्व-पूर्ण तत्व यह है कि उसमें सभी अन्तरिक्ष अध्येता सीधे उनके उद्देश्य के लिए प्रस्तुत किये गये नये युवकों और उपस्करों के विकास के विषय में भाग लेते हैं। वे हमारे लिए कोई रहस्य की बात नहीं रह जाते। हम अच्छी तरह जानते है कि अन्तरिक्ष में वे कैसे काम करेंगे।

उदाहरण के लिए मैं और बेल्यामेव दोनों ही इस यान के बनाने में इसके वायु कक्ष और इसके नियन्त्रणों, अन्तरिक्ष वस्त्र और सभी नये उपस्करों को जो हमारे अन्तरिक्ष यान में थे और वाशकाड प्रथम में नहीं थे बनाने में हमने हिस्सा लिया था। ये सब प्रायोजनाएँ हमारी उपस्थिति में स्वीकृत हुई। हमने इस उपस्कर को स्वतः परीक्षित किया था क्योंकि हम पूरी तरह से व्यावसायिक परीक्षकों पर निर्भर नहीं रहना चाहते थे। परीक्षणों के बाद हमने बहुत से ऐसे परिवर्तनों के लिए सुझाव दिये जिनको हम अनिवार्य समझते थे और निर्माता तथा इंजीनियरों ने निरन्तर हमारे सुझावों का ध्यान रखा।

यह ज्ञान भी मुझे उत्साहित करता था कि अगर अन्तरिक्ष में कोई भी बात गड़बड़ हुई तो संचालक बेल्यावेव जो मेरे परम मित्र भी हैं, सदा मेरी सहायता करेंगे। यदि आवश्यक होता तो वे यान को छोड़ देते और एक-दूसरी डोरी की सहायता से खुद भी अन्तरिक्ष में आ जाते।

इन परिस्थितियों में मैं डरता क्यों। सच बात तो यह है कि अगर मैं डरता तो अन्तरिक्ष यान पर जाता ही क्यों।

अन्तरिक्ष अड्डे पर जब हम वापस लौट रहे थे तो पत्रकारों ने मुझ से पूछा, "आपकी प्रसन्नता का सब से बड़ा क्षण कौनसा था। जब आप आन्तरिक्ष यान के बाहर आये या जब आप उसमें वापस पहुँचे। मैंने उत्तर दिया, "बाहर जाना मेरा सब से उत्साहपूर्ण क्षण था।" और मैं डींग नहीं मार रहा था।

हमारी उड़ान से वैज्ञानिकों के सभी अनुमानों की पुष्टि हो गई। मनुष्य के लिए अन्तरिक्ष यान को छोड़कर बाहर संचरण करना सम्भव है। इसके अलावा वह अन्तरिक्ष में सफलतापूर्वक काम भी कर सकता है। यह तो निश्चित ही है कि उसे अपनी गतियों का समायोजन करना सीखना होगा और अधिक भार-हीनता की असाधारण परिस्थिति में काम करने के लिए प्रशि-क्षित करना आवश्यक होगा। लेकिन यह कोई बहुत जटिल समस्या नहीं।

मेरा विचार है कि अब वैज्ञानिक और इंजीनियर अन्तरिक्ष यान को परस्पर जोड़ने अन्तर्ग्रहीय यात्रा के लिए चक्कर लगाते हुए भी भारी अन्तरिक्ष यानों को संघठित करने और स्थायी अन्तरिक्ष स्थान प्रयोगशालाओं का बनाने की समस्या पर गम्भी-रता से विचार कर सकते।

वायु बंध सरणी की भी उड़ान में पूरी परीक्षा हो गई। मेरे दृष्टिकोण से वैज्ञानिकों ने अन्तरिक्ष में प्रवेश करने के लिए इस तरीके को बड़ा ही सन्तोषजनक पाया। यह तरीका यान को सम्पूर्ण दबाव-रहित करने से किस प्रकार ज्यादा अच्छा है।

भविष्य में अन्तरिक्ष में प्रवेश करने की आवश्यकता एक यान से दूसरे यान में जाने या किसी भी यान के बीच एक स्थान बनाने या चक्कर लगाते हुए मरम्मत करने आदि के लिए अन्तरिक्ष में निकलने की आवश्यकता होगी। यह तो पूर्णतया सम्भव है कि यह काम कुछ चुने हुए अन्तरिक्ष यात्रियों का ही होगा। यान के सभी सदस्यों का नहीं। क्योंकि सभी लोगों को अन्तरिक्ष वस्त्र पहनना बिल्कुल ही बेकार होगा। परन्तु अगर सम्पूर्ण यान को ही दबाव रहित करना है तो तब सभी के लिए उन वस्त्रों की आवश्यकता पड़ती।

एक या दो अन्तरिक्ष यात्रियों के लिए अन्तरिक्ष वस्त्र पहनना वायु बंध से बाहर जाना और अन्दर के दरवाजे को अच्छी तरह बन्द कर देना, कहीं ज्यादा तर्क-संगत होगा। इससे एक अन्तरिक्ष यान के अन्दर के कक्ष में जहाँ पर सामान्य परिस्थितियाँ रहती हैं, दूसरे यात्री अपने-अपने काम करते रहते है जैसा वाशकोड प्रथम के यात्रियों को मारो फियोतिसटोव और येगोरोव ने किया था।

आइए हम एक-दूसरी समस्या पर विचार करें। अन्तरिक्ष यानों के टिकने का स्थान। यह तो सम्भव नहीं जान पड़ता कि अन्तरिक्ष यान एक-दूसरे तक जुड़ जाएँ। आवश्यकता एक सम्पर्क कक्ष की होगी जो वैसा ही होगा, जैसे पैसेन्जर गाड़ियों के डिब्बी को जोड़ने की युक्ति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी उड़ान से यह स्पष्ट हो गया कि कक्ष का दबाव बना रह सकता है, अगर निर्गम और वापसी के लिए वायुबन्ध का प्रयोग किया जाए। संचालक बेल्यायेव ने यह परीक्षा करली, जब मैंने यान को छोड़ा और जब मैं वापस आया तब कक्ष के दबाव में कोई अन्तर नहीं पड़ा। इस प्रकार उसके लिए अन्तरिक्ष वस्त्र को पहनना आवश्यक नहीं हुआ। यह बड़े ही महत्व की बात है क्योंकि कक्ष के भीतर काम करने के लिए अन्तरिक्ष वस्त्र कष्ट कर होते हैं।

कक्ष के भीतर की कार्य-परिस्थितियाँ सामान्य कक्ष के समान ही होती हैं। वाशकोड द्वितीय की उड़ान भर में कक्ष का तापमान १८ डिग्री सेंटीग्रेड से ऊपर नहीं गया। किसी भी समय हमारे ज्यादा पसीना नहीं निकला। अगर ऐसा होता तो हमारे शरीर का जल सूख जाता। अगर कभी-कभी पसीना आया भी तो उसका कारण या, शारीरिक मेहनत या थकान।

जब हमने उड़ान से वापस आकर अपना भार देखा तो हम दोनों ने एक पौण्ड से कुछ कम कमी हुई थी। परन्तु हम नहीं समझते कि इसका कारण अन्तरिक्ष में यात्रा करना था। सम्भवतः यह इसीलिए हुआ कि जब हम गए तो हम सबरे तोले गए थे और जब लौटे तो तौलने के समय शाम थी। दूसरे शब्दों में हमारी यह उड़ान प्रत्येक रूप से सामान्य थी।

यूनैस्को के द्वारा मैं उन सब को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिनकी बधाइयाँ हमें इस उद्देश्य के पूरा होने पर प्राप्त हुई हैं, जिसको पूरा करना हमारे लिए एक बहुत बड़ा अवसर था।

सचिवालय समाचार

महानिदेशक का कार्यालय

संयुक्त राज्य अमरीका के अंतरिक्ष यात्रियों को बधाई-संदेश ४ जून १९६५ को महानिदेशक ने संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति लिण्डन बी० जौन्सन को यह तार भेजा :

"मेजर मैक्डेविट और ह्वाइट की सफल जैमिनी उड़ान के अवसर पर मैं आपको वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के प्रति इस महान् योगदान के लिए बधाइयां भेजता हूँ। यूनैस्को अंतरिक्ष की इस विजय की प्रशंसा करती है, जिस के कारण मानवता के भविष्य के लिए महान् सम्भावनाएं दीखने लगी हैं। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए आपको और अमरीकी वैज्ञानिकों और अंतरिक्ष यात्रियों को मेरी शुभकामनाएं।"

प्राकृतिक विज्ञान

भूकम्प विज्ञान और भूकम्प इंजीनियरी सलाहकार समिति की पहली बैठक

यूनैस्को भवन पेरिस में ३० अप्रैल १९६४ को भूकम्प विज्ञान और भूकम्प इंजीनियरी के संबंध में एक अंतर्सरकारी बैठक के सुझाव के अनुसार भूकम्प विज्ञान और पृथ्वी के अंतर्भौतिकी संबंधी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के अध्यक्ष ने भूकम्प इंजीनियरी के अन्तर्राष्ट्रीय संस्था से भू-वैज्ञानिक विज्ञानों के अन्तर्राष्ट्रीय संघ, भू-मापन और भू-भौतिकी के अन्तर्राष्ट्रीय संघ और वैज्ञानिक संघों की अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् से परामर्श लेने के बाद में भूकम्प विज्ञान और भूकम्प इंजीनियरी में एक विशेषज्ञ समिति की नियुक्ति की है। अन्तर्सरकारी बैठक में यह सुझाव दिया गया कि यूनैस्को इस समिति को इस बैठक के सुझावों की कार्यान्वित, उसकी कार्यवाहियों को सहायता देने और सचिवालय सेवाएं प्रस्तुत करने के लिए परामर्श समिति के रूप में स्वीकार करे।

नवम्बर १९६४ में अपने तेरहवें अधिवेशन में यूनैस्को महासम्मेलन में अन्तर्सरकारी बैठक की रिपोर्ट को स्वीकार किया और महानिदेशक को यह अधिकार दिया कि इस समिति से परामर्श लेकर भूकम्प विज्ञान और भूकम्प इंजीनियरी के विकास के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय निधि से आर्थिक सहायता प्राप्त करके चलने वाले एक कार्यक्रम बनाएं।

इस परामर्श समिति की पहली बैठक बिलीसी (सोवियत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस) में १४ से १८ जून १९६५ तक हुई। इसमें इन बातों पर विचार किया गया :

(अ) अन्तर्सरकारी बैठक की सिफारिशों को कार्यान्वित करने के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का कार्य; इसमें यूनैस्को सचिवालय की रिपोर्ट और बिलीसी में ही ८ से १२ जून १९४५ तक इंजीनियरी भूकम्प विज्ञान और भूकम्प परखता के संबंध में कार्यदलों की रिपोर्टों पर विचार किया गया।

(ब) अपने कार्यक्रम के संधार में और भूकम्प विज्ञान तथा भूकम्प इजीनियरी के विकास के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय निधि द्वारा इस अन्तर्सकारी बैठक की सिफारिशों को कार्यान्वित करने के लिए यूनैस्को के कार्य पर विचार किया गया।

इस संबंध में समिति ने अन्तर्सरकारी समुद्र मापन आयोग और अन्तर्राष्ट्रीय जल-वैज्ञानिक दर्शक के लिए प्रयुक्त निधियों के सम्भव स्रोतों का इसके लिए भी अध्ययन किया।

जल-सल्वादोर को भूकम्प वैज्ञानिक मिशन

३ मई क सान-सालवादोर के नगर में एक भूकम्प आया जिसमें १०० मरे, ५०० व्यक्ति घायल हुए और ७००० व्यक्ति बेघर हो गये। इसके बाद यूनैस्को ने वहां भूकम्प वैज्ञानिक मिशन भेजे हैं।

चार व्यक्तियों के इस मिशन में दो भूकम्प वैज्ञानिक कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के डा० सिन्ना लोमनेट और संयुक्त राज्य तट और भू-सर्वेक्षण के मि० चार्ल्स एफ नुडंसेन हैं और दो एक भू-वैज्ञानिक केरेकास ए वेनेजुला भूकम्प विज्ञान संस्थान के निदेशक डा० गुन्थर फीडलर और मेक्सिको के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के इंजीनियर संस्थान के निदेशक भूकम्प इंजीनियरी के विशेषज्ञ डा० एमीलियो ब्रोजैनब्लूथ हैं।

मि० नुडसेव अपने साथ क्षेत्र भूकम्प मापी ले गये। इन उपकरणों के द्वारा वास्तविक भूकम्प के बाद-बाद के छोटे धक्कों को रिकार्ड करना और उनका अध्ययन करना सम्भव होगा और इस प्रकार वैज्ञानिकों को उस धक्के को समझना और यह निश्चय करना कि वह ज्वालामुखीय था या पृथ्वी के भीतर से आया था, इस भूकम्प के पहले तीन महीनों से बराबर छोटे-छोटे धक्के होते चले जा रहे थे और अब भी हो रहे हैं। इन तीन महीनों में भूकम्प वैजानिक प्रयोगशाला में प्रतिदिन ७०० धक्कों से भी ऊपर अंकित किये गये।

३ मई का भूकम्प बहुत ज्यादा नहीं था लेकिन राजधानी से केवल १० किलोमीटर की ही दूरी पर था और उसके धक्के तल में काफी ऊपर थे इसीलिए इससे इतनी हानि हुई।

ज्वार का पूर्वानुमान

यूनैस्को भवन पेरिस में ३ से ७ मई तक १३ देशों के ४५ सागर मापन विशेषज्ञ और इंजीनियरों की बैठक हुई। इन्होंने ज्वार का अनुमान करने के उपस्कर और ज्वार के विश्लेषण और पूर्वानुमान में विद्युत अंककों के उपयोग पर दो दो बाद गोष्ठियां कीं। इन बैठकों का आयोजन यूनैस्को और भौतिक सागर मापन की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था द्वारा किया गया था।

इसके द्वारा जिन विषयों पर विचार किया गया उनमें ज्वार के अनुमान लगाने के तथ्यों का मानकीकरण करने के तरके भी थे जिससे कि वे अधिक सफलता से विद्युत अंकों द्वारा प्रदर्शित किये जा सकें और दूर-दूर के निर्जन द्वीपों और ध्रुवीय प्रदेशों में ज्वार के अनुमानों का प्रयोग किया जा सके।

सांस्कृतिक कार्यवाहियाँ

पुरा संग्रह पुस्तकालय और पुस्तकालयाध्यक्ष स्कूलों की निर्देशिका

यह द्विभाषी (अंग्रेजी-फ्रांसीसी) निर्देशिका पुस्तक सूची अभिलेखन और शब्दावली संबंधी अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार समिति द्वारा स्वीकृत सुझाव के अनुसार बनाई गई है यह सुझाव समिति ने सितम्बर १९६१ में अपने पहले अधिवेशन में दिया था।

सियरा-लियोन के पुस्तकालय-मण्डल के प्रमुख पुस्तकालयाध्यक्ष मि० जे० टी० स्ट्रिक्टलैण्ड ने अंग्रेजी भाषी देशों के संबंध में सूचना दी और सेनेगल के अफ्रीका पुस्तकालय विकास के अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान के महा-सचिव ई० डब्ल्यू० डाजी ने फ्रांसीसी, पुर्तगाली और स्पेनी भाषी देशों के लिए सूचना दी।

जन संचारण

पुस्तकों का प्रोत्साहन

यूनैस्को ने सत्रहवीं अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक कांग्रेस के सम्मुख पुस्तकों के क्षेत्र में १९६२ में अपनी कार्यवाहियों की एक रिपोर्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत की । यह कांग्रेस वाशिंग्टन में ३० मई से ५ जून १९६५ तक हुई ।

इस संबंध में महत्वपूर्ण घटना नवम्बर १९६४ में महा-सम्मेलन द्वारा स्वीकृत एक प्रस्ताव था जिसमें प्रकाशन कार्य-वाइयों के महत्व को पारस्परिक सद्भावना और आर्थिक तथा सामाजिक भाव को बढ़ाने के एक साधन के रूप में जोर दिया गया था । इस संस्ताव में महानिदेशक से यह प्रार्थना की गई थी कि प्रकाशन व्यवसाय के साथ सहयोग करें और कम दाम वाली पुस्तकों विशेष रूप से विकासशील देशों में नव-साक्षर वयस्कों और तरुण व्यक्तियों द्वारा कम मूल्य की पुस्तक के प्रकाशन को बढ़ाएं और उसके प्रकाशन को प्रोत्साहन दें। १९६७-६८ के लिए विकासशील देशों में पुस्तकों के प्रकाशन और वितरण के लिए कार्यवाइयों का एक समायोचित कार्यक्रम बनाया जा रहा है ।

वर्तमान समय में बहुत सी ऐसी यूनैस्को कार्यवाइयाँ हैं जो पुस्तकों के प्रोत्साहन में नियमित रूप से योग देती हैं । पहले तो साक्षरता शिक्षण आन्दोलन नये पाठकों का एक विशाल जन-समुदाय बना रही है और उनके कारण पाठ्य-पुस्तकों और सभी प्रकार को सन्दर्भ तथा निर्देश पुस्तकों का बड़े स्तर पर उत्पादन किया जा रहा है ।

यूनैस्को विकासशील देशों में पाठ्य-पुस्तकों और दूसरी शिक्षा संबंधी कृतियों के प्रकाशन में अपने प्रादेशिक केन्द्र द्वारा योग देती हैं । उदाहरण के लिए अफ्रीका के लिए योन्दे केन्द्र (कैमरुन) और दक्षिख एशिया के लिए कराची केन्द्र ।

रिपोर्ट में पुस्तकों के मुक्त प्रवाह के संबंध में यूनैस्को की कार्यवाई की सूचना दे दी गई हैं । इस कार्य का परिणाम महा-सम्मेलन द्वारा अनेकों अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों और का कारण बना (शिक्षा संबंधी वैज्ञानिक और सांस्कृतिक सामग्री आयात संबंधी समझौता । प्रकाशकों के अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय संबंधी संगमन । राज्यों के बीच सरकारी प्रकाशनों और अभिलेखों के विनिमय संबंधी संगमन) । इसके कारण भी मुद्रा की कठिनाइयों को दूर करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय कूपन योजना चलाई गई और पुस्तकों के संबंध में ब्याज की दरों में कमी की गई ।

अन्त में यूनैस्को नियमित रूप से कोपीराइट पुस्तकालयों, पुस्तक-सूचियों और अभिलेखन तथा प्रकाशन से संबंधित उपयुक्त अन्तर्राष्ट्रीय और व्यावसायिक संगठनों के साथ योग करती है ।

सूचना का मुक्त प्रवाह

युगाण्डा ने संयुक्त राष्ट्र महासचिव के पास शिक्षा संबंधी वैज्ञानिक और सांस्कृतिक सामग्रियों के आयात संबंधी समझौते की स्वीकृति के उपकरण जमा किये हैं । अब १९५० में यूनैस्को महा सम्मेलन द्वारा स्वीकृत इस समझौते को लागू करने वाले देशों की संख्या ४७ हो गई है । इस समझौते के अनुसार पुस्तकों, समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं और कलाकृतियों पर आयातकर नहीं लगता । वृत्त-चित्र, शिक्षा संबंधी फिल्म, ध्वनि अंकन और वैज्ञानिक उपकरण यदि स्वीकृत संस्थाओं को भेजे जाएं तो उन पर भी आयातकर नहीं लगता ।

Published by the Director UNESCO South Asia Science Co-operation Office, N-1, Ring Road New Delhi and printed by Rakesh Press, Delhi. (Unesco Vritta Patrika, Vol. 11, No. 6, June, 1965.
Reproduction authorised : Credit line should read UNESCO.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

UNESCO

१००, सुन्दर नगर
नई देहली

यूनैस्को वृत्तपत्रिका

यह समाचार पत्र संयुक्त राष्ट्रीय शैक्षणिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संस्था के विश्व भर के कार्यों का मासिक प्रतिवेदन है

मासिक बुलेटिन | जून-जुलाई | अंक ८, संख्या ६-७

30-9-65

गुरुकुल काँगड़ी

विषय-सूची

१९६३-१९६४ के लिए प्रस्तावित कार्यक्रम और बजट :
सामान्य संकलपना और आयोजन
(रेने महू—कार्यवाहक महानिदेशक)
पॉल गेहीब
हिंसा के इस विश्व में एक नए मानववाद की खोज ७
(अरविंद बोस)
शिक्षा के नए तरीके और तकनीक ९
युवक और अन्तर्राष्ट्रीय भावना १२
किशोरों का मनोविज्ञान १४
(ग्लोरिया एमरसन)
पाँच एशियाई देशों में पठन सामग्री का उत्पादन और वितरण १६
टैगोर के एक मित्र के स्मृति चित्र १७
(अरविंद बोस)
समाचार १९
यूनैस्को सहायता द्वारा बम्बई शिल्प विज्ञान संस्थान का विस्तारण
यूनैस्को की बैठक में विश्व साक्षरता की आयोजना का मसौदा
शिक्षा की सुलभता का सर्वेक्षण
एशिया में जन संचार साधनों का विकास
एशिया में समाचार अभिकरणों का विकास
दक्षिण और पूर्वी एशिया के देशों के लिए शिक्षा सम्बन्धी टेलीविज़न प्रशिक्षण क्रम
आज के युवकों की समस्या
एशिया में शिक्षक—शिक्षा जानकारों का प्रशिक्षण
ब्रिटिश लेखक आर्थर सी० क्लार्क को कलिंग पुरस्कार
कला-शिक्षा की दो नई पट्टिकाएँ
प्रकाशन २३
चित्रों में संयुक्त राष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९६३-१९६४ के लिए प्रस्तावित कार्यक्रम और बजट : सामान्य संकलपना और आयोजन

रेने मह्

कायवाहक महानिदेशक

यूनैस्को महासम्मेलन का बारहवाँ अधिवेशन पेरिस में १९६२ के नवम्बर-दिसम्बर में हो रहा है, उसमें १९६३-६४ के लिए यूनैस्को के प्रस्तावित कार्यक्रम और बजट पर विचार होगा (अभिलेख १२/C/५)। यह अभिलेख कार्यवाहक महानिदेशक श्री रेने मह् द्वारा तैयार किया गया है।

यह मसौदा सदस्य देशों के पास पिछले अप्रैल में भेज दिया गया था, और कार्यकारी मंडल के सदस्यों के मत के अनुसार नवम्बर १९६१ में ही तैयार कर लिया गया था। उन लोगों ने सचिवालय द्वारा महासम्मेलन के ग्यारहवें अधिवेशन में किए गये निर्णयों के अनुसार तैयार की गई प्रारम्भिक रूप रेखा को देखा था।

सदस्य-देश अब कार्यवाहक महानिदेशक के प्रस्तावों पर विचार कर रहे हैं। यदि हो सका तो वे कार्यक्रम और बजट सम्बन्धी संस्तावों के मसौदे बना लेंगे जिन्हें सम्मेलन के प्रारम्भ होने के कम से कम छः सप्ताह पहले सचिवालय भेज देंगे। अपनी ओर से कार्यकारी मण्डल अपने ६२वें अधिवेशन में, जो अगस्त-सितम्बर में होगा, १२/C/५ अभिलेख के सम्बन्ध में अपना मत देगा। कुछ हफ्तों बाद ही सम्मेलन बोर्ड द्वारा दिए गये कार्यक्रमों पर निर्णय देगा।

वृत्तपत्रिका के अक्तूबर और नवम्बर १९६१ के अंकों में मि० मह् की उस भूमिका के अंश छपे थे जिसमें उन्होंने "प्रारम्भिक रूप रेखा स्तर पर किये गये प्रमुख नवीनीकरणों की ओर ध्यान आकर्षित किया था।" आगे पाठकों को अप्रैल में सदस्य देशों के पास भेजे गये मसौदे के परिचयात्मक पृष्ठों में महा-निदेशक द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम की सामान्य संकलपना के अन्तर्भूत निदेशन के विषय में कथन मिलेगा।

महासम्मेलन के प्रारम्भ होने के पहले एक पूरा अंक १९६३-१९६४ के प्रस्तावित कार्यक्रम के सम्बन्ध में निकाला जायगा।

बजट-बाह्य संसाधन

१९६३-६४ में यूनैस्को का सामान्य बजट, ३९,०००,००० डॉ० होगा, इसमें से २९,५८१,००० डॉ० कार्यक्रम संचालन और व्यवस्थाओं के लिए होगा। उसी समय के लिये सदस्य देशों द्वारा बनाये गये तकनीकी सहायता कार्यक्रम के अनुमान प्रादेशिक प्रायोजनाओं पर २,०००,००० डॉ० है, और राष्ट्रीय प्रायोजनाओं पर २,०००,००० डॉ० है, और राष्ट्रीय प्रायोजनाओं के लिए ११,३०५,००० डॉ०, सब मिलाकर १३,३०५,००० डॉ०। इस राशि में १९६१-६२ की अपेक्षा १२ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। विशेष निधि का योगदान और भी अधिक है और इसकी प्रगति अधिक महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि यह अन्दाज लगाया जा सकता है कि विशेष निधि के लिए जो धन यूनैस्को को कार्यकारी अभिकरण के रूप में १९६१-१९६२ के लिए मिला था वह था १०,०००,००० डॉ० और १९६३-१९६४ के लिए वही राशि दूनी हो गई है—२०,०००,००० डॉ०। इस प्रकार अगली बजट अवधि में यूनैस्को के बजट-बाह्य संसाधन ३३,०००,००० डॉ०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक हो जायँगे। और कुल राशि ७२,०००,००० डॉ० से बढ़ जायगी जब कि १९६१-१९६२ में राशि लग भग ५३,५०००,००० डॉ० थी।

अगले दो वर्षों में यूनैस्को के कार्य क्षेत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय कार्य की सम्भावना का पूरा अन्दाज लगाने के लिए वह काफी सहायता भी जोड़ लेनी चाहिये जो सदस्य देशों का सचिवालय के तकनीकी सहयोग से शिक्षा के लिए, संयुक्त राष्ट्र बच्चों की शिक्षा निधि और अन्तर्राष्ट्रीय विकास संस्था से मिलती है।

क्योंकि अभी कुछ दिन पहले अपने कार्यकारी मण्डल द्वारा संयुक्त राष्ट्र बच्चों की शिक्षा-निधि को शिक्षा क्षेत्र में अपनी कार्रवाइयों का विस्तार करने का अधिकार मिल गया है। अब दोनों सचिवालयों के बीच परामर्श चल रहे हैं, कि प्रारम्भिक शिक्षा के लिये एक सहायता कार्यक्रम की आयोजना की जाय। इसका सालाना बजट कई मिलियन डॉलरों का होगा। इसका खर्च बच्चों की शिक्षा निधि उठायेगी और यूनैस्को पर तकनीकी सहायता का दायित्व होगा।

अन्तर्राष्ट्रीय विकास संस्था को निकट भविष्य में उन देशों के शिक्षा के विकास में सक्रिय रुचि लेनी होगी जो अपने संसाधनों अथवा ऋण द्वारा अपनी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकतीं। इस सम्बन्ध में संस्था के नेताओं और सरकारों में सहयोग अपनी प्रारम्भिक स्थिति में है। परन्तु इस पहले वर्ष में ही यह सम्भावना पता चल रही है कि सचिवालय, जिसका योग इसमें केवल तकनीकी सलाहकार के रूप में ही होगा, यूनैस्को की अपने सदस्य देशों की सेवाओं में एक नया अध्याय जोड़ने की स्थिति में होगा।

यूनैस्को द्वारा प्रत्यक्षतः प्रशासित बजट-बाह्य संसाधन अथवा वे जिन्हें यूनैस्को सदस्य देशों के लाभ के लिए प्राप्त कर सकती है, साधनों में पर्याप्त वृद्धि के द्योतक हैं और उसकी अपनी राशि से बढ़ ही जायँगे। इस विकास के कई प्रभाव और परिणाम हैं। पहले तो हमें इस आवश्यक व्यावहारिक तथ्य को ध्यान में रखना चाहिये कि यूनैस्को आगे बढ़ गई है और कार्य-चालनों की सम्पूर्ण माला में इसकी कार्य-क्षमता बिल्कुल भिन्न स्तर पर हो गई है।

कार्यक्रम की एकता

परिभाषात्मक बातें ही ध्यान में रखने योग्य नहीं हैं। उतनी ही महत्त्वपूर्ण और अधिक जटिल गुणात्मक समस्यायें हैं जो कार्यक्रम की एकता और सन्तुलन पर असर डालती हैं। एकता के सम्बन्ध में यह डर था कि बजट-बाह्य संसाधनों की विविधता—प्रत्येक श्रेणी अपने उद्देश्यों और नियमों के लिए बाहरी संगठन पर आधारित है—विभिन्न कार्यों की उस एकता और केन्द्रोन्मुखता के विरोध में न पड़ने लगे, जिसके बिना सच्चे अर्थों में कोई कार्यक्रम हो ही नहीं सकता। इस खतरे को टालने के उद्देश्य से महासम्मेलन ने अपने पिछले अधिवेशन में सामान्य कार्यक्रम के संधार में ही तकनीकी सहायता प्रायोजनाओं के समेकन की स्वीकृति दी। १९६३-१९६४ के प्रस्तावित कार्यक्रम में समेकन की यह नीति आगे बढ़ाई जा रही है और विशेष निधि की प्रायोजनाओं पर भी लागू को जा रही है। अब से किसी विशेष खण्ड और विशेष उद्देश्य वाली सभी कार्रवाइयाँ एक साथ रक्खी जा रही हैं। इनमें राशि के उद्गम की संकेत तो होता है परन्तु प्रयत्नों की एकता में बाधक होने वाला बजट—सम्बन्धी अन्तर नहीं होता।

यह केवल एक अधिक तर्कसंगत प्रक्रिया के संस्थापन का प्रश्न ही नहीं है। प्रायोजनाओं को इस प्रकार वर्गों में विभाजित करना केवल सैद्धान्तिक महत्त्व ही नहीं रखता। उसका उद्देश्य यह है कि इन विभिन्न प्रकार की कार्रवाइयों में क्रम और सम्बन्ध पर जोर दिया जाय।—अधिकांश यह कहना सही होगा कि कार्रवाइयों के नहीं वरन् कार्रवाइयों के विभिन्न स्तरों के क्रम और सम्बन्ध पर। उदाहरण के लिये: बौद्धिक प्रेरणा; तकनीकी सहायता और पूर्व निवेशन। यह क्रम और प्रारूप ऐसा है कि इन कार्रवाइयों में पहली, आगे आने वाली कार्रवाई को प्रभावित करती है और अगली पहली को स्वीकार कर चलती है। इसी से यह कहना सत्य है—जैसा कि महासम्मेलन ने बराबर ही और स्पष्टता से कहा है और विशेषकर अपने ग्यारहवें अधिवेशन के अवसर पर भावी कार्यक्रमों की रूप रेखा बनाते हुये—कि नियमित कार्यक्रम—जिसमें निरन्तर सेवायें और निश्चित अवधि कार्रवाइयाँ दोनों ही आती हैं—वह आधार है, जिस पर यूनैस्को का समूचा कार्य आधारित है।

यहाँ एक बात देखने की आवश्यकता है। यदि नियमित कार्यक्रम का आधार बजट-बाह्य संसाधनों से सहायता प्राप्त कार्रवाइयों के रूप में काम करना है, तो यह महत्त्वपूर्ण है कि यह कार्यक्रम कुछ हद तक दृढ़तर किया जाय, साथ ही साथ इन कार्रवाइयों के विकास से परिचित भी रहे। दूसरे शब्दों में यद्यपि यह सत्य है कि तकनीकी सहायता और विशेष निधि यूनैस्को के अपने बजट से खर्च करवाये बिना ही ऐसी कार्रवाइयों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को आर्थिक सहायता देती है, जिसके लिए इस सहायता के न होने पर यूनैस्को को ही लदस्य देशों के प्रति दायित्व के कारण खर्च करना होता, फिर भी इससे यह नहीं कहा जा सकता कि यह प्रक्रिया अवश्य ही नियमित बजट में उन स्थलों के खर्च में कटौती का कारण होगी जहाँ इन अतिरिक्त स्थानों से खर्च हुआ है। बल्कि बहुत से स्थानों में तो—जैसे तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में बजट-बाह्य संसाधनों से सहायता प्राप्त इन कार्रवाइयों की वृद्धि को सुदृढ़ बनाने के लिए नियमित बजट में और धन खर्च करना पड़ा है। इसे अनुलम्ब सन्तुलन कहा जा सकता है और कार्यक्रम के समेकन का स्वाभाविक परिणाम है।

कार्यक्रम का सन्तुलन

परन्तु इस सन्तुलन के साथ ही हमें क्षैतिज सन्तुलन की आवश्यकता को भी भुलाना नहीं चाहिये। यह सन्तुलन समूचे कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में लगाये गये संसाधनों के अनुपात से सम्बन्धित है। यद्यपि महासम्मेलन ने इस सम्बन्ध में ऐसा निश्चित मत नहीं प्रकट किया जितना समेकन के बारे में फिर भी भावी कार्यक्रम के मूल्यांकन करते समय प्रकट किये गये, इसके मत के सम्बन्ध में सन्देह भी नहीं हो सकता। मत यह था—और यही मेरा भी मत है—कि एक होने पर भी यूनैस्को के कार्यक्रम को सन्तुलित भी होना चाहिये। स्वभावतः ही अग्रतायें तो होंगी—सदस्य देशों की आवश्यकताओं के अनुसार और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की क्षमता के अनुसार; कार्य का वह क्रम जहाँ अग्रतायें नहीं हैं, ऐतिहासिक संगति से हीन होगा। परन्तु सन्तुलन के सिद्धान्त का यह अर्थ नहीं है कि परिस्थितियों के विशिष्ट संयोजन के लिए उपयुक्त कार्यक्रम में सभी लक्ष्यों और कार्रवाइयों का समान व्यावहारिक महत्त्व हो। इसका अर्थ केवल इतना ही है कि प्रत्येक महत्त्वपूर्ण विकास के लिए—जो किसी भी क्षेत्र में अथवा किसी भी प्रयोजन से होता है—दूसरे क्षेत्र में भी विकास होना चाहिये। यह किन्हीं अमूर्त्त कारणों से नहीं क्योंकि यह तर्क किया जा सकता है कि यूनैस्को संविधान में कार्रवाइयों की कोई अग्रता निश्चित नहीं की गई वरन् केवल सामान्य व्यावहारिक कारणों से जो मानव मस्तिष्क के अनिवार्य तत्त्व हैं। संक्षेप में यह केवल विभिन्न अंशों के बीच परिभाषात्मक और स्वतः समंजन का ही प्रश्न नहीं है, वरन् मानवता के हितों के लिए प्रस्तुत कार्यक्रम की संरचना से उत्पन्न होने वाली परिमाणात्मक और गुणात्मक आवश्यकताओं के पूरा करने का प्रश्न है।

तकनीकी सहायता और विशेष निधि के संसाधन कम उन्नत प्रदेशों के आर्थिक विकास में सहायता करने के लिए ही प्रयुक्त हो सकते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि इन संसाधनों का उपभोग कुछ खण्डों में और कुछ विशेष प्रकार की कार्रवाइयों तक सीमित है। इनके बीच में शिक्षा और प्राकृतिक विज्ञान के अध्यायों में बजट बाह्य संसाधनों का ८७ प्रतिशत उपयोग में आता है। ५५ प्रतिशत पहले के लिए और ३२ प्रतिशत दूसरे के लिए।

नियमित बजट के आवंटन में बजट-बाह्य संसाधनों के ऐसे असमान विवरण का ध्यान रखना ही पड़ेगा जब तक कि हम गम्भीर असन्तुलन के लिए तैयार न हों। क्योंकि यह निःसन्देह कार्यक्रम का प्रश्न है। समस्या यह है कि आर्थिक विकास को दी हुई सहायता चाहे कितनी भी आवश्यक क्यों न हो, यूनैस्को का सारा ध्यान अपने ही ऊपर केन्द्रित न कर ले—और इसके कारण यूनैस्को के प्रमुख लक्ष्यों—विनिमयों का विकास, विचारों की तुलना, विश्व व्यापी स्तर पर बौद्धिक प्रगति को प्रोत्साहन; और मानवीय अधिकारों के सम्प्रेरण—आदि को हानि न पहुँचे। अतः हमारे लिए यह देखना आवश्यक है कि जब भी पहले प्रकार की कार्रवाई को तीव्र प्रेरणा मिले, दूसरी कार्रवाई भी दृढ़ अवश्य की जाय। पिछले अधिवेशन में कार्यक्रम आयोग के विचार विनिमय से स्पष्ट पता चला था कि इससे अधिक महत्त्वपूर्ण कुछ नहीं है। यही वह साधन है जिससे यूनैस्को की कार्रवाइयाँ और सदस्य देशों के साथ सम्बन्ध एकता और शान्ति के योग के रूप में अपने सच्चे महत्त्व को पहुँचते हैं साथ ही साथ व्यक्ति की स्वतन्त्रता और गरिमा का भी पूरा ध्यान रक्खा जाता है। इस प्रस्तावित कार्यक्रम के लिए यह बात एक निदेशक सिद्धान्त के रूप में है।

कार्य चालन-सम्बन्धी कार्रवाइयां

हम अब तकनीकी सहायता और विशेष निधि की प्रायोजनाओं में यूनैस्को के योग के सब से महत्त्वपूर्ण और सब से प्रभावशाली परिणाम—उसकी कार्यचालन-सम्बन्धी कार्रवाइयों के विस्तारण—पर आते हैं। इसका अर्थ है अलग-अलग सदस्य देशों की प्रार्थना पर और उनके सहयोग से प्रारम्भ की गई कार्रवाइयाँ, जो व्यावहारिक राष्ट्रीय जीवन के स्तर पर हों और उसे प्रत्यक्षतः प्रभावित करें। ऐसी कार्रवाइयाँ बहुत समय तक अपवाद स्वरूप रहीं, क्योंकि यूनैस्को को धन की कमी के कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोगात्मक प्रायोजनाओं में धन लगाना पड़ता था। हाल के वर्षों में नियमित कार्यक्रम और तकनीकी सहायता तथा विशेष निधि की प्रायोजनाओं तक इसका विस्तार हो गया है, यहाँ तक कि आज इन कार्रवाइयों पर संसाधनों के अधिकांश का उपभोग हो जाता है।

१९६३-१९६४ के प्रस्तावित कार्यक्रम में कार्यचालन-सम्बन्धी कार्रवाइयों को अधिक क्षेत्र प्रदान करके इस अपरिवर्त्तनीय वृत्ति को स्वीकार ही नहीं किया गया वरन् प्रमुख प्रयत्न उनको संगठित करने का रहा है। एक ओर उन्हें क्षेत्र में भली भाँति स्थापित करने की ओर प्रयत्न रहा है और टिकाऊ संस्थायें अथवा संरचनाओं की स्थापना की ओर निर्दिष्ट करके उनकी दीर्घावधि प्रभावशालिता को बनाये रखने के लिए रहा है। यह हम को प्रोत्साहक कार्यों के स्तर से ऊपर ले जाता है जो अक्सर निराशाजनक हुआ करते थे—अथवा उन प्रदर्शनों के स्तर से भी जिन्हें बराबर दुहराना पड़ता था। दूसरी ओर यह स्वीकार किया गया कि एक तो इस विकास के कारण एक नए सामाजिक भौगोलिक आधार पर समस्याओं का निरूपण करके कार्यक्रम में एक नवीन प्रभाव का समावेश हो जायगा और दूसरे शीघ्र परिणामों की इच्छा के कारण यूनैस्को के प्रशासन तन्त्र और क्रिया विधि में पर्याप्त परिवर्त्तन करना होगा।

प्रदेशों के आधार पर कार्य चालन कार्रवाइयों का वितरण जो शिक्षा के अध्याय में बहुत ही स्पष्ट है और प्राकृतिक विज्ञान के अध्याय में भी इस द्विमुखी आवश्यकता का अनिवार्य परिणाम है। यूनैस्को के लिये केन्द्रीकरण और विकेन्द्रीकरण के तुलनात्मक लाभ और खतरों पर सैद्धान्तिक दृष्टि से ही विचार किया गया है। यह अनुभव करना ही चाहिये कि यह प्रश्न व्यावहारिक दृष्टि से तय हो चुका है। इस सम्बन्ध के सिद्धान्तों के विषय में चाहे जो भी धारणा बनाई जाय, मुख्यालय से आज के यूनैस्को कार्यक्रम को—जो इतना विशाल और विविध है—लागू करना ही नहीं, उसकी आयोजना बनाना भी व्यावहारिक दृष्टि से असम्भव है। विशेष निधि के साथ हमारे सहयोग के अनुभव का यह एक अनिवार्य परिणाम है जिस पर हम पहुँचे हैं, और यदि हमें गम्भीर कुनिर्णयों से बचना है तो इसके प्रभाव को ठीक-ठीक समझ लेना चाहिए।

इस स्थिति का सामना करने के लिए १९६३-१९६४ के प्रस्तावित कार्यक्रम में क्षेत्र और मूल केन्द्र में कुछ प्रशासकीय आयोजनों का स्थान है। क्षेत्र में मिशन-प्रमुखों का जाल है, उसको सदस्य देशों की माँगों के उत्तर में और कार्यक्रम की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नियमित ढंग से सब प्रकार की सावधानी रखते हुये विस्तारित किया जायगा। राजनयिक प्रतिनिधित्व और शासनिक नियन्त्रण के लिए नये तन्त्र का निर्माण कोई इरादा नहीं है। प्रयोजन यह है कि स्थानीय रूप से अनिवार्य समायोजन और कार्रवाइयों का आवश्यक पर्यवेक्षण कर लिया जाय, यह कई देशों के लिए मुख्य केन्द्र में नहीं हो सकता क्योंकि उनकी संख्या बहुत है और राष्ट्रीय जीवन में उनको समेकित करने में समस्यायें बहुत जटिल हैं। मिशन-प्रमुख सब से पहले कार्यक्रम के आयोजन और लागू करने के लिए हैं।

इन्हीं कारणों से मुख्यालय में शिक्षा विभाग में उन एकांशों को प्रादेशिक स्तर पर स्वीकार करना आवश्यक समझा गया है, जो कार्यचालक कार्यवाइयों के कार्यक्रम की व्यवस्था और निर्देशन करने के लिए हैं। इस कार्यक्रम की पहली आवश्यकता यह है कि समस्याओं को स्थानीय परिस्थिति के विशिष्ट सम्बन्ध में देखना—परखना और उनका सुझाव सोचना चाहिये। विभाग के कार्य चालन प्रभाग के प्रादेशिक संगठन का प्रयोजन इसके लिए आवश्यक विशेषज्ञता और निरन्तरता प्राप्त करना है।

परन्तु यह प्रक्रिया वहाँ रुक जाती है। कार्यचालन कार्रवाइयों की आवश्यकताओं के लिये इस तन्त्र को समंजित करना कार्यक्रम की अनिवार्य विशेषताओं को प्रभावित नहीं करता। यह विशेषतायें हैं, विश्व व्यापी स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का उद्यम, इसकी अन्तर्भूत एकता और उद्देश्य के सम्बन्ध में सन्देह नहीं हो सकता। अब भी यूनैस्को सदस्य देशों को अपनी विशेष समस्यायें सुलझाने के लिये प्रत्येक क्षेत्र में जितने अधिक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्भव हो, अनुभवों का मिलान ज्ञान एकता करती और विचारों का सन्तुलन करती है, उसकी सब कार्रवाइयों के लिए यही प्रक्रिया है। और पहले की तरह अब भी यूनैस्को अन्याय और तनावों को घटाने वाली आर्थिक और सामाजिक प्रगति द्वारा, और मानवता की बौद्धिक और नैतिक एकता की व्यावहारिक वास्तविकता के नित्य प्रदर्शन द्वारा शांति की रक्षा का प्रयत्न करती है। इसी प्रकार यूनैस्को व्यक्तिगत प्रश्नों और व्यावहारिक परिस्थितियों को हल करती है और यही उसके समूचे कार्य भार का उद्देश्य और संगति है। इस कारण कार्य चालन-सम्बन्धी कार्रवाइयों के विस्तारण से उत्पन्न होने वाले, प्रायोजनाओं के प्रादेशिक अथवा राष्ट्रीय विलगीकरण की वर्त्तमान प्रवृत्ति को पूरे कार्यक्रम की एकता और महत्त्व के लिए खतरे से पूर्ण समझना भूल होगी। स्वभावतः ही सावधानी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बौद्धिक और प्रशासकीय नेतृत्व के अन्तर्राष्ट्रीय संधार की रक्षा करनी होगी। और यह तो किया ही जा रहा है। इन परिस्थितियों में हमें यूनैस्को की आर्थिक व्यावहारिकता की ओर प्रगति के चिन्ह रूप में इस प्रवृत्ति का स्वागत करना चाहिये।

शिक्षा के लिए अग्रता

ग्यारहवें अधिवेशन में महा सम्मेलन ने ८८६.२ संस्ताव में स्पष्टतः इस बात का आभास दिया था कि भावी कार्यक्रमों और बजटों में शिक्षा को पहले से भी अधिक अग्रता मिलनी चाहिये। यही निर्देश प्रस्तावित कार्यक्रम की अर्थव्यवस्था में व्याप्त है। यदि ८.६२ संस्ताव के अनुसार हम शिक्षा की संकल्पना में सभी प्रकार की शिक्षा लें जैसे—उच्च शिक्षा जिसका प्राकृतिक विज्ञान सामाजिक विद्याओं, सांस्कृतिक कार्रवाइयों और जन संचार के अध्यायों में प्रमुख स्थान है—तथा और भी सब तरह की शिक्षा जिसमें प्रौढ़ शिक्षा भी है,—तो हम देखेंगे कि इसके लिए सामाजिक विद्याओं, सांस्कृतिक कार्रवाइयों, जन संचार और अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय व्यवस्था के अध्यायों में अनेकों प्रायोजनायें मिलती हैं, और यूनैस्को के सभी संसाधनों को ले लें जो तकनीकी सहायता विशेष निधि और नियमित बजट के अन्तर्गत आते हैं तो हम देखेंगे कि १९६३-१९६४ में शिक्षा-सम्बन्धी कार्रवाइयों के लिए ३१,०००,००० डॉ० का आयोजन है। १९६१-१९६२ से यह राशि, ९,४००,००० डॉ० अधिक है। यह वृद्धि ४४ प्रतिशत है, अन्य किसी मद में इतनी वृद्धि नहीं हुई है—सभी कार्यक्रम—कार्य चालनों और सेवाओं के संसाधनों में कुल मिलाकर ३८ प्रतिशत वृद्धि हुई है।

संस्ताव ८.६२ के अनुसार १९६१-६२ में आर्थिक और सामाजिक विकास से सम्बन्धित संयुक्त राष्ट्र के संगठनों को विकास शील देशों की शिक्षा आवश्यकताओं का अधिक ध्यान देने की ओर उन्मुख करने का प्रयत्न किया गया था। ये प्रयत्न व्यर्थ नहीं गये हैं और इस सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई है। यह कहा जा सकता है कि अब विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा आर्थिक और सामाजिक विकास के एक अनिवार्य तत्त्व के रूप में शिक्षा के मूल योग को स्वीकार किया जा रहा है। सब से पहले तो यह निवेश-पूर्व स्तर पर स्पष्ट हो जाता है, क्योंकि विशेष निधि द्वारा कार्यकारी अभिकरणों के रूप में प्रायोजनाओं का भार प्रायः प्राप्त करने में खाद्य कृषि संस्था के बाद यूनैस्को का ही नाम है। परन्तु वियना में सितम्बर १९६१ में पुनर्निर्माण और विकास के अन्तर्राष्ट्रीय बैंक के सम्मेलन पर किये गये कथनों, और अन्तर्राष्ट्रीय विकास संस्था तथा अन्तर अमरीकी बैंक के नेताओं की मनोवृत्ति से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि निकट भविष्य में वास्तविक निवेशन व्यय के लिए भी यही प्रवृत्ति रहेगी।

यह निर्देश की करना आवश्यक है कि ये संस्थायें शिक्षा में उसी सीमा तक रुचि लेती हैं जहाँ तक वह आर्थिक विकास को प्रभावित करती है। इसलिए उनकी सहायता शिक्षा के उन्हीं खण्डों के लिए होती है जिनका आर्थिक प्रगति पर सीधा और स्पष्ट योग होता है। जैसे कि तकनीकी शिक्षा, वैज्ञानिक शिक्षा और उच्च शिल्पवैज्ञानिक प्रशिक्षण। यह भी सत्य है कि सचिवालय की निरन्तर प्रार्थना से जो महा सम्मेलन और कार्यकारी मण्डल के निर्देशों से पुष्ट होती है, तथा शिक्षा मन्त्रियों और दूसरे शिक्षा सम्बन्धी अधिकारियों के प्रादेशिक सम्मेलनों की सिफारिशों के कारण, अब कहीं-कहीं शिक्षा को आर्थिक सहायता देने के मानदंडों में काफी विस्तार आ गया है। उदाहरण के लिए विशेष निधि माध्यमिक शिक्षा के लिए—कम से कम वहाँ जहाँ उसकी स्थिति बहुत ही बुरी थी—अपनी सहायता को विस्तृत करने के लिए शीघ्र तैयार हो गयी। यह भी आशा की जा सकती है कि शिक्षा सम्बन्धी विकास की सुधारी हुई आयोजना और उस आयजना को सामान्य आर्थिक और सामाजिक विकास के साथ समेकित करने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति आर्थिक संगठनों को शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं और उनके परस्पर सम्बन्ध का अधिक सही चित्र प्रस्तुत करेंगी। परन्तु फिर भी यह सच है कि सामान्य रूप से शिक्षा के क्षेत्रों में इन संगठनों की कार्रवाई जैसा कि समूचे कार्यक्रम के लिए पहले कहा जा चुका है—वैसा ही असन्तुलन उत्पन्न करेगी। शिल्पवैज्ञानिक प्रशिक्षण के लिए सामान्य शिक्षा की अपेक्षा बहुत अधिक सहायता दी जा रही है।

शिक्षा के इन दोनों पक्षों के बीच पर्याप्त सन्तुलन बनाये रखने के शिक्षण-शास्त्र सम्बन्धी कारण तो हैं ही शिल्प वैज्ञानिक प्रशिक्षण के हित में भी यही है—सिद्धान्त पर विचार करने से हमें यही पता चलता है—असन्तुलित स्थिति को नियमित कार्यक्रम के अन्तर्गत यूनैस्को की कार्रवाइयों की शिक्षा के दूसरे स्तरों और प्रकारों को सुदृढ़ बनाकर दूर करना चाहिए। शिक्षा सर्व प्रथम एक मानवीय अधिकार है और उसी रूप में उसे स्वीकार करना होगा—बिना मानव अथवा समाज के लिए उसके व्यावहारिक उपयोग पर ध्यान दिये। शिक्षा का प्रयोज्यन मानव है जो अपने में ही एक उद्देश्य है, शिल्प वैज्ञानिक प्रशिक्षण का आर्थिक प्रगति की भाँति ही मानव की भौतिक उन्नति के अतिरिक्त और कुछ मूल्य नहीं है। शिक्षा के क्षेत्र में यूनैस्को के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य को इस द्विमुखी नैतिक आवश्यकता से ही प्रेरणा मिलनी चाहिये। इसी से यद्यपि हम शिल्प वैज्ञानिक प्रशिक्षण पर दिये जाने वाले जोर को आधुनिक समुदायों के सामान्य विकास की पहली आवश्यकता और अल्प-विकास से दलित विशाल जन-संख्या की प्रभावशाली जागृति की आवश्यकता के रूप में स्वीकार कर लेते हैं परन्तु हमने नियमित बजट के संसाधनों का पूरा उपयोग अनिवार्यतः मानववादी दृष्टि से शिक्षा की सर्वोपरि प्रगति के लिए करने का प्रयास किया है।

पॉल गेहीब

हिंसा के इस विश्व में एक नये मानववाद की खोज

[अरविंद बोस]

आदर्शों में जीने का अर्थ है असम्भव से इस प्रकार व्यवहार करना जैसे वह सम्भव हो। —गेटे

प्रत्येक शिशु इस संदेश का वाहक होता है कि ईश्वर अब भी मनुष्य से निरुत्साह नहीं हुआ। —टैगोर

गेटे और टैगोर के ये उद्धरण हमारे युग में एक शिक्षाविद् के रूप में पॉल गेहीब के कार्यों का कारण और तत्त्व ठीक-ठीक बतलाते हैं। प्रत्येक देश की शासनिक शिक्षा-नीति एक पिटी-पिटाई लीक पर चलने लगती है, तभी हमें पेस्तालोज़ी, टैगोर और गेहीब की आवश्यकता पड़ती है जो उस मृत मशीनी तन्त्र में नये प्राण फूँकें, अज्ञात में एक मार्ग की अन्वेषणा करें, और हमें अनुकरण करने तथा असम्भव की संप्राप्ति की ओर प्रेरित करें।

यूनैस्को के घोषणापत्र में कहा गया है कि शांति, भ्रातृत्व और उदारता के आदर्शों के बीज बालकों के सुकोमल हृदयों में ही डाल देने चाहिए, तभी हम आज की दुनिया से जो प्रतिस्पर्धाओं का जंगल बन चुकी है, उभर सकेंगे। इसी ऊँचाई से हमें "पॉलस" की कारवाइयों को देखना चाहिए—उनके बालक और सहयोगी उन्हें इसी स्नेहयुक्त नाम से पुकारते थे।

उन्होंने दस अक्तूबर १८७० को जर्मनी के रॉन पर्वतों में गीसा में जन्म लिया और अपने अत्यन्त प्रिय बालकों और सहयोगियों के बीच गोल्डर्न, स्विट्ज़रलैंड में पहली मई १९६१ को उनकी मृत्यु हुई।

उनके पिता और पितामह औषधि-रसायन-शास्त्री थे। उनके पिता एक कार्यशील जीव-वैज्ञानिक थे और काइयों के विशेषज्ञ भी थे। उनके पास विश्वभर की काइयों का अनोखा संग्रह था। छोटे बालक ने अपने पिता के इस शौक़ से बड़ी प्रेरणा ग्रहण की और उनके साथ काई की खोज में दूर-दूर के जंगलों में भटकता था। तभी आठ वर्ष की आयु में उस अति-सचेत बालक ने अपना नाम लिखा था: "पॉल गेहीब प्राकृतिक विज्ञान का विद्यार्थी।"

दसवीं पास करने के बाद उन्होंने २० सत्रों तक बर्लिन और जेना के विश्वविद्यालयों में अध्ययन किया। वे तो ऐसे थे जिन्हें जर्मन लोग शाश्वत विद्यार्थी कहते हैं। उनकी ज्ञान की पिपासा कभी शांत ही न होती थी, पूर्ण-रूपेण समेकित व्यक्तित्व बनने की उनकी आकांक्षा (जिसमें विज्ञान और मानववाद, दर्शन और कार्यों का सम्मिलन हो) कभी समाप्त ही न होती थी।

गेटे और शिलर के मित्र विलियम बॉन हम्बोल्ट जीवन भर उनके प्रियतम शिक्षक रहे। विश्वविद्यालय में उन्होंने धर्म, दर्शन, पूर्वी और प्राचीन भाषाओं (लैटिन, ग्रीक, हिब्रू, अरम्मिक) शरीर विज्ञान, और मनोविश्लेषण का अध्ययन किया। धर्म की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिग्री लेकर वे पादरी बने। परन्तु मंच से पहला भाषण देने के बाद ही उन्हें बालकों को शिक्षित करने की पुकार अपनी अन्तर में अनुभव हुई।

प्रो० रुडॉल्फ़ यूकन के अधीन उनके डॉक्टरेट के शोध प्रबन्ध का शीर्षक था, "स्पिनोट्सा की ईश्वर विषयक संकल्पना और प्राचीन काल के जर्मन विचारकों पर उसका प्रभाव।" परन्तु वह निर्धन विद्यार्थी जिसने बड़े ही आयास से डॉक्टरेट की फ़ीस के लिए ३०० मार्क बचाने थे, सोचने लगा कि उनका अधिक अच्छा उपयोग एक शराबी के नाशोन्मुख परिवार को बचाने में होगा। इसलिए वे कभी डॉ० न बन सके जो उस समय जर्मन उच्च वर्ग में अत्यधिक महत्त्व की बात थी। किन्तु उनकी १०वीं वर्ष गाँठ पर ट्यूबिंगन विश्वविद्यालय और टैगोर की विश्व-भारती दोनों ने ही उन्हें मानार्थ डॉक्टरेट प्रदान की।

विश्वविद्यालय छोड़ने के पहले ही पॉलस को यह लगता था कि उनका सच्चा व्यवसाय बड़े-बड़े नगरों के गरीब बच्चों के लिए है। और उन्होंने उनके बीच बर्लिन के सबसे निर्धन मुहल्ले में काम शुरू किया। १९०२ में वे हॉबिंदा में हर्मान लीत्स के पास चले गए जो नई शिक्षा के प्रारम्भिक प्रणेताओं में से थे। उन्होंने पॉलस को अध्यक्ष भी बना दिया। दो वर्ष पश्चात् लीत्स ने उसे किराये पर दे दिया क्योंकि अनेकों माँ बाप अपने बच्चों को पॉलस की देख-रेख में ही रखना चाहते थे उन्होंने विकर्सडॉर्फ़ में "मुक्त स्कूल समुदाय" प्रारम्भ किया।

इसके पश्चात् एक धनी जर्मन उद्योगपति की पुत्री-एडिथ कसीरे पॉलस के पास किंडरगार्टन की शिक्षिका के रूप में आई। उन्हें अपने अत्यन्त धनी परिवार के संकीर्ण नियन्त्रणों से चिढ़ थी। उस समय यह क्रान्ति से कम न था कि एक तरुणी चुप-चाप शान्तिपूर्वक एक धनी की प्रतीक्षा न करती रहे, जो उससे विवाह की प्रार्थना करे, वरन् कार्य करने और अपने व्यक्तित्व के विकास का अधिकार माँगे। उन्होंने भी पॉलस की भाँति बर्लिन के गंदी बस्तियों में रहने वाले बच्चों से ही प्रारम्भ किया था।

तीन वर्ष पश्चात् वे पॉलस की पत्नी बन गई और फिर एक चट्टान की तरह धैर्यपूर्वक ५२ वर्ष के लगभग उनका साथ दिया। उन्होंने उनकी सहायता की, उन्हें बनाये रखा और अन्त तक उनकी सेवा की। और अब भी निःस्वार्थ भाव से उनके आदर्श पर काम कर रही है। एडिथ के बिना पॉलस के स्वप्न कभी सत्य नहीं हो सकते थे। और इससे एडिथ के पिता स्टैड्राट मैक्स कैसीरे की महत्ता प्रकट होती है कि जिन्होंने पहले विवाह का कटु विरोध किया था उन्हीं ने अप्रैल १९१० में बड़े-बड़े मैदानों और बारह घरों से युक्त ओडेनवालशूल की स्थापना के लिए अपने धन को उदारता से उँडेला।

(साहित्य, कला और संगीत में) जर्मनी के जागृत समाज के बालक पॉलस के स्कूल में आने लगे जहाँ अन्तिम कैसरों के दिनों के दम घोटने वाले वातावरण में एक नवीन वायु का आभास मिलता था। स्कूल ने खूब उन्नति की परन्तु तूफ़ान की तरह नाज़ीवाद आया और एक नई बर्बरता को साथ लाया। हिटलर चाहता था कि गेहीब रहें क्योंकि उनकी अन्तर्राष्ट्रीय-विशेष कर अमरीका में ख्याति बहुत थी परन्तु गेहीब तो, जैसा आइंस्टीन ने उन्हें युद्ध के बाद लिखा "उन थोड़े से साधु व्यक्तियों" में से थे जिन्होंने जर्मनी के मान को बचाये रखा।

तो अपनी पीठ पर थैले लादे हुए पॉलस और एडिथ १९३४ में विलिहमटेल की भूमि में पहुँच गए और फिर प्रारम्भ से प्रारम्भ किया। स्विट्ज़रलैंड में न उनके पास धन था, न समुचित प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक और न अधिक शिष्य (युद्ध शीघ्र ही प्रारम्भ हो गया था)। उन्हें अपने स्कूल की जगह पाँच बार बदलनी पड़ी। अन्त में उन्हें १९४६ में बर्नीस ओबरलैंड गोलडर्न में **मानवता स्कूल** के लिए स्थायी आवास मिला।

मैंने एडिथ गेहीब से सुना है कि उन्हें युद्ध काल में लैकनोआ में एक छोटे से "प्रकृति प्रेमियों के घर में" किये गए अपने काम के विषय में सबसे अधिक गर्व था। यहाँ दण्डित बच्चे जिनके पास कुछ न था, कई देशों से भागे हुए और कंसंट्रेशन कैंपों से भयभीत बच्चे आते थे और बाहर की दुनिया के रक्त स्नात और वातावरण के विषाक्त होने पर भी उन्हें यहाँ घर मिलता था और स्नेह की उष्मा। और गेहीब दम्पति के पास जो भी था इन निःसहाय बच्चों के साथ बाँट लेते थे।

जब युद्ध समाप्त हो गया तो अमरीकनों ने (वही उस समय सत्ताधारी थे) पॉलस को लौट कर ओडेनवालशूल चलाने को कहा। परन्तु उन्होंने जाने को मना कर दिया क्योंकि जैसा उन्होंने मुझसे कहा—"मेरे देश-वासियों ने मुझे बहुत निराश किया है।" परन्तु इससे गहरा कारण भी था। सचमुच जो महान् व्यक्ति होते हैं उनके मन विकसित होते हैं और बढ़ते रहते हैं स्थिर नहीं रहते। जैसे टैगोर का छोटा सा प्रयोगात्मक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूल बढ़कर अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय बन गया वैसे ही पॉलस दम्पति के विचार "मानवता के स्कूल" की कल्पना कर रहे थे जहाँ हर वर्ष, जाति और धर्मों के बालक एकत्र हों जिससे वे परस्पर विश्व जनीन उदारता और जीवन तथा संस्कृति के ढंग सीखें। और यह उस देश के अतिरिक्त और कहाँ हो सकता है जहाँ चार-भाषा-भाषी लोग स्नेह और सद्भाव से रहते हैं। आज इस "मानवता स्कूल" में १४ देशों के बच्चे आते हैं।

टैगोर के स्कूल में शिक्षित होने के कारण मुझे ओडेनवाल-शूल देखने की इच्छा थी। मैंने उन दोनों स्कूलों की इतनी अधिक बातें समान देखीं कि टैगोर को पॉलस से मिलने के लिए कहा। वे दोनों जीवन भर के लिए मित्र हो गए।

पॉलस के मित्रों में रोमा रोलाँ, गाँधी, टैगोर, अलबर्ट स्क्वीट्ज़र आइंस्टीन जैसे लोग थे जिन्होंने अपने-अपने युग पर अपनी छाप लगा दी। इन लोगों के बीच क्या समानता थी? टैगोर के शब्दों में वे सभी :

"यात्री थे

जिनकी शाश्वत यात्रा भविष्य की ओर है। बाधाओं पर चढ़ते हुए, पर्वतों को पार करते शून्य देश से आगे वे चल पड़े, अज्ञात की ओर, अनदेखे की ओर उनके रक्त में प्रतिध्वनित होती है : 'सब सीमाओं के पार : जाओ पार'।"

शिक्षा में नये तरीके और तकनीक

यूनैस्को भवन, पेरिस में अभी हाल में बीस शिक्षा जानकारों, मनोवैज्ञानिकों और संचार विशेषज्ञों की बैठक हुई। इसका प्रयोजन यह था कि शिक्षा की प्रमुख समस्याओं को सुलझाने के लिए नये तरीकों और तकनीकों की खोज की जाय।

१९६० में यूनैस्को के महासम्मेलन द्वारा फ्रांसीसी दार्शनिक गास्ताँ बर्ज के प्रेरणा पर एक संस्ताव स्वीकृत किया गया था उसी के अनुसार यह अन्तर्राष्ट्रीय बैठक आयोजित की गई। यह संस्ताव विशेषकर विश्व में शांति के बनाये रखने और सभ्यता के विकास के साथ असंगत प्रतीत होने वाले अनेकानेक अनपढ़ों का अस्तित्व" और "केवल प्राचीन उपायों द्वारा समस्त निरक्षरता को दूर करने की असंभाव्यता-विशेषकर विश्व में वर्त्तमान शिक्षकों के अभाव की परिस्थिति में"— ध्यान आकर्षित करता है। दूसरी ओर संस्ताव में इस बात पर भी जोर दिया गया है कि "वर्त्तमान तकनीकी संभावनायें और आगामी वर्ष में इस क्षेत्र में होने वाली प्रगति के कारण हमारे पास विशालतर साधन होंगे।

शिक्षा के इस विश्व कार्यक्रम में अल्प उन्नत देशों की विशेष रुचि है क्योंकि यह प्रौढ़ों और बालकों दोनों की ही शिक्षा से संबंधित है। जब हम उन संसाधनों की बात करते हैं जो आधुनिक शिल्पविज्ञान के कारण शिक्षा-जानकारों के लिए सुलभ हैं, हमारे ध्यान में अधिकतर केवल दृश्य और श्रव्य प्रसारण होता है, इसकी संभावनायें दिन प्रति दिन अधिक प्रतीत हो रही हैं, यह बात सैटेलाइट के प्रयोग से रेडियो और टेलीविजन प्रसारण की आयोजनाओं से प्रकट है। साथ ही विद्युत् विज्ञान के प्रयोगों में भी क्रान्ति हो रही है—विशेषकर संगणकों की दृष्टि से। शिक्षण-प्रक्रिया से लेकर शिक्षा प्रशासन तक की शिक्षा संबंधी समस्याओं के साथ इसके प्रयोग का अध्ययन अभी प्रारंभ हुआ है। यूनैस्को द्वारा संयोजित बैठक में विशेषज्ञों ने क्रम से इन बातों का अध्ययन किया :—

संचार और शिक्षण के नए तरीके और तकनीक जो अब प्रयुक्त हो रहे हैं और शिक्षा तथा शिक्षा संबंधी प्रशासन में जिनका स्पष्ट योग है;

वे शिक्षा १९०५ (स्कूल, स्कूल-बाह्य प्रौढ़) जिन पर ये तकनीक प्रभावशाली ढंग से लागू हो सकते हैं।

इन तरीकों के लागू करने से उत्पन्न होने वाली मनो-वैज्ञानिक, समाज वैज्ञानिक और शिक्षण-शास्त्र संबंधी समस्याओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पारंपरिक शिक्षा संबंधी प्रक्रियाओं का पुनर्मूल्यांकन को शिक्षा-पद्धतियों की संरचना संगठन और शिक्षण व्यवसाय के लिये इन नये तरीकों के प्रभाव;

इन तरीकों को लागू करने के आर्थिक प्रभाव, आवश्यक प्रयोगात्मक और सैद्धांतिक शोधकार्य, अग्रता-क्षेत्र और दीर्घावधि विकास के लिये आवश्यक कार्य के प्रकार।

संक्षेप में, जैसा कि यूनैस्को के सहायक महानिदेशक श्री माल्कम आदिसेषिया ने कहा—वे कार्यवाहक महानिदेशक के रूप में बैठक की कार्रवाई प्रारंभ कर रहे थे—उद्देश्य है, शिक्षा-संबंधी प्रयोजनों के लिए सबसे नवीन तकनीकों की संभावनाओं पर विचार करना, आगामी वर्षों में उनके प्रयोग से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का अध्ययन, और शोध तथा कार्य की अंतर्राष्ट्रीय आयोजनाओं की स्थापना करना।

अपने सुझावों को प्रस्तुत करने के पहले विशेषज्ञों ने नये शिक्षा तरीकों के प्रयोग और योग के संबंध में कुछ सामान्य विचार निश्चित करने का प्रयास किया।

मानवीय संसाधनों की दृष्टि से शिक्षा को एक दीर्घावधि पूंजीनिवेश मानना चाहिये। शिक्षा के सम्मुख जो कार्य हैं, उनकी विशालता और तात्कालिकता के कारण—विशेषकर विकासशील प्रदेशों में जहाँ भी संभव हो शीघ्रातिशीघ्र प्राचीन तरीकों को सामान्य उपभोग में लाना चाहिये, परंतु इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि आयोजकों, प्रशासकों और दूसरे शिक्षा—नेताओं का ध्यान आधुनिक उपायों की संभावनाओं की ओर भी आकर्षित किया जाय और यह अच्छा होगा कि पारस्परिक शिक्षा प्रक्रियाओं में सुधार करने के लिये इन आधुनिक तरीकों का प्रयोग कैसा रहेगा यह भी जान लिया जाय।

इन आधुनिक तरीकों को वर्त्तमान राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय कार्यक्रमों के अनुकूल महत्त्वपूर्ण होगा। इन नये तरीकों पर चाहे उनके तात्कालिक उपयोग की दृष्टि से विचार किया जाय और चाहे दीर्घावधि विकास की दृष्टि से, एक मूल सिद्धान्त सदैव मन में रखना चाहिये—वह यह कि इन उपायों को मानव की सेवा करनी चाहिये। जो भी तरीके उपयुक्त हों शिक्षा में किसी न किसी तरह एक शिक्षक कुछ शिष्यों के संपर्क में आयेगा ही।

शिक्षक और शिष्यों की यह पारंपारिक स्थिति जिसमें कई प्रकार के शिक्षण-सहायकों का प्रयोग किया जाता है। पाठ्यपुस्तकें, शिक्षकों की निदेशिकायें, नक्शे, अनुपूरक पठन सामग्री प्रयोगशाला और कार्यशाला के उपकरण और उपस्कर) से सभी परिचित हैं। परंतु आधुनिक उपायों में फिल्म, रेडियो और विशेषकर टेलीविजन आते हैं। इनके कार्यक्रमों द्वारा शिक्षण की संभावनायें अभी समझी जा रही हैं, वे शायद सभी प्रकार के शिक्षण सहायकों की अपेक्षा मौलिक और संभवतः अधिक कारगर होंगे, परन्तु उन्हें हम बिल्कुल अलग वर्ग में ही रक्खेंगे। विद्यार्थी की प्रगति को भापने और प्रशासन के कुछ पक्षों को सुविधा देने के लिये शिक्षा में विद्युत् संगणकों की प्रयोग की प्रगति का विशेष उल्लेख करना होगा।

शिक्षा के सामने आने वाली समस्यायें इतनी विशाल हैं कि न तो पूरी तरह पारंपरिक तरीकों पर निर्भर किया जा सकता है और न आधुनिक पर। प्रत्येक स्थिति में परिस्थितियों और सुलभ संसाधनों के लिए उपायों का उपयुक्त संयोजन और मिश्रण समझना आवश्यक है। किसी भी तरीके और युक्ति को लागू करने के लिये शिक्षकों और विशेषज्ञों का सहयोग आवश्यक है। कुछ स्थितियों में विशेषकर इस प्रक्रिया के प्रारम्भ में दूसरे विशेषज्ञों का सहयोग प्राप्त करना—जैसे मनोवैज्ञनिकों, समाजवैज्ञानिकों और मानव-वैज्ञानिकों का—अच्छा होगा।

प्राचीन तरीकों की भाँति नये तरीके भी हर स्तर और हर प्रकार की शिक्षा के लिए प्रयुक्त हो सकते है। निरक्षरता के विरोध में विशाल आन्दोलन करने के समय इस समस्या को तात्कालिकता की दृष्टि से एक साथ आधुनिक और पारंपरिक तरीकों का प्रयोग करने का प्रयास करना चाहिये।

जैसे-जैसे आधुनिक तरीकों का प्रयोग बढ़ता जाय और हम देखें कि उनका क्या योग हो सकता है वैसे ही हम शिक्षा की नई संकल्पना बनाते जायेंगे। इसलिये इस संबंध में विचारों के विकास को स्वीकार करना और उनका अध्ययन करना चाहिये।

सबसे पहले तो सूचना के एकत्रीकरण के संबंध में पेरिस की बैठक में विशेषज्ञों ने कहा कि नये उपायों और तकनीकों से संबंधित शोध-कार्य के परिणामों का समय-समय पर प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और राष्ट्रीय साक्षरता आंदोलन-संबंधी अध्ययनों के लेख रूप में वितरण होना चाहिये।

उन्होंने विचार किया कि शिक्षण तकनीकों के गुण और प्रभावशालिता को बढ़ाने के लिये व्यावहारिक शोधकार्य होना चाहिये। उन्होंने एक विशेष सांस्कृतिक अथवा भाषा संबंधी परिस्थिति में विकसित सामग्री को दूसरी परिस्थितियों के अनुकूल करने के उपाय निकालने को भी कहा। जिन साधनों से विशिष्ट शिक्षा संबंधी परिणामों की आशा है उनके खर्च के विषय में सूचना प्राप्त करनी भी चाहिए और उन्हें तुलनात्मक दृष्टि से भी देखना चाहिए। कम से कम खर्च पर ज्यादा से ज्यादा परिणामों की संप्राप्ति के लिए विचार से काम लेना चाहिये और भौतिक (जन संचार साधन, स्वशिक्षक कार्यक्रम सामग्रियाँ) और मानवीय (उच्चतम योग्यता प्राप्त शिक्षकों के साथ शीघ्रता से प्रशिक्षित होने वाले सहायकों को रख कर) संसाधनों का प्रयोग करना चाहिये। यूनैस्को को चाहिये कि शिक्षा के विभिन्न तरीकों के और शिक्षण के नये सूचना माध्यमों और तकनीकों का तुलनात्मक व्यय विश्लेषणों संबंधी व्यावहारिक अनुभव पर आधारित सूचना एकत्र करो। शिक्षक—प्रशिक्षण में सुधार और त्वरण के उपाय-संबंधी शोध पर विशेष ध्यान देना चाहिये। अलग-अलग कार्यक्रमों में शिक्षण तरीकों की संभावनाओं पर विशेष जोर देना चाहिये क्योंकि इन तरीकों में बहुत लाभ है और अज्ञान के विरुद्ध संघर्ष में उनका अभी विकास प्रारंभ हुआ है। शोध-तरीके और शिक्षण-सहायकों के रूप में टेलीविजन के योग का अध्ययन होना चाहिये। विशेषज्ञों ने जोर देकर कहा कि ऐसी शोध का सभायोजना अन्तर्राष्ट्रीय स्तर होना चाहिये।

उन्होंने यह सिफारिश भी की कि शिक्षा संबंधी मनोविज्ञान की शोध में, नये तरीकों और तकनीकों के विकास में और शिक्षण सामग्री के प्रोत्साहन में विशेष योग्यता प्राप्त करने वाले लोगों के प्रशिक्षण को अधिक से अधिक महत्त्व देना चाहिये।

माध्यमों के विकास के संबंध में यूनैस्को द्वारा संयोजित इस बैठक के विशेषज्ञों ने सुझाव दिया कि यूनैस्को इस बात के लिए उपाय करे कि शिक्षासंबंधी रेडियो और टेलीविजन प्रसारण सभी जगह देखे सुने जा सकें और अच्छे तथा सस्ते रेडियो और टेलिविजन का उत्पादन हो सके। उन्होंने यह भी कहा कि निरक्षरता दूर करने के लिये सर्वोत्तम साधनों का नियमित प्रयोग किया जाय और टेलीविजन तथा कार्यक्रम शिक्षण सामग्री का परीक्षण बड़े स्वर पर हो।

उन्होंने यह मत प्रकट किया कि नये से नये शिक्षा तरीकों को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रायोजनाओं में स्थान दिया जाय। नई संस्थाओं की स्थापना प्रयोगात्मक कार्रवाइयों और शोध कार्यक्रमों तथा प्रायोगात्मक प्रायोजनाओं की तैयारी में में ध्यान दिया जाय। इन अपेक्षाकृत अल्पावधि प्रायोजनाओं के लागू करने में समायोजित प्रादेशिक कार्रवाइयों की योजना के अंश रूप में स्थायी राष्ट्रीय कार्यक्रम भी बन जायेगा। उदाहरण के लिये एशिया और अफ्रीका में—जिसमें सभी वर्तमान प्रतिष्ठानों, प्राप्त अनुभव और शोध परिणामों को एकत्र कर लिया जाएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवक और अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने अपने पन्द्रहवें अधिवेशन में "राष्ट्रों के बीच सद्भावना, शान्ति के आदर्शों तथा आपसी आदरभाव के उपायों" के सम्बन्ध में एक संस्ताव स्वीकार किया। इस संस्ताव में सिफारिश की गई है कि "सरकारें, और गैर सरकारी अभिकरण, और व्यक्ति कारगर कार्रवाई करें" और उन्हें आमन्त्रित किया गया है कि वे विभिन्न देशों के युवकों के बीच ऐसे आदेशों को प्रोत्साहन देने में समर्थ विचारों और मतों के अबाधित और मुक्त विनिमय को सब प्रकार के उपायों द्वारा बढ़ावा दे"। समर्थ विशिष्ट अभिकरणों-विशेषकर यूनैस्को को आमन्त्रित किया गया है कि वे "इस क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और स्वत: कार्रवाई को बढ़ाने के तरीकों पर विचार करें" और सामाजिक तथा आर्थिक परिषद् का ब्यौरा दें।

ग्यारहवें अधिवेशन में यूनैस्को महासम्मेलन ने महासभा के इस संस्ताव से मिलता-जुलता संस्ताव स्वीकार किया। सम्मेलन ने सदस्य देशों से शिक्षा की उदारता, वस्तु परकता और विभिन्न देशों और जातियों के बीच शान्तिपूर्वक सम्बन्ध की इच्छा के सिद्धान्त पर आधारित करने के लिए कहा।" उसने महानिदेशक को आमन्त्रित किया कि वे "अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को निश्चित करने और उसके विकास के लिए शिक्षा के क्षेत्र में भविष्य में सबसे कारगर उपाय ढूंढें" और इस विषय में महासम्मेलन के बारहवें अधिवेशन में रिपोर्ट दें।

यूनैस्को के कार्यकारी मण्डल ने यह निश्चय किया कि इन दोनों संस्तावो के उत्तर में एक रिपोर्ट तैयार कर दी जाय और इस रिपोर्ट के तैयार करने के सम्बन्ध में महानिदेशक के प्रस्ताव को स्वीकार किया। स्वीकृत प्रक्रिया में इस बात का ध्यान रक्खा गया कि—

(१) यूनैस्को सचिवालय, सलाहकारों और दूसरे समर्थ विशिष्ट अभिकरणों की सहायता से प्रारम्भिक विचार-पत्र तैयार करेगा।

(२) यह विचारपत्र राष्ट्रीय आयोगों, विशिष्ट अभिकरणों और गैर-सरकारी संगठनों के पास प्रेक्षण और सुझावों के लिए भेजा जाएगा।

(३) प्राप्त उत्तरों के आधार पर जुलाई, ६२ में आर्थिक और सामाजिक परिषद् और इसी नवम्बर में यूनैस्को महासम्मेलन के आगे रखने के लिए अन्तिम रिपोर्ट तैयार की जाएगी।

सचिवालय द्वारा तैयार किया हुआ प्रारम्भिक विचार पत्र अक्तूबर १९६१ में सम्बन्धित संस्थाओं के पास भेज दिया गया था। ७३ उत्तर मिले थे : २४ सदस्य देशों अथवा सहायक सदस्य देशों से, ६ संयुक्त राष्ट्र पद्धति के संगठनों से, प्रादेशिक अन्तर सरकारी संगठन से, और ४२ अन्तर्राष्ट्रीय गैर सरकारी संगठनों से। इन उत्तरों के आधार पर सचिवालय ने अपनी अन्तिम रिपोर्ट तैयार की।

इस रिपोर्ट की तैयारी के कारण युवकों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना, आपसी आदर और शान्ति के आदर्शों को प्रोत्साहन देने के प्रयोजन से शुरू की गई अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और स्वैच्छिक कार्रवाइयों के प्रकार का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक हो गया। यह प्रतीत हुआ कि इन कार्रवाइयों को निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत रक्खा जा सकता है :

१. **विनियमों और वैयक्तिक सम्पर्कों को प्रोत्साहन** (अन्तराष्ट्रीय युवक बैठकें, सम्मेलन; घर से घर और परिवार से परिवार विनिमय; छुट्टियों के शिक्षाक्रम; अवकाशकेन्द्र कार्यक्रम अध्ययन दौरे; तरुण मजदूरों के लिए ऐसे कार्यक्रम जिसमें उन्हें विदेशों में भी काम मिल जाय; विदेशों में अध्ययन के कार्यक्रम; स्वैच्छिक सेवा योजनाएँअन्तर्राष्ट्रीय खेल घटनाएँ)

२. **शिक्षा का योगदान** (प्रारम्भिक स्कूल; माध्यमिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूल; पाठ्यक्रम-बाह्य कार्रवाइयाँ; शिक्षक-प्रशिक्षण विश्व-विद्यालय)

३. संयुक्त राष्ट्र के विषय में शिक्षण

४. स्कूल के बाहर कार्रवाई (स्थानीय समुदाय का काम तरुण क्लबों, संगठनों और आन्दोलनों का काम, जन संचार साधनों का काम; युवकों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना बढ़ाने के उपायों के सम्बन्ध में मूल शोध)। इस प्रकार सचिवालय ने सम्भावित कार्य-उपायों की पूरी जानकारी देने का प्रयास किया। प्राप्त टिप्पणियों के आधार पर कहा जा सकता है कि दूसरे प्रकार के कार्यों की कोई आवश्यकता नहीं है। जो कार्रवाइयाँ चल रही हैं उन्हीं में कुछ सुधार या विस्तार करने के विषय में सुझाव थे, नये कार्यप्रकार के विषय में नहीं।

सामान्य सिद्धान्त तो यही है कि युवकों की मनोवृत्तियों और रुचियों का निकट से अध्ययन होना चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के उपायों की आयोजना में युवकों को ही संलग्न करने के लिए उपाय खोजे जाएँ। ऐसे दृष्टिकोण ढूँढे जाएँ जो युवकों के स्वाभाविक आदर्शवाद को ही नहीं उनके यथार्थवाद को भी रुचिकर हों। युवकों के लिए व्यावहारिक प्रायोजनाओं में—जिनके विशिष्ट स्पष्ट परिणाम हों—प्रत्यक्ष योग देने के अवसर होने चाहिएँ।

उपायों के सम्बन्ध में अधिकतर व्यावहारिक समस्याओं को सुलझाने के लिए सभी ओर से सुझाव दिए गए थे जिन पर कार्य केन्द्रित किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में अधिकतर आर्थिक सहायता के शिक्षकों और युवक नेताओं के प्रशिक्षण के, स्कूल कार्यक्रमों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए शिक्षा के समुचित आयोजन और सब प्रकार की उपयुक्त शिक्षा सामग्री के अभाव पर जोर दिया गया।

कदाचित् युवक विनियमों के क्षेत्र में कार्य को बढ़ाने का सबसे कारगर तरीका एक या दूसरे प्रकार के विनिमय में योग-दान को बढ़ाना नहीं है वरन् ऐसे उपाय खोजना है जिनसे सभी प्रकार के विनिमयों का सावधानी से आयोजन और संगठनन हो सके। विनिमयों के लाभ युवक नेताओं को अग्रता देने से अधिक वितरित हो सकते हैं, क्योंकि वे अपने देश को लौटकर अपने अनुभवों के विषय में अनेकों युवकों को बता सकते हैं।

इस सम्बन्ध में लगभग सभी एक मत हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए शिक्षा के सम्बन्ध में शिक्षा संस्थानों का प्रत्येक स्तर पर दायित्व है और परिणामस्वरूप नागरिकता के लिए शिक्षा की संकल्पना का पुनरावलोकन करना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना-परक शिक्षा के लिए अध्यापकों का प्रशिक्षण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण समस्या मानी जाती है, और यूनैस्को के अनुभव से इसकी पुष्टि भी हो जाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि वर्त्तमान स्थिति में इसी क्षेत्र में कार्यों को संकेन्द्रित करना चाहिए। दूसरे क्षेत्र जिनमें उपाय ढूंढने हैं, ये हैं: पाठ्यक्रमों और शिक्षाक्रमों का निर्धारण; विदेशी भाषाओं का शिक्षण, शिक्षकों, शिक्षा प्रशासकों और पाठ्य पुस्तक लेखकों के लिए विनिमय कार्यक्रम; पाठ्यक्रम-बाह्य कार्रवाइयाँ। अन्त में यह सामान्यतः माना जाता है कि प्रयोगात्मक कार्रवाइयों जैसे यूनैस्को की संबद्ध स्कूल प्रायोजना को सुदृढ़ बनाना और विस्तृत बनाना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र पद्धति शान्ति, सहयोग और आपसी आदर-भावना के प्रति मानवता का सबसे महत्त्वाकांक्षी प्रयत्न है। यदि इसमें सम्मिलित संगठन अपने-अपने काम करना चाहें तो यह आवश्यक है कि युवक उनके कार्यों के प्रति दायित्व और व्यक्तिगत सम्बन्ध का अनुभव करें, यह शिक्षा-प्रयत्नों को बढ़ाने से ही हो सकता है। संयुक्त राष्ट्र के विषय में शिक्षा देने के सम्मुख वही बाधायें हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की शिक्षा के सम्मुख हैं। इनको दूर करने के लिए सरकारों और योग्य संगठनों तथा संस्थाओं के प्रयत्न आवश्यक हैं।

परन्तु युवकों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के आदर्शों को प्रचारित करने के उपायों में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि विश्व के अधिकांश युवक स्कूल नहीं जाते। उन तक सामुदायिक कार्रवाई, युवक आन्दोलन और संगठन और जनसंचार के साधनों द्वारा पहुँचा जा सकता है। इसको कारगर तरीके से करने के लिए पहुँच, उपायों और कार्यक्रमों के लिए मूल शोध आवश्यक है।

यूनैस्को को आमन्त्रित किया गया था कि वह "शान्ति, परस्पर आदर और सद्भावना के मूल सिद्धान्तों को प्रस्तुत करने वाला एक मसौदा बनाने की सम्भावना" पर विचार करे। प्राप्त ७३ उत्तरों में से ३८ में इस प्रश्न पर मत प्रकट किये गये थे, और इसके पक्ष और विपक्ष में बराबर-बराबर मत हैं। इस लिए यह आशा करना संगत ही होगा कि घोषणापत्र बनाने की प्रक्रिया अधिक विस्तारित और श्रम साध्य होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को बढ़ाने वाली शिक्षा से सम्बन्धित यूनैस्को कार्रवाइयों की अनेकों सम्भावनाओं का टिप्पणियों में उल्लेख था। प्रमुख सिफारिशें ये थीं कि संगठन अपने प्रयत्नों की सूचना के वितरण, कार्रवाइयों के अन्तर्राष्ट्रीय समेकन, प्रयोगात्मक कार्रवाइयों और शोध को प्रोत्साहन और उपयुक्त शिक्षण सामग्री के उत्पादन की ओर लगाए।

अन्त में यह विचार करना ठीक ही होगा कि संयुक्त राष्ट्र महासभा और यूनैस्को महासम्मेलन ने अनेकों ऐसे संस्ताव स्वीकार किए हैं जिनका शान्ति, आपसी आदर और सद्भावना की वृद्धि के साथ प्रत्यक्ष और महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध है: नये युद्ध को प्रारम्भ करने और उसके प्रचार के विरोध में सामान्य और सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण के सम्बन्ध में, औपनिवेशिक देशों को स्वतन्त्रता प्रदान करने के सम्बन्ध में महासभा के संस्ताव और उपाय; और ग्यारहवें अधिवेशन के अवसर पर शान्तिपूर्ण मित्रता के सम्बन्धों औपनिवेशिक देशों के स्वतन्त्रता प्राप्ति में यूनैस्को के योग, और सामाजिक तथा आर्थिक विकास में शिक्षा के योग के सम्बन्ध में महासम्मेलन द्वारा स्वीकृत संस्ताव और समय समय पर अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना और मानवीय अधिकारों के प्रति आदर के सम्बन्ध में महासम्मेलन द्वारा स्वीकृत संस्ताव। युवकों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना, परस्पर आदर और शान्ति के आदर्शों को बढ़ावा देने के उपायों को ऐसे संस्तावों के बड़े सन्धार में समोना चाहिए। निश्चय ही वे उपाय जिनसे सरकारें इन आदर्शों को अधिक से अधिक बढ़ा सकती हैं, वे हैं संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों को लागू करने में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की अभिव्यक्ति।

किशोरों का मनोविज्ञान

किशोरों के मनोविज्ञान-सम्बन्धी पहला यूनैस्को सम्मेलन जून ४ से ८ तक पेरिस में हुआ। इसमें ग्यारह पुरुषों और एक स्त्री ने भाग लिया जो किशोरों के व्यवहार के विशेषज्ञ हैं। वे अर्जन्तीना, जर्मन संघ गणराज्य, फ्रांस, भारत, इज़रायल, जापान, पोलैंड, तुर्किस्तान, संयुक्त अरब गणराज्य, इंगलैंड, संयुत राज्य और रूस के थे। वे सभी शिक्षा-सम्बन्धी, निदान सम्बन्धी, सामाजिक अथवा शोध-मनोवैज्ञानिक थे, एक मनो-विश्लेषण के विशेषज्ञ और एक समाज वैज्ञानिक-अपराधवैज्ञानिक थे। प्रत्येक विशेषज्ञ शोध से सम्बन्धित किसी सरकारी अथवा गैर सरकारी केन्द्र या संस्था का प्रतिनिधि था।

सम्मेलन का प्रयोजन छोटा न था, सबसे निकट का लक्ष्य था, सामाजिक रूप से असमंजित व्यक्तियों पर अधिक ज़ोर देते हुए किशोरों के मनोविज्ञान-सम्बन्धी वर्त्तमान शोध के स्वरूप, गुण और दिशा को देखना और उसकी तुलना करना।

समाज में असमंजित किशोर विभिन्न सीमाओं तक विभिन्न प्रकार का व्यवहार करते हैं, उन्हीं में किशोर अपराधी भी हैं। यद्यपि सम्मेलन में मुख्यतः बाल अपराधियों की चर्चा नहीं हुई परन्तु प्रत्येक देश के इन अपराधियों की तुलना अवश्य की गई।

विशेषज्ञों की रुचि और चिन्ता का विषय उन किशोरों का व्यवहार था जिनका "विचल व्यवहार" ऐसा नहीं है कि उसे 'अपराध' की संज्ञा दी जा सके। "विचल व्यवहार" उसे कहते हैं जो समाज, समुदाय, स्कूल अथवा घर के मानदण्डों के विरोध में हो। लन्दन के मनोविश्लेषक ने कहा था कि विचल ऐसा किशोर है" जो अपने को, अपने परिवार और समाज को अत्यधिक दुःख देता है।

"विचल"--नकारात्मक और सकारात्मक

किशोर अपराधियों को "नकारात्मक विचलों" के वर्ग में रक्खा गया क्योंकि उनका व्यवहार बड़ा ही समाज विरोधी होता है और उनमें नाश और हिंसा की प्रवृत्तियाँ होती हैं। वे ऐसे विचल हैं जिन्हें समाज सहन नहीं कर सकता। परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के सदस्य इस बात से सहमत थे कि दूसरे विचलों के, जो विभिन्न उद्देश्यों और तरीकों से मानदण्डों का विरोध करते हैं, विषय में शोध करनी चाहिए। वे कलाकार अथवा क्रान्तिकारी अथवा शोधकर्त्ता बन सकते हैं। एक मनोवैज्ञानिक ने इस प्रकार कहा, "ये सकारात्मक विचल ही सभ्यताओं का निर्माण करते हैं।"

यह निश्चय किया गया कि दोनों प्रकार के विचलों में वैज्ञानिक रुचि में सद्भावना बढ़ जाती है, यदि दोनों सीमाओं का ध्यान रखा जाए। यह भी दिखलाया गया कि अधिकतर हम दोनों के बीच निश्चय नहीं कर पाते क्योंकि निर्णय मूल्यों पर निर्भर है जिनमें बहुत अन्तर होता है। उदाहरण के लिए वह किशोर जो "बम का निषेध करो" प्रदर्शन में भाग लेता है, नकारात्मक या सकारात्मक कोई भी विचल समझा जा सकता है।

सम्मेलन का दूसरा और उतना ही महत्त्वपूर्ण प्रयोजन था उन क्षेत्रों का निर्देश करना जहाँ किशोरों के विषय में अधिक शोध आवश्यक है। सदस्यों के पास सुझावों की कमी न थी। इस बात पर ज़ोर दिया गया कि हम सामान्य किशोर के बारे में काफ़ी नहीं जानते और यह अज्ञान सामान्य किशोरों से सम्बन्धित शोध को निर्बल बनाता है। अपने-अपने देशों के किशोरों के विषय में बात करते करते यह बात सामने आई कि तुर्किस्तान, रूस अथवा जापान के पन्द्रहवर्षीय व्यक्तियों की समस्याएँ भिन्न-भिन्न हैं क्योंकि उनकी सामाजिक और राष्ट्रीय परिस्थितियाँ भिन्न हैं। फिर भी यह भाव था कि मानवीय परिस्थितियों में काफ़ी विशाल और महत्त्वपूर्ण समानताएँ हैं जिससे एक देश में की गई शोध दूसरे देश में काम आ सकती हैं।

उदाहरण के लिए स्कूलों में अनुत्तीर्ण होने को ले सकते हैं—यह "असमंजित" व्यवहार का पहला लक्षण होता है। सम्मेलन में देखा गया कि विभिन्न देशों और एक देश की विभिन्न स्कूल पद्धतियों में जिस दर से विद्यार्थी अनुत्तीर्ण हो रहे हैं उसे उचित नहीं समझा जा सकता। इसी से फेल होने की दर, उसके कारण, बचाव के उपाय और सुधार के सम्बन्ध में तुलनात्मक अध्ययन मालायें निकालने को अग्रता दी गई।

सहयोग शोध

सम्मेलन का महत्त्वपूर्ण कार्य केवल बारहों देशों के बीच सहयोगी शोध के क्षेत्रों का पता लगाना ही न था वरन् यह कि यूनैस्को उसमें किस प्रकार सहायता कर सकती है और किशोरों के मनोविज्ञान से सम्बन्धित भावी कार्यक्रमों के सम्बन्ध में यूनैस्को को किस प्रकार सलाह दे सकते हैं।

उद्घाटन भाषण में रेने मह्यू, कार्यवाहक महानिदेशक ने कहा कि आज किशोरावस्था जल्दी प्रारम्भ होती है और देर से खत्म होती है। विशेज्ञ इस पर सहमत हुए और उन्होंने यह भी कहा कि यह ऐसी अवस्था है जब सभी कुछ न कुछ असमंजित रहते ही हैं, क्योंकि यह महान् परिवर्त्तन और चुनौती का समय होता है। किशोरों की कुछ समस्याएँ सामान्य हैं और उनकी उपेक्षा की जा सकती है परन्तु कुछ तो ऐसी हैं कि वे आगे के जीवन में व्यक्ति की क्षमताओं को अत्यन्त सीमित कर सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँच एशियाई देशों में पठन सामग्री का उत्पादन और वितरण

यूनैस्को के कई देशों के सम्मुख उन देशों की भाषा में अच्छी और रोचक पठन-सामग्री के अभाव की समस्या है। यह कमी इन देशों के सम्पूर्ण शिक्षा-सम्बन्धी और सांस्कृतिक विकास को प्रभावित करती है। विशेषकर निरक्षरता को दूर करने के आंदोलन और वयस्कों की शिक्षा को।

इस समस्या को ध्यान में रखते हुए यूनैस्को ने १९५५-५६ में बर्मा, श्रीलंका, भारत और पाकिस्तान में पठन सामग्रियों के कारगर आयोजन को प्रोत्साहन देने के लिए सांस्कृतिक कार्रवाई कार्यक्रम के अन्तर्गत एक प्रायोजना प्रारम्भ की। इसमें १९५८ में ईरान भी सम्मिलित कर लिया गया। यह विशाल प्रायोजना-क्षेत्र जिसमें ६ः सौ मिलियन लोग बसते हैं, बढ़ती हुई नई पाठक जनता के लिए उपयुक्त पठन-सामग्री सुलभ बनाने के लिए विभिन्न समस्याओं को सामने लाता है। इस क्षेत्र में संस्कृति और भाषा की दृष्टि से बड़ी विविधता है इस कारण जो परिणाम एक देश में हो उनको दूसरे देश में उसी प्रकार की समस्या में भी कोई संगति अथवा मूल्य होगा, इसमें सन्देह है।

प्रायोजना के आरम्भ से ही यूनैस्को ने प्रायोजना-क्षेत्र की भाषाओं में उपयुक्त पठन-सामग्री की तैयारी, उत्पादन और वितरण से सम्बन्धित सदस्य देशों को अध्ययनों, शोध, शोधनगृह कार्रवाइयों, पुस्तक प्रदर्शनियों के आयोजन राष्ट्रीय और प्रादेशिक गोष्ठियों और कार्यशालाओं, विशेषज्ञ सेवाओं, शिक्षावृत्तियों, लेखकों के पुरस्कार, और प्रकाशकों के प्रोत्साहन द्वारा सहायता की है।

पिछले वर्ष में यूनैस्को ने पाँच सम्बन्धित देशों के राष्ट्रिकों के लिए पठन सामग्रियों को अधिक सुलभ बनाने की समस्या पर विशेष ध्यान दिया है। इसके अर्थ हैं पुस्तक वितरण साधनों और तरीकों के विस्तारण और सुधार तथा पुस्तक सम्बन्धी व्यावसायिक संस्थाओं के विकास, और पुस्तक संसार के विभिन्न अंगों के परस्पर सहयोग में सहायता।

१९५९ में मद्रास की प्रादेशिक गोष्ठी के बाद १९६१ के पहले ६ महीनों में पुस्तक-विक्रय के तरीकों से सम्बन्धित सात राष्ट्रीय गोष्ठियाँ और हुईं, एक एक बर्मा, श्रीलंका और ईरान में तथा दो दो भारत और पाकिस्तान में। प्रत्येक गोष्ठी का एक तकनीकी निदेशक था और उसमें विभिन्न नगरों के तीस-तीस पुस्तक विक्रेताओं ने भाग लिया था। जिन विषयों का अध्ययन किया गया था, वे थे पुस्तक विक्रेताओं के सांस्कृतिक कार्य, और समुदाय के जीवन में पुस्तक की दुकान की महत्त्व, पुस्तक विक्रेताओं की संस्थाओं की स्थापना पर और पुस्तक विक्रय की कई तकनीकी समस्याओं पर विचार किया गया।

मद्रास गोष्ठी के अतिरिक्त इसी प्रकार की दो गोष्ठियाँ १९५६ में मरी (पाकिस्तान) में और १९५७ में रंगून (बर्मा) हो चुकी थीं। एक और प्रादेशिक गोष्ठी तकनीकी सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत श्रीलंका सरकार और श्रीलंका साहित्य मंडलय के समायोजन से नवम्बर-दिसम्बर १९६१ में हुई। इसका उद्देश्य यह था कि पठन-सामग्री प्रायोजना के उद्देश्यों से सम्बन्धित व्यावसायिक संस्थाओं के विकास के उपायों और तरीकों का अध्ययन और पुस्तकों के उत्पादन और वितरण से सम्बन्धित विभिन्न संस्थाओं के बीच अधिक समायोजन प्राप्त करने के उपायों का अध्ययन किया जाय। इस गोष्ठी के बाद इस वर्ष विभिन्न देशों में व्यावसायिक संस्थाओं से सम्बन्धित संस्थाओं की समस्याओं पर कई अध्ययन किए जा रहे हैं।

कराची में पाकिस्तान सरकार के समायोजन द्वारा स्थापित प्रादेशिक केन्द्र पाँचो भाग लेने वाले देशों की सरकारों और सम्बन्धित राष्ट्रीय अभिकरणों को सहायता करता है। जनता की रुचि बनाए रखने के लिए और पठन-सामग्री सम्बन्धी समस्याओं के विषय में अधिकारियों और विशेषज्ञों को सूचित रखने के लिए केन्द्र अपने सूचना बुलेटिन की १,५०० प्रतियाँ अंग्रेजी में छापता है। इस बुलेटिन में इस प्रकार के लेख आ चुके हैं। "बर्मा के किशोरों की पठन-रुचि"; "भारत की नया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कॉपीराइट" "ईरान में प्रकाशन और पुस्तक विक्रय"; और "पाकिस्तान में बाहर से आने वाली पुस्तकों और पत्रिकाओं की समस्यायें" पठन-सामग्री समस्याओं के सम्बन्ध में विशेषज्ञों को नई से नई सूचना देने के लिए प्रदेश के पुस्तक प्रकाशन और वितरण सम्बन्धी दस प्रमुख अभिकरणों में सन्दर्भ सामग्री का आयोजन किया गया।

पिछले वर्ष बर्मा, शीलंका, भारत और ईरान में महत्त्वपूर्ण स्थानों पर 'अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना' तथा 'प्रतिदिन का विज्ञान' विषयक पुस्तकों की चार यात्रा-प्रदर्शनियाँ की गई थीं।

पुस्तकों की तैयारी और वितरण के तरीकों को सुधारने के लिए योग्य प्रार्थियों को छः समुद्र-पार शिक्षा वृत्तियाँ दी गई थीं। उनको प्रकाशन-गृहों के प्रशासन और प्रकाशन तथा वितरण तकनीकों के प्रोत्साहन का प्रशिक्षण दिया गया था। १९५९-१९६० के बीच इन पाँच देशों की राष्ट्रभाषाओं में नई पाठक जनता के लिए प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तकों पर पच्चीस पुरस्कार दिए गए थे।

भाग लेने वाले देशों के पठन सामग्री से सम्बन्धित प्रवर सरकारी अधिकारियों की बैठक मरी (पाकिस्तान) में अगस्त १९६१ में हुई थी। बैठक में आयोजन की अतीत और वर्त्तमान कार्रवाइयों का पुनिरीक्षण किया गया और राष्ट्रीय तथा प्रादेशिक दोनों ही स्तरों पर इसके आगे विकास—सम्भव हो तो विस्तारण के उपायों और तरीकों पर विचार किया था। इसके सुझावों को १९६३-६४ के प्रस्तावित बजट पर विचार करते समय ध्यान में रखा गया था।

टैगोर के एक मित्र के स्मृति चित्र

अरविंद एम० बोस

टैगोर के संबंध में फिनलैंड, नॉर्वे और स्वीडन में भाषण दौरे से लौटने पर मैंने अपने "गुरुदेव" के चित्रों और उनके सम्बन्ध में लेखों से युक्त कूरियर का दिसंबर अंक देखा। उसने मेरे मन में पूर्व स्मृतियाँ जगा दीं। कदाचित् एक शिष्य को जो १९०१ में कवि के प्रयोगात्मक स्कूल में दसवाँ था; अपनी कुछ स्मृति कथायें सुनाने की आज्ञा मिल जायगी।

हमारा परिवार वास्तविक और निकट-सम्बन्धों का परिवार था जिस पर सदा गुरु की शुभ उपस्थिति का आभास होता रहता था। वे जन्मजात शिक्षक थे। हमें अंग्रेजी और बंगाली पढ़ाते, संस्कृत और अंग्रेजी सीखने के लिए प्रारंभिक पाठ्य-पुस्तकें तैयार करते और शेली, कीट्स, वर्ड्सवर्थ और ब्राउनिंग की कवितायें तथा मैथ्यू आर्नल्ड के अंग्रेजी साहित्य-सम्बन्धी निबन्ध पढ़कर सुनाते। संध्या को वे सदैव हमारे "मनोरंजन" घण्टे में भाग लेते और हमारे लिए नये खेल निकालते—उसमें से एक को "संवेदन-प्रशिक्षण" कहा जाता था अर्थात् हमें एक उड़ती दृष्टि से डालकर ही किसी मेज, आलमारी दरवाजे इत्यादि की लम्बाई की अनुमान लगाना पड़ता था। मुझे याद है कि कवीन्द्र का इस "संवेदन-प्रशिक्षण" के प्रति बहुत आग्रह था।

जैसे पॉल गेहीब के स्कूल में बच्चे शीत के सुहावने दिन अपनी पुस्तकें बन्द कर देते थे और बर्फ में फिसलने के लिए निकल पड़ते थे, उसी प्रकार शान्तिनिकेतन में भी बच्चे वर्षागम का स्वागत बाहर निकल कर पानी से लथपथ होकर करते थे और कभी कभी तो गुरुदेव भी हमारे साथ हो लेते थे। हमें विज्ञान, बढ़ई का काम, बागवानी और जुजित्सु (जापान से शिक्षक बुलाया गया था) का शिक्षण मिलता था। मैंने अक्सर कवींद्र को खेद से उन विगत दिनों की चर्चा करते सुना है, 'जब स्कूल के विषय में बाहरी दुनिया को कुछ ज्ञात न था और वे प्रयोग करने तथा गलतियों से सीखने में स्वतन्त्र थे। आज से कितना भिन्न जब कि कई पर्यटक ताजमहल और लाल किले के साथ शांतिनिकेतन को भी दर्शनीय स्थानों की सूची में रख कर आते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्तिनिकेतन से आने के कारण मुझे स्वभावतः प्रगतिशील स्कूलों में रुचि थी और मैंने १९२७ में पॉल गेहीब का ओडेन वालशूल देखा। मुझपर उसका इतना प्रभाव पड़ा और उससे शांतिनिकेतन की इतनी याद आई कि मैंने कवींद्र को तब तक शांति से नहीं बैठने दिया जब तक १९३० में उन्होंने पॉल गेहीब से भेंट नहीं कर ली। गुरुदेव ने पॉल गेहीब को उनकी छठवीं वर्षगाँठ पर "मेरे आध्यात्मिक संगी और मानव के मित्र" कहकर अभिनन्दित किया था। शिक्षा के क्षेत्र में पूर्व और पश्चिम के इन दो नेताओं और क्रान्तिकारियों को परस्पर मिला देने का यह मेरा काम ही मेरे जीवन का अकेला शुभकार्य है।

१९२२-२३ में कैम्ब्रिज की शिक्षा प्राप्त करके मैं बर्लिन में प्रोफेसर प्लैंक और आइंस्टीन का विद्यार्थी था। स्विट्जरलैंड में विज्ञान काँग्रेस की बैठक १९२५ में लुसर्न में हुई और मुझे आइंस्टीन से अपने गुरुदेव के विषय में बहुत सी चर्चा करने का अवसर मिला विशेषकर प्रथम विश्व युद्ध के समय जापान और अमरीका में उनके उन भाषणों के सम्बन्ध में जिनमें उन्होंने संकीर्ण आक्रामक राष्ट्रीयता की निन्दा करते हुये उस महान् मानववाद का उपदेश दिया था जो पूर्व और पश्चिम को मित्रता के सूत्र में बांध सके। ये विचार महान् मानववादी आइंस्टीन के अनुकूल थे और मैंने बर्लिन लौटकर गुरुदेव की पुस्तक "राष्ट्रीयता" उन्हें दी, उसे पढ़कर वे बड़े प्रसन्न हुए।

१९२६ में जब टैगोर बर्लिन आये तो वे आइंस्टीन के घर पर चाय पर मिले। मैंने दुभाषिये का काम किया क्योंकि आइंस्टीन की अंग्रेजी उस समय तक बहुत अच्छी नहीं थी। मुझे स्मरण है कि उद्योग और कृषि से मनुष्यों को विस्थापित करने में मशीनों के विस्तारित प्रयोग और इस तरह बेकारी बढ़ाने के सामाजिक प्रभाव (जर्मनी में बेकारों की बढ़ती हुई संख्या हिटलर के जन आन्दोलन के लिए सहायक हो रही थी) उस पश्चिमी संत की संवेदनशील आत्मा को पीड़ित कर रही थी और इसी सम्बन्ध में उन्होंने कवींद्र से कई प्रश्न किये।

मैं टैगोर को लंदन में इप्स्टीन की स्टूडियो में उनकी कृतियाँ देखने के लिए टैकसी में ले गया। मुझे याद है कि कॉनरैड की भव्य कीर्ति ने उन्हें बड़ा प्रभावित किया और वे इप्स्टीन से अपनी मूर्त्ति बनवाने को तैयार हो गए। मुझे तीसरी बैठक तक मूर्त्ति बहुत अच्छी लगी। परन्तु उन्होंने दो दिन और उस पर काम किया और मुझे तो लगा कि उसे बिगाड़ दिया। मुझे लगा कि वे टैगोर के सुन्दर और भावपूर्ण नेत्रों को नहीं उतार सके।

टैगोर एक बालक की ही भांति थे और अपने सचिवों द्वारा ही इधर-उधर ले जाये जाते थे। वे अपनी जेब में कभी एक पैसा न रखते थे। जून १९२१ में मैंने उन्हें म्यूनिक स्टेशन पर गाड़ी से उतरते देखा अकस्मात् जैसे स्वर्ग से उतरा कोई देवदूत। उनका सचिव सामान के साथ ट्रेन के उस हिस्से में था जो अज्ञात कारण से पीछे ही काट दिया गया था। निश्चय ही उनके पास एक पैसा भी न था और बड़ी प्रसन्नता से इस परिहासपूर्ण स्थिति का आनन्द ले रहे थे। यहीं म्यूनिक में उनके भाषण के उपरांत संस्कृत के प्रोफेसर ने कहा कि जर्मन में अपनी पुस्तकों के अनुवादों से प्राप्त समस्त धनराशि कवींद्र ने निर्धन विद्यार्थियों के लिए दान करदी है।

मैं और बहुत कुछ लिख सकता था परंतु केवल एक स्मरणीय बात कहकर समाप्त करूंगा। यह जून, १९२१ में बर्लिन में टैगोर के होटल की बात है। उनके अतिथि थे मार्बर्ग के प्रो० रूडोल्फ ओटो जिनकी प्रसिद्ध पुस्तक दास हेलीज कई भाषाओं में अनूदित हो चुकी है।

वे एक घण्टे तक यह बात करते रहे कि विध्वंसक युद्ध से किस प्रकार एक नये विश्व का निर्माण किया जाय। अनायास टैगोर उत्साह से कह उठे: "तुम्हारे देश और मेरे दोनों में निःशस्त्रीकरण हो चुका है। आओ हम दोनों अपने प्रयत्नों को एक करलें और अध्यात्म की शक्ति से विश्व में शांति ले आयें," कवींद्र का यह स्वप्न! थोड़े ही वर्षों में हिटलर की विचार धारा ने जर्मनी को व्याप्त कर लिया और कुछ ही दिन बाद द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ हो गया। इन दिनों अविश्वासी होना कितना आसान है। परन्तु हमें टैगोर के अन्तिम शब्द याद रखने चाहिएँ:

"मैं मनुष्य में विश्वास खोने का भयंकर पाप नहीं करूंगा।

मैं उस दिन की प्रतीक्षा करूंगा जब यह दुर्दशा दूर होगी और वातावरण सेवा और त्याग के भाव से स्वच्छ हो उठेगा।"

यूनैस्को कूरियर ने इस टैगोर अंक को निकाल कर शान्ति और सद्भावना के लिए बड़ी भारी सेवा की है जिसके लिए मैं उसका धन्यवाद करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार

यूनैस्को सहायता द्वारा बम्बई शिल्प विज्ञान संस्थान का विस्तारण

यूनैस्को की तकनीकी सहायता मिशन के सहयोग से स्थापित भारतीय शिल्प विज्ञान संस्थान में बम्बई में ९०० विद्यार्थी और और १५० प्रशिक्षार्थी अध्ययन कर रहे हैं। अभी हाल में इसकी रिपोर्ट ओडेसा पॉली टेकनिक संस्थान के प्रो० जी० एन० मेशियर्याकोव ने दी। वे इसके पहले बम्बई संस्थान में यूनैस्को मिशन के अध्यक्ष थे।

यह प्रायोजना १९५५ में शुरू हुई। तभी यूनैस्को ने इस संस्था में अपने पहले विशेषज्ञ भेजे। यह उन अनेकों संस्थानों में से एक है जिनकी स्थापना औद्योगीकरण कार्यक्रम के लिए इंजीनियर जुटाने के लिए भारत सरकार द्वारा हो रही है। तब से यूनैस्को विशेषज्ञों पर १,०००,००० डॉ०, उपस्कर पर ३,०००,००० डॉ० और शिक्षावृत्तियों पर २,०००,००० डॉ खर्च कर रही है।

पेरिस में एक इंटरव्यू में प्रो० मेशियर्याकोव ने कहा कि प्रारम्भिक समस्याएँ सुलझाई जा चुकी हैं और संस्थान का विस्तार हो रहा है। प्रधान मन्त्री नेहरू द्वारा संस्थान से निर्माण पत्थर रखने के तीन वर्ष बाद शोध प्रयोगशालाओं के भवन तैयार हो रहे हैं।

प्रो० मेशिर्याकोव ने कहा, "संस्थान ने अपने पहले शोध प्रशिक्षार्थी १९६० में लिए, आज उसके पास अपने विशेषज्ञ हो हो चुके हैं जो विदेशी विशेषज्ञों का स्थान ले रहे हैं। उन प्रशिक्षार्थियों में से कई अब प्रोफ़ेसर हैं और कुछ विभागों के अध्यक्ष हैं।

"आशा की जाती है कि भविष्य में विद्यार्थियों की संख्या २,००० तक पहुँचेगी। शीघ्र ही यह एशियाई और अफ्रीकी विद्यार्थियों को भी लेने लगेगा, और विकासशील देशों के लिए सच्चा प्रशिक्षण केन्द्र हो जाएगा।"

यूनैस्को की बैठक में विश्व साक्षरता की आयोजना का मसौदा

पेरिस में यूनैस्को भवन में १२ देशों के साक्षरता विशेषज्ञों की जो बैठक हुई थी उसमें कहा गया था कि दस वर्षों में विश्व में प्रौढ़ निरक्षरों की संख्या में पचास प्रतिशत की कमी करना है। अनुमान यह है कि ७,०००,०००,००० व्यक्ति (विश्व की प्रौढ़ जनसंख्या में से आधे), ऐसे हैं जो लिख-पढ़ नहीं सकते। विशेषज्ञों ने यह भी कहा कि आबादी इस तरह बढ़ रही है और कई देशों में निरक्षरों की संख्या बढ़ती ही जा रही है।

विश्व साक्षरता योजना दस दिनों की बैठक में विशेषज्ञों ने बनाई। यह संयुक्त राष्ट्र और उसके विकास दशक के सम्मुख प्रस्तुत किया जाएगा। इस दशक में संयुक्त राष्ट्र और उसके विशिष्ट अभिकरण मानवता के प्राचीन शत्रुओं—भूख, बीमारी, अज्ञान और निर्धनता—पर आक्रमण करेंगी।

आयोजना बनाते समय विशेषज्ञों ने कहा कि प्रारम्भिक स्कूल शिक्षण और प्रौढ़ निरक्षरता की समस्याओं पर साथ-साथ आघात करना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि व्यापक प्रौढ़ निरक्षरता क्षेत्रों में प्रारम्भिक स्कूल शिक्षण की सफलता समाप्त हो जाती है। क्योंकि अधिकतर निरक्षर औरतें हैं इसलिए घरेलू जीवन और बच्चों की शिक्षा के लिए परिणाम अनिष्टकर होते हैं।

विश्व साक्षरता आन्दोलन में १८,०००,०००,००० डॉ० खर्च होंगे जो सम्बन्धित देशों की राष्ट्रीय आय से ०·१५ प्रतिशत कम है। यद्यपि निरक्षरता के विरोध में प्रथम दायित्व सरकारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर है, फिर भी समिति ने अन्तर्राष्ट्रीय सहायता बढ़ाने को कहा।

विशाल रिपोर्ट में विशेषज्ञों ने साक्षर बनाने और साक्षरता आन्दोलनों के आयोजन के हर पक्ष पर विचार किया है। उनके सुझाव नवम्बर में यूनैस्को महासम्मेलन के सामने रक्खे जाएँगे, उसके पश्चात् संयुक्त राष्ट्र की आर्थिक और सामाजिक परिषद् के सम्मुख और फिर १९६३ में संयुक्तराष्ट्र महासभा के सामने।

मि० ए० आर० देश पांडे जो भारतीय शिक्षा मन्त्रालय के सामाजिक शिक्षा सलाहकार हैं, इस बैठक के अध्यक्ष थे। ट्यूनीशिया के शिक्षा मन्त्रालय की सामाजिक और सांस्कृतिक सेवा के अध्यक्ष मि० ताहरग्यूगा, और इक्वादोर के आयोजना और आर्थिक आयोजन विभाग के मि० गोज़ोलोरूवियो उपाध्यक्ष थे। दक्षिण प्रशान्त महासागर के साहित्यिक ब्यूरो के निदेशक मि० डी० ब्रूस रॉबर्ट्स ने रापोर्त्तार की तरह काम किया।

लड़कियों को शिक्षा की सुलभता का सर्वेक्षण

स्त्रियों की स्थिति विषयक आयोग की प्रार्थना पर यूनैस्को ने अभी हाल ही में प्रारम्भिक स्कूलों में लड़कियों की संख्या का सर्वेक्षण किया। यह सर्वेक्षण ८२ देशों में किया गया और २,१००,०००,००० बच्चों के विषय में था।

यह मानकर कि लड़कियाँ ५-१४ आयु-समूह का ४८ अथवा ५० प्रतिशत भाग होती हैं, हमें यह विचार करना होगा कि यदि समूची विद्यार्थी संख्या का ४६ प्रतिशत या अधिक लड़कियाँ हैं तब लड़कियों की संख्या सन्तोषजनक है। इस आधार पर ४६ देशों में स्थिति सन्तोषजनक समझी गई परन्तु अन्य देशों में स्कूल की पूरी संख्या का ४० से ४५ प्रतिशत तक लड़कियाँ थीं, ग्यारह देशों में ३० से ३९; छः में २० से २९ के बीच, एक में १० से १९ और एक में तो १० प्रतिशत से भी कम।

यद्यपि इस सर्वेक्षण से पता चला है कि प्राइमरी स्कूलों में लड़कियों की संख्या अभी पर्याप्त नहीं है इससे यह भी पता चला कि पिछले २० वर्षों में संख्या बढ़ रही है। परन्तु विकासशील देशों में लड़कियाँ अधिकतर प्रारम्भिक पाठ्यक्रम पूरा किए बिना ही स्कूल छोड़ देती हैं कभी घर में काम करने के लिए अथवा पूर्वग्रह, परम्परा या शीघ्र विवाह के कारण।

यूनैस्को की रिपोर्ट में कहा गया है कि कई देशों ने शिक्षा सम्बन्धी उपाय (पूर्वाग्रह का विरोध) और प्रशासकीय तथा व्यावहारिक कार्रवाई (प्रारम्भिक स्त्री शिक्षकों का प्रशिक्षण आदि) किए हैं जिससे इस सम्बन्ध में लड़कियों और लड़कों के बीच असमानता न रहे। यह भी पाया गया कि आर्थिक समृद्धि और सामाजिक विकास के साथ रहन सहन के स्तर में जो विकास हुआ है उससे लड़कियों के स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के सम्बन्ध में आने वाली बाधा दूर होगी।

एशिया में जनसंचार साधनों का विकास

अभी हाल में एशिया में दो संयुक्त राष्ट्र सम्मेलनों में उस प्रदेश में प्रेस, रेडियो प्रसारण, फिल्म और टेलीविजनों के विकास को बढ़ावा देने की इच्छा से उपाय किए गए अथवा उन पर विचार किया गया। ये उपाय यूनैस्को के उस सर्वेक्षण पर आधारित हैं जो यूनैस्को ने अभी संयुक्त राष्ट्र की ओर से विकसनशील देशों में जनसंचार साधनों के विस्तार के सम्बन्ध में कार्रवाई।

नई दिल्ली में सूचना की स्वतन्त्रता पर अपने ढंग की पहली संयुक्तराष्ट्र गोष्ठी हुई। उसमें आर्थिक और सामाजिक प्रगति में जनसंचार साधनों के महत्त्वपूर्ण योग पर जोर दिया गया। अतः एशिया और दूर पूर्व के संयुक्त राष्ट्र आर्थिक आयोग (इकाफे) का इस प्रदेश में जनसंचार साधनों के विकास में योग हो सकता है। विशेषकर आयोग सस्ते रेडियो बनाने, दूरसंचार व्यवस्थाओं के विस्तार और अखबारी कागज के संभरण में वृद्धि को बढ़ावा दे सकता है

नई दिल्ली की गोष्ठी में प्रेस समाचारों के पारान्तरण में कम दरों, ग्रामीण अखबारों की सस्ती छपाई के नये तरीकों का अधिक उपयोग और समाचार कर्मियों के प्रशिक्षण के लिए अग्रता के लिए कहा गया। अन्तिम सिफारिश में प्रत्येक देश में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनसंचार साधनों के विकास के समेकन और प्रोत्साहन के लिए एक राष्ट्रीय परिषद् की स्थापना की मांग की गई।

इसके फौरन बाद आर्थिक आयोग की जो बैठक टोकियो में हुई उसमें नई दिल्ली के इन सुझावों को ध्यान में रखा गया और एशियाई सरकारों को अखबारी कागज के और सस्ते रेडियो-सेटों के उत्पादन केन्द्रों के संगठन के प्रश्न का अध्ययन करने के लिए कहा गया। इकाफे के ध्यान में यह बात भी आई कि भारत और जापान सस्ते रेडियो बनाने के लिए तैयार हैं। जापान ने दूसरे देशों को रेडियो-सेट बनाने और अखबारी कागज के उत्पादन में सहायता करने का प्रस्ताव रक्खा।

इसके साथ ही इकाफे ने सरकारों से दूर संचार व्यवस्थाओं के विकास को अग्रता देने और छपाई की बहुत ही सस्ती दरें स्वीकार करने—जैसे कि ब्रिटेन में एक शब्द के लिए एक पेनी—के लिए कहा।

———

एशिया में समाचार अभिकरणों का विकास

तीन सदस्य अभिकरणों द्वारा पुष्टि हो जाने के बाद एशियाई समाचार एजेन्सी संगठन की विधिवत स्थापना हो चुकी है। यह तो स्मरण ही होगा कि इस संगठन की स्थापना पिछले दिसम्बर में बैंगकॉक में यूनैस्को द्वारा एशिया और दूरपूर्व में समाचार अभिकरणों के विकास के विषय में आयोजित बैठक की समाप्ति के समय की गई थी।

इस संगठन का उद्देश्य एशिया की समाचार एजेन्सियों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना है जिससे उनकी सामान्य रुचियों को प्रोत्साहन मिले और प्रदेश के देशों में सूचना के प्रवाह में वृद्धि हो। इसके वर्त्तमान अध्यक्ष हैं प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया के महाप्रबन्धक मि० के० एस० रामचंद्रन। बैंगकॉक की बैठक में श्रीलंका और थाईलैंड में नये अभिकरणों की स्थापना और दूसरे एशियाई देशों में वर्त्तमान सेवाओं के विस्तारण के लिए सिफारिश की गई थी। विस्तार चाहने वाले समाचार अभिकरणों में पाकिस्तान का सम्बद्ध प्रेस और हिन्दुस्तान समाचार (भारत) हैं इस सम्बन्ध में भारत से सलाह माँगी गई है।

———

दक्षिण और पूर्वी एशिया के देशों के लिए शिक्षा सम्बन्धी टेलीविजन प्रशिक्षण क्रम

टोकियो में २७ अगस्त से २२ सितम्बर तक यह प्रशिक्षण क्रम चलाया जाएगा।

दक्षिण पूर्व एशिया में सूचना साधनों के विकास के सम्बन्ध में बैंगकॉक में जनवरी १९६० में एक बैठक हुई थी, यह प्रशिक्षण क्रम उसी का परिणाम है। इस बैठक में यह सुझाव दिया गया था कि प्रदेश के जो देश सूचना के किसी विशेष क्षेत्र में विशेष अनुभव प्राप्त कर लें, वे प्रादेशिक प्रशिक्षण क्रमों द्वारा दूसरे देशों को अपने अनुभवों का लाभ दें। ऐसे प्रशिक्षण क्रम के लिए शिक्षा सम्बन्धी टेलीनिजन बड़ा उपयुक्त विषय माना गया।

टोकियो प्रशिक्षण क्रम के लिए यूनैस्को इन नौ देशों में एक एक शिक्षावृत्ति देगी: चीन, भारत, ईरान, कोरिया, मलाया, पाकिस्तान, फिलीपाइन, सिंगापुर, थाईलैंड। सरकार अपनी ओर से भी शिक्षार्थी भेज सकती है (सब मिलाकर शिक्षार्थियों की संख्या २५ से अधिक न होनी चाहिए) परन्तु ऊसका खर्चा या तो वे स्वयं अथवा भेजने वाली संस्था उठाये। यूनैस्को योरोपीय शिक्षा टेलीविजन पद्धति से एक जानकार प्रशिक्षक देगी। इसकी इच्छा यह भी है कि कई सदस्य देशों से ध्वन्यंकित शिक्षा कार्य-क्रम एकत्र करके इस क्रम में भेजे जिससे कि शिक्षार्थी विश्व के दूसरे भागों में (शिक्षा सम्बन्धी टेलीविजन के तकनीक और उद्देश्यों से परिचित हो सकें।

इस क्रम में कुछ तो व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा और कुछ भाषण, विचार विनिमय और जापानी संस्थाओं में जाकर देखना भी होगा। इस में कार्यक्रम बनाने और उत्पादन तकनीक से लेकर प्रसारकों, शिक्षा-जानकारों और श्रोताओं के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीच सहयोग तक से सम्बन्धित शिक्षा सम्बन्धी टेलीविजन की सभी समस्याओं का अध्ययन किया जाएगा।

——

आज के युवकों की समस्या

आधुनिक विश्व में युवकों की समस्याओं का अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय गैर सरकारी संगठनों और युवक संस्थाओं के एक कार्य दल द्वारा यूनैस्को अधीन बैठकों में हो रहा है। उसकी बैठक अभी पेरिस में हुई थी इसमें स्कूल समाप्त करके अपनी जीविका कमाने के लिए तत्पर युवकों के सामने आने वाली समस्याओं पर विचार किया गया था। १५ देशों में युवकों की आवश्यकताओं और समस्याओं का यूनैस्को की ओर से अध्ययन हो रहा है। अन्दाज है कि १५-२० आयु दल विश्व की जनसंख्या का ५वां हिस्सा है।

——

एशिया में शिक्षक शिक्षा जानकारों का प्रशिक्षण

मनीला में एशियाई देशों के अध्यापक प्रशिक्षण विशेषज्ञों की एक बैठक १४ से २५ मई तक हुई। इस बैठक की आयोजना यूनैस्को ने फिलीपाइन सरकार के समायोजन से की थी, और यह यूनैस्को महासम्मेलन द्वारा १९६० में स्वीकृत एशिया में प्रारंभिक शिक्षा का विकास सम्बन्धी प्रादेशिक कार्यक्रम के अंग रूप में हुई थी।

यह बैठक प्रमुखतः तकनीकी थी। इसके प्रमुख उद्देश्य थे; एशिया में शिक्षक प्रशिक्षण की उन समस्याओं का निर्देश जिनपर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए; फिलीपाइन सरकार द्वारा यूनैस्को की सहायता से मनीला में स्थापित किया जाने वाले शिक्षक प्रशिक्षण प्रादेशिक केन्द्र के कार्यक्रम पर विचार करना; और विशेषकर इस केन्द्र के पहले प्रशिक्षण क्रम का पाठ्यक्रम ऐसा बनाना कि उससे प्रदेश की अध्यापक प्रशिक्षण सम्बन्धी समस्यायें सुलझ जायें।

——

ब्रिटिश लेखक आर्थर सी० क्लार्क को कलिंग पुरस्कार

लोकप्रिय विज्ञान-कृतियों के लेखकों को बढ़ावा देने के लिए चलाया हुआ कलिंग पुरस्कार इस वर्ष ब्रिटिश लेखक आर्थर सी० क्लार्क को दिया गया है।

सी० क्लार्क का घर श्रीलंका में है। उन्हें विज्ञान प्रगति की श्रीलंका संस्था ने नामित किया था। निर्णायक मंडल में रूस की वैज्ञानिक अकादमी के प्रो० आई० आई० आर्टोबोलेव्स्की, रोम विश्वविद्यालय के प्रजनन विज्ञान संस्थान के प्रो० गिउसेप मांतालेंती, और भारतीय आयोजना आयोग के प्राकृतिक संसाधनों और वैज्ञानिक शोध के सलाहकार डॉ० एम० एस० रांधवा थे।

इस निर्णायक मंडल ने मि० क्लार्क को पुरस्कार देकर "अन्तरिक्ष युग" के एक लेखक को सम्मानित करने की इच्छा प्रकट की। वे इंग्लैण्ड के अन्तर्ग्रहीय समाज के भूतपूर्व अध्यक्ष हैं और श्रीलंका के गणितज्योतिष संस्थान के अध्यक्ष हैं। उनकी पुस्तकों के प्रिय विषय हैं अन्तर्ग्रहीय उड़ानें, अन्तरिक्षयान और ब्रह्माण्ड में अभियान आदि। उनकी २८ पुस्तकों की पंद्रह भाषाओं में २० लाख प्रतियां बिक चुकी हैं। मि० क्लार्क ने पत्रिकाओं में भी खूब लिखा है और अनेकों बार रेडियो तथा टेलिविजन पर आ चुके हैं।

उनकी पुस्तकों में है : **अन्तर्ग्रहीय उड़ान, अंतरिक्ष की खोज, सागर पार की आवाज, अन्तरिक्ष यान की चुनौती, पहली पाँच गहराइयाँ सागर की चुनौती, आकाश के दूसरी ओर, और चंद्रधूलि का पात।**

कलिंग पुरस्कार १९५१ में प्रारंभ किया गया था, इसे अंतर्राष्ट्रीय निर्णायक मंडल प्रदान करता है। इस मंडल की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियुक्ति यूनैस्को प्रति वर्ष करती है। यह १,००० पौंड का है, इसका दान कलिंग संस्था के निर्देशक भारतीय उद्योगपति श्री बिजयानन्द पटनायक ने किया है। इस पुरस्कार के पूर्व विजेता क्रमशः इस प्रकार हैं: लुईद ब्रोग्ली (फ्रांस), जूलियन हक्सले (इंग्लैण्ड), बाल्डिमीर केम्पफर्ट (संयुक्तराज्य) ऑगस्तोपि मुनेर (वेनेजुला) जार्ज गामो (संयुक्तराज्य), बर्टण्ड रसल (इंग्लैण्ड) कार्लवॉन फ्रिश (जर्मनी और आस्ट्रिया); जाँ रॉस्ताँ (फ्रांस) और रिशी काल्डर (इंग्लैण्ड)।

कला-शिक्षा की दो नई पत्रिकाएँ

यूनैस्को ने अभी हाल में कला शिक्षा सम्बन्धी दो नई पत्रिकायें निकाली हैं। स्कूलों, कॉलेजों, अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के कला-शिक्षकों तथा समुदाय में सांस्कृतिक केन्द्रों और कला शिक्षा कार्यक्रमों के निदेशकों के लिए उनकी विशेष उपयोगिता है। पहले सेट का शीर्षक है—"खेलो, खोजो, देखो, बनाओ," इनमें मूल नमूने और रचना सिखाई जाती है जिससे विद्यार्थी अपनी कल्पना और सृजन शक्ति का विकास कर सकें। दूसरे सेट का नाम है "किशोर के लिए त्रि-आयाम कला," इस में किशोरों को मूर्त्तिकला की शिक्षा दी जाती है। जिससे जिन विद्यार्थियों को मूर्त्ति कला का कोई अनुभव नहीं है वे कला के इस क्षेत्र में विभिन्न सामग्रियों और तकनीकों से प्रयोग करते हैं।

प्रकाशन

चित्रों में संयुक्त राष्ट्र

"संयुक्त राष्ट्र का चित्रात्मक इतिहास" (जेकब ए० रूबिन टॉमस योसलॉफ़, न्यूयार्क लन्दन और टोरान्टो द्वारा प्रकाशित, ७-५० डॉ० ४२ पौंड) अभी हाल में संयुक्त राज्य में ६०० चित्रों और साथ के पाठ के साथ निकली है। १९४५ में सान फ्रांसिस्कों में संयुक्त राष्ट्र के जन्म से लेकर इस पुस्तक में संयुक्त राष्ट्र के १६ वर्षीय जीवन को उसके अस्तित्व को आकार देने वाले पुरुषों, स्त्रियों, घटनाओं और स्थानों सहित चित्रों में प्रस्तुत किया गया है।

इसके लेखक हैं इजराइली लेखक जेकब ए० रूबिन। वे पत्रकार भी हैं और १९५३ से संयुक्त राष्ट्र के संवाददाता रहे हैं। इस चित्रात्मक इतिहास में अतीत और वर्त्तमान में संयुक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र से सम्बन्धित सभी व्यक्तियों का परिचय दिया है। और इसके कुछ प्रमुख नेताओं के भाषण आदि भी दिए हैं।

अध्यायों के शीर्षकों से इस पुस्तक की विषय वस्तु का अन्दाज लगाया जा सकता है : विश्व सहयोग के पहले प्रयत्न; अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों का निपटारा; संयुक्त राष्ट्र की प्रमुख संस्थाएँ; मानव परिवार की संयुक्त देखभाल; वर्तमान युग की चुनौतियों का सामना; और संयुक्त राष्ट्र के व्यक्ति और स्थान।

यद्यपि यह पुस्तक प्रौढ़ों के लिए है परन्तु स्कूलों के लिए भी लोकप्रिय और उपयोगी हो सकती है। इससे संयुक्त राष्ट्र के इतिहास, उसकी जटिल कार्रवाइयाँ और उसके विशाल अभिकरण-परिवारों को जाना जा सकता है।

यू थांत, कार्यवाहक महासचिव और संयुक्त राष्ट्र महासभा के पहले अध्यक्ष फ्रेडरिक एच० बोलैंड ने इसमें प्रस्तावनायें लिखी हैं।

Published by the Director, Unesco, South Asia Science Co-operation Office, 100 Sundar Nagar, New Delhi and printed by Rakesh Press, 1575 Aziz Ganj, Delhi. (Unesco Vrit Patrika, Vol. 8, No. 6-7, June-July, 1962.) Reproduction authorized. Credit line should read ; (UNESCO).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

UNESCO

एन-१, रिंग रोड
नई देहली

यूनैस्को वृत्तपत्रिका

यह समाचार पत्र संयुक्त राष्ट्रीय शैक्षणिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संस्था के विश्व भर के कार्यों का मासिक प्रतिवेदन है

मासिक बुलेटिन | जुलाई-अगस्त, १९६५ | अंक ११, संख्या ७-८

8.11.65
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

विषय सूची

अगले दशक में शिक्षा-आयोजना के प्रमुख कार्य
फिलिप एच० कूम्ब २
शिक्षा आयोजना के अन्तर्राष्ट्रीय पक्ष ७
प्रयोजनशील तरुण ९
यूनैस्को और तरुण १२
एक शिविर : तीन राष्ट्र : अनेकों मित्र १५
प्रगति के लिए बीस हजार स्वयंसेवक
आर्थर जिलेट १८

समाचार

शिक्षा
भूगोल अध्यापकों के लिए निर्देशिका २१
मानव और सामाजिक विधाएँ
सामाजिक और आर्थिक विकास का शोध केन्द्र (दिल्ली) २१
पूर्व पश्चिम प्रायोजना
स्कूल पाठ्य पुस्तकें और अन्तरसांस्कृतिक सद्भावना २२
जन-संचारण
ग्रामीण समाचार-पत्र २३
विकासशील देशों के लिए पुस्तकें २३
यूनैस्को समाचार कक्ष से
अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की निदेशिका २४
विश्व विज्ञान निदेशिका २४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले दशक में शिक्षा-आयोजना के प्रमुख कार्य

फिलिप एच० कूम्ब

[निदेशक, शिक्षा आयोजना का अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान]

पिछले दो दशकों से विश्व में जो बड़े-बड़े परिवर्तन हो रहे हैं, उनके कारण दूरव्यापी शिक्षा क्रान्ति प्रारम्भ हो गई है। इस लेख का प्रयोजन यह निश्चय करना है कि कहाँ तक यह शिक्षा क्रान्ति पहुँच चुकी है, इसके उद्देश्य क्या हैं, विशेषकर यदि इस क्रान्ति को रचनात्मक परिणामों तक ले जाना है तो शिक्षा आयोजना के कौन से काम होंगे। मैं इसी कारण यह अकलन कर सकता हूँ कि शिक्षा आयोजना का हमारा नया अन्तराष्ट्रीय संस्थान भी अपने संस्थापक यूनैस्को की ही भाँति इस विश्व-व्यापी शिक्षा क्रान्ति को चारों ओर से देख सकता है।

विविध देशों की परिस्थितियों से अवगत होने के कारण तुलनात्मक विश्लेषण का आधार प्राप्त हो जाता है और यद्यपि अभी दृढ़ निष्कर्षों पर पहुँचना सम्भव नहीं है। फिर भी हमको निश्चित भिन्नताओं और रोचक समानताओं, दोनों का ही परिचय मिल रहा है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए मैं अपनी टिप्पणियाँ दो महत्वपूर्ण प्रश्नों पर केन्द्रित करूँगा। पहले यह कि शिक्षा सम्बन्धी क्रान्ति ने अब तक कितनी प्रगति की है और कौनसी समस्याएँ उठी हैं। दूसरे आजतक के अनुभव के आधार पर आगे के वर्षों में विकासशील देशों में शिक्षा-आयोजन के प्रमुख कार्य क्या होंगे, यह कहना आवश्यक है कि मेरे प्रेक्षण अभी अन्तिम नहीं हैं और प्रत्येक विकासशील देश पर समान रूप से लागू नहीं होते। इसके परिणामस्वरूप मैं एक विशिष्ट परिस्थिति का सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास करूँगा। यह ध्यान में रखना चाहिए कि पिछले दस वर्षों में जो कुछ भी हुआ है। वह शिक्षा आयोजना का परिणाम नहीं है क्योंकि अधिकतर विकासशील देशों में थोड़े ही दिनों से यूनैस्को की सहायता के द्वारा शिक्षा आयोजना प्रारम्भ की गई है और इसमें तो समय लगता है। निश्चय ही पिछले वर्षों में जो गम्भीर समस्याएँ सामने आई हैं, उनसे पता चलता है कि क्यों सुदृढ़ शिक्षा आयोजना की आवश्यकता है। इसलिए शिक्षा आयोजना का वास्तविक परिक्षण आगामी वर्षों में होगा।

पिछला दशक : प्रगति और समस्याएँ

अतीत की ओर देखते हुए हम इतना कह सकते हैं कि अधिक महत्वपूर्ण बात यही रही है कि विद्यार्थियों की संख्या बहुत बढ़ गई है विशेष रूप से प्रारम्भिक स्कूल स्तर पर। और अधिकतर विकासशील देशों में शिक्षा सम्बन्धी खर्चों में वृद्धि भी की गई है। कुल सार्वजनिक खर्चों और कुल राष्ट्रीय आय के प्रतिशत में यह वृद्धि हुई है।

यह जिस कारण हुआ है कि ये राष्ट्र, पहले की शिक्षा पद्धति से जिसके प्रयोजन सीमित थे और जो केवल थोड़े से ही लोगों को लाभ पहुँचाती थी, एक ऐसी सम्पूर्ण शिक्षा पद्धति की ओर बढ़ रहे हैं जो समूची जनसंख्या के लिए होगी और राष्ट्रीय विकास की सभी आवश्यकताओं को पूर्ण करेगी। यह वह लक्ष्य है कि जो अधिक विकासशील देश एक शताब्दी या अधिक से रखे हुए हैं और जिनकों वे अब भी पूरा नहीं कर सके। विकासशील देश बहुत ही जल्दी में हैं। वे वर्षों का हिसाब लगाते हैं दशकों का नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्य के लिए इन देशों के परिणात्मक विस्तार लक्ष्य बहुत ऊँचे हैं। अधिकतर विकासशील देश १९७५ या १९८० तक सार्वजनिक प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने का निश्चय कर चुके हैं। यद्यपि उनमें से बहुत से अभी आधे रास्ते पर भी नहीं हैं। अधिकतर देशों में माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा के लिए भी ऐसे ही महत्वाकांक्षी विस्तार लक्ष्य हैं। संक्षेप में यह कह सकते हैं कि शिक्षा सम्बन्धी यह क्रान्ति अभी केवल प्रारम्भिक अवस्था में ही है।

कुछ निश्चित उदाहरण : लैटिन अमरीका में प्रारम्भिक स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या १९५० में १४·३ मिलियन थी और १९६० में २४·३ मिलियन हो गई है अर्थात् ११ प्रतिशत से अधिक की वार्षिक वृद्धि हुई है, ६ देशों में विद्यार्थियों की संख्या एक दशक में पहले से दूनी हो गई। वेनेजुला में केवल ५ वर्षों में ही १९५८ से ६३ तक विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों की संख्या दस हजार से ३५ हजार हो गई और कोलम्बिया में ८ वर्षों में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या दूनी हो गई है।

अफ्रीका का विस्तार जो नीचे स्तर से प्रारम्भ हुआ था और भी नाटकीय रहा है। उदाहरण के लिए नाइजीरिया में प्रारम्भिक स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या १९५० से १९६२ तक तिगुनी हो गई जबकि विश्वविद्यालयों में दस गुनी हो गई। अफ्रीका भर में विशेष रूप से १९६१ के आदिस अबाबा यूनेस्को सम्मेलन के बाद सभी स्तरों पर विद्यार्थियों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ रही है और ऐसी आशा है कि आगे भी बढ़ती जाएगी।

भारत इसका महान् उदाहरण है। भारत में १९५० में प्रारम्भिक स्कूलों के विद्यार्थियों की संख्या १९ मिलियन थी और अब ५० मिलियन है विश्वविद्यालय और दूसरे उत्तर माध्यमिक स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या पिछले ५ वर्षों में ही ६० प्रतिशत बढ़ गई है। इसके साथ ही शिक्षा पर समूची राष्ट्रीय आय १९५० में १·२ प्रतिशत थी और अब ३ प्रतिशत हो गई है। भारत की आयोजना में जो लक्ष्य प्रेक्षपित किये गये हैं। उनमें १९६२ की अपेक्षा १९७५ तक प्रारम्भिक शिक्षा में तीगुनी वृद्धि होगी। माध्यमिक शिक्षा में चौगुनी और उच्चतर शिक्षा में साढ़े तीन गुनी। और इस तरह राष्ट्रीय आय का ४·७ प्रतिशत शिक्षा पर व्यय होगा।

फिर भी यह याद रखना होगा कि शिक्षा विस्तारण की यह विश्वव्यापी लहर केवल राजनीतिक नेताओं के इन निर्णयों का परिणाम नहीं है कि यह उनके देश के लिए अच्छी चीज होगी। मूलतः यह लोगों की माँग का ही परिणाम है क्योंकि जन-साधारण जो कि सामाजिक, आर्थिक श्रेणी में बिल्कुल नीचे हैं, अपने बच्चों के लिए शिक्षा को ऊपर चढ़ने की सीढ़ी समझते हैं, उनके लिए स्वतन्त्रता और जनतन्त्र का मतलब शिक्षा सुविधाओं का तत्काल प्राप्त करना है धीरे-धीरे नहीं।

यह शिक्षा विस्फोट जनता के बीच प्रारम्भ हुआ है वह जनता पर ही पनप रहा है। निरक्षर माता पिताओं के जो बुद्धिमान बच्चे प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त कर लेते हैं, वे आगे भी बढ़ना चाहते हैं, और माध्यमिक स्कूलों के विद्यार्थी विश्वविद्यालयों में प्रवेश करना चाहते हैं। बढ़ती हुई आबादी के कारण जन-साधारण की यह माँग और भी बड़ी प्रतीत होती है। आबादी इतनी बढ़ती जा रही है और बच्चों की संख्या इतनी तेजी से बढ़ रही है कि अनेकों देश शिक्षा के लिए दौड़ लगाएँ तब भी प्रगति की दृष्टि से वहीं के वहीं रहेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में आबादी के बढ़ने से जो कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं उनके बारे में जितना भी कहा जाए कम है।

विद्यार्थियों की संख्या और शिक्षा प्रयत्नों की यह अधिक वृद्धि उत्साहजनक हो सकती है। लेकिन उनके कारण समान रूप से प्रभावशाली समस्याओं और कमियों के छिपाने नहीं देना चाहिए यदि भविष्य में प्रगति होनी हो। इन समस्याओं और कमियों का सामना अब दृढ़ता और साहस से करना है नहीं तो विस्तार के आँकड़े एक बड़ा धोखा ही रहेंगे। उनको तीन मूल असन्तुलनों के रूप में देखा जा सकता है।

पहला असंतुलन शिक्षा पद्धति के परिणाम और राष्ट्र की विकास आवश्यकताओं के बीच है। इस असंतुलन का एक रूप यह है कि शिक्षा पद्धति से जिस प्रकार की निपुणता और विशेषज्ञता प्राप्त होती है। उसके और आर्थिक प्रगति की आवश्यकताओं के बीच समन्वय नहीं होता। उदाहरण के लिए ग्रामीण शिक्षा ग्राम के युवकों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त नहीं होती और सुधरी हुई कृषि सम्बन्धी उत्पादनशीलता तथा सर्वोपरि ग्रामीण विकास की आवश्यकताओं के अनुकूल भी नहीं होती। कुछ अर्थों में इस प्रकार की शिक्षा राष्ट्रीय विकास के लिए हानिकारक भी हो सकती है। इसी तरह यह शिकायत भी बहुत सुनी जाती है कि नगर के माध्यमिक स्कूलों से जो विद्यार्थी पढ़कर निकलते हैं, विश्वविद्यालयों में प्रवेश पाने के लिए वे पुराने ढंग से तैयारी किए हुए होते हैं। ऐसे बहुत कम होते है जो आर्थिक प्रगति के लिए आवश्यक मध्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तरीय तकनीकी कार्यों के लिए उपयुक्त हों। इसी प्रकार के असमंजन विश्वविद्यालय के स्तर पर भी होते हैं। कानून और कला स्नातकों की बहुत अधिक संख्या होती है और वैज्ञानिकों इंजीनियरों और दूसरे तकनीकी शिक्षा प्राप्त लोगों की कमी रहती है यद्यपि इनकी आश्यकता अर्थ-व्यवस्था के आधुनिकीकरण के लिए अधिक होती है।

इन अधिक विशिष्ट असंतुलनों के अतिरिक्त और उनसे भी अधिक गम्भीर और जटिल शिक्षित बेकारों की समस्या है जो नई नौकरियों की सुलभता और शिक्षा उत्पादन में द्रुत विस्तार होने के बीच में एक खाई होने के कारण प्रतीत होती है। वास्तव में तो स्थिति का मतलब यह नहीं होता कि देश में बहुत अधिक शिक्षा है। न ही इसकी व्याख्या और इसका निरोध बहुत सरल है लेकिन सामाजिक दृष्टि से यह बहुत ही गम्भीर समस्या है जिसका समाधान प्राप्त करना ही होगा।

दूसरा असंतुलन विभिन्न स्तरों पर शिक्षा सरणी के भीतर ही है। ये विभिन्न स्तर विभिन्न प्रकार से विकसित हुए हैं। इसी प्रकार शिक्षकों की माँग और उनकी सुलभता के बीच भी असंतुलन है। अनेकों देशों में प्रारम्भिक और विश्वविद्यालय की शिक्षा का विस्तार करने की अग्रता दी गई है क्योंकि दोनों ही अधिक लोकप्रिय होती हैं। जब कि अध्यापक प्रशिक्षण और माध्यमिक शिक्षा को भुला दिया जाता है। उसका परिणाम यह होता है कि प्रारम्भिक स्कूलों में योग्य शिक्षक नहीं होते और विश्वविद्यालयों में योग्य विद्यार्थी नहीं होते और कार्यकत्ताओं की कमी भी सभी स्तरों पर अनुभव की जाती है। अब तक बहुत से देशों में इस असंतुलन को दूर करने का प्रयत्न किया जाने लगा है; लेकिन पहले की गलत अग्रताओं और आयोजना के अभाव से उत्पन्न हो गयी कमी को दूर करना कठिन है।

तीसरा असन्तुलन सुलभ शिक्षा संसाधनों और शिक्षा विस्तारण की गति में है। संसाधन इतने अपर्याप्त हैं कि उनके कारण शिक्षा के गुण में बहुत कमी आई है। पुरानी शिक्षा स्थिति जो अब नयी आवश्यकताओं और कम संसाधनों की दृष्टि से बहुत ही अनुपयुक्त हो गई है, अधिकतर देशों में बदली नहीं जा सकी है। केवल उसको थोड़ा बढ़ा दिया गया है।

निश्चय ही यह कहना तो ठीक नहीं होगा कि कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए ही नहीं है। पुरानी सरणी में नयी बातें जोड़ दी गई हैं; विशेष रूप से माध्यमिक और उच्चतर स्तरों पर विज्ञान और औद्योगिकी में तथा अध्यापक प्रशिक्षण के रूपों में। इन नवीनीकरणों में विदेशी सहायता का बहुत कुछ योगदान रहा है। परन्तु कई स्थानों पर यह हुआ है कि पुराने विदेशी तरीकों को नये रूप में अपनाने का प्रयत्न किया गया है जो कि प्राप्तता देश की परिस्थितियों के अनुकूल नहीं होते। अब भी पुराने पाठ्यक्रम, संरचना, तरीके और प्रक्रियाओं की प्रधानता है।

इस समस्याओं को ठीक-ठीक समझ लेना इनको सुधारने के लिए अनिवार्य है लेकिन इनको हमारे दृष्टि-बिन्दु को बिगाड़ने नहीं देना चाहिए क्योंकि यह भी सत्य है कि इधर हाल में बहुत काफी और उत्साहजनक शिक्षा सम्बन्धी उपलब्धियाँ हुई हैं और विकास की एक ऐसी गति बन गई है जो अगर उपयुक्त रूप से निर्देशित की जाय तो उससे भविष्य में ये कमियाँ दूर हो सकती हैं। द्रुत परिवर्तनों और विस्तारण की अवधि में अनेकों गड़बड़ियां अन्तरण के समय की कमियां और असंतोषजनक परिणाम होना अनिवार्य है। इसी से यह बहुत महत्वपूर्ण है कि शिक्षा आयोजना के क्षितिज को विस्तृत किया जाए और इसके अंगों को सुदृढ़ बनाया जाय जिससे ये बुराइयां दूर हो सकें और अब से अधिक ढंग से विस्तारण किया जा सके।

अब हम शिक्षा आयोजना के लिए इन सबके प्रभावों पर तथा इस प्रश्न पर कि अग्रता कार्य क्या हो सकते हैं और किस प्रकार के उपाय उपयुक्त होंगे इस पर विचार करने में ध्यान लगायेंगे।

शिक्षा आयोजना के कार्य

जो पहले कहा जा चुका है उससे यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि शिक्षा आयोजना केवल आंकडा सम्बन्धी प्रेक्षपणों और शिक्षा-स्थिति को अधिक विस्तृत करने मात्र तक ही सम्बन्धित नहीं है। मैं सुझाव देता हूं कि आगामी वर्षों में इसके चार अग्रता कार्य होंगे :

पहला कार्य यह है कि आर्थिक प्रगति और सामाजिक विकास की प्रमुख आवश्यकताओं के साथ शिक्षा का अधिक अच्छा समेकन हो। इसके लिए सम्भव जनशक्ति आवश्यकताओं के अधिक गहरे विश्लेषण की आवश्यकता है, केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्कि अधिक विशेष रूप से विभिन्न उपप्रदेशों में और प्रमुख श्रम बाजारों में तथा कृषि और ग्रामीण क्षेत्रों में भी इस विश्लेषण की आवश्यकता है। इसके लिए इन आवश्यकताओं के अधिक अनुकूल शिक्षा कार्यक्रमों और संगठनों के पुनर्निर्माण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भी आवश्यकता है और माता-पिताओं तथा विद्यार्थियों को यह बतलाने के इस प्रकार निर्देशित करने के लिए अधिक प्रयत्न करने होंगे कि वे समझ सकें कि उनकी शिक्षा सम्बन्धी और व्यावसायिक चुनाव, राष्ट्रीय विकास की आवश्यकताओं और उनके अपने हित के अधिक निकट आ सकें। शिक्षा और उसके बाहर, नौकरी की प्रवृत्तियों और अभ्यासों को शिक्षित युवकों की बढ़ती हुई संख्या से समंजित करने के लिए भी नौकरी की अधिक सुविधाएं देने के लिए और श्रम की गतिशीलता में मनोवैज्ञानिक और दूसरे प्रकार की भावनाओं को दूर करने के लिए प्रत्येक सम्भव प्रयत्न करना होगा।

दूसरा कार्य शिक्षा सारणी के अधिक संतुलित और चयनपरक विस्तारण का होगा। पिछले वर्षों में जो परिमाणात्मक विस्तारण होता रहा है उसको रोकना नहीं है लेकिन उसे प्राप्त संसाधनों से अधिक उपयुक्त सम्बन्ध बनाने होंगे। उद्देश्य यह होना चाहिए कि विभिन्न स्तरों और विभिन्न कार्यक्रमों जैसे कि सामान्य शिक्षण और तकनीकी शिक्षा के बीच परस्पर अधिक अच्छा संतुलन हो और ये सब समाज की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुकूल हों। इस विस्तारण में अधिक जोर विशेष रूप से अध्यापकों के नौकरी के पूर्व और नौकरी में रहते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर देना होगा। इसके साथ-ही अच्छी पाठ्य-पुस्तकों और दूसरी शिक्षा सामग्रियों को अधिक मात्रा में सुलभ बनाना होगा जिससे कि इच्छुक विद्यार्थी स्वयं भी काफी सीख सकें।

तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह है कि शिक्षा पद्धति के अन्तर्गत सभी प्रकार के अनिवार्य परिवर्तनों और सुधारों का समावेश किया जाय। इन परिवर्तनों को दुरव्यापी होना चाहिए। उनमें शिक्षा पद्धति की संरचना, उसकी विषय वस्तु, शिक्षा के तरीके और सामग्रियां, भौतिक संयंत्र और उपस्कर, भरती करने के मानदण्ड और संगठनात्मक तथा प्रशासन सम्बन्धी प्रबन्धों का भी ध्यान रखना चाहिए। उनका उद्देश्य यह होगा कि गुण, कुशलता और प्रभावशीलता बढ़ सके। इनमें से कुछ परिवर्तनों के कारण खर्चा बढ़ेगा जब कि दूसरे कम खर्च वाले होंगे। यह परिवर्तन और उद्देश्य अनिवार्य हैं। परन्तु यदि शिक्षा को अधिक संसाधनों की अपनी मांग को उपयुक्त सिद्ध करना है तो यह और भी अनिवार्य है। यह ध्यान में रखना होगा कि समाज का शिक्षा खण्ड अनिश्चित काल तक समूचे राष्ट्र के उत्पादन और कुल सार्वजनिक ढंग का अधिक से अधिक भाग नहीं प्राप्त कर सकते। यद्यपि अभी परिस्थिति यह है कि बहुत से देशों में जितना धन इसके लिए है वह पर्याप्त नहीं है और सही अनुपात को निश्चित करने के लिए कोई सहज नियम नहीं ढूंढा जा सकता। किसी भी परिस्थिति में प्रगति का रास्ता केवल शिक्षा पर अधिक खर्च करना ही नहीं है बल्कि इसके बराबर ही महत्व की यह बात भी है कि जो खर्च उस पर अब तक हो रहा है उसका अधिक कारगर उपयोग किया जाए।

शिक्षा आयोजना का चौथा महत्वपूर्ण कार्य कक्षा-बाह्य शिक्षा को अधिक सरल बनाना है। इस शब्द से मेरा मतलब उन सब बातों से है जो प्रौढ़ शिक्षा के नाम से पुकारी जाती है। विकासशील देशों में औपचारिक शिक्षा और प्रशिक्षण तथा शिक्षा के दूसरे सभी संगठित रूपों के बीच में बहुत अधिक अन्तर समझा जाता है और इससे हानि होती है। इनमें से बहुत से प्रशिक्षण तो स्कूलों और विश्वविद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा के समान ही राष्ट्रीय विकास के हमत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए कृषि-प्रशिक्षण और ग्रामीण तरुण कार्यक्रम। श्रमिकों के लिए आधे समय की नौकरी पर रहते हुए तकनीकी प्रशिक्षण, सरकारी कर्मचारियों के लिए सुधार शिक्षाक्रम और तरुण माताओं के लिए कार्यक्रम इसके अन्तर्गत आते हैं। अनेकों स्थितियों में प्रशिक्षण और शिक्षा के ये सभी प्रकार औपचारिक शिक्षा से निकट रूप से सम्बन्धित रह सकते हैं। जिन देशों में विकास की आरम्भिक अवस्था है, उनमें इस प्रकार की कार्रवाइयों से राष्ट्रीय विकास की गति बड़ी द्रुत हो सकती है और खर्चा भी कम हो सकता है।

परिवर्तन के तरीके

हम जानते ही हैं कि इन चार कामों के कारण शिक्षा में जो आन्तरिक बड़े-बड़े परिवर्तन होंगे वे आसानी से नहीं किए जा सकते। यह केवल इसीलिए नहीं हैं कि शिक्षा पद्धतियां स्वरूप का मूल परिवर्तनों के विरोध होती हैं। इसका एक समान महत्वपूर्ण कार्य यह भी है कि शिक्षा सम्बन्धी परिवर्तन प्रायः जटिल भी होता है। कृषि के समान ही शिक्षा भी छोटे और दूर-दूर फैली हुई इकाइयों की एक बहुत बड़ा उद्योग है जिसमें हजारों संचालक (शिक्षक और प्रशासक) स्थापित अभ्यास में दुरव्यापी परिवर्तन करने के लिए इन सब इकाइयों से सम्बन्ध स्थापित करना और उनको विश्वास दिलाना, पुनः प्रशिक्षित करना और सहायता देना आवश्यक होगा। (अक्सर तो माता पिताओं और विद्यार्थियों को भी) जिससे वे नये अभ्यासों को स्वीकार कर सकें और उन्हें अधिक कारगर ढंग से अपना सकें। दूसरे शब्दों में शिक्षा सम्बन्धि परिवर्तन के लिए बहुत बड़ा प्रयत्न करना आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा सम्बन्धी परिवर्तन के लिए सबसे प्रमुख बाधा यह है कि शिक्षा सरणी के अन्तर्गत ऐसे संस्थात्मक तन्त्र नहीं होते जिनका प्रमुख कार्य ही यह है कि शिक्षा प्रगति में परिवर्तन और सुधार करे, पुराने अभ्यासों का मूल्यांक करें और नये तथा अधिक अच्छे तरीकों का विकास करें। और पद्धति के संचालकों अर्थात् शिक्षकों को सहायता दें। इसलिए सबसे पहली अग्रता तो इस प्रकार के तन्त्रों की स्थापना को दी जानी चाहिए और पुराने प्रशासकीय नियमों को आधुनिक रूप दिया जाना चाहिए। यह भी बहुत अधिक सरल नहीं होगा।

मेरा सुझाव यह है कि शिक्षा के प्रत्येक विभाग या मन्त्रालय के ऊपर गैर सरकारी स्तर पर और प्रत्येक विश्वविद्यालय में दो नये कर्मचारी एकांशों की स्थापना की जानी चाहिए। पहले को कार्य मूल्यांकन एकांश का नाम दिया जा सकता है। इसका काम चालू शिक्षा प्रक्रिया का विश्लेषण करना होगा।

दूसरा नया एकांश शोध और विकास एकांश होगा। यह अधिक गहराई से इसका विश्लेषण करेगा। इसमें शोध और प्रयोगों की सुकल्पित आयोजना प्रस्तुत की जायगी जिसमें अधिक उत्साहजनक और आलोचनात्मक बिन्दुओं पर शिक्षा का सुधार किये जाने का उद्देश्य होगा।

जैसे-जैसे ये दोनों नए एकांश गति प्राप्त करेंगे और महत्वपूर्ण खोज कर लेंगे एक तीसरे नये एकांश की आवश्यकता होगी शिक्षा विस्तारण व्यवस्था; जो इन नये आविष्कारों के समाचार, उन हजारों शिक्षकों और प्रशासकों के पास पहुँचाएंगे जो इनको कार्यरूप में परिणत कर सकते हैं।

शिक्षा आयोजक परिवर्तन के लिए ऐसे नये तन्त्रों को प्रोत्साहन देने से आगे बढ़ सकते हैं। वे उन स्थलों का निर्देश कर सकते हैं जहाँ परिवर्तनों की सबसे अधिक आवश्यकता है और यह भी देख सकते हैं कि आलोचनात्मक आत्मविश्लेषण शोध और प्रयोग के द्वारा शिक्षा के मूल सुधार के लिए पर्याप्त संसाधन सुलभ हो सकें। आयोजक स्वयं ये सब नहीं कर सकते। उनके पास न तो समय है और न योग्यता ही परन्तु वे जिन लोगों पर शिक्षा के प्रत्येक अंश में सुधार करने का तात्कालिक दायित्व है उनको सहायता दे सकते हैं और यदि आवश्यकता हो तो उन्हें उकसा भी सकते हैं।

जिन चार प्रमुख कार्यों का उल्लेख पहले किया जा चुका है और परिवर्तनों को शीघ्र लाने के इन विशिष्ट उपायों को एक ऐसी सुकल्पित सर्वोपरि सरणी के अन्तर्गत रखना होगा जिसमें निर्देशन, विभिन्न शिक्षा प्रयोजनों के लिए संसाधनों को जुटाने का विचारात्मक आधार और समाज की अग्रता आवश्यकताओं के अन्तर्गत शिक्षा की समेकन की निर्देश रेखाएं हों।

इस प्रकार की आयोजना का एक उपयोगी संकल्पनात्मक संधार तीन समकेन्द्रिक वृत्तों के चित्र से स्पष्ट किया जा सकता है। बीच का वृत्त औपचारिक शिक्षा प्रगति से सम्बन्धित होगा। इसको निरंतर विस्तारित होने और परिवर्तित तथा सुधार किये जाने की तथा आर्थिक और सामाजिक विकास की आवश्यकताओं के साथ अधिक कारगर रूप से जोड़ने की आवश्यकता है। यह एक बहुत बड़ा काम है और इसमें बहुत समय लगेगा।

छोटा आन्तरिक वृत्त औपचारिक शिक्षा पद्धति का पांच से दस प्रतिशत होगा। इसके अन्तर्गत सभी स्तरों के सावधानी से चुने हुए संस्थान होंगे जो आगामी वर्षों में शिक्षा सम्बन्धी परिवर्तन और प्रगति की सीमाओं का निर्माण करेंगे। अन्त में बाह्य वृत्त उन महत्वपूर्ण प्रशिक्षण और शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं का प्रतिनिधित्व करता है जो औपचारिक शिक्षा के बाहर की हैं अर्थात् वयस्क शिक्षा जिसको औपचारिक शिक्षा के साथ समेकित रूप में नियोजित करना होगा मानवीय संसाधनों के विकास के इसी विस्तृत दृश्य पटल के अन्तर्गत उसका आयोजन करना होगा।

इन तीनों वृत्तों को स्पष्ट रूप से सामने रखते हुए उनको आवश्यक संसाधन प्राप्त हो सकेंगे। इन दोनों की बहुत काफी उपेक्षा हुई है और यह बहुत सम्भव हैं कि इस प्रकार के विस्तृत दृश्य पटल में शिक्षा और आर्थिक प्रगति तथा सर्वोपरि राष्ट्रीय विकास की आवश्यकताओं के बीच अनिवार्य अन्तर्सम्बन्ध ध्यान में रहेंगे।

परन्तु कागज पर जिन संकल्पनाओं की चर्चा है वह तो केवल प्रारम्भ है। उनको लागू करने के लिए अधिक कारगर प्रशासन तन्त्र की आवश्यकता होगी। जब तक यह विभिन्न आंतरिक परिवर्तन और सुधार शिक्षा में अधिक विस्तृत स्तर पर नहीं होंगे और जब तक शिक्षा सरणियों में कारगर रूप से परिवर्तन और नवीनीकरण नहीं होगा इस नये युग की महान शिक्षा-क्रांति पूरी न हो सकेगी।

शिक्षा आयोजना से चमत्कारों की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए लेकिन इससे बहुत अच्छे परिणाम हो सकते हैं। क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा आयोजना सुविचारित विश्लेषण, सामान्य बुद्धि, और और विस्तृत और दीर्घ दृश्यपटल का उपयोग किसी भी राष्ट्र के मानवीय संसाधनों के विकास के अनिवार्य कार्य के लिए प्रयोग करना ही हो।

आज अधिकतर विकासशील देशों में शिक्षा आयोजना की कारगर प्रक्रिया की स्थापना के लिए जो गम्भीर प्रयत्न किये जा रहे हैं उनसे प्रोत्साहन प्राप्त किया जा सकता है लेकिन अब भी सफलता का भी निश्चय नहीं है। अधिक विकसित देश इस सम्बन्ध में जो भी सहायता कर सकते हैं उससे अत्यधिक लाभ हो सकते हैं न केवल प्राप्ताओं के लिए वरन् दाताओं के लिए भी। क्योंकि विकासशील देशों में शिक्षा आयोजना के अग्रता कार्य और नियमों के लिए जो कहा जा सकता है वही प्रगतिशील देशों के लिए भी ठीक होगा क्योंकि आज के विश्व में इतने महान् परिवर्तन हो रहे हैं कि कोई भी राष्ट्र शिक्षा की दृष्टि से अल्प विकसित ही है।

शिक्षा आयोजना के अन्तर्राष्ट्रीय पक्ष

यूनैस्को शिक्षा आयोजना के किसी एक विशेष तरीके या सिद्धान्त को प्रोत्साहन नहीं देती और यह विश्वास करती है कि ऐसी आयोजना किसी एक आर्थिक और सामाजिक पद्धति के लिए विशिष्ट नहीं है।

यूनैस्को का विश्वास है कि शिक्षा आयोजना को कारगर होने के लिए यह आवश्यक है कि उसमें कुछ मूल बातों का ध्यान रखा जाए; उसको सम्पूर्ण होना चाहिए और बच्चों के स्कूल से विश्वविद्यालय के स्तर तक तथा वयस्क शिक्षा आदि शिक्षा के सभी रूपों पर घटित होना चाहिए; इसको सामाजिक और आर्थिक आयोजना से समेकित होना चाहिए। इसमें न केवल भावी सम्भावनाओं का वरन् वर्तमान आवश्यकताओं का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए; इसमें शिक्षा के सुधार और विस्तारण दोनों का ही ध्यान रखा जाना चाहिए; और अन्त में इसके लिए इसको लागू करने में समर्थ प्रशासकीय संरचनाओं की आवश्यकता है।

पृष्ठभूमि

शिक्षा आयोजना सम्बन्धी पहली अन्तर्राष्ट्रीय बैठक १९५८ में यूनैस्को और अमरीकी राज्यों के संगठन द्वारा वाशिंगटन में अन्तरअमरीकी बाद गोष्ठी के रूप में संयोजित की गयी थी। यह बाद गोष्ठी लैटिन अमरीका में प्रारम्भिक शिक्षा के विस्तारण और सुधार की प्रमुख प्रायोजना के अन्तर्गत की गयी थी। शिक्षा और आर्थिक तथा सामाजिक विकास सम्बन्धी प्रादेशिक सम्मेलन इसके बाद इन-इन जगहों में किये गये : कराची (१९५९-६०), बेरुत (१९६०), अदिसअबाबा (१९५९), सान्तियागो द चिली (१९६२) १९६१ में यूनैस्को के शिक्षा विभाग में एक आयोजना दफ्तर बनाया गया।

यूनैस्को इस समय शिक्षाकर्मी वर्ग के उच्चतर प्रशिक्षण सम्बन्धी अरब राज्य केन्द्र (बेरुत) को सहायता दे रही है। यह केन्द्र १९६० के प्रादेशिक सम्मेलन के बाद स्थापित किया गया था। इसी प्रकार यूनैस्को शिक्षा आयोजना और प्रशासन के एशियाई संस्थान को भी सहायता दे रही है जो कराची सम्मेलन के बाद स्थापित किया गया। यूनैस्को इन संस्थानों के साथ शिक्षा आयोजना के कार्यक्रमों की कार्यान्विति में सहयोग देती है यह संस्थान संयुक्त राष्ट्र प्रादेशिक आर्थिक आयोगों के द्वारा आर्थिक विकास और आयोजना के प्रादेशिक संस्थानों के रूप में बैंकाक, डकार और सान्तियागो द चिली में स्थापित किये गये हैं। यूनैस्को सदस्य देशों की मांग पर उनको शिक्षा विकास के लिए राष्ट्रीय आयोजनाएँ बनाने और शिक्षा आयोजनाओं व्यवस्थाओं में सुधार करने में सहायता देने के लिए परामर्श मिशनें और विशेषज्ञ भेजती है। इसके साथ-ही अन्तर्राष्ट्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकास संस्था पुनर्निर्माण और विकास के अन्तर्राष्ट्रीय बैंक और अन्तर अमरीकी विकास बैंक से आर्थिक सहायता प्राप्त शिक्षा आयोजनाओं के लिए आवश्यक परामर्श और तकनीकी व्यवस्थाएँ प्रस्तुत करती हैं। शिक्षा आयोजना के अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान के खर्चे में भी यूनैस्को योग देती है।

शिक्षा आयोजना का अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान

शिक्षा आयोजना के अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान की आयोजना यूनैस्को महासम्मेलन में अपने १२वें अधिवेशन (दिसम्बर १९६२) में स्वीकार की थी। यह संस्थान पेरिस में मई १९६३ से काम करने लगा। यह एक अर्द्धस्वायत्त संस्था है जिसको यूनैस्को पुनर्निर्माण और विकास के अन्तर्राष्ट्रीय बैंक और फार्ड फाउन्डेशन द्वारा आर्थिक सहायता प्राप्त होती है। यह फ्रांसीसी सरकार द्वारा दिए गए भवन में है।

इस संस्थान का प्रमुख उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की शोध को संचालित, प्रोत्साहित और समायोजित करना है और उच्चतम स्तर पर शिक्षा आयोजना में विशेषज्ञों को प्रशिक्षण देने की दृष्टि से शिक्षा क्रमों और वाद्य गोष्ठियों का संगठन करना है। संस्थान की कार्रवाइयों का संक्षिप्त विवरण यूनैस्को वित्त पत्रिका खण्ड १०. १९६४ अंक ११, पृष्ठ ३६४ में निकल चुका है।

संस्थान ने १९६४ में शिक्षा आयोजना सम्बन्धी एक पुस्तक सूची और इस क्षेत्र में शोध तथा प्रशिक्षण में लगे हुए संस्थानों की एक निर्देशिका प्रकाशित की। इसने अभी हाल में शिक्षा आयोजना: प्रमुख शोध आवश्यकताओं की सूची शीर्षक से एक महत्वपूर्ण रिपोर्ट प्रकाशित की है।

प्रमुख शोध आवश्यकता

इस प्रकाशन में अन्तर्शाखा प्रकार की २५ शोध प्रायोजनाओं की सूची दी हुई है। ये प्रायोजनाएँ शिक्षा आयोजना के लिये विशेष महत्व की है और इनका तात्कालिक, व्यावहारिक लाभ है। उनके कार्यचालन द्वारा कर्मीवर्ग और संसाधनों में बहुत कम खर्चा होगा। इसमें सिफारिश की गयी है कि ये प्रायोजनाएँ विभिन्न देशों में संचालित की जाएँगी। इस प्रकार तुलनात्मक तथ्य प्राप्त किए जा सकेंगे जिनका उपयोग अधिक सामान्य कार्यक्रमों की आयोजना करने के लिए किया जा सकेगा।

प्रायोजनाओं का वर्गीकरण ६ प्रमुख तथ्यों के आधार पर किया जाता है; उत्पादनशीलता और शिक्षा का खर्च; शिक्षा की खर्च उठाने के तरीके; अध्यापक कुशल जनशक्ति के सम्बन्ध में देश की आवश्यकताएँ आयोजना प्रक्रिया और अन्तर्राष्ट्रीय पक्ष इन विभिन्न समस्याओं के लिए ये शोध कार्यक्रमों को प्रस्तावित किया गया है उनमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा गया है :

खर्च और उत्पादनशीलता: वर्तमान भवनों, उपस्कर और कर्मीवर्ग का अधिक अच्छा उपयोग; प्रति एकांश पर होने वाले खर्चों का विश्लेषण और तुलना; संसाधनों के विभिन्न वर्गों के अनुसार खर्चों का आकलन; नये शिक्षण माध्यमों का अधिक कारगर उपयोग; साक्षरता शिक्षण के अधिक मितव्ययी तरीकों का मूल्यांकन; व्यावसायिक प्रशिक्षण के अधिक कारगर पद्धतियों का मूल्यांकन, उच्चतर शिक्षा तथा पाठ्यपुस्तकों के उत्पादन आदि के विकास के लिए पड़ोसी देशों के बीच सहयोग की सम्भावनाएँ।

खर्च उठाने के तरीके: सार्वजनिक और कल्याण खर्च के बजट में शिक्षा को दिये गये धन का अनुपात और शिक्षा का खर्च उठाने के तरीके; अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा का खर्च उठाने के तरीके।

अध्यापक: नियुक्ति को बढ़ाकर परिस्थिति में सुधार करके और अध्यापकों के कार्य को अधिक उपयोगी बनाकर आवश्यकताओं को पूरी करने के तरीके। स्त्री अध्यापकों की संख्या बढ़ाने की सम्भावनाएँ; सामुदायिक विकास में ग्रामीण अध्यापक का कार्य। कुशल जनशक्ति की आवश्यकताएँ : आवश्यकताओं का अनुमान लगाने के लिए तरीकों का तुलनात्मक विश्लेषण; विभिन्न खण्डों में मध्य स्तर के तकनीकी कर्मीवर्ग की वास्तविक आवश्यकताओं और इन पदों के लिए आवश्यक शिक्षा योग्यताओं का मूल्यांकन; विकासशील देशों की आवश्यकताओं के अनुकूल व्यावसायिक प्रशिक्षण पद्धतियाँ; शिक्षा सम्बन्धी लोकरुचियों को इस प्रकार प्रभावित करना कि उनको राष्ट्रीय विकास के अनुसार ढाला जाए और "बौद्धिक बेकारी" दूर हो जाए। आयोजना प्रक्रिया; आयोजना द्वारा प्राप्त कारगर परिणाम (तुलनात्मक अध्ययन); आयोजना प्रक्रिया में सुधार करने की सम्भावनाएँ; आयोजना का प्रशासन और संगठन; अन्तर्राष्ट्रीय पक्ष; शिक्षा आयोजना के लिए बाहरी सहायता; शिक्षा आयोजना के लिए बाहरी सहायता का अधिक कारगर उपयोग; विकासशील देशों की आवश्यकताओं के अनुकूल बाहर से लिए हुए शिक्षा नियमों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को डालना; विदेशी विशेषज्ञों का कार्य; विदेशों में अध्ययन और प्रशिक्षण के लिए शिक्षा वृत्तियों का अधिक अच्छा उपयोग ।

यूनैस्को-अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान विशेषज्ञ बैठक

पैरिस में १४ से ३० जून, १९६५ तक शिक्षा आयोजना के यूनैस्को विशेषज्ञों की बैठक हुई । यह बैठक शिक्षा आयोजना के अन्तर्राष्ट्रीय संथान के समायोजन से शिक्षा आयोजना दफ्तर द्वारा आयोजित की गयी थी । इसमें १६ देशों में काम करने वाले विशेषज्ञों को साथ लाया गया था (अफगानिस्तान, कम्बोडिया, छड, कांगो गणराज्य, डोमिनीकी गणराज्य, गाबोन, ईरान, मेडागास्कर, मलाबी, मोरक्को, पाकिस्तान, पैराम्वे, पेरु, सोमालिया, तेंजानिया और बेनुजूला) । इस बैठक का प्रमुख उद्देश्य यह था कि तकनीकी सहायता के संयुक्त राष्ट्र विस्तारित कार्यक्रम के लिए काम करने वाले शिक्षा आयोजना विशेषज्ञों को विचार विनिमय का अवसर मिल सके ।

बैठक एक सप्ताह तक चली और यूनैस्को भवन में हुई थीं । इसमें भाग लेने वालों का स्वागत शिक्षा के सहायक महानिदेशक मि० जी बेटांकूर निजिया ने किया । अन्तिम अधिवेशन में उप-महानिदेशक ने भाषण दिया । इस बैठक के बाद एक दस दिन की वाद गोष्ठी शिक्षा आयोजना के अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान के भवनों में हुई ।

भाग लेने वालों ने अपनी कार्रवाइयाँ, प्रमुख समस्याओं, प्रस्तावित समाधानों और इन समाधानों को प्राप्त करने के लिए उपयुक्त तरीकों पर विचार किया गया । इसके बाद विशेषज्ञों ने अपने अनुभव के आधार पर भावी यूनैस्को कार्यक्रमों के नवीकरण के लिए कुछ सामान्य सिद्धान्तों और इस क्षेत्र में सदस्य राज्यों को दी जाने वाली व्यवस्थाओं में निश्चित करने का प्रयत्न किया ।

इन विशिष्ट बातों पर विचार-विनिमय हुआ : शिक्षा आयोजना के क्षेत्र में प्रस्तावित उद्देश्य, उपलब्ध परिणाम और समस्याएँ; राष्ट्रीय आयोजना व्यवस्थाओं और दूसरे अधिकारियों, मन्त्रालयों और व्यवस्थाओं के साथ सम्पर्क तथा संगठन; आयोजनाओं की स्वीकृति और मूल्यांकन; शिक्षा आयोजना में राष्ट्रीय विशेषज्ञों का प्रशिक्षण; शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों मैं यूनैस्को के कार्य का राष्ट्रीय स्तर पर समेकम (स्कूल शिक्षा, वयस्क शिक्षा और तरुण कार्रवाइयां) । इसके साथ-ही सामाजिक विद्यायों, जनसंचारण, प्राकृतिक विज्ञान और सांस्कृतिक कार्रवाइयों के क्षेत्र में यूनैस्को कार्य का संविधान; इस क्षेत्र में शोध आयोजना के तरीकों के मानकीकरण में विशेषज्ञों का सहयोगः प्रादेशिक अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग ।

प्रयोजनशील तरुण

[रेने मह् निदेशक]

यूनैस्को का विशेष कर्त्तव्य तरुणों पर अधिक-से-अधिक ध्यान देना है क्योंकि यह एक ऐसी संस्था है जो सम्पूर्ण रूप से मनुष्यों के सम्बन्धों में एक नई चेंतना का लाने के प्रति समर्पित है । अतः यदि विश्व के तरुण ही इसके प्रयोजनों को नहीं समझ सकेंगे और इसके लक्ष्यों से पूरी तरह सम्बद्ध नहीं रह सकेंगे तो इसका महत्व ही कुछ नहीं रह जाएगा ।

आज के तरुणों के सामने जो समस्याएँ हैं वे विश्वव्यापी चिन्ता और तातकालिकता की हैं । निश्चय ही यह कहा जा सकता है कि कुछ सीमा तक वर्तमान तरुणों की सभी विशेषताएँ उनकी मनोवृत्तियाँ, मनोविज्ञान और व्यापार, उनकी अत्यधिक ऊर्जा जो कहीं अत्यधिक उदारता और कभी भयंकर हिंसा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप ले सकती है। किसी भी तरुण पीढ़ी की विशेषताओं से बहुत भिन्न नहीं है।

लेकिन इसके पहले कभी तरुणों ने अपनी वास्तविक चेतना का इतना सच्चा चित्र या अपने गुणों और दोषों को इतने स्पष्ट नहीं होते, कभी तरुणों की प्रतिभाओं का इतना अधिक उपयोग नहीं हो पाता, या खतरे के प्रेम का इतना बड़ा परीक्षण भी नहीं हो पाता था जितना आज की दुनिया में है; क्योंकि यह दुनिया तो खुद ही नवीकरण के रूप में है।

अंकशास्त्री हमें बतलाते हैं कि २५ वर्ष से कम आयु के तरुणों की अधिकतर विकासशील देशों की जनसंख्या में आधी संख्या है। ये तरुण राष्ट्र जो अब इतिहास के स्तर पर आ चुके हैं, अभी नये हैं। क्योंकि उनका जागरण अभी हाल ही में हुआ है और ये देश इस कारण और भी अधिक तरुण हैं क्योंकि इनका विकास और नेतृत्व नई पीढ़ियों के हाथ में है।

उन विकसित देशों में जहाँ पर समाज के अन्तर्संगठन पहले से स्थापित हैं और उनकी नई पीढ़ियों के लिए समाज में समाहित होने के लिए अधिक अवसर है उनके लिए भी गणित की दृष्टि से ही यह अनिवार्य है कि तरुण व्यक्तियों की आवश्यकता राष्ट्रीय प्रगति और विस्तारण में अधिक-से-अधिक काम करने के लिए पड़ेगी क्योंकि जैसा कि सभी को ज्ञात है कि तकनीकी ज्ञान इतनी तेजी से बढ़ रहा है कि कल की औद्योगिकी आज पुरानी पड़ जाती है।

यद्यपि यह कहना शायद बिलकुल ठीक नहीं होगा कि किशोरावस्था कलाकारों की उम्र होती है फिर भी यह बिलकुल निश्चित है कि ३५ वर्ष का कोई भी इंजीनियर अगर अपनी पढ़ाई खत्म करने के बाद उसको छोड़ रहा है तो उसे फिर से अपने क्षेत्र के नये विकासों का ज्ञान प्राप्त करना होगा।

हमको यह भूलना नहीं चाहिए कि हमारी औद्योगिक सभ्यता तरुणों की सभ्यता है और प्रतिदिन इसका यह रूप बढ़ता ही जाएगा। तरुण व्यक्ति अब अपने बड़ों से अधिक जानते और अधिक समझते हैं (मैं यह नहीं कहता कि उनके पास निर्णय शक्ति भी अधिक अच्छी है।) इसका कारण यही है कि आज हम जो कुछ करते हैं इसका कारण और उसका आधार जहाँ तक समाज के आर्थिक क्षेत्रों का सम्बन्ध है आविष्कार और नवीनता है।

पहले जहाँ हमारे ज्ञान का प्रमुख स्रोत परम्परा और अतीत का दाय हुआ करता था वहाँ अब सबसे हाल के आविष्कार और भविष्य की सम्भावनाएं हमको यह बतलाती हैं कि हमारे अतीत का कौन-सा अंक हमारे लिए उपयोगी और सार्थक है। ऐसा प्रतीत होता है मानो समय ही बदल गया है और कार्य कारण बनता जा रहा है। और यह लगता है कि अब आज के इतिहास की नियुक्ति तरुण का कारण बनने की है।

यह कहने की तो आवश्यकता नहीं है कि सभी तरुण एक जैसे नहीं होते। उनका कोई एक दल नहीं बनाया जा सकता और उनके व्यवहार में उतनी ही विविधता है जितनी उन विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में जिनमें वे रहते हैं। परिभाषा की दृष्टि से तरुण एक विरोधी विषय है क्योंकि तरुणों में स्वयं ही अन्तर्विरोधों का जाल हुआ करता है।

हम आज की नई पीढ़ी के प्रति जो भी मत रखें इस बात से तो सभी सहमत होंगे कि सरकारें अब उन लाखों तरुणों की उपेक्षा नहीं कर सकती। वे सभी राष्ट्रों के जीवन पर छाते जा रहे हैं। इसके साथ-ही सरकारें उस आवश्यकता या तात्कालिकता की भी उपेक्षा नहीं कर सकतीं जिसके लिए ऐसे नये शिक्षा संगठन बनाने होंगे जो यथावत स्थिति को ही बनाए न रखें वरन भविष्य के समुदायों के रूप में सभी तरुणों का समेकन भी कर सकें।

परन्तु हमारे तकनीकी, आर्थिक और सामाजिक प्रारूपों में इतनी द्रुत गति से और इतना अधिक परिवर्तन हो रहा है कि आधुनिकी कृत और नये उपस्करों से युक्त स्कूल पद्धतियाँ भी आज के तरुणों की शिक्षा आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकती। इसलिए इस बात पर कोई भी आश्चर्य नहीं होता कि तरुणों के लिए स्कूल बाह्य शिक्षा अधिक-से-अधिक महत्वपूर्ण बनती जा रही हैं।

निश्चय ही अधिक स्कूलों, अधिक प्रशिक्षित अध्यापकों और पाठ्यक्रमों के नियमित पुनरीक्षण की तात्कालिक आवश्यकता है। ये तो आधारभूत विषय हैं। परन्तु मेरा विश्वास है कि यदि मैं भूतपूर्व शिक्षक के रूप में यह कहूं कि निम्न और उच्च दोनों ही प्रकार की शिक्षा पद्धतियाँ बहुत धीरे बदलती हैं तो इससे किसी को बुरा नहीं लगेगा।

इसी कारण मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि हमारी तेजी से बदलने वाली दुनिया में औपचारिक शिक्षा-पद्धति के लिए एक विभिन्न प्रकार की शिक्षा को अनुपूरक बनना पड़ेगा जिसमें नियम दृढ़ नहीं होते और जहाँ पाठ्य-पुस्तकों, परीक्षाओं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपाधियों पर कम-से-कम ध्यान दिया जाता है और तरुणों पर नियमित स्कूल कार्यक्रमों और कक्षा की पढ़ाई की प्रतिक्रियाओं को लादा नहीं जाता। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि शिक्षा का एक ऐसा रूप अपनाना होगा जो सबके लिए सुलभ हो और जिसमें प्रेरणा शक्ति और प्रयोग करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिले।

यही मेरी समझ में स्कूल बाह्य शिक्षा का मूल उद्देश्य और प्रयोजन है। यह उन तरुणों के लिए सहायक हो सकता है जिनको कभी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला या उनके लिए भी जो बहुत थोड़े समय के लिए स्कूल गये हैं और अब उन्होंने जो कुछ सीखा था सब भूल गये; इसके साथ-ही यह शिक्षा पद्धति उन तरुणों के लिए भी सहायक हो सकती है जो स्कूल छोड़ने के बाद अपने प्रशिक्षण और शिक्षा को जारी रखना चाहते हैं या उनके लिए जो स्कूल में जाते हुए भी अपने दृष्टिकोण का विस्तार करने के लिए और जीवन का वास्तविक अनुभव प्राप्त करने के लिए स्कूल की अपेक्षा अधिक स्वच्छंद जीवन और वातावरण की आवश्यकता का अनुभव करते हैं।

इस प्रकार स्कूल-बाह्य शिक्षा तरुणों को परिस्थितियां और तरीकों की विविधिता प्रस्तुत करती है जिसमें से वे चुन सकते हैं। ये स्वरूपतः परिवर्तनशील होती है और इस बात में यह उन नई पीढ़ियों के बहुत समान है जिनके लिए इसका निर्माण किया गया है। हाल के वर्षों में इसमें मूलभूत परिवर्तन हुए हैं। तरुण-आन्दोलनों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। तरुणों के नये दल और संस्थाएँ स्थापित की जा रही हैं। और इनका अध्ययन उनमें काम करने वाले वयस्कों के कार्य और प्रेस, रेडियो तथा टेलिविजन के प्रभाव को दृष्टि में रखते हुए करना बहुत रोचक होगा। सरकारी तरुण व्यवस्थाएँ सभी देशों में स्थापित हो गई है और कई तो तरुण मन्त्रालय भी बन गये हैं। यह भी एक ऐसी घटना है जिसका अध्ययन करना चाहिये क्योंकि इन नये तरुण मन्त्रालयों के साथ तरुणों के लिए स्कूल बाह्य शिक्षा का एक औपचारिक रूप हो गया है और वह सरकारी मामला बन गया है। कुछ लोग इसको अच्छा लक्षण मानते हैं और कुछ लोगों का यह विचार है कि इससे कार्य करने की प्रेरणा और स्वैच्छिक तरुण कार्रवाइयों को हानि पहुँचती है। जो कुछ भी हो यह विषय इतना महत्वपूर्ण है कि इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

मैं यह बात नहीं मानता कि हम वयस्कों को तरुणों की ओर से बात करनी चाहिए। यह एक व्यर्थ का प्रयत्न होगा और हमारी भूल भी होगी। हमें तो नयी पीढ़ियों को समझने के लिए अपने सारे प्रयत्न करने चाहिये और उनके सामने यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि हम सचमुच उनकी समस्याओं को समझना चाहते हैं। परन्तु हमें अपने भयंकर झगड़ों और विरोधों में उनको भी शामिल करने के लिए उन पर दबाव नहीं डालना चाहिये।

इससे मेरा मतलब यह नहीं है कि तरुणों को दुनिया की वर्तमान स्थिति से कोई मतलब नहीं रखना चाहिए। किसी भी स्थिति में ध्यान देना युवकों के स्वभाव का अंश होता है। तरुणों को इतिहास में भाग लेने के लिए बड़ी अधीरता रहती है और मुझे लगता है कि यह भावात्मक स्तर पर प्रारम्भ होना चाहिए। यही स्वाभाविक होगा क्योंकि भाव ही वह रास्ता है जिस पर तरुणों का परीक्षण होता है और जिस पर वे चलते हैं।

इसलिए युवकों के उत्साह की उपेक्षा करने के सम्बन्ध में कोई बात नहीं होनी चाहिये भले ही हमें यह भी लगता है कि कभी-कभी उसमें बिना ठीक से सोचे हुए निर्णय कर लिए जाते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि ये उत्साह स्वच्छंद और स्वतः उद्भुत होना चाहिए और जो भी निर्णय किए जाएँ उनको तर्कसंगत और निश्चित होना चाहिये।

हमारी यह इच्छा नहीं है कि तरुणों को बिलकुल वैसा का वैसा ही बनाया जाए जैसे कि वयस्क हैं या उनकी श्रद्धा और उत्साह का उपयोग वयस्कों के हितों और उनकी रुचियों के लिए किया जाए। या हमारी तकनीकी उच्चता के भार से उनकी भावना को दबाया जाए। हमारा प्रयोजन तो यही होना चाहिए कि नयी पीढ़ियाँ अपने सच्चे रूप में ही रहें जिससे तरुणों के द्वारा विश्व में नवीन जीवन की संचारण की सम्भावना कभी नष्ट न होने पाये।

क्या युवकों की सहायता करना सचमुच इतना कठिन है? मैं ऐसा नहीं समझता। मैं इस बात पर विश्वास नहीं करता कि दोनों पीढ़ियों के बीच परस्पर गलतफहमी होना ही अनिवार्य है, न ही यह मानता हूं कि वयस्क जीवन में प्रवेश करने के लिए क्रान्ति ही एक रास्ता है। इसके विपरीत मेरा विश्वास है कि युवक वयस्कों की ओर किसी निश्चियात्मक संकेत के लिए देखते रहते हैं जो उनके सामने हम लोगों को और चारों ओर के विश्व को स्पष्ट कर दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या हम उस अवस्था से इतनी दूर आ गए हैं कि हम उसे भूल ही गये हैं। सैकड़ों-हजारों वर्षों से यही स्थिति प्रत्येक पीढ़ी के साथ आती रही है। प्रत्येक पीढ़ी पुरानी पीढ़ी से यही आशा करती रही है कि वह एक ऐसी दुनिया लाए जो कारागार के समान प्रतीत न हो। कारागार से मेरा मतलब एक बँधी हुई नियति से है एक ऐसे विश्व से है जिसमें प्रेम नहीं है।

पुरानी लड़ाइयों का निर्दय स्वरूप, अज्ञान गलतफहमी और पूर्वाग्रहों की अन्धी दीवारें, सामूहिक अहंकार की गहरी खाइयां जिनमें बिना समझे ही मनुष्य भटक जाते हैं, भय और घृणा की ऊँची-ऊँची प्राचीरें विकृत सत्य के भयंकर संघर्ष-क्षेत्र जो मनुष्यों के बीच अनिवार्य रूप से भेद उत्पन्न करते हैं पड़ोसी को अजनबी बना देते हैं और मनुष्य पशुओं के स्तर तक उतर आते हैं। यदि यही वह दाय हैं जो हम अपने बच्चों के लिए छोड़ना चाहते हैं तो यह ठीक ही है और आवश्यक भी कि वे इसको भय के साथ अस्वीकार करते हैं।

परन्तु क्या यही वह दुनिया है जिसको अपने पीछे छोड़ेंगे? यही प्रश्न वास्तव में महत्वपूर्ण है और जब भी हम तरुणों की समस्या पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं जो यही प्रश्न बार-बार हमारे सामने आता है क्योंकि जिसको हम तरुणों की समस्याएँ कहते हैं वे वयस्कों के रूप में हमारे दायित्वों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

यूनैस्को और तरुण

तरुणों के लिए यूनैस्को की कार्रवाई को उसकी सब प्रमुख कार्रवाइयों से महत्व दिया जाता है। अपने २० वर्षों के अस्तित्व में तरुणों के कार्यक्रम को विकसित करने में यूनैस्को ने वर्तमान विश्व के दो प्रमुख तथ्यों को विशेष ध्यान में रखा है: अधिकतर देशों के जीवन में तरुणों को बढ़ता हुआ स्थान और कार्य और स्कूल बाह्य तरुण कार्रवाइयों का व्यापक विस्तारण। यूनैस्को ने सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं के साथ निकट रूप से काम किया है और अनेकों और विविध तरुण आयोजनाओं को सहायता दी है। नीचे हम तरुणों की ओर से यूनैस्कों कार्रवाइयों के कुछ नमूने प्रस्तुत कर रहे हैं।

नेता परिक्षण: विभिन्न देशों में तरुण दलों के नेताओं के बीच नियमित सम्पर्क बनाए रखने की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए यूनैस्को ने विभिन्न क्षेत्रों में वाद गोष्ठियाँ और सूचना तथा अध्यय क्रमों का संगठन किया है। अध्यय क्रमों का आयोजन रंगून (बर्मा) में १९५२ में, टोकियो (जापान) में १९५३ और हवाना (क्यूबा) में १९५४ में किया गया था। इनके अन्तर्गत भाषा, विचार-विनिमय और व्यावहारिक कार्य करवाया गया था जिससे तरुण आयोजकों को यह बतलाया गया कि किस प्रकार तरुण सामुदायिक विकास में भाग ले सकते हैं।

खेल परिषद: रोम में १९६० के ओलम्पिक खेलों के समय खेल और शारीरिक शिक्षा की अन्तर्राष्ट्रीय परिषद की स्थापना की गई थी। इस परिषद का निर्माण, खेल, कार्य और संस्कृति के सम्मेलन के परिणाम स्वरूप हुआ था। यह अन्तर्राष्ट्रीय बैठक अपने प्रकार की पहली बैठक थी और उसी वर्ष फिनलैण्ड सरकार और यूनैस्को द्वारा संयोजित की गयी थी।

यूनैस्को क्लब: अब सैकड़ों यूनैस्को क्लब आस्ट्रेलिया से फिनलैण्ड और जापान से फ्रांस तक बीसियों देशों में सक्रिय हैं। यूनैस्को के क्लबों को उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय सदभावना को बढ़ाना और यूनैस्को के उद्देश्यों और कार्यों के बारे में सूचना देना होता है। उनका संचालन तरुण सदस्यों द्वारा होता है और उनके कार्यक्रमों में पत्रों का विनिमय, सामूहिक यात्रायें, प्रदर्शनियाँ, भाषा, विचार-विनिमय तथा अन्तर्राष्ट्रीय कार्य शिविरों में भाग लेना आदि होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफ्रीकी फोरम : अफ्रीका में तरुण अधिक से अधिक संख्या में एक फोरम को पढ़ते हैं जो उनको संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों और कार्यों के बारे में बतलाते हैं। यह १९६३ से नाइजीरिया के विद्यार्थियों द्वारा यूनैस्को की सहायता से प्रकाशित किया जाता है और अब यह संयुक्त राष्ट्र के सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर विचार प्रकट करने के लिए तरुणों की पत्रिका बन गयी है।

स्वैच्छिक सेवा : जब यूनैस्को ने अन्तर्राष्ट्रीय स्वैच्छिक सेवा १९४८ में स्थापित की थी तब इसकी १८ सदस्य संख्या थीं। आज इसके सभी महाद्वीपों से ९१ सदस्य संस्थाएँ हैं। ये समिति अन्तर्राष्ट्रीय स्वैच्छिक कार्य शिविरों और दीर्घावधि सेवा कार्यक्रमों के सूचना केन्द्र के रूप में कार्य करती है और इसमें विकासशील देशों में स्वैच्छिक सेवा नेताओं के लिए प्रादेशिक प्रशिक्षण क्रम आयोजित किये हैं।

तरुण संस्थान : यूनैस्को द्वारा स्थापित एक विशेष अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान विश्व के तरुणों के लिए १९५२ से बाटिंग (जर्मन संघ गणराज्य) में कार्य कर रहा है। यूनैस्को युवक केन्द्र द्वारा आयोजित सर्वेक्षण और बैठकों ने तरुण समस्याओं और कार्यवाइयों का एक विस्तृत कार्यक्रम अपनाया है जिसके अन्तर्गत तरुण संगठनों का संचालन, विज्ञान और अर्थशास्त्र की शिक्षा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की शिक्षा, औद्योगिक परिवर्तनों का प्रभाव और जातीय पूर्वाग्रह का निराकरण होगा।

अनुभवों का विनिमय : १९५५ में यूनैस्को ने सम्बद्ध तरुण कार्यों की सारणी प्रारम्भ की जिसका उद्देश्य विभिन्न देशों में तरुण संगठनों के बीच अनुभवों का विनिमय करना है। इस योजना के अन्तर्गत इंगलैण्ड आस्ट्रेलिया पाकिस्तान आयरलैण्ड भारत और नीदरलैण्ड के तरुण आवासों के सदस्य लंदन से कलकत्ते तक सरलतम और सबसे सस्ते रास्ते से यात्रा की। उनके अनुभवों पर आधारित एक निर्देश पुस्तिका "धरती को रास्ता : पूर्वी एशिया की निर्देशकों" अब प्रकाशित हो गयी है।

अध्ययन अनुदान : १९५२ से ५७६ पूरे अध्ययन अनुदान और १८९ आंशिक अनुदान राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय तरुण संगठनों को यूनैस्को के तरुण नेता यात्रा अनुदान कार्यक्रम के अन्तर्गत दिए गए हैं। इन अनुदानों के कारण तरुण संगठनकर्त्ता विदेशों में तरुण कार्यवाइयों का अध्ययन करने और अपने देशों में नये विचारों और तकनीकों के प्रयोग के लिए सम्भव हो सका है।

विज्ञान क्लब : पिछले वर्ष यूनैस्को ने विज्ञान कार्यक्रम के सम्बन्ध में एक विशेष समिति बनाई है। यह समिति विज्ञान मेलों, क्लबों और शिविरों से सम्बन्धित है। अब यह समिति एक पुस्तिका तैयार कर रही है जिसमें यह बतलाया गया है कि तरुणों के लिए विज्ञान कार्यक्रमों का आयोजन किस प्रकार किया जाए। और यह इस प्रकार की कार्रवाई का आयोजन करने वाली संस्थाओं की अन्तर्राष्ट्रीय निर्देशका भी तैयार कर रही है।

भेंट कूपन : यूनैस्को का भेंट कूपन कार्यक्रम १५ वर्ष हुए प्रारम्भ किया गया था तब से औद्योगिककृत देशों में तरुणों के द्वारा डेढ़ मिलियन डालर इसके लिए एकत्र किये जा चुके हैं। इस ढंग का अधिकांश अफ्रीका और लैटिन अमरीका में तरुण प्रायोजना को सहायता देने के लिए प्रयुक्त हुआ हैं। उन प्रायोजनाओं में फार्मों के स्कूल, सामुदायिक और अन्तर्राष्ट्रीय तरुण केन्द्र और छात्रावास है। इस आयोजना के अन्तर्गत दाता देशों में व्यक्ति या समूह यूनैस्कों द्वारा प्रस्तुत की हुई सूची से उन प्रायोजनाओं को मिल सकते हैं जिनमें वे सहायता करना चाहते हैं। इससे लाभ उठाने वाले यूनैस्कों के कूपनों को आवश्यक विज्ञान या शिक्षण उपकरों को खरीदने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा की भाँति प्रयोग करते हैं।

रेडियो और टेलीविजन के कार्यक्रम में तरुण : यूनैस्को समायोजन में फ्रांस और बेल्जियम में रेडियो और टेलीविजन के द्वारा इस वर्ष के प्रारम्भ में तरुणों के लिए साप्ताहिक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रसारित किये गये। इस कार्यक्रम का शिक्षक था विश्व में तरुण और इसके अन्तर्गत खेलों पर विचार, नागरिक विकास, पुरातत्व, विकासशील देश, कार्य शिविर, लोक संगीत और यूनैस्को क्लबों पर विचार-विनिमय था। बीच-बीच में आधुनिकतम संगीत और लोक कलाओं के रिकार्ड भी बनाये जाते थे। जो उन कार्यक्रमों में भाग लेते थे उनमें रूस के शिक्षा शास्त्री प्रो० लो रेयर सिसाकिया जो अंतरीक्ष प्राण विज्ञान पर विश्वख्याति के विद्वान हैं और यूनैस्कों महा सम्मेलन के १३वें अधिवेशन के अध्यक्ष थे तथा सेनेगल की भूख से मुक्ति समिति के अध्यक्ष मि० पापाडियाफ ने भी इसमें भाग लिया।

पूर्व-पश्चिम : अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना और सहयोग के लिए शिक्षा का विकास करने के प्रयत्न के रूप में यूनैस्को अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के लिए तरुण क्लबों के निर्माण को प्रोत्साहन देती है। इन क्लबों का बहुधा यूनैस्को के मित्रों का नाम दिया जाता है। इसका अभी हाल का उदाहरण तरुण कार्यकर्त्ताओं के बीच सेंट इटेन (फ्रांस) और कोकूरा (जापान) सम्पर्क स्थापित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना था। इन लोगों ने अपने आप तैयारी की गयी और एक दूसरे के पास भेजी गई प्रदर्शनियों के द्वारा एक-दूसरे शहरों में रहन-सहन के तरीकों के बारे में सीखा है।

तरुण की निदेशिका : यूनैस्को ने अभी हाल में यूनैस्को क्लबों और इसी प्रकार की दूसरी संस्थाओं की एक अन्तर्राष्ट्रीय निदेशिका प्रकाशित की है। यह निदेशिका जनसम्पर्क खण्ड यूनैस्को लास दी फान्टेनाय पेरिस से प्राप्त की जा सकती है। यूनैस्को की सहायता से यूनैस्को क्लबों के फ्रांसीसी ने एक पुस्तिका प्रकाशित की है जिसका शिर्षक है "यूनैस्को क्लब किस के लिए क्यों और कैसे काम करती है।" यह पत्रिका अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों, क्लबों की स्थापना और संचालन के लिए एक निदेशिका के रूप में बनाया गया है। इसका अंग्रेजी संस्करण भी तैयार किया जा रहा है।

तरुण सम्मेलन : पिछले वर्ष यूनैस्को ने ग्रीनोबल फ्रांस में स्कूल वाह्य कार्रवाइयों और दीर्घावधि यूनैस्को तरुण कार्यक्रमों का आधार निश्चित करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन संयोजित किया था। तरुण समस्याओं के सम्बन्ध में यह पहला अन्तर्सरकारी सम्मेलन था। इसके प्रतिनिधि ७० यूनैस्को सदस्य देशों के थे उन्होंने सर्वसम्मति से यह संस्ताव पास किया जिससे स्कूल वाह्य कार्यक्रमों का भारी विकास निदेशित होगा। मार्च १९६५ में यूनैस्को ने जापान सरकार को एशिया में तरुण कार्रवाइयों के विकास की आयोजना करने के लिए एक प्रादेशिक बैठक का संगठन करने में सहायता दी।

फिल्म : यूनैस्को की सहायता से एशिया और लैटिन अमरीका में तरुण स्त्रियों ने पिछले वर्ष स्थानीय और विदेशी फिल्मों के तरुणों पर पड़ने वाले प्रभाव का सर्वेक्षण किया था।

संगीत और तरुण : तरुणी के बीच संगीत की अवधारण के विकास के लिए यूनैस्को कार्यों में महत्वपूर्ण संगीतज्ञ अन्तराष्ट्रीय संघ के साथ उसका सहयोग है। इस अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के सदस्य खण्ड २३ देशों में है और नये दल १७ और देशों में बनाये जा रहे हैं। यात्रा अनुदानों के द्वारा इन दलों के सदस्यों के बीच विनिमय यात्राएँ होती हैं। और यूनैस्को की सहायता और आर्थिक सहायता के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय संघ अपने सदस्य खण्डों के पास संगीतज्ञों को भेजता है।

आज का तरुण : यूनैस्को आज के तरुण की समस्याएँ और कार्यवाइयाँ नाम से एक पुस्तक प्रकाशित कर रही है। इस कार्य में पहली बार एक दीर्घ तुलनात्मक अध्ययन के रूप में तरुणों की प्रवृत्तियों और कार्यवाइयों का विश्व चित्र होगा। इसमें स्कूल वाह्य शिक्षा, उद्देश्यों और उपयोग के तरीकों की वर्तमान संकल्पनाओं का भी पुनरीक्षण किया जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक शिविर : तीन राष्ट्र : अनेकों मित्र

इधर दूसरे देशों के विद्यार्थियों के साथ स्वेच्छिक अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय कार्यों में भाग लेने वाले तरुणों की संख्या बढ़ती जा रही है। ये कार्यक्रम कई प्रकार के होते हैं लेकिन सब में एक सामान्य प्रयोजन यह होता है कि विभिन्न देशों के नागरिकों के बीच सद्भावना को बढ़ाया जाय।

अच्छी सद्भावना के लिए कार्य करना एक ऐसी बात है, जो अब विश्व भर में विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के बीच में सुनाई देती है, परन्तु अभी तक तरुणों को एकत्र करके उनके मतों के सम्बन्ध से विचार-विनिमय करवा पाना कठिन रहा है। एक कार्यक्रम जिसमें विचार-विनिमय की उचित पृष्ठभूमि बल पाती है और इस प्रकार सद्भावना का विकास होता है त्रिपक्षी कार्य और अध्ययन प्रायोजना है।

इस कार्यक्रम में स्वेच्छिक कार्य प्रयोजना और आयोजित विचार-विनिमय सम्मिलित हैं इसका आयोजन अमरीकी मित्र सेवा समिति ने इंग्लैण्ड की मित्र सेवा परिषद् और रूस के तरुण संगठनों की समिति के साथ मिलकर किया। इस योजना में २० और ३० वर्ष के बीच के तीस स्वयं सेवक (पाँच पुरुष और पाँच स्त्रियाँ प्रत्येक देश से) ग्रीष्म में एक महीने के लिए इकट्ठा होकर सेवा प्रायोजना और वाद-विवादों में भाग लेते हैं।

यह त्रिपक्षी कार्यक्रम १९६२ में इंग्लैण्ड में हुआ उसके बाद इसमें और उसके बाद १९६४ में संयुक्त राज्य में। इसमें भाग लेने वाले ढाई सप्ताह तक एक साथ रहते हैं, सोचते हैं, बातचीत करते हैं और काम करते हैं और उनका प्रयत्न यह रहता है कि परस्पर आदर और सद्भावना के साथ सम्बन्ध बनाये जाएँ।

रोज की शिविर कार्रवाई में सबेरे ४-५ घण्टे का काम, दोपहर में २ से ३ घण्टे तक विचार-विनिमय और संन्ध्या को सामाजिक कार्यक्रम या भ्रमण कार्यक्रम रहते हैं। प्रत्येक राष्ट्रीय दल से एक-एक सदस्य को लेकर समिति बना दी जाती है और वही समितियाँ कार्य, विचार-विनिमय और गृह संचालन की व्यवस्था करती हैं। प्रत्येक राष्ट्रीय दल के नेताओं की एक विशेष समिति होती है।

अभी तक यही हुआ है जिस देश में यह प्रायोजना संचालित होती है वही देश इसके लिए विस्तृत कार्यक्रम बनाता है जिसके अन्तर्गत सामाजिक कार्रवाइयाँ दौरे, स्वागत समारोह और इसी प्रकार के दूसरे कार्यक्रम होते हैं। लेकिन भाग लेने वाले की यह माँग है कि उनको अपने आप अपने समय का उपयोय करने के लिए कुछ अवसर दिया जाए।

यद्यपि यह कार्य प्रायोजना एक सामुदायिक प्रायोजना को आगे बढ़ाने की दृष्टि से प्रारम्भ की जाती है इसका उद्देश्य अनौपचारिक बातचीत को प्रेरणा देने और प्रयोजन में सभी के भाग लेने के लिए अवसर प्रस्तुत करने के लिए भी होता है।

इंग्लैण्ड में ब्रिस्टल नामक स्थान में १९६२ में भाग लेने वालों ने स्थानीय सामुदायिक सुधार संस्था द्वारा प्रारम्भ की गई एक निर्माण प्रायोजना में भाग लिया। उन्होंने सामाजिक और शिक्षा सम्बन्धी कार्रवाइयों का एक केन्द्र बनाने में सहायता की। यह अन्दाज लगाया गया कि उनके तीन हफ्तों के काम में उतना हो गया जितने में समुदाय को पाँच महीने लगते। कार्य योजना का निर्देशन करने के लिए व्यावसायिक फोरमेन थे। कार्य दल प्रतिदिन स्वयंसेवकों को दलों में विभाजित करता था और उनको ईंटें लगाने, सीमेंट लगाने या कीलें ठोकने के लिए भेजता था।

१९६३ में सोवियत रूस के दक्षिण कॉकेकश प्रदेश में भाग लेने वालों में कलबलदिनिया बेलगारिया के स्थानीय कन्फेक्शनल व्यापार संघ के एक तरुण नेताओं के ग्रीष्म शिविर का निर्माण करने में सहायता दी। १९५४ में संयुक्त राष्ट्र में त्रिपक्षी स्वयं सेवकों ने शिकागो के अनेकों भागों के बच्चों द्वारा प्रयोग में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाये जाने वाले वाले शिविर रेनबर्ग की सुविधाओं का विस्तार करने में सहायता दी।

जो लोग इसमें भाग लेते हैं उनमें कार्य प्रयोजनाओं की खूबियों और सामान्य कार्य अनुभव के सम्बन्ध में मतभेद भी होता है। कुछ कहते हैं कि उनके कार्य की आवश्यकता अधिक नहीं थी इसलिए उनको प्रयोजन में अभाव का अनुभव हुआ। दूसरे कहते हैं कि इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि काम कौनसा है क्योंकि महत्वपूर्ण बात कार्यकर्त्ताओं के बीच का संचारण है कार्य के भौतिक परिणाम नहीं है। कुछ स्वयंसेवकों का विश्वास है कि कार्य की हानि करके बातचीत के मूल्य पर जोर देना गलती होगी। दूसरी आपत्ति यह की जाती है कि प्रातःकाल का शारीरिक कार्य इतना थका देता है कि दोपहर में महत्वपूर्ण विषयों पर विचार करने के लिए शक्ति ही नहीं रह जाती। यह सुझाव भी दिया गया है कि कार्यकर्त्ताओं और जिन लोगों के लिए यह कार्य किया जा रहा है उनके बीच में अधिक सम्पर्क होना चाहिए।

किसी ने भी यह प्रस्ताव नहीं रखा कि कार्यक्रम से कार्य अनुभव को निकाल देना चाहिए। प्रत्येक शिविर के अन्त में लोगों से जो आलोचना करवाई जाती है उसका उद्देश्य भी यही है कि कार्य अनुभव के गुण में सुधार हो। इस ग्रीष्म में इंगलैण्ड में दिये गये कुछ सुझावों पर अमल किया जायेगा जब तृपक्षी कार्यक्रम की दूसरी श्रेणी प्रारम्भ होगी। कार्य की योजनाएँ बदल दी जायेंगी। अधिक लम्बे समय तक आधे दिन तक काम करने के स्थान पर यह विचार किया जा रहा है कि कार्य को आठ घण्टों तक एक दिन में किया जाए और एक हफ्ते तक किया जाय। पिछले हफ्तों में कार्य में जितना समय लगाया गया है अब उसमें कुछ कमी होगी। अब पास पड़ोस के सामुदायिक दलों और तरुणों से मिलने और प्रमुख स्थानों पर जाने पर अधिक जोर दिया जायेगा।

निर्माण कार्य के अलावा शिविर के सदस्य अपने आवास गृह के कार्यों को भी करते हैं। ब्रिस्टल में भाग लेने वाले अपना भोजन स्वयं ही बनाते थे वहाँ एक रूसी ने कहा "मैं मास्को विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र का ग्रेजुएट हूँ और यहाँ मैं आलू छील रहा हूँ। हम जितना सम्भव हो सकता है परस्पर बातचीत करते हैं, विचार-विनिमय करते हैं और खूब हँसते हैं।" रूस में ज्यादातर स्थानीय भोजन बनाने वालों ने ही भोजन बनाया था लेकिन इंग्लैण्ड और संयुक्त राज्य की एक-एक राष्ट्रीय भोजन रात्रि थी जिसमें इन देशों के स्वयंसेवकों ने अपनी राष्ट्रीय सामग्रियाँ बनाईं और परोसी थी।

दोपहर को तीसों स्वयंसेवक साथ बैठकर बातचीत करते हैं। विषयों पर बातचीत होती है। सब से मूल विषय तो होता है आधुनिक विश्व में युवकों की समस्याएँ और दायित्व। लेकिन प्रतिवर्ष शिविर में भाग लेने वाले अपने आप निश्चय कर लेते हैं हमें क्या बातचीत करना चाहिए। १९६३ में ये विषय चुने गये थे: युवकों के साँस्कृतिक मूल्य, तरुणों के आदर्श और नैतिकता, व्यक्ति और समूह, शान्ति और निस्सस्त्रीकरण। १९६४ में इन विषयों पर विचार किया गया: कोई भी व्यक्ति अपनी नैतिकता का निश्चय स्वयं कैसे करता है, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर कौन-कौन से बंधन लगाये जाने चाहिए, हम किस प्रकार एक ऐसे विश्व समुदाय का निर्माण कर सकते हैं जिसमें विविधता भी रह सके। इन विषयों पर परिचयात्मक वार्ता प्रमुख वक्ता देता है और इनके बाद तीन दिनों तक प्रश्न करते हुए और विचार-विनिमय करते हुए ९ घण्टे बिताये जाते हैं।

विस्तार से इस प्रकार के प्रश्नों पर विचार किया जाता है: "यदि कला मानवता का एक गहरा अनुभव है तो उसमें किसके साथ भाग लेना चाहिए।" "कला का अनायास चित्र बनाता है या पहले से विचार निश्चित रहता है।" "क्या कला आध्यात्मिक अनुभव के रूप में धर्म का स्थान ले सकती है अथवा आपके देश में युवक किस प्रकार अपनी समस्याओं पर विचार करते हैं?" "क्या आप युवकों के बीच में कुछ मतभेद रखने वाले लोगों को एक समस्या मानते हैं?" "क्या तर्क और भावना व्यक्ति को एक आदर्श से बाँधती है।" "हमारे समाजों में आदर्शों का प्रारम्भ कैसे हुआ?" "समाज में जो व्यक्ति इन आदर्शों का पालन नहीं करते उनके प्रति हमारा दृष्टिकोण क्या होगा?" "क्या अहिंसा सामाजिक परिवर्तन का एक कारगर तरीका है?"

इन विचार-विनिमयों से जो अनुभव प्राप्त हुआ है उससे स्पष्ट होता है कि जो भी विषय सामान्य मानवता और सामान्य कार्यों से घुड़े हुए हैं वे अर्थशास्त्र और राजनीति के सम्बन्ध में विस्तृत तथा आत्मक सूचना से युक्त विषयों की अपेक्षा अधिक मूल्यवान् हैं। उदाहरण के लिए उन व्यक्तियों से स्वयं सूचना प्राप्त करना जिन्होंने अपने देशों में सामाजिक परिवर्तन और विकास के आन्दोलनों में भाग लिया है प्रत्येक व्यक्ति के लिए नये ज्ञान का स्रोत बनते हैं। इसके साथ-ही विस्तृत सामाजिक और नैतिक विचार प्रत्येक भाग लेने वाले को अपने विचारों की परीक्षा करने की चुनौती देता है। दूसरों को विभिन्न विचारों से युक्त देखने की इस प्रक्रिया में शिविर के दैनिक जीवन के कार्य और दिनचर्या टूट जाती है और परस्पर आदर और सद्भावना का विकास होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे और तीसरे शिविरों में तीस व्यक्तियों के चर्चा-दल को कम से कम एक दिन छोटे दलों में बाँटा गया। कुछ लोगों ने इस तरीके पर आपत्ति की क्योंकि तब हरेक को क्या कहना है यह सुनना सम्भव नहीं था। दूसरों को यह लगा कि सब के दृष्टिकोणों के विषय में नहीं जाना जा सका। लेकिन कुछ और लोग थे जिनका यह मत था कि इस प्रकार के छोटे दलों में अधिक गहराई से विचार करना और अपने को अभिव्यक्त करने के लिए उन लोगों को भी प्रोत्साहन देना जो अच्छे वक्ता नहीं थे।

जो लोग इस प्रकार के कार्यक्रमों में भाग ले चुके हैं वे विचार विनिमय के अधिवेशनों में सुधार करने के अनेकों तरीके बतलाते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि विचार विनिमय को अधिक तथ्यात्मक बनाने के लिए पहले से तैयार होना चाहिए। दूसरों को लगता है कि कोई विषय निश्चित नहीं करना चाहिए। प्रत्येक दल की आपसी बातचीत में विषय स्वतः ही निकलने चाहिए। औरों का यह विचार है कि तरुणों पर ध्यान केन्द्रित करना कृत्रिम लगता है क्योंकि विचार विनिमय में जिन दार्शनिक और सामाजिक विषयों को उठाया जाता है वे हर उम्र के लिए महत्वपूर्ण हैं।

ये आलोचनाएँ और कार्य प्रायोजनाओं के सम्बन्ध में दूसरी आलोचनाओं को समूचे त्रिपक्षी प्रयोग की दृष्टि से देखा और समझा जाना चाहिए। उसकी भावना केवल एक कार्यक्रम को नहीं वरन सम्बन्ध में सुधार करने के लिए कार्य के प्रति गहरी इच्छा और सहयोग की है। यह त्रिपक्षी कार्यक्रम वर्षों के प्रयत्न और घण्टों की बातचीत के बाद बने हैं। प्रत्येक वर्ष पहले के शिवरों में भाग लेने वाले नये भाग लेने वालों के साथ सम्मिलित होते हैं (प्रत्येक देश से ३ व्यक्तियों को अनुमति मिलती है)। प्रतिवर्ष नेता नए सदस्यों को पहले शिवरों का परिणाम और अनुभव बतलाते हैं।

सहयोग की प्रवृत्ति जो मतभेदों को नहीं छिपाती और कमियों से नहीं डरती सद्भावना के महत्वपूर्ण अनुभवों में से है जिसका विकास त्रिपक्षी कार्यक्रम में हुआ है। वास्तव में सद्-भावन कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो प्राप्त करके सुरक्षित कर ली जाए। वह तो एक सक्रिय विचार प्रक्रिया है। कभी-कभी यह पहले से अधिक ठीक होती है लेकिन इसमें सदा ही मनुष्यों के बीच निर्माणात्मक सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने का उद्देश्य रहता है।

कदाचित भाग लेने वालों के लिए आखिरी शिक्षा यही होती है कि सद्भावना एक दायित्व है। यदि यह निष्क्रिय रहे तो दूसरों के लिए लाभकारी नहीं हो सकती उसको व्यक्तिगत जीवनों और समाज में रहना और विकसित होना है। १९६४ में पौलैण्ड में इसी प्रकार का एक कार्यक्रम चला था। ऐसा ही एक कार्यक्रम इस वर्ष पूर्व जर्मनी में भी होगा। इस बात का विश्वास करने के लिए कारण है कि यह विचार विश्व के अनेक भागों में राष्ट्रों के द्वारा काम में लाया जा सकता है। इस बात को समझने के बाद इसको सम्भव बनाने का प्रयास करना तरुणों का दायित्व बन जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगति के लिए बीस हजार स्वयंसेवक

लेखक : आर्थर जिलेट

यह स्वाभाविक ही है कि एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के तरुण अल्प विकास की चुनौती का उत्तर देने को प्रस्तुत हों। उनके बड़ों की अपेक्षा उनका भविष्य रोग, अज्ञान और दरिद्रता के कारण खतरे में है। इसी से वे अपनी स्कूल और दूसरे नियमित कार्रवाइयों के साथ-साथ जिनको वे प्रत्यक्षतः विकास से सम्बन्धित नहीं मानते लाखों कार्य शिविरों और स्वैछिक सेवा प्रायोजनाओं में भाग लेते हैं। वे सड़कें बनाते हैं, साक्षरता का प्रशिक्षण देते हैं, औषधि सुविधाओं में सुधार करते हैं और दूसरे अनेकों ऐसे कार्य करते हैं जो उनके देशों में प्रगति में योग देते हैं।

लेकिन उन उद्योग प्रधान देशों के युवकों के सम्बन्ध में क्या है जिनको विकासशील देशों की दुनिया इतनी दूर और इतनी भिन्न प्रतीत होती है। वे भी विकासशील देशों की स्थिति और संघर्ष के सम्बन्ध में चिन्तत हो।

अफ्रीकी और एशियाई देशों की स्वतन्त्रता प्राप्ति के कारण पिछले दशक में अल्पविकास की समस्याओं के प्रति औद्योगिकृत प्रदेशों में तरुणों की रुचि बढ़ गई है। इसी प्रकार लैटिन अमरीका में नेताओं की उपस्थिति के कारण भी जो उस महाद्वीप में सामाजिक और सांस्कृति सुविधाओं को विस्तृत करने और रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए प्रस्तुत हैं। यह नई रुचि उन तरुण आन्दोलनों में केन्द्रित हैं जिनके सदस्य विकासशील देशों से सम्बन्धित हैं आन्दोलनों और बैठकों में अधिक से अधिक भाग लेते हैं। यह ध्यान देने वाले पाठकों, श्रोताओं, जन-संचारण माध्यमों तक पहुंचती है, जो इस विषय में अधिक से अधिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं।

इस रुचि के कारण कार्य करने की प्रेरणा मिली है और उद्योगप्रधान देशों में अधिक से अधिक युवक, तरुण २० वीं शताब्दी के इस अत्यधिक रोचक नाटक के दर्शक मात्र नहीं बनना चाहते वे उसमें बड़ा ही सक्रिय भाग लेना चाहते हैं और विकासशील देशों में दीर्घावधि स्वयंसेवकों के रूप में काम करना चाहते हैं।

इन दीर्घावधि अन्तर्राष्ट्रीय स्वैच्छिक सेवा कार्यों में बड़ा ही प्रसिद्ध कार्यक्रम संयुक्त राज्य शान्ति कोर है। इसको १९६१ में राष्ट्रपति जान केनेडी ने प्रारम्भ किया था। शान्ति कोर की ओर विभिन्न व्यवसायों के तरुण अमरीकी आकर्षित होने लगे। आज लगभग ५० देशों में ९ हजार शान्तिकोर स्त्री-पुरुष हैं। वे निर्सिग, भवन निर्माण, कृषि विज्ञान और शिक्षा आदि अनेकों पदों पर काम कर रहे हैं।

औद्योगीकृत क्षेत्रों में पहले दीर्घावधि स्वयंसेवा राष्ट्रपति केनेडी द्वारा स्वीकृत प्रेरणाओं से २५ वर्ष पहले प्रारम्भ हो गया था। १९३४ में स्वीटज़रलैण्ड के राष्ट्रपति के पुत्र पीयर सेरे सोल्ड ने भारत में बिहार में नागरिक सेवा अन्तर्राष्ट्रीय द्वारा यूरोपीयों के एक दल का नेतृत्व किया था जहाँ उन्होंने भूकम्पों और बाढ़ों से पीड़ित ग्रामों के पुनर्निर्माण में सहायता दी थी। आगे चलकर विशेष रूप से दूसरे विश्वयुद्ध के बाद गिरिजा घरों की विश्व परिषद् और अन्तर्राष्ट्रीय भवन निर्माण साथियों ने इसी प्रकार के कार्य किये। समुद्र पार स्वैच्छिक सेवा जैसे नये कार्यक्रम ग्रेट ब्रिटेन में भी प्रारम्भ किये गये।

पिछले चार वर्षों में स्वैच्छिक सेवा की प्रगति बहुत अधिक नहीं है। दो दर्जन औद्योगीकृत देशों से लगभग बीस हजार दीर्घावधि स्वयंसेवक अब पचास विकासशील देशों में कार्य कर रहें हैं। कुछ देशों और व्यवसायों में सभी मध्यम कुशलता वाले कर्मीवर्ग एक विशेष कार्य अनुपात तक रखे जाते हैं। १९६४ में संयुक्त राज्य के शान्ति कोर व्यक्ति लाइबेरिया के माध्यमिक स्कूल शिक्षकों में ५० प्रतिशत थे।

लगभग ढ़ाई सौ राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय, सरकारी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैरसरकारी संगठन अब उत्तरी अमरीका, पूर्व-पश्चिम योरप, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में औसत कुशलता प्राप्त तरुण स्वयंसेवकों को नियुक्त करने, प्रशिक्षित करने और बाहर भेजने में लगे हुए हैं।

परन्तु स्वयं सेवा व्यवस्था विकासशील देशों में तकनीकी कुशलताओं को प्रदान करने के बहाने के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ है। इससे स्वयंसेवकों को इन देशों के राष्ट्र को पहचानने और जानने का अवसर मिलता है और ये राष्ट्र स्वयंसेवकों के देशों के सम्बन्ध में बहुत कुछ सीखते हैं।

ये अन्तर्राष्ट्रिय सद्भावना न तो सतही है और न अस्थायी। सामान्य उद्देश्यों के प्रति काम करते हुए सामान्य साधारण परिस्थितियों में रहते हुए दोनों दल परस्पर की बाधाओं को पार करके आपस के मतभेदों को भुलाना और अन्तर्मूल समेकता को एक वास्तविकता बनाना सीख सकते हैं।

दीर्घावधि सेवा संगठनों का सामान्य दर्शन सरल है। इन संगठनों के लिए उनके स्वयंसेवकों और जिन देशों में वे जाते हैं उन देशों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था का दोहरा उद्देश्य और दोहरा मूल्य है। पहले तो वे जनशक्ति के वाहन के रूप में काम करती है और उस संभरण के रूप में जो विश्व के नवविकसित क्षेत्रों में राष्ट्रीय कर्मीवर्ग के प्रशिक्षण के अन्तरण में सुविधा देती है। यह एक ऐसा आधार है जिस पर प्रतिदिन की कठिनाइयों और सफलताओं से जो स्थानीय लोगों और स्वयंसेवकों दोनों ही के लिए होती है, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को आकृति मिल रही है।

इस व्यवस्था का तीन स्वयंसेवकों द्वारा जो विवरण प्रस्तुत किया गया है उससे इसका सच्चा महत्व पता चल सकता है।

मिस एलिसन मेकिवन ने १९६४ के ग्रीष्म एडिनबरा विश्वविद्यालय से सामाजिक मानव विज्ञान में स्नातक परीक्षा पास की। जब वे पढ़ती ही थीं उन्होंने विश्व नागरिकता की शिक्षा सम्बन्धी अंग्रेजी परिषद की कार्रवाइयों में भाग लिया कई अन्तर्राष्ट्रीय स्वेच्छा कार्य शिविरों में काम किया। ग्लासगो नगर आयोजना द्वारा प्रभावित ग्रामीण स्कूलों का सर्वेक्षण किया और योरप तथा दूसरे स्थानों में विस्तृत यात्रा की।

इंग्लैण्ड और उत्तरी आयरलैण्ड के संयुक्त राष्ट्र संस्था द्वारा भेजी गई एलिसन ने लैटिन अमरीका में पिछले सितम्बर में संयुक्त राष्ट्र के एक तरुण आन्दोलन में समाज वैज्ञानिक के रूप में लैटिन अमरीका में २ वर्षों के लिए काम करना स्वीकार किया। उनका काम कार्यशिविरों और दूसरी व्यवस्था प्रयोजनाओं के लिए तथ्यों का विश्लेषण और गणना आदि करना है। परन्तु एलीसन के लिए शुष्क तथ्यों आँकड़ों का जमा करना उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना यह मानवीय सम्पर्क है जो अपनी यात्रा में बनाती है। इस वर्ष जनवरी-फरवरी में उन्होंने एक अर्ध-औद्योगिक नगर के दरिद्र भाग में पड़ोस विकास प्रायोजना के संगठन में सहायता दी।

कुमारी मैकीवन ने कहा "जिन परिवारों में मैं जाती हूं उनकी स्त्रियों को हम लोग एक स्थान पर एकत्र करते हैं जहाँ हम उनके बच्चों को दूध देते हैं वहाँ हम उन माताओं को उनके बच्चों के लिए रोजाना दूध के महत्व की बात बतलाते हैं और हम यह आशा कर रहे हैं कि यह वितरण प्रत्येक दिन प्रातःकाल हो सके।

अक्सर यह होता है कि गरीब लोग अपनी समस्याओं को स्वीकार करने में हिचकते हैं और स्वास्थ्य केन्द्रों में आना नहीं चाहते। हम वहाँ जा-जाकर इस बात को दूर करने का प्रयास कर रहे हैं और उनको बराबर ऐसी स्थितियों में निमंत्रण देते हैं जो अनौपचारिक होते हैं और अधिकार का कोई वातावरण नहीं होता। जब हमारा बनाया हुआ सामुदायिक केन्द्र बन चुकेगा तब तक इन लोगों को अजनबियों के साथ काम करने की आदत हो जायेगी और औषधि व्यवस्थाओं की स्थापना पहले से अधिक आसानी से हो सकेगी।"

बाग्डन स्कीगिल पोलैण्ड आलकुज के डाक्टर हैं। उनकी आयु ३०-३५ के बीच होगी। अपनी अध्ययन समाप्त करके उन्होंने श्वेत रविवारों की भी एक योजना प्रारम्भ की थी जिसके द्वारा वे और ग्रामीण युवकों और ग्रामीण युवकों के पोलिश संघ के दूसरे सदस्य अपने रविवार कैको प्रदेश के दूर-दूर के गाँवों में दौरा करते हुए बिता देते थे और वहाँ पर प्राथमिक सहायता और परिवार नियोजन की शिक्षा देते थे।

अक्तूबर १९६४ में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की पोलिश समिति के द्वारा वे सेवा नागरिक अन्तर्राष्ट्रीय दल के स्वयंसेवकों में सम्मिलित कर लिए गए। उन्होंने इस बीच अल्जीरिया के त्लेमसेम नामक स्थान में कार्य किया। वहाँ वे औषधीय कार्रवाइयों के नेता हो गये।

डा० स्कीगिल ने स्वयंसेवकों के दल का नेतृत्व किया। उसने पोलैण्ड के एक और डाक्टर और बेल्जीयम, इंगलैण्ड और जर्मनी की नर्सें थीं। इस दल का प्रत्येक सदस्य त्लीमसेम प्रदेश के लगभग चार हजार निवासियों की औषधि सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करते थे। नगर में स्वयंसेवकों ने दरिद्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागों में औषधीय व्यवस्था का संगठन किया। प्राथमिक उपचार की शिक्षाएं दीं और अल्जीरिया के कर्मीवर्ग को उच्चकोटि का प्राथमिक प्रशिक्षण करने के लिए तैयार किया। डा० स्कीगिल ने ग्लेमसेन के चारों ओर एक और भी दल का नेतृत्व किया जिसने बनजारों के शिविरों और ग्रामों में औषधाय सहायता, बच्चों के पालन-पोषण में सहायता और संतुलित आहार का परिचय दिया।

पिछले अप्रेल अपनी सेवा अवधि के समाप्त होते तक वे पोलेंड वापस लौटे और स्वयंसेवक के रूप में अपने कार्य के बारे में बातचीत की और लिखा : 'अल्जीरिया की आवश्यकताओं से और सुविधाओं तथा कर्मीवर्ग से अत्यधिक प्रभावित होकर वे अब औषधीय उपस्कर का संग्रह कर रहे हैं जिसको वे अगले कुछ महीनों में पोलिश तकनीकी कार्यक्रम के अन्तर्गत अल्जीरिया ले जाएंगे।

मेन (संयुक्त राज्य अमरीका) के निवासी तरुण शान्तिकोर के सदस्य रॉबर्ट जान्सन, उत्तर-पूर्व थाईलेंड में उवाण्ड अध्यापक विद्यालय में शिक्षक का काम कर चुके हैं। अभी हाल में अपने कार्यकाल के पहले वर्ष के अन्त में उन्होंने लिखा : "स्वयंसेवक का जीवन देखने में कोई भव्य नहीं लगता। हम जो कुछ हैं और जो कुछ करते हैं हम जिन संस्थाओं में काम करते हैं या पढ़ाते हैं उनके दैनिक मामलों में पूरी तरह से लगना रहता है। विश्व के आधे से अधिक स्थानों में रहने का जो आकर्षण था वह दूर हो चुका है। जीवन अब नीरस हो गया है।

लेकिन जब ऊपरी आकर्षण समाप्त हो जाता है तो कुछ और उसका स्थान ले लेता है। वह दूसरी चीज है थाइलेंड में अपने को इस प्रकार अनुभव करना मानो में अपने ही घर में हूं। उदाहरण के लिए जब आये थे तो अधिकतर थाई निवासियों को हम लोगों को अपने से बड़ों को वाई (नमस्कार) करते देखकर आश्चर्य होता था। कुछ इसको पसन्द करते थे, कुछ हंसते थे। और कुछ हमसे साफ-साफ कह देते थे कि 'फरंगों' को वाई नहीं करना चाहिए।

दीर्घावधि सेवाओं में लगे हुए ढाई सौ या कुछ और संगठनों के उद्देश्य, दृष्टिकोण और संसाधन भिन्न-भिन्न हैं। फिर भी हम कह सकते हैं कि अधिकतर स्वयंसेवकों का अनुभव इसी प्रकार है जैसा कि अभी वर्णन किया गया। वे ६ से २४ महीनों तक इसी पद पर काम करते हैं बिलकुल सामान्य। कभी-कभी तो आदिम परिस्थितियों में रहते हैं। उनको जो जेबखर्च मिलता है वह स्थानीय लोगों के वेतन के बराबर होता है परन्तु यदि वे अपने देश में उसी प्रकार का काम करते तो उन्हें इससे कहीं अधिक वेतन मिलता।

उनका उद्देश्य यह रहता है कि विशेष ज्ञान के साथ-साथ उत्साह को भी बढ़ाएं जिससे कि स्थानीय कुशल जनशक्ति बढ़े जिससे वे सामान्तय : स्वयंसेवकों के चले जाने के बाद उनका स्थान ले सके। वे जितना सिखाते हैं उससे वे कहीं अधिक सीखते हैं। और सामान्य रूप से विकासशील देशों विशेष रूप से अपने देश में अधिक गहरे और स्थायी रूप से रुचि रखने लगते हैं।

१९६२ से यूनस्को ने अन्तर्राष्ट्रीय स्वयंसेवा व्यवस्था की समायोजना समिति को सहायता दी है जिससे वे इस क्षेत्र में स्वयंसेवकों को भेजने और बुलाने वाली संस्थाओं के बीच सूचना का विनिमय करवा सके और सम्भावी स्वयंसेवकों की सेवा सद्भावनाओं के बारे में सूचना का वितरण कर सके।

आलोचकों का कहना है कि दीर्घावधि स्वयंसेवक संस्था थोड़े दिनों का जोश है। एक और गम्भीर आपत्ति इस बात को लेकर उठाई गई है कि स्वयंसेवक इतनी कम उम्र के होते हैं कि उन्हें जीवन का अनुभव नहीं होता है। दूसरे आलोचकों ने कहा है कि स्वयंसेवकों को उन देशों के संस्कृति और सभ्यताओं का ज्ञान नहीं होता जहां वे जाते हैं और इसलिए वे स्थानीय जनता के तरीके और रीति रिवाज समझने के लिए तैयार नहीं होते।

नागरिक अन्तर्राष्ट्रीय सेवा की ब्रिटिश शाखा के एक सदस्य ने अभी हाल में कहा था "२० वर्ष पहले यदि कोई अल्पावधि स्वेच्छाकार्य शिविर में जाता तो ? उसे सनकी बतलाया जाता था। आज उद्योग प्रधान देशों में तरुणों के बीच दीर्घावधि सेवा प्रतिष्ठा का एक प्रतीक है।" फिर भी जब धीरे-धीरे दीर्घावधि स्वयंसेवक कार्रवाइयों का पहला उत्साहपूर्ण पक्ष समाप्त होगा तभी इसकी आयोजना करने वाले और लाभ उठाने वाले दोनों ही दीर्घावधि सेवाओं का पूरा मूल्यांकन कर सकेंगे। ऐसा लगता है कि भविष्य में स्वयंसेवकों के लिए चर्चा कम होगी परन्तु स्वयंसेवक अधिक होंगे और उनका अधिक कारगर उपयोग किया जा सकेगा।

जब तक विकासशील देशों में औसत कुशलता की जनशक्ति का अभाव बना रहेगा और जब तक विभिन्न जातियों, महाद्वीपों और विचार-धाराओं के तरुण स्त्री-पुरुषों के बीच सद्भावना की आवश्यकता रहेगी तब तक दीर्घावधि स्वयंसेवा व्यवस्था तरुणों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का एक प्रमुख साधन रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार

शिक्षा

भूगोल अध्यापकों के लिए निर्देशिका

दूसरे देशों में उन क्षेत्रों में प्राप्त अनुभवों के द्वारा शिक्षा जानकारों और अध्यापकों को लाभ पहुँचाने के कार्यक्रम के अन्तर्गत यूनैस्को स्कूल पाठ्यक्रमों के प्रमुख विषयों के सम्बन्ध में एक अध्ययन माला प्रकाशित करवा रही है। विज्ञान शिक्षण की पुस्तका के प्रकाशन के बाद जिसका पुनर्सस्करण १९६२ में निकला था यूनैस्को ने अब भूगोल शिक्षा की स्रोत पुस्तका प्रकाशित की है। इसकी अन्तर्राष्ट्रीय भौगोलिक संघ के भूगोल शिक्षण आयोग द्वारा उसके अध्यक्ष मि० वेनोआ ब्रूलेट (कनाडा) के निर्देशन में तैयार की गयी है।

इस स्रोग पुस्तिका से दो प्रमुख आवश्यकताओं की पूर्ति होगी। एक तो विश्व के सभी प्रदेशों विशेष रूप से विकासशील प्रदेशों के सम्बन्ध में ज्ञान की अत्यधिक प्रगति का ध्यान रखते हुए तरीकों और कार्यक्रमों का आधुनिकीकरण, दूसरे देशों और राष्ट्रों के प्रति सद्भावना और आदर-भाव का विकास करने के लिए भूगोल की कक्षाओं का उपयोग।

अध्यापक अब केवल तथ्यों को प्रस्तुत करके ही संतुष्ठ नहीं हो सकता क्योंकि तथ्य बहुत हैं और बराबर बदल रहे हैं। शिक्षण चयन परक और गतिशील होना पड़ेगा। भूगोल का प्रयोजन ही क्या है यदि मानव बस्तियों और उनकी परिस्थितियों के सम्बन्धों का अध्ययन नहीं है। शिक्षक को इस प्रकार के प्रश्नों के आधार पर शिक्षण की आयोजना करनी चाहिए। निरंतर बढ़ती हुई आजादी के लिए भी रहन-सहन का स्तर कैसे ऊंचा किया जा सकता है, प्रारम्भ में स्थिति क्या थी, मनुष्य ने उसके अनुसार अपने को कैसे ढाला और अब उसे कैसे बदला है, भविष्य में सुधार की क्या सम्भावना है।

भूगोल को किसी भी देश, प्रदेश या समूची धरती की विशेषताओं का संश्लेषण समझना चाहिए। विभिन्न तथ्यों की घटने और उनके विस्तार का विश्लेषण होना चाहिए। इसके साथ-साथ उनके पारस्परिक सम्बन्धों को भी देखना चाहिए। भूगोल के अध्ययन ने धरती के उपयोग का विज्ञान प्राकृतिक वातावरण के मनुष्यों द्वारा परिवर्तन का इतिहास और उसकी जिस प्रकार अपनी आवश्यकता के अनुसार ढाला है उस सबका अध्ययन होना चाहिए।

भूगोल का अध्यापन स्पष्ट और सजीव होना चाहिए। उसको स्थानीय दृश्य के स्पष्ट पयबंक्षण पर आधारित होना चाहिए, विशेष रूप से छोटे बच्चों को बढ़ाते समय। आगे चलकर विद्यार्थियों को फोटो-चित्रों, नक्शों और आँकड़ों को निरूपित करना भी सिखाना चाहिए। बिलकुल सरल उपकरणों के साथ जैसे कि थर्मामीटर, बैरो मीटर, वर्षा मापक और दिशासूचक यन्त्र तथा दीवलों के नक्शे, एटलस और शिलाओं तथा वनस्पतियों के नमूनों के संग्रह के द्वारा ही विद्यार्थियों को न केवल तथ्य बतलाये जा सकते हैं वरन् उनको अपनी शोध और आविष्कार करने की भी शिक्षा दी जा सकती है।

मानव और सामाजिक विधाएँ

सामाजिक और आर्थिक विकास का शोध केन्द्र (दिल्ली)

भारत सरकार की सहमति से यह निश्चय किया गया था कि दशिक्ष एशिया सामाजिक और आर्थिक विकास शोध केन्द्र ३१ दिसम्बर १९६६ से आर्थिक प्रगति सम्बन्धी दिल्ली संस्थान के साथ संबद्ध कर दिया जाए। और इसकी कार्रवाईयों के प्रादेशिक रूप को बनाये रखने के सभी उपाय किए जाएं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस केन्द्र की स्थापना कलकत्ते में १९५६ में दक्षिण एशिया में औद्योगीकरण के सामाजिक प्रभावों सम्बन्धी यूनैस्को शोध-केन्द्र के नाम से हुई थी। १९६१ में यह संस्था दिल्ली लाई गयी और उसी समय इसके विषय क्षेत्र में आर्थिक और सामाजिक विकास की सभी समस्याओं को शामिल किया जाने लगा।

इस क्षेत्र में केन्द्र का कार्य शोध का संचालन करना, विशेषज्ञों की सेवाएं प्रस्तुत करना, एक पुस्तकालय और अभिलेखन केन्द्र चलाना और इन-इन देशों से शोधकर्त्ताओं के लिए प्रशिक्षण क्रमों का संगठन करना हैं : अफगानिस्तान, बर्मा, कम्बोडिया, श्रीलंका, भारत, इडोनेशिया, लाओस, मलयेशिया, नेपाल, पाकिस्तान, फिलीपीन, थाइलैंड और वियतनाम।

केन्द्र की शोधें प्रमुख रूप से प्रदेश के प्राथमिक महत्व के विषय पर केन्द्रित थी : "दक्षिण एशिया में सामाजिक संरूपों के बदलते हुए प्रारूप और आर्थिक विकास" और विकास से सम्बन्धित कुछ और विषयों पर भी। पहले विषय पर प्रारम्भिक अध्ययन अधिक से अधिक देशों में करवाए गए जिससे आर्थिक आयोजन में सामने आने वाली सामाजिक समस्याओं की परिभाषा प्रस्तुत की जा सके। जिन विशेष विषयों पर अध्ययन किया गया उनमें लघु उद्योगों का सामाजिक पक्ष, शिक्षा के सामाजिक पक्ष, ग्रामीण क्षेत्रों में नेताओं का प्रशिक्षण और ग्रामीण तथा नागरिक क्षेत्रों में सामाजिक संरचनाओं का विकास।

इस केन्द्र ने सामाजिक विद्याओं का एक पुस्तकालय स्थापित किया है जिसमें दस हजार पुस्तकें हैं और चार सौ पत्रिकाओं का संग्रह है। यह केन्द्र सामाजिक विद्याओं की एक वार्षिक पुस्तक सूची और दक्षिण एशिया में सामाजिक विद्या प्रयोजनाओं पर वार्षिक सूचना बुलेटिन प्रकाशित करते हैं। और वह सामाजिक विज्ञान संस्थाओं की एक निर्देशिका भी तैयार कर रहा है। इसके साथ-ही उसने शोध प्रायोजनाओं और वाद गोष्ठियों पर रिपोर्ट प्रकाशित की है जो इन्हीं विषयों पर बनाई गई है इसके साथ-ही उसने ये प्रश्न भी दिए गए हैं : एशिया में औद्योगिकीकरण और नागरिक के सामाजिक प्रभाव, भारत में औद्योगिक श्रम की उत्पादन शीलता को प्रभावित करने वाले सामाजिक और साँस्कृतिक तथ्य। सामाजिक शोध के तकनीक, एशिया में नये और तेजी से बढ़ने वाले नगरों की सार्वजनिक प्रशासन समस्याएं आदि।

१९६६ के प्रारम्भ में यह केन्द्र पहली बार दो महीने का एक शिक्षाक्रम आयोजित करेगा। यह शिक्षा क्रम प्रादेशिक तकनीकी सहायता के अन्तर्गत होगा और इसमें प्रदेश के तरुण शोधकर्त्ताओं के लिए आर्थिक और सामाजिक विकास की समस्याओं को लिया जायेगा।

ऊपर की बातों से यह स्पष्ट है कि १९५६ से केन्द्र ने भाग लेने वाले देशों में सामाजिक विद्याओं की प्रगति में प्रमुख योग दिया है और इस प्रकार अपने कार्य को पूरा किया है। आर्थिक प्रगति के भारतीय संस्थान में समाहित हो जाने के बाद इस केन्द्र का प्रादेशिक स्वरूप बना रहेगा और अगले कुछ वर्षों में यह पहले की खोजों के आधार पर शोध अध्ययन करवाये जाते रहेंगे।

पूर्व पश्चिम प्रायोजना

स्कूल पाठ्य पुस्तकें और अन्तरसांस्कृतिक सद्भावना

प्रमुख प्रायोजना का सामान्य आकलन करने के अंश के रूप में मासिक बुलेटिन पूर्व पश्चिम खण्ड ८ अंक २ अप्रैल १९६५ में अन्तरसांस्कृतिक सद्भावना को बढ़ाने की दृष्टि से स्कूल पाठ्य पुस्तकें बढ़ाने की दृष्टि से की जाने वाली कार्रवाइयों का पुनरीक्षण किया गया है।

ये कार्रवाइयां मई १९५६ में पेरिस में की गई एक विशेषज्ञ बैठक के परिणामस्वरूप प्रारम्भ हुई थी। इस बैठक में यह अध्ययन किया गया था कि पश्चिमी देशों की स्कूल पाठ्य पुस्तकों में एशिया को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन उपलब्धियों से पता चला था कि इन पाठ्य पुस्तकों में अक्सर बड़ा ही संकीर्ण, निराशवादी दृष्टिकोण प्रतिविम्बित होता था जिसमें राजनीतिक और सैनिक घटनाओं और पुराने औपनिवेशिक सम्बन्धों पर जोर दिया गया था। और एशियाई देशों के इतिहास और संस्कृति तथा उनके समकालीन विकास को पर्याप्त स्थान नहीं दिया गया था।

इसी प्रकार की बैठक टोकियो में १९५८ में एशियाई देशों की स्कूल पाठ्य पुस्तकों में पश्चिम के प्रस्तुतीकरण के सम्बन्ध में हुई थी। इस समय से विशेषज्ञों की दो और बैठकें तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकों को तीन बैठकें आयोजित की जा चुकी हैं जिनका उद्देश्य स्कूल में आधुनिक और वस्तुपरक शिक्षण सामग्रियों के उपयोग द्वारा अन्तर सांस्कृतिक सद्भावना को बढ़ाने के तरीकों पर अध्ययन करना हैं।

१९६३-६४ के बीच योरप और एशिया तथा योरप और लैटिन अमरीका के देशों में आलोचनात्मक परीक्षण की दृष्टि से भूगोल की पाठ्य पुस्तकों के विनिमय का प्रबन्ध किया गया। उनकी शुद्धता, वस्तुपरकता तथ्यों का चयन और आधुनिक तथ्यों की उपस्थिति की दृष्टि से उन पर ध्यान दिया गया था। इसके साथ ही यूनैस्का द्वारा अध्यापक संस्थाओं के अन्तर्राष्ट्रीय संघ को यह काम दिया गया था कि १९६० और १९६१ में चार योरपीय देशों में प्रारम्भिक स्तर पर प्रयुक्त पहली पुस्तकें तथा इतिहास और भूगोल की पाठ्य पुस्तकों में एशिया की प्रस्तुतीकरण का अध्ययन किया जाए। अध्ययन से ही यह पता चला कि एशिया महाद्वीप के महत्व के अनुसार एशिया के अधिक व्यापक और यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत करने की आवश्यकता है १९५९ से यूनैस्को ने योरप और एशिया के सदस्य देशों में राष्ट्रीय आयोगों को पाठ्य पुस्तकों और स्कूलों के दृश्य शिक्षण उपस्करों के विनिमय को प्रत्साहन दिया है।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना में सुधार करने के लिए अक्सर जिन तरीकों का प्रस्ताव किया जाता है उनमें से राष्ट्रीय और प्रादेशिक अभिलेखन केन्द्रों की स्थापना भी है जिससे लेखकों और प्रकाशकों को विदेशों से सन्दर्भ ग्रन्थों और दूसरी सामग्रियों के संग्रह सुलभ हो सकेंगे, परामर्श सेवाएँ मिल लकेंगी और द्विदेशीय तथा बहुदेशीय बैठकें आयोजित हो सकेंगी।

जन-संचारण

ग्रामीण समाचार-पत्र

आखिरी क्लास समाप्त हो चुका है। साक्षरता आन्दोलन सम्पूर्ण हो गया। गाँव वाले ने पढ़ना सीख लिया, लेकिन जिस बात को उसने इतनी कठिनाई से सीखा है उसका अभ्यास और विकास कैसे होगा। इसी के लिए स्थानीय समाचार-पत्र की आवश्यकता है। दो पृष्ठों का एक समाचार-पत्र जो एक ही व्यक्ति द्वारा लिखा और प्रकाशित किया गया है शायद नव साक्षरों और लिखित शब्द के बीच में पहला स्थायी सम्पर्क बनेगा।

जिन देशों में काफी समाचार-पत्र निकलते हैं उनमें भी स्थानीय समाचार-पत्र का एक विशेष नियोजन होता है। उससे पाठक को जिन लोगों को वह जानता है उनके समाचार जिन घटनाओं में उसने भाग लिया है वे घटनाएँ या जो प्रश्न उसके दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं उनके बारे में सूचना मिलती है। जिन प्रदेशों में साक्षरता आन्दोलन चलाए जा रहे हैं जहाँ प्रत्येक को पढ़ने का अवसर और इच्छा देना महत्वपूर्ण है उन सभी स्थानों में स्थानीय समाचार-पत्र का अमूल्य योग होता है।

ग्रमीण समाचार-पत्र इसके अतिरिक्त और भी बहुत कुछ कर सकता है। वह सामान्य समाचार दे सकता है। कृषि, स्वास्थ्य और रहन-सहन के स्तर को सुधारने के सम्बन्ध में परामर्श दे सकता है। नागरिक चेतना को प्रोत्साहित कर सकता है और इस प्रकार सामुदायिक और राष्ट्रीय विकास में शीघ्रता कर सकता है।

इसीलिए यूनैस्को ने ग्रामीण समाचार-पत्रों के सम्बन्ध में जनसंचारण विषयक रिपोर्ट और लेखपत्रों की माला में एक अध्ययन प्रकाशित किया है। इसके लेखक हैं लाइबेरिया की सूचना व्यवस्था के मरामर्शदाता राबर्ट ड टी टीलारेंस (संयुक्त राज्य) इस पुस्तिका में इस अवस्था द्वारा १९६३ में मि० ई० रेजिनाल्ट टाउजेंट के निर्देशन में संचालित एक प्रायोजना का वर्णन दिया हुआ हैं जिसके एक वर्ष के संचालन काल में लाइबेरिया में इस प्रकार के ३० समाचार-पत्र प्रकाशित होने लगे। इस प्रायोजना का वर्णन के बाद इसी प्रकार की परिस्थितियों वाले दूसरे देशों में समान कार्यों के आयोजन के सम्बन्ध में सुझाव दिये गये हैं। रिपोर्ट के अन्तिम भाग में ग्रामीण समाचार-पत्र के कर्मीवर्ग के लिए जिसको पत्रकारिता का कोई अनुभव नहीं है, सम्पादन और प्रकाशन के तरीकों के सम्बन्ध में प्रारम्भिक निर्देश-अंश संलग्न हैं।

विकासशील देशों के लिए पुस्तकें

एशिया और अफ्रीका में पुस्तक प्रकाशन के सम्बन्ध में यूनैस्को के लिए दो विशेषज्ञों ने रिपोर्ट लिखी हैं। भारत के लिए श्री ओमप्रकाश ने और सियरालिओन के लिए ग्लफोर्ट एक फाइल ने की। रिपोर्ट जनसंचारण के रिपोर्ट और लेख-पत्र माला के अंक ४७ में प्रकाशित है।

इस रिपोर्टों में पाठक जनता कागज के सम्भरण और आवश्यकताएँ पुस्तक प्रकाशन की स्थानीय सम्भावनाएँ, प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वितरण का संगठन और साहित्य के विसरण में कानून व्यापरिक या भाषा सम्बन्धी भाषाएँ के सम्बन्ध में विस्तृत सूचना दी गयी है। उनमें आँकड़ों और तथ्यों के आधार पर यह भी दिखाया गया है कि प्रकाशन क्रान्ति में अफ्रीका और दक्षिण-पूर्व एशिया के विकासशील देश कितने पीछे हैं।

इन देशों में आबादी में वृद्धि और आर्थिक प्रगति, साक्षरता शिक्षण में प्रगति, साक्षरता शिक्षण में प्रगति और पुस्तक बाजार की आपेक्षिक नवीनता के कारण सस्ती पाठ्य सामग्री के लिए बहुत अधिक माँग हो गयी है। परन्तु इन्हीं देशों में कागज की कमी, वितरण के साधनों की कमी, भाषाओं की विविधता और लेखकों से लेकर टाइप करने वाले कर्मीवर्गों की कमी के कारण परिस्थितियाँ इस प्रकार की सामग्री के वितरण के योग्य नहीं है।

यूनैस्को अपने प्रकाशनों, नव साक्षरों के लिए पठन सामग्री के उत्पादन की अपनी प्रायोजना (कराची केन्द्र) और विकासशील देशों में पुस्तकों के प्रकाशन और वितरण को प्रोत्साहन देने के लिए बनायी जाने वाली एक विस्तृत प्रायोजना तथा सूचना के मुक्त प्रवाह सम्बन्धी अपनी कार्रवाइयों के द्वारा विश्व का ध्यान इस स्थिति की ओर इसको सुधार करने के तरीकों का सुझांव देकर आकर्षित करने का प्रयत्न कर रही है।

यूनैस्को समाचार कक्ष से

अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की निदेशिका

अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की वर्ष पुस्तिका का अन्तिम अधिवेशन अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष को समर्पित है। और वह अभी हाल में अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के संघ द्वारा संयुक्त राष्ट्र के सहयोग से प्रकाशित किया गया है। इसमें १८९७ संगठनों का वर्णन है (१७१८ गैर सरकारी और १८९ अंतर्सरकारी)। यह पुस्तक अंग्रेजी में प्रकाशित की गयी है परन्तु इसके नाम यथा सम्भव चार भाषाओं में दिये गये हैं और इसकी सूची फ्रांसीसी और अंग्रेजी दोनों में दी गयी है। इस पुस्तिका का दाम साढ़े पाँच पौंड, १८ डालर या ८० फ्रैंक हैं। ये अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के संघ एक रूआ लेन ब्रेसल बेलजियम से या विभिन्न पुस्तक की दूकानों से प्राप्त की जा सकती है।

विश्व विज्ञान निदेशिका

यूनैस्को ने विज्ञान सूचना और अभिलेखन व्यवस्थाओं की विश्व निदेशिका (मूल्य ढाई डॉलर और ९ फ्रैंक) प्रकाशित की है। इसमें ६५ देशों के उन १४४ सूचना केन्द्रों के सम्बन्ध में दिया गया है जहाँ विज्ञान, कृषि और औषधि के सम्बन्ध में अभिलेखन, शोध कार्य किया जा रहा है। प्रत्येक केन्द्र और प्रस्तुत व्यवस्था में दिये गये विषय हैं पुस्तकालय, पुस्तक सूचियाँ, अनुवाद और फोटो, प्रतिचित्र—ये सूचियाँ अंग्रेजी और फ्रांसीसी दोनों ही भाषाओं में दी हुई हैं।

Published by the Director UNESCO South Asia Science Co-operation Office, N-1, Ring Road New Delhi and printed by Rakesh Press, Delhi. (Unesco Vritta Patrika, Vol. 11, No. 7-8, July-Aug., 1965,
Reproduction authorised : Credit line should read UNESCO.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

UNESCO

यूनैस्को वृत्तपत्रिका

एन-१, रिंग रोड
नई देहली

यह समाचार पत्र संयुक्त राष्ट्रीय शैक्षणिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संस्था के विश्व भर के कार्यों का मासिक प्रतिवेदन है

मासिक बुलेटिन | सितम्बर, १९६५ | अंक ११, संख्या ९

गुरुकुल कांगड़ी

विषय सूची

निरक्षरों, स्त्रियों और तरुणों के लिए यूनैस्को आन्दोलन २

स्त्रियों के अधिकारों का प्रोत्साहन
—रेने महू ३

जन शिक्षा सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ५

अन्तरिक्ष में मानव—कुछ मूल अर्थ-शरीर वैज्ञानिक समस्याएं
—नोरेयर एम० सिसीकिकां ८

विश्व प्राणिवैज्ञानिक संतुलन और मानव सुरक्षा
—एम० इ० एकार्ड ९

रावात में इंजीनियरी स्कूल—कार्यचालन प्रायोजना का एक उदाहरण
—जेक्स एच० ग्यूरिफ ११

यूनैस्को और कार्यकर्त्ताओं का विनिमय
—मौनिक हेकर १३

बारह देशों द्वारा विश्व की दो-तिहाई पुस्तकों का प्रकाशन १४

दक्षिण-पूर्व एशिया की कठिन स्थिति
—ओमप्रकाश १७

पुस्तक विषयक कुछ यूनैस्को प्रकाशन २०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरक्षरों, स्त्रियों और तरुणों के लिए यूनैस्को आंदोलन

जिनेवा में संयुक्तराष्ट्र की आर्थिक और सामाजिक परिषद् के सामने नौ जुलाई के अपने वक्तव्य में मि० रेने महू महानिदेशक ने १९६४ में यूनैस्को की प्रमुख कार्रवाइयों और महासभा तथा आर्थिक और सामाजिक परिषद् के संस्तावों को लागू करने की कार्रवाइयों के सम्बन्ध में एक रिपोर्ट प्रस्तुत की ।

महानिदेशक ने पहले संयुक्त राष्ट्र सरणी के अंतर्गत यूनैस्को की स्थिति का वर्णन किया । "इतना ही कहना पर्याप्त न होगा कि यूनैस्को अपने कार्यों के विस्तार और विविधता के कारण एक ऐसी संस्था है जिसमें सबसे अधिक संपर्क बिंदु और सामान्य रुचि के तत्व हैं और इसी से यूनैस्को के संयुक्त राष्ट्र सरणी की अन्य संस्थाओं से सहयोग करने की सबसे अधिक प्रणालियां भी हैं । इससे भी अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि यूनैस्को जिसका विषय अपनी समूची अध्यात्मिक वास्तविकता में देखा गया मनुष्य है, एक ऐसा संगठन है जिसका प्रयोजन संश्लेषण है । यह अपना प्रयोजन तभी पूरा कर सकती है जब यह समाज और इतिहास में बौधिक कार्रवाई के संमजन परक लक्ष्यों के लिए प्रयत्न करे और इस समाज और इतिहास को पूरी तरह आवेष्टित कर सकने वाले संधार में आकर ही इसके कार्य को पूरा अर्थ और विस्तार मिल सकता है ।"

अब यूनैस्को के कार्यक्रम में किसान और औद्योगिक को उतनी ही अग्रता दी जाती है जितनी १९६० से शिक्षा को दी जाती रही । इस कारण से हर प्रकार और हर स्तर पर औद्योगिकी शिक्षा का विकास, प्राकृति संसाधनों के सम्बन्ध में प्रशिक्षण और शोध के लिए संस्थाओं का निर्माण तथा नये देशों में वैज्ञानिक अन्तर्सिंघार (वैज्ञानिक और औद्योमिक अभिलेखन, शोध, मानकीकरण और आयोजना के केन्द्र) बनाना आवश्यक है ।

शिक्षा के प्रश्न पर मि० महू ने कहा : "यह तथ्य कि शिक्षा विकास का सर्वप्रमुख नहीं तो एक अनिवार्य तत्व है आज प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं है । मनुष्य विकास का लक्ष्य और अभिकरण दोनों ही हैं, और अर्थ शास्त्री उसके प्रक्षिशण का अपने विश्लेषणों में अधिक से अधिक ध्यान रख रहे हैं ।" प्रश्न केवल "शिक्षा के उन्हीं खण्डों या प्रश्नों का नहीं है जो आर्थिक कार्रवाइयों की प्रत्यक्ष तैयारी से संबन्धित हैं वरन् सम्पूर्ण शिक्षा से है । क्योंकि शिक्षा जिस मनुष्य को ढालती और शिक्षित करती है उसी के समान एक संपूर्ण तत्त्व होती है, और इस बात पर जोर देना चाहिए कि कोई भी तकनीकी शिक्षा तब तक शिक्षा नहीं कहला सकती जब तक उसके साथ सामान्य शिक्षा भी न हो, उसके बिना मैं उसे निरा अभ्यास कहता हूं ।

"शिक्षा की यह मांग—यह आवश्यकता," महानिदेशक ने आगे कहा, "अब विश्वव्यापी और दुर्दभनीय आकांक्षा बन रही है क्योंकि यह देश के विकास, राष्ट्रीय स्वतंत्रता, और व्यक्ति की गरिमा—इन तीनों आकर्षक तत्वों से प्रत्यक्षतः जुड़ी हुई है । इस विश्वव्यापी मांग के सामने झुककर सरकारें अपने प्रयत्नों को दूना कर देती हैं और लोग इसके लिए अक्सर उत्साह के साथ बड़े-बड़े बलिदानों के लिए तैयार हो जाते हैं ।"

इसके परिणाम क्या हैं ? उत्साह जनक तो हैं परन्तु स्कूलों में उपस्थिति में जिस प्रकार प्रगति हो रही है उससे स्थिति जैसी संतोषजनक जान पड़ती है वैसी है नहीं । वर्तमान समय में यह प्रमुखतः प्रारंभिक स्तर तक ही सीमित है और इसमें भी "अध्ययन की पूरी अवधि में विद्यार्थियों की संख्या घटने लगती है ।" अधिकतर कार्यक्रमों को आर्थिक और सामाजिक आवश्यकताओं तथा पूरे राष्ट्र में विकास की वास्तविक परिस्थितियों के अनुकूल नहीं बनाया जाता ।"

यूनैस्को की दृष्टि से "सामान्य और तकनीकी माध्यमिक शिक्षा को सर्वोपरि अग्रता दी जानी चाहिए । क्योंकि यही स्कूल शिक्षा के परिमाणात्मक विस्तार की बाधायें हैं । और इसलिये भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि इसी स्तर पर शिक्षा मध्य कर्मीवर्ग के प्रशिक्षण में योग देती है। इन्हीं की कमी विकास शील देशों में सबसे बड़ी कठिनाई है।

शिक्षा के इस खण्ड में यूनैस्को अध्यापक प्रशिक्षण, शिक्षण के नए तक्नीक और उपाय और विकास आयोजना के सामान्य संधार में शिक्षा आयोजना को सर्वाधिक महत्व देती है।

इस दीर्घावधि कार्य के साथ साथ यूनैस्को जनसंख्या के उन अंशों के प्रति एक त्रिमुखी अभियान प्रारंभ कर रही है जो अभी शिक्षा की सीमा से बाहर ही रह जाते है। यह अभियान "विकास के हित में तथा निरक्षरो और तरुणों के लिए सामाजिक न्याय की सबसे प्रारंभिक मांगों के रूप में तथा स्त्रियों के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए है।"

अत: यह अभियान जिन तीन समूहों के लिए उद्दिष्ट है : वे हैं निरक्षक, तरुण और स्त्रियां।

स्त्रियों के अधिकारों का प्रोत्साहन

रेने मह्, महानिदेशक

अपने संसाधनों के अनुसार यूनैस्को स्त्रियों से सम्बन्धित विभिन्न प्रश्नों में सदा ही रुचि रखती रही हैं। परन्तु जब तक हमारा कार्य प्रमुखतः सर्वेक्षणों अथवा आलोचनात्मक अध्ययनों तक सीमित रहा है और मेरा विश्वास है कि इन्हीं से प्रारंभ करना अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण और तर्कसंगत रहा है। विशेषकर, स्त्रियों की स्थिति सम्बन्धी संयुक्त राष्ट्र आयोग के सहयोग में महत्वपूर्ण अध्ययन करवाये गये हैं। परन्तु ये कार्य कितना भी आवश्यक हो, पर्याप्त नहीं था। इसी से हमने कार्यकारी मण्डल के सामने प्रस्ताव रखा कि हमको न केवल सचिवालय के द्वारा वरन् सदस्य देशों द्वारा निश्चित कार्य करवाना चाहिये। यूनैस्को के समान अन्तर्राष्ट्रीय संस्था केवल प्रेरणा दे सकती है जिसके पास अनिवार्य रूप से राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने के लिए न तो आवश्यक आर्थिक साधन ही हैं और न राजनैतिक अधिकार ही।

हम समझते हैं कि सही वक्त आ गया है। पहली बात तो यह है कि स्त्रियों के बौद्धिक और सामाजिक अधिकारों के प्रोत्साहन और सुविधाओं के सामने विश्व के विभिन्न भागों में कितनी भी कठिनाइयां क्यों न आएं यह निश्चित है कि कुछ वर्षो से विचार सही दिशा में जा रहे हैं। यदि हम आज की स्थिति की तुलना दस वर्ष पहले की स्थिति से करते हैं। तो हम यह कह सकते हैं कि विश्व भर में स्त्रियों को सभी प्रकार के भेदभावों और असमानताओं से मुक्त करने की आवश्कता का ध्यान समूचे विश्व में आ गया है।

दूसरे, किसी भी नैतिक विचार को सामने न रखते हुए केवल पदार्थवादी और व्यावहारिक दृष्टिकोण से ही विकासशील और विकसित दोनों ही देश विभिन्न कारणों से इस बात को स्वीकार करते जा रहे हैं। कि समाज से स्त्रियों के योगदान को अधिक से अधिक स्पष्ट करना होगा।

विकास की समस्या के अन्य समाधानों की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक समाधानों की अत्यधिक आवश्यकता है। एक विकासशील देश के रूप में परिवर्तित होने के लिए समाज को नया दृष्टिकोण अपनाना होगा। और स्त्रियां इस प्रकार के मनोवैज्ञानिक परिवर्तन को प्रोत्साहन देने और बढ़ाने तथा परिवारों के बीच में फैलाने में सबसे अधिक समर्थ हैं।

यही बात विकसित देशों के सम्बन्ध में भी ठीक है। प्रगति के कारण कुशल जनशक्ति की आवश्यकताएं बढ़ गयी हैं और केवल पुरुषों से पूरी नहीं की जा सकतीं। इसलिए आवश्यक है कि स्त्रियों से अधिक से अधिक सहायता ली जाए।

अवकाश के समय का प्रश्न भी है। अभी हाल में यूनैस्को की सहायता से चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्रीय आयोग ने प्राग में वैंयस्क शिक्षा और अवकाश के बीच सम्बन्धों के विषय में प्राग में एक प्रादेशिक सम्मेलन का आयोजन किया। हमारी सभ्यता की यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रमुख समस्या है और ऐसी है जो कि विकसित देशों में बहुत बढ़ी-चढ़ी हुई है। क्योंकि हमारी २०वीं शताब्दी की सभ्यता वास्तव में कार्य की सभ्यता है जिन लोगों ने प्राग सम्मेलन में भाग लिया उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अवकाश अकसर केवल पुरुषों को ही मिलता है और कार्य का भार स्त्रियों को बहुत अधिक उठाना पड़ता है। पुरुष दिन भर काम करने के बाद घर लौटने पर आराम कर सकता है जबकि स्त्री को अपने काम के अतिरिक्त अपने घर और बच्चों को भी देखना पड़ता है।

इसलिए नैतिक आधार और व्यावहारिक कारणों से विकसित और विकासशील दोनों ही देशों में स्त्रियों की योगदान पर पूरी तरह फिर से विचार करना चाहिए और उसके स्थायी समाधान पर्याप्त नहीं है। ऐसी स्थिति में यूनैस्को अपने सामने कौन से प्रमुख लक्ष्य रख सकती है।

सर्वप्रथम मेरा विश्वास है कि यूनैस्को को अपने अनिवार्य नैतिक उद्देश्य के कारण नैतिक कार्यक्रम को जितना भी हो सके बढ़ाने, गहरा करने और विकसित करने की ओर प्रयास करना चाहिए। भेद-भाव के विरुद्ध संघर्ष में कारगर रूप से भाग लेने के बाद यूनैस्को को स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के बारे में भी वही करना चाहिए जो वह विभिन्न प्रजातियों के सम्बन्धों के बारे में कर चुकी है।

मेरे मत में स्त्रियों की समस्याओं का समाधान यूनैस्को के कार्यक्षेत्र से बाहर है फिर भी यूनैस्को के पास एक ऐसा उपकरण है और वह उसको राज्यों तथा संस्थाओं की सेवा में प्रस्तुत करना यूनैस्को का अनिवार्य कर्त्तव्य है। यह उपकरण शिक्षा है जो आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थियों का प्रतिबिम्ब होता है और उसके साथ-ही क्रान्ति की प्रतिक्रिया और अतीत को छोड़कर बढ़ना भी होता है। शिक्षा के द्वारा कारण और परिणाम के वृत्त को रोका जा सकता है। इसलिए स्त्रियों के लिए शिक्षा की सुलभता के अवसरों को बढ़ाना और उनमें सुधार करना अत्यधिक महत्वपूर्ण बात है।

उसके बाद एक तीसरा उद्देश्य यह है कि स्त्रियों को यूनैस्को के कार्य में अधिक से अधिक भाग लेने का अवसर दिया जाए। उदाहरण से लिए शिक्षण में स्त्रियों के योग को बढ़ाना चाहिए। शिक्षण व्यवसाय स्त्रियों के बड़ी निकट की चीज़ है और जब यूनैस्को विश्व भर में शिक्षकों की स्थिति के सम्बन्ध में अपने संस्ताव बनाये तो उसको यह बात ध्यान में रखनी चाहिए। वैज्ञानिक कार्रवाइयों में स्त्रियों के भाग लेने के प्रति उपेक्षा नहीं करनी चाहिए क्योंकि विज्ञान ही हमारी सभ्यता का प्रमुख गतिप्रेरक है। जितनी अधिक स्त्रियों को हम विज्ञान और उसके संगठन में लेते जाएंगे उतना ही स्त्रियां उस तत्त्व का अनिवार्य अंग बन जाएंगी जो अब हमारे समाज के विकास में सबसे अधिक तेज़ी से घूमने वाला है। जब हमारे पास अधिक संख्या में स्त्री इंजीनियर और उच्च स्तरीय तकनीकी विशेषज्ञ होंगी केवल-शिल्पवैज्ञानिक सहायक के रूप में नहीं—जब वह दिन आयेगा तो एक विजय होगी, न केवल स्त्रियों की वरन् समूचे विकास की।

वर्तमान समय में दसवर्षीय अवधि की बात करना एक चलन बन गया है और इसलिए मेरा विचार है कि यूनैस्को महासम्मेलन के अगले अधिवेशन में इस सम्बन्ध में एक दसवर्षीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाना चाहिए। आगामी दो वर्षों के लिए उस कार्यक्रम में इस समूची प्रायोजना के आधार और संधार ही होंगे। यह कार्यक्रम केवल अध्ययन का ही न होगा वरन् कार्य का होगा। इसके साथ-ही इसमें विशेष रूप से स्त्रियों के अधिकारों और सुविधाओं की समस्याओं पर विचार करना होगा और इसके साथ ही यूनैस्को के वर्तमान कार्यक्रम के लिए भी उपयुक्त बनना होगा।

मैं नहीं चाहता कि यह आयोजना शिक्षा के प्रश्नों तक ही सीमित रह जाए। यद्यपि स्त्रियों के लिए शिक्षा की सुलभता ही इसका प्रमुख पक्ष है। इसको सामाजिक विज्ञानों का स्पर्श करना भी आवश्यक है क्योंकि जिन परिस्थितियों से हमें परिचित होना है उसकी व्याख्या समाज वैज्ञानिकों से प्राप्त की जा सकती है। इस सम्बन्ध में प्राकृतिक विज्ञान विभाग का भाग न लेना भी भूल होगी। इसलिए यह आवश्यक है कि इस आयोजना में यूनैस्को के सभी विभाग भाग लें, यद्यपि ये अधिक प्रत्यक्ष रूप से केवल दो ही विभागों से निकट रूप से सम्बन्धित है—स्कूल और उच्चतर शिक्षा विभाग तथा वयस्क शिक्षा और तरुण कार्रवाई विभाग। जब हम स्कूल बाह्य शिक्षा की बात करते हैं तो हमको यह नहीं भूलना चाहिए कि शिक्षा को चलाने में स्त्रियों की एक विशिष्ट स्थिति है और इसके अन्तर्गत जीवन के प्रत्येक स्तर पर शिक्षण की सभी प्रक्रियाएं और रूप आ जाते हैं।

यही उस महान अभियान की प्रमुख सरणियां और सामान्य महत्व है, जिसको प्रारम्भ करने के लिए मैं उत्सुक हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन शिक्षा सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

अंटोनियो द गमारा

यूनैस्को और अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा ब्यूरो द्वारा जिनेवा में १२ से १६ जुजाई ६५ तक आयोजित जन-शिक्षा सम्बन्धी अन्तराष्ट्रिय सम्मेलन के २८ वें सम्मेलन में ९६ देशों ने भाग लिया। २५० से ऊपर प्रतिनिधियों ने चर्चा में भाग लिया। जिन प्रश्नों पर विचार किया गया वे ये थे : साक्षरता और वयस्क शिक्षा, माध्यमिक स्कूलों में आधुनिक भाषाओं का शिक्षण और १९६४-१९६५ के बीच शिक्षा की प्रगति पर शिक्षा मंत्रियों द्वारा प्रस्तुत ७८ रिपोर्टों का अध्ययन।

सम्मेलन में ये अधिकारी चुने गये : सभापति—मि० फ़ाद सबाया (लेबनान), उप-सभापति—निकोलाई एलैक्जैन्ड्रोव (रूस) काजी अनवरुल हक़ (पाकिस्तान), जोजेफ़ बेन्सेडी (हंगरी), औलिवर जे कालडवैल (संयुक्त राज्य अमेरिका), विलियम ए एटेकी मुबोवा (कैमरुम), हादी हैदायती (ईरान), जाँ टाँमस (फ्रांस), इस्माइल अंटोनियो बार्गा बोनिला (कोस्टारिका), साक्षरता और वयस्क शिक्षा के रिपोर्टर मि० अहमद अन्नाबी (अल्जीरिया), माध्यमिक स्कूलों में आधुनिक शिक्षाओं के शिक्षण के रिपोर्टर मि० स्टेनिस्लाँ डोबोसिविच (पोलैंड)।

राज्य परिषद के सदस्य आन्द्रे शवान ने स्विट्ज़रलैंड के प्रतिनिधि के रूप में और अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा ब्यूरो की कार्यकारी समिति के वर्तमान अध्यक्ष के रूप में भाग लेने वालों का जिनेवा में स्वागत किया।

इस बैठक के महत्त्व पर जोर देते हुए मि० शवान ने संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रकाशित शिक्षा सम्बन्धी विभिन्न आंकड़े प्रस्तुत किए। सम्पूर्ण विश्व में ९६५ मिलियन स्कूल आयु के बच्चों में से केवल ४४ प्रतिशत स्कूल या विद्यालयों में भरती होते हैं। इन ४२५ मिलियन सुविधा प्राप्त बच्चों में से ७९ प्रतिशत बच्चे प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, १८ प्रतिशत माध्यमिक शिक्षा और ३ प्रतिशत उच्चतर शिक्षा।

जब औद्योगीकृत देशों में अनिवार्य शिक्षा प्रारंभ की गई तो उसका उद्देश्य यह था कि आदेशों को समझने और पूरा करने के लिए पर्याप्त संख्या में कार्यकर्ता प्रशिक्षित हो जाएं। दूसरे गुणों का विकास—जो आजकल शिक्षा विशेषज्ञों द्वारा अनिवार्य और तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा उपयोगी माने जाते हैं—उस समय तक उन उद्देश्यों में शामिल नहीं था और अब भी विरले ही स्थानों के स्कूलों के उद्देश्यों में वे बातें शामिल हैं। मि० शवान ने आगे कहा कि वे बातें ये हैं : कल्पना शक्ति, प्रेरणा की भावना, प्रेक्षण की क्षमता और चीजों को समझने की सहज क्षमता। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि पढ़ने-लिखने और गणित के तरीकों को सीखने के साथ-ही जो कि निजी व्यवसायिक और सामाजिक जीवन सभी के लिए अनिवार्य है विश्व के सभी देशों में विज्ञान और औद्योगिकी के प्रारंभिक तथ्यों, उद्देश्यों, और विशिष्टताओं को समझा जाए।

मनुष्यता को सुविधा प्राप्त और निरक्षरों के बीच बटा नहीं रहना चाहिए।

वर्तमान समय में जब औद्योगिक वैज्ञानिक और शिल्प वैज्ञानिक संसाधन मनुष्यों को अधिक से अधिक विजय प्राप्त करने की ओर उकसा रहे हैं तो यह बड़े ही दुख का विषय होगा कि अब भी लगभग साढ़े सात सौ मिलियन निरक्षर वयस्क सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में भाग लेने तथा हमारी सभ्यता से लाभान्वित होने में पूर्णतया अक्षम रहे। यही समस्या शिक्षा के उपमहानिदेशक मि० गेब्रियल बेतांकुर-मेजिया ने उठाई।

मि० बेतांकुर ने कहा, "मानवता अब दो श्रेणियों में विभाजित नहीं रह सकती। एक ओर वे नागरिक जो विश्व में घटने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले परिवर्तनों को समझ सकते हैं और अपनी नियति पर कुछ नियंत्रण कर सकते हैं और दूसरी ओर कुंठाग्रस्त जन-सामान्य जो आधुनिक विज्ञान और वैज्ञानिक तथा शिल्प वैज्ञानिक सभ्यता के सभी लाभों से निरक्षरता के कारण कटे रहते हैं।

साक्षरता और वयस्क शिक्षा के महत्व और तात्कालिकता पर जोर देते हुए अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा ब्यूरो के निदेशक मि० जाँ पियाजे ने कहा "व्यस्क शिक्षा की समस्या सभी देशों की रुचि की है क्योंकि यद्यपि कुछ क्षेत्रों में अब निरक्षरता नहीं है फिर भी जो तरीके इस प्रकार की शिक्षा के लिए निकाले जायेंगे वे सभी युगों में सामान्य शिक्षा तरीक़ों पर उपयोगी और कारगर प्रभाव डालेंगे।

साक्षरता शिक्षण और निरंतर शिक्षा

वयस्कों के लिए साक्षरता और शिक्षा सम्बन्धी संस्ताव का मसौदा तैयार करने में जन शिक्षा सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में १०६ देशों से प्राप्त उत्तरों में दिये गये तथ्यों को आधार बनाया। केवल २३ देशों में जहां अनिवार्य शिक्षा लागू हो चुकी है। निरक्षरता का निराकरण हो सकता है। अन्य सभी देशों में जन सामान्य के लिए शिक्षा के अपर्याप्त तरीके, सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए सबसे बड़ी बाधा है।

रिपोर्टर मि० अहमद खन्ना ने भी चर्चा की मूल बातों का सार इस प्रकार प्रकट किया : अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा ब्यूरो से प्राप्त तथ्यों से पता चलता है कि निरक्षरता को दूर करने की आयोजना की हवाई आयोजना नहीं है परन्तु इसके विपरीत उन संकल्पनाओं का अंग है जो मूल्यवान सिद्ध हो चुके हैं।"

सम्मेलन ने साक्षरता और वयस्क शिक्षा सम्बन्धी संस्ताव का मसौदा सर्वसम्मति से स्वीकार किया। मानव अधिकारों, व्यक्ति की प्रतिष्ठा और प्रगति के मूल विचारों के अतिरिक्त वैज्ञानिक विकास के लिए निरक्षरता के निराकरण को आवश्यक मानने के लिए दूसरे कारण भी हैं और इसके लिए सुसुचित और सुसंस्कृत नागरिकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता है। जो स्त्री-पुरुष निरक्षर रह जाते हैं उनको "सामुदायिक और राष्ट्रीय जीवन में भाग लेने, घर में रहन-सहन के स्तर में सुधार करने, पारिवारिक जीवन के स्तर में सुधार करने तथा अधिक अच्छा वैयक्तिक और सामूहिक शिक्षा प्राप्त करने में अत्यधिक कठिनाइयां होती हैं।"

इसकी एक प्रमुख धारा के अन्तर्गत स्त्रियों की साक्षरता के शिक्षण पर भी महत्वपूर्ण जोर दिया गया है और यह सिफ़ारिश की गई है कि शिक्षा मंत्रालय ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करे जिससे स्त्रियाँ भी इस कार्यक्रम में उसी प्रकार लाभ उठा सकें जैसे पुरुष उठाते हैं।

तेज़ी से होने वाले शिल्प वैज्ञानिक, सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तनों के कारण निरंतर शिक्षा की एक पद्धति स्थापित की जानी चाहिए जिससे कि शिक्षा प्राप्त वयस्क ही अपनी शिक्षा के अभाव को बीच-बीच में पूरा करते रह सकें, अपने को नये कार्यों के लिए प्रशिक्षित कर सकें, समसामयिक जीवन में सक्रिय रुचि ले सकें और निरंतर परिवर्तनशील समाज के मूल्यों, आदर्शों और जीवन स्तर में अपने को अधिक सरलता और शीघ्रता से समंजित कर सकें।

इस कार्य के विस्तार और तात्कालिकता के कारण बौद्धिक तथा आर्थिक और तकनीकी स्तरों पर संयुक्त राष्ट्र के द्वारा प्रस्ताविक निरक्षरता विरोधी आन्दोलन के अन्तर्गत अधिक विस्तृत अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है। सम्मेलन ने यह सिफारिश की कि जितने देशों के प्रतिनिधि सम्मेलन में आये थे वे सब तेहरान में सितम्बर में होने वाले शिक्षा मन्त्रियों के सम्मेलन की सफलता में योग दें।

आधुनिक भाषाओं का शिक्षण

जिन १०८ देशों ने सर्वेक्षण के उत्तर प्रस्तुत किये थे उनमें से १०० ने यह कहा कि आधुनिक भाषाओं का शिक्षण अनिवार्य है। अधिकतर देश इस शिक्षण के निर्माणात्मक स्वरूप को स्वीकार करते हैं। प्रतिदिन के जीवन में आधुनिक भाषाओं के उपयोगी पक्षों के सम्बन्ध में इंकार नहीं किया जा सकता। परन्तु यदि विचार और तर्क-पद्धति के विकास में उनके महत्व को भुला दिया जाय तो विद्यार्थी के हितों के विपरीत होगा।

वर्तमान समय में दृश्य श्रव्य साधनों के कारण बहुत अधिक प्रगति की संभावना हो सकती हैं। परन्तु वे इतने मंहगे हैं कि स्कूल उनका खर्च नहीं उठा सकते। इसके साथ ही ९० देशों में विशेपज्ञता प्राप्त शिक्षकों की कमी है। उनमें से ७५ में यह स्थिति बड़ी ही कठिन है। कर्मीवर्ग और शिक्षण सामग्री के सीमित होने से यूनैस्को को अपने सदस्य देशों के बीच सहयोग का कार्यक्रम स्थापित करने के लिए प्रवृत्त होना चाहिए जिसके अन्तर्गत दृश्य श्रव्य साधन सस्ते मूल्यों पर मिल सकें। सर्वेक्षण में संग्रहीत सूचना के अनुसार आधुनिक भाषाओं का अध्ययन १० या ११ वर्षों की अवस्था में प्रारंभ होता है लेकिन यदि यह शिक्षण इसके कुछ वर्ष पहले प्राप्त हो सके तो उच्चारण और शब्द-कोश अच्छा रहेगा।

मि० जाँ पियाज़े ने कहा, "प्रत्यक्ष तरीकों के लाभ—जो कि विद्यार्थियों के स्वतः उद्भूत कारवाइयों के अनुसार होते हैं—प्रत्यक्ष हैं। जब बालक छोटा होता है और शिक्षा नीचे के स्कूल स्तर पर ही प्रारंभ कर दी जाती है तो बच्चा भाषाओं को अधिक अच्छी तरह समझ सकता है। शिक्षक का व्याकरण भाषाशास्त्री के व्याकरण के जितना निकट हो सके होना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैज्ञानिक और शिल्प वैज्ञानिक कर्मीवर्ग की बढ़ती हुई मांग

१९६३-६४ की अवधि में विश्व भर में शिक्षा के बजटों में पहले की अवधि की अपेक्षा १३-१८ प्रतिशत की औसत वृद्धि हुई। प्रारम्भिक और माध्यमिक स्तरों पर विद्यार्थियों की संख्या में ७.८७ और ११.४ प्रतिशत की वृद्धि हुई। ७९ सदस्य देशों से प्राप्त उत्तरों में फिर से एक तात्कालिक समस्या का पता चलता है। विज्ञान के नए विभाग, पालिटेकनिक संस्थाएं और व्यवसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना आर्थिक और सामाजिक विकास की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शीघ्र होनी चाहिए। प्रत्येक आधुनिक राज्य को पर्याप्त जानकारी से युक्त जनसंख्या की आवश्यकता है।

इस सम्बन्ध में आर्थिक दृष्टि से कमज़ोर देशों में शिक्षा संबंधी प्रगति जैसे कुछ अफ्रीकी देशों में निश्चय ही स्वविकास के प्रति इन देशों के प्रयत्नों का सुन्दरतम पक्ष प्रस्तुत करता है। जन-शिक्षा सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जो अभिलेख प्रस्तुत किए गए उनसे पता चलता है कि ज्ञान की सच्ची पिपासा है। और जनसंख्या अपनी मानव क्षमताओं को बढ़ाने के लिए बड़ा से बड़ा बलिदान करने को तैयार है।

दूसरे समान महत्वपूर्ण उदाहरण अन्य देशों से प्रस्तुत किए जा सकते हैं। १९६४ के बीच सोवियत रूस में उच्चतर शिक्षा के ३५०००० स्नातक (१९६३ से २०००० अधिक) राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के थे। उनमें से उद्योग, परिवहन और संचार के लिए १२८००० इंजीनियर थे और कृषि के लिए ३४००० इंजीनियर थे। व्यवसायिक शिक्षा का विकास कम महत्वपूर्ण नहीं है। इसी वर्ष के बीच १५ मिलियन कुशल कार्यकर्ता प्रशिक्षित हुए। उत्पादन के आधुनिककरण के कारण फैक्ट्रियों में नवीकरण शिक्षाक्रम और प्रशिक्षण क्रम संचालित होते हैं। १९६४ के बीच १३५००००० लोगों ने इन शिक्षा क्रमों में भाग लिया।

विज्ञान और शिल्प विज्ञान के कारण पहले के कार्य और कुशलताएं पुरानी पड़ती जाती हैं

इसी प्रकार संयुक्त राज्य अमरीका की रिपोर्ट से पता चलता है शिक्षा कार्यक्रमों में विज्ञान और शिल्प विज्ञान का प्रथम स्थान है। यह अनिवार्य है कि सभी विद्यार्थियों को सामान्य वैज्ञानिक प्रशिक्षण दिया जाए और एक बड़ी संख्या के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण भी सुलभ हो।

जैसे-जैसे २०वीं शताब्दी बीतती है, लौहारों, पहिये बनाने वालों की संख्या घटती है तथा फोटोग्राफी और दूर संचार विशेषज्ञों की आवश्यकता बढ़ती है। संयुक्त राज्य की रिपोर्ट के अनुसार विज्ञान और शिल्प विज्ञान के कारण जल्दी-जल्दी कार्य-कुशलताएं यहां तक कि शिक्षा भी पुरानी पड़ जाती हैं। अर्थात् तरुण वर्षों तक ऐसी शिक्षा प्राप्त करते हैं जो शीघ्र ही पुरानी हो जाती है।

आविष्कार इतनी जल्दी-जल्दी होते हैं कि विज्ञान शिक्षा की दीर्घावधि आयोजना के लिए तैयारी की जा रही है। परमाणु ऊर्जा आयोग, राष्ट्रीय उड्डयन और अन्तरिक्षा प्रशासन, राष्ट्रीय विज्ञान फाउण्डेशन, स्वास्थ्य शिक्षा और कल्याण विभाग, व्यावसायिक संगठन और बड़ी-बड़ी फाउण्डेशनें, बड़े विश्वविद्यालयों के समायोजन में शिक्षण शास्त्र सम्बन्धी शोध और स्कूल कार्यक्रमों के बनाने में भाग ले रहे हैं।

व्यवसायिक प्रशिक्षण और शिक्षकों की कमी

१९६० और १९६५ के बीच शिक्षा में पर्याप्त प्राप्ति हुई है जिसका ज्ञान बहुत कम लोगों को है। यह विचार कि विद्यार्थियों को १४,१५ और १६ वर्षों तक अनिवार्य स्कूल शिक्षा प्राप्त होनी चाहिए अब एक आदर्श मात्र नहीं रह गया है वरन अनेकों औद्योगीकृत देशों में वास्तविकता बन गया है।

उच्चतर शिक्षा शास्त्री शोध और स्कूल निदेशन के कारण स्कूल कार्य का अधिक तर्कसंगत संगठन और अध्ययन कार्यक्रमों तथा पाठ्यक्रमों में सुधार करना सम्भव है। शिक्षण विज्ञान और औद्योगिकी को नयी आवश्यकताओं के अनुकूल बनाया जा रहा है। प्रयोगात्मक माध्यमिक स्कूलों में भौतिकी, रसायन, प्राणिविज्ञान और गणित के सम्बन्ध में अधिक से अधिक प्रयोग किये जा रहे हैं। उदाहरण के लिए नीदरलैंड में एक सितम्बर १९६४ से शिक्षा सुधारों की तैयारी के लिए विश्वविद्यालयों में सम्बद्ध १४ प्रयोगात्मक माध्यमिक स्कूलों की स्थापना की गयी है। डेनमार्क में शिक्षा अधिकारी औद्योगिक और व्यापारिक फार्मों तथा स्कूलों के बीच स्कूल कार्य को जीवन के निकट लाने के लिए सम्पर्क स्थापित कर रहे हैं।

फिर भी प्रत्येक स्थान पर राजकीय स्कूलों में अध्यापकों की कमी है और अधिकारियों को स्कूलों में विद्यार्थियों की वृद्धि होने की प्रतिक्रिया स्वरूप काफी प्रयत्न करने पड़ते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ मूल परिस्थिति-शरीर वैज्ञानिक समस्याएं

नौरेमर एम० सिसाकियां

रूस की विज्ञान अकादमी के सदस्य, यूनैस्को महासम्मेलन के सभापति (तेरहवां अधिवेशन)

[यूनैस्को भवन पेरिस में १४ से १८ जून तक यूनैस्को, अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभिकरण, विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व मौसम विज्ञान संगठन, और अन्तर्राष्ट्रीय दूर संचार संघ के सहयोग से अन्तर्राष्ट्रीय उड्डयन संघ और अन्तर्राष्ट्रीय उड्डयन अकादमी द्वारा आयोजित अन्तरिक्ष में मानव की भूल वातावरण सम्बन्धी समस्याओं पर एक अन्तर्राष्ट्रीय वादगोष्टी में प्रो० नौरेमर एम० सिसाकियां द्वारा प्रस्तुत एक लेख पत्र के उद्धरण ।]

वर्तमान समय में परिस्थिति शारीरिकी या अंतरिक्ष शारीरिकी को अन्तरिक्ष और जेट द्वारा चलने वाले अन्तरिक्ष यानों की विशेष परिस्थितियों में जीवित प्राणियों की जीवन प्रक्रियाओं और व्यवहारों पर आधारित प्राणि वैज्ञानिक शाखाओं का संयोजन समझना चाहिए।

इन समस्याओं की जटिलता और विविधता के कारण उनके समाधान के लिए न केवल शारीरिकी वरन प्राणी रसायन, प्राणी भौतिकी विज्ञान के दूसरे खण्डों से उपाय और संकल्पनाएं ग्रहण करना आवश्यक है ।

अन्तरिक्ष शारीरिकी का अनिवार्य उद्देश्य उन साधनों और उपायों की शरीर वैज्ञानिक परिभाषा प्रस्तुत करना है जिनसे उन परिस्थितियों में जीवित प्राणियों के बीच सामान्य कार्रवाई बनाए रहना सम्भव हो सके ।

परिस्थिति जन्य तथ्यों के विस्तृत परीक्षण और जीवित प्राणियों पर उनके कार्य के विविध परिणामों द्वारा प्राणी की निरोध शक्ति को सुदृढ़ बनाने के तरीके निश्चित करना, अलाभकारी तथ्यों के परिणाम के विरोध में उसकी रक्षा के लिए विभिन्न युक्तियां निश्चित करना और अन्तरिक्ष यानों की कृत्रिम परिस्थिति के मानदण्डों की स्थापना करना सम्भव है।

विभिन्न जीवित सरणियों की रक्षा करने के तरीकों के अध्ययन से अन्तरिक्ष में इन प्राणियों के बने रहने की समस्या का समाधान मिलेगा । इसके साथ ही इन परिस्थितियों में जीवित प्राणियों की प्रतिक्रियाओं को जानते हुए और निरोध तथा सहन की क्षमताओं को समझते हुए प्राणि-तकनीकी सरणियों के सुधार और स्थापना द्वारा प्रस्तुत व्यवहारिक समस्याओं को सुलझाना और शरीर वैज्ञानिक निरोध के साधनों को सुदृढ़ बनाना सम्भव होगा । परिस्थितियों की समस्याओं का अध्ययन करने में अन्तरिक्ष के विभिन्न तथ्यों के बीच अन्तर करना तथा अन्तरिक्ष यानों के भीतर आन्तरिक परिस्थितियों से सम्बन्धित तथ्यों और गतिशील तथ्यों के बीच अन्तर स्थापित करना होगा ।

इनमें से प्रत्येक तथ्य की शरीर वैज्ञानिक प्रतिक्रिया का अध्ययन अलग-अलग किया जा रहा है । इसके साथ ही इन तथ्यों के विभिन्न संयोजनों के जटिल परिणामों से सम्बन्धित शोध पर भी अधिक से अधिक ध्यान दिया जा रहा है ।

समंजन की अत्यधिक क्षमताएं इस दुनिया के प्रतिनिधियों में दिखाई देती हैं जब जीवित प्राणियों और विलगित कोशिकाओं पर निम्न और अतिशय निम्न तापमानों में प्रतिक्रियाओं पर शोध की जाती है । इसके साथ ही परा-बैंगनी किरणों और आयनीकृत विकिरणों के निरोध पर भी शोध की जाती है ।

जहां तक गतिक तथ्यों का सम्बन्ध है त्वरण भारहीनता की लम्बी स्थिति और विकिरण के संयुक्त कार्य के सम्बन्ध में अपर्याप्त तथ्य उपलब्ध हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि ये तथ्य मस्तिष्क में रक्त संचार पर और कोशिकाओं के बढ़ने पर बुरा प्रभाव डालते हैं । निस्संदेह कुछ हद तक विभिन्न औषधिय वस्तुओं के प्रयोग और कक्ष के कृत्रिम वातावरण में नाइट्रोजन आक्सीजन मिश्रण के स्थान पर हिलियम आक्सीजन के मिश्रण को रखने से इन परिणामों का यथासंभव निराकरण किया जा सकता है । परन्तु अधिकतर संभावनाएं बौद्धिक प्रशिक्षण द्वारा प्रोत्साहित समंजन की प्राकृतिक क्षमता में ही हैं । अन्तरिक्ष उड़ान की परिस्थितियों में शरीर को कई तथ्यों के साथ-साथ कार्य का प्रभाव भुगतना पड़ता है अतः यह ठीक ही है कि जहां तक हो सके अविशेषीकृत प्रशिक्षण तरीकों का उपयोग किया जाय और कुछ विशेष महत्व के तथ्यों के प्रति निरोध को सुदृढ़ बनाना आवश्यक होने पर भी विशेष उपायों का प्रयोग किया जाय ।

समंजन असाधारण रूप से जटिल प्रक्रिया है । यह नियम के सभी स्तरों को प्रभावित करती है और शरीर की सभी शरीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैज्ञानिक सरणियों को सक्रिय बनाती है।

अब जो तथ्य सुलभ हैं उनसे यह पता चलता है कि किसी भी शरीर के निरोध क्षमताओं में परिवर्तन करना सम्भव है। चाहे वह पौधों की कोशिका हो चाहे मनुष्य की। इसके अतिरिक्त इस प्रयोजन के लिए जिन तरीकों का प्रयोग किया जाता है वे भी कोई भी शरीर क्यों न हो मूलतः समान होते हैं। वे उपाय हैं कोशिका मैटाबलिजम को प्रभावित करने वाले और कोशिका के रासायिक संयोजन में समंजन की प्रतिक्रिया उत्पन्न करने वाले प्रतिकारक तत्वों को बार-बार किसी भी देश के पास लाना। प्रत्येक प्रतिकारक तत्व के कारण कोशिका में समान जीव रासायनिक परिवर्तन होते हैं और उसके बाद पुनर्निर्माण की एक अवधि आती है। सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि समंजन की प्रतिक्रियाएं प्रगति दिलाती हैं, अधिक मितव्ययी होती हैं, शीघ्रता और समायोजन उत्पन्न करती हैं जिससे कि प्रत्येक बार परिणाम और देश तक बने रहते हैं। अर्थात् धीरे-धीरे कोशिकाएं उन्हीं प्रतिकारक तत्वों की क्रिया के प्रति अधिक मितव्ययी और संगत ढंग से प्रतिक्रिया करना सीख लेती हैं। उपायचयन की प्रतिक्रियाओं का स्वरूप और लय में परिवर्तन होता है और विभिन्न प्रतिकारक तत्वों के सम्मुख आने से कोशिका संरचनाएं अधिक स्थायित्व प्राप्त करती हैं।

उदाहरण के लिए यह समझना सरल है कि हाईपाक्सीमिया के प्रति निरोध शक्ति प्राप्त करके शरीर एवरण, विकिरण, अत्यधिक शीत अथवा गहन पेशी प्रयत्न के परिणामों का निरोध करने में अधिक समर्थ हो जाता है। किसी भी दिए गए पतिकारक तत्व की क्रिया से कोशिका स्तर पर समंजन प्राप्त कर लेना शरीर की सामान्य निरोधक शक्ति को सुदृढ़ बनाता है।

दि वाइ कोवस्की (अन्तरिक्ष यान में पांच सम्पूर्ण दिन) और पी बेल्याएफ और एलियानोफ (यान से उतरकर अन्तरिक्ष में प्रवेश करने वाला पहला व्यक्ति) उड्डयन की आगे प्रगति के लिए आवश्यक अध्ययनों के लिए बहुत अधिक सामग्री प्रस्तुत करते हैं।

विश्व प्राणी वैज्ञानिक संतुलन और मानव सुरक्षा

एफ० इ० एकार्ड, यूनैस्को सलाहकार

[अर्थ पद्धति सम्बन्धी वादगोष्ठी के प्रारंभिक अधिवेशन में २४ से ३० जुलाई १९६५ को कोपेनहेगेन विश्वविद्यालय के ओरस्टेड संस्थान में माण्ड पेलियर विश्वविद्यालय के प्रो० एकार्ड का भाषण। इस वादगोष्ठी का आयोजन डेनमार्क की विज्ञान और साहित्य की राजकीय अकादेमी के तत्वावधान में यूनैस्को और डेनमार्क आयोग द्वारा किया गया।]

भूख की समस्या की बात करना बड़ी सामान्य-सी बात हो गई है। यह समस्या इतनी बार समाचार-पत्रों में चर्चा का विषय बन चुकी है कि अब तो इसका उल्लेख करने में भी हिचक लगती है। परन्तु आने वाले दशकों में यह अवश्य ही मानवता की अनिवार्य समस्या होगी जब तक कि कोई अननुमानित घटना न घट जाए। वर्तमान समय में यह अन्दाज लगाया जाता है कि विश्व की जनसंख्या का तीन-चौथाई भाग अच्छी तरह नहीं खाता या कम खाता है। ६० प्रतिशत भूख से पीड़ित रहते हैं और १३ प्रतिशत ऐसी परिस्थितियों में रहते हैं जो अकाल के निकट हैं।

वर्तमान समय में भूख की समस्या समाज की आर्थिक और सामाजिक संरचना से उत्पन्न होती है। उसी के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अपर्याप्त योग होता है और उपलब्ध श्रमिक वर्ग को बेकार रहना पड़ता है। बड़े-बड़े प्रदेश बंजर पड़े रहते हैं और धातु संसाधन बहुत ही कम उपलब्ध हो पाते हैं क्योंकि मनुष्य उनको प्राप्त नहीं कर पाता या तो अज्ञान के कारण अथवा आर्थिक तथा राजनीतिक बाधाओं के कारण अथवा शारीरिक शक्ति के अभाव के कारण। जैसे कि एलफ्रेड शाबी ने बिलकुल ठीक कहा था—"मनुष्य भूखे हैं क्योंकि वे काम नहीं करते और वे काम नहीं करते इसीलिए भूखे हैं।"

अल्पविकास और अकाल की यह स्थिति इतिहास के ऐसे क्षण में उत्पन्न हुई है जब मानव जनसंख्या औषधि की प्रगति के कारण अत्यधिक बढ़ रही है। पिछले दशक में विश्व जनसंख्या आधी बिलियन बढ़ी जबकि १७वीं शताब्दी में विश्व की सम्पूर्ण जनसंख्या आधी बिलियन थी। मानव जनसंख्या की वृद्धि की दर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतनी बढ़ी-चढ़ी है कि सात बिलियन का जो अन्दाज इस शताब्दी के बाद के लिए लगाया जाता है वह शायद बहुत कम है।

क्या इस जनसंख्या के लिए पर्याप्त भोजन प्राप्त करवाने के लिए प्रयत्न किया जाएगा ? निस्संदेह हां। क्योंकि वर्तमान समय में अन्तर्राष्ट्रीय तनावों के होते हुए भी हम एक ऐसी विश्व चेतना का आविर्भाव देख रहे हैं जो पहले अनिवार्य मानी जाने वाली असमानताओं के प्रति अधिक से अधिक असह्य मानती जा रही हैं। इसी विश्व चेतना के कारण उपेक्षित क्षेत्रों में डाक्टर और अस्पताली उपस्कर भेजना सम्भव हुआ है और इसी से एक दिन निश्चय ही भूख की समस्या का समाधान भी प्राप्त होगा।

परन्तु भावी जनसंख्या के लिए समाप्त खाद प्राप्त करने के लिए एक विशाल आर्थिक प्रयत्न प्रारम्भ करना होगा क्योंकि किसी भी मनुष्य का जीवन बचाने की अपेक्षा उसको जीवन भर खिलाने में अधिक खर्चा लगता है। भूख की समस्या के समाधान के लिए उद्योग का विकास और फसलों का विस्तार और सुधार एक बहुत ही विशाल स्तर पर करना अनिवार्य है और इसके कारण प्राणी मण्डल में और उसके अनुपूरक अर्थ सरणियों में दूरव्यापी परिवर्तन निश्चित ही होंगे।

इन परिवर्तनों के परिणाम क्या होंगे हम निश्चय से नहीं जानते। क्योंकि यद्यपि सभी मानव जीवन अनिवार्य रूप से वर्तमान अर्थ सरणियों से जुड़ा हुआ हैं फिर भी हमें उनकी संरचना और कार्य प्रणाली के बारे में बहुत ही कम ज्ञान है। हम जानते हैं कि अर्थ सरणियां चाहे वन, घास के मैदान, झीलें या सागर कुछ भी हों, सबमें वनस्पति की एक ऐसी सतह है जो विकृत ऊर्जा को संभाव्य रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तित करती है अर्थात वातावरण में उत्पन्न धातु तत्वों से सजीव तत्वों का निर्माण करती है। हम यह भी जानते हैं कि प्राणी मण्डल में सजीव तत्वों की इस संवृद्धि से यह संवृद्धि अनेकों सजीव शरीरों की स्थिति की जिनमें मनुष्य भी सम्मिलित है प्रारंभिक शर्त है। परन्तु हम एक अर्थ सरणी की कार्यप्रणाली में विभिन्न पौधों और पशु प्रजातियों के अंशदान के बारे में बहुत ही कम जानते हैं।

हम अपने अज्ञान का बड़ा मूल्य चुकाते हैं। कृषि के गलत तरीकों के कारण पूरे के पूरे प्रदेश मरुस्थल या बंजर बन गये हैं। नदियों में घरेलू और औद्योगिक गन्दगी को फेंकने के उपयोग के लिए यह परिणाम हुआ है कि जिन नदियों और झीलों में वनस्पति रहा करते थे यह पूरी तरह समाप्त हो गई। जंगली झाड़ियों को नष्ट करने वाले और कीड़ों को मारने वाली दवाओं को बिना सोचे समझे डालने के कारण और वायु मण्डल के निरंतर दूषित होने के कारण अनेकों अर्थ सरणियों की संरचना में परिवर्तन हो रहा है।

अतः यह प्राकृतिक ही है कि प्राणी विज्ञान धरती की उन अर्थ सरणियों के मूल परिवर्तन की सम्भावना से भयभीत हो उठे जो मनुष्य के जीवन के लिए अनिवार्य हैं। जो प्राणि वैज्ञानिक संतुलन भूवैज्ञानिक युगों में प्राप्त किया जाता है उसका नाश एक ऐसी आपत्ति की स्थिति उत्पन्न कर सकता है जिससे भयंकर आपत्ति का परिचय हमें इससे पहले कभी नहीं हुआ। यदि समूचे प्रदेशों का स्वतः उद्भुत वनस्पति का स्थान चावल या आलू के खेत ले लेंगे तो उसी विशिष्ट वातावरण में रहने और संतान उत्पन्न करने के लिए जो पशु और पौधे समंजित हो चुके हैं उनका क्या होगा ? और उन पशुओं और पौधों की प्रजातियों के नष्ट हो जाने का जीवित विश्व और प्राणी वैज्ञानिक विश्व के बीच के विनियमों पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? अन्ततः इन पौधों और पशुओं में जो सम्भाव्य जीव पूंजी हैं उसके विनाश के बाद मानवीय विस्तारण की क्या सम्भावनाएं रह जाएंगी ?

यदि हम लोगों को ऐसी आपत्तियों के लिए तैयार रहना है तो अर्थ सरणियों की संरचना और कार्य प्रणाली का अध्ययन करना अत्यधिक तात्कालिक है।

अर्थ सरणी एक ऐसा जटिल तत्व है कि अभी हाल तक इसके परीक्षण में बहुत अधिक समस्याएं उत्पन्न होती रही हैं। आज इसके सम्बन्ध में सूचना में जो प्रगति हुई है उसके कारण अर्थ सरणी की कार्यप्रणाली का अध्ययन करना अत्यधिक सरल हो गया है।

आज जिन वाद-विवादों का प्रारंभ हो रहा है उनमें इसी विशेष समस्या का ध्यान रखा गया था। इस वाद गोष्ठी में एक सुनिश्चित समस्या उठायी गयी। प्रारंभिक उत्पादन स्तर पर विश्व की अर्थ सरणी में कार्य प्रणालियों का अध्ययन करने के लिए किन तरीकों का उपयोग करना चाहिए। अतः यह भूख की समस्या के समाधान में योग देने के लिए नहीं है। ऐसा हमने देखा कि यह समस्या प्रारंभिक रूप में जनसंख्या की वृद्धि और मानव समाज की राजनैतिक तथा आर्थिक संरचना से सम्बन्धित है।

इस वैज्ञानिक उद्देश्य के अतिरिक्त वादगोष्ठी का उद्देश्य यह भी है कि जनता और सरकारों का ध्यान आगामी वर्षों में मनुष्य को अर्थ सरणियों के परिवर्तन के परिणामों से बचाने में सहायता देने के लिए शोध के योगदान की ओर आकर्षित करना भी है।

यह तो सच है कि आधुनिक परिस्थिति में वैज्ञानिक शोध मंहगी पड़ती है जैसे भौतिकी और औद्योगिकी की सभी मंहगी पड़ती हैं क्योंकि ये सूचना के तैयार करने के नये से नये तरीकों का उपयोग करती हैं। परन्तु जब हम विचार करते हैं तो खतरा किस बात का है। विश्व प्राणी वैज्ञानिक संतुलन का बनाये रखने का जिस पर आगे-पीछे मानवता का भविष्य निर्भर करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रबात में इंजीनियरी स्कूल—कार्यचालन प्रायोजना का एक उदाहरण

जैक्स एच ग्यूरीफ़

रबात में शिक्षा मंत्रालय की प्रार्थना पर माध्यमिक और उच्चतर स्तर के शिक्षकों के संघ द्वारा एक उत्कृष्ट भूगोल पाठ्य पुस्तक तैयार की गयी है। उसमें मोरक्को का उल्लेख "महान विरोधों के देश" के रूप में किया गया है : अतलांटिक तक ही समृद्ध भूमि और भीतर के पहाड़ी दरिद्र प्रदेश के बीच विरोध तथा पारंपरिक मोरक्को और आधुनिक राज्य के बीच आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विरोध। पारंपरिक मोरक्को जिसका प्रतिनिधित्व पुराने नगर और गांव करते हैं कई शताब्दियों से वैसा ही है। इसकी प्रमुख विशेषताएं कट्टर समुदाय और एक प्रभावशाली प्राचीन सभ्यता, अत्यधिक पुराने तरीके, जीवन का बड़ा ही नीचा स्तर, उत्पादन वस्तुओं का बहुत ही कम व्यापार, छोटे-छोटे घर, उद्योगों का अभाव, और बड़े धीमे संचार हैं।

इसके विपरीत आधुनिक राज्य नयी सड़कों, हवाई अड्डों, बन्दरगाहों और विद्युत संस्थानों से युक्त है। इसकी कृषि यांत्रिक है और इसमें बहुत ही नये तरीकों का प्रयोग किया जाता है। इसमें अनेकों व्यापारिक सम्पर्क है, समृद्ध उद्योग हैं, एक सुसंगठित प्रशासन है, आधुनिक भवन हैं और सबसे महत्व की बात रहन-सहन का स्तर ऊंचा है।

यद्यपि इसमें सक्रिय जनसंख्या केवल ३० प्रतिशत लगती है। फिर भी इस आधुनिक अर्थ व्यवस्था के अन्तर्गत मोरक्को का दो-तिहाई उत्पादन होता है। परन्तु यद्यपि उत्पादन निरंतर बढ़ता जा रहा है फिर भी औसत आमदनी के परिणाम स्वरूप वृद्धि नहीं हो पाती क्योंकि जनसंख्या भी बहुत तेजी से बढ़ रही है। १९४० में मोरक्को में ८ मिलियन निवासी थे, १९५४ में १० मिलियन और १९६४ में साढ़े बारह मिलियन। उसी एक वर्ष में वृद्धि कम से कम ३५०००० हुई। आधी से अधिक जनसंख्या २० वर्ष से कम आयु की है और प्रति वर्ष १२०००० व्यक्ति नौकरी की अवस्था को पहुंचते हैं, उसमें से आधी वयस्क जनसंख्या को पर्याप्त काम नहीं मिला हुआ है। ये आंकड़े द्रुत आर्थिक प्रगति की तात्कालिक आवश्यकता बतलाने के लिए पर्याप्त हैं।

यह स्पष्ट है कि मोरक्को के सामने वही समस्यायें हैं जो सभी विकासशील देशों के सामने। जैसा यूनैस्को महानिदेशक मि० रेने मह्यू ने जोर देकर कहा, "यह कहना पर्याप्त नहीं होगा कि विज्ञान और औद्योगिकी का उपयोग इन समस्याओं के व्यावाहारिक समाधान के लिए आवश्यक है। इससे आगे जाकर यह कहना होगा कि उन सभी के लिए सामान्य अनिवार्य तथ्य यह है कि वे समाज के सम्पूर्ण रूप से वैज्ञानिक विचार और शिल्प वैज्ञानिक संगठन की ओर प्रगति करने का चित्र प्रस्तुत करते हैं। यही बौद्धिक संवृद्धि और सामाजिक परिवर्तन कल अनेकों नये राज्यों के भाग्य का निबटारा करेगा। अपनी स्वतंत्रता से वे इनमें जहां तक कुशलता प्राप्त कर लेंगे। दूसरे शब्दों में वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मीवर्ग की शिक्षा और प्रशिक्षण और वैज्ञानिक और औद्योगिक कार्रवाई के संगठन और आयोजना सफल और स्वतंत्र आर्थिक प्रगति और सामाजिक प्रगति के लिए अनिवार्य तत्व हैं। मि० मह्यू ने आगे कहा, "जो प्रदेश अभी अविकसित है विशेषकर उन देशों में जिन्हें अभी स्वतंत्रता प्राप्त हुई हैं, जब तक ये स्थितियां उपलब्ध नहीं कर ली जातीं तब तक कोई सच्ची स्वतंत्रता नहीं है।" मोरक्को के अधिकारियों का मत भी यही है। योग्य कर्मीवर्ग के प्रशिक्षण, जैसा कि १९५९ से १९६४ तक की पंचवर्षीय योजना में निश्चित किया गया है, १९६५ से १९६७ की तीन वर्ष की योजना में तीन अग्रता आवश्यकताओं में से है। इस नीति का परिणाम सामने आ रहा है और संयुक्त राज्य विशेष निधि तथा यूनैस्को की सहायता से स्थापित मोहम्मदिया इंजीनियरी स्कूल इसके सबसे प्रमुख उपलब्धियों में से हैं।

१९५७ में रबात में एक स्कूल की स्थापना करने का निश्चय किया गया जहां कार्यकारी इंजीनियरों को प्रशिक्षण दिया जाए जो आगे चलकर सार्वजनिक प्रशासन और प्रमुख उद्योगों में देश के लिए अत्यधिक आवश्यक शिल्प वैज्ञानिक कर्मीवर्ग का स्थान लें। यह स्कूल औद्योगिकी संस्थान जहां कुशल मिस्त्रियों को प्रशिक्षण दिया जाता है और उच्चतर प्रशिक्षण कालेज जहां गणित के अध्ययन बहुत उच्च स्तर पर किये जाते हैं का एक मध्यसूत्रीय रूप है। इंजीनियरों के उच्च पदों के लिए यह निश्चय किया गया कि विदेशी संस्तावों के मोरक्को या दूसरे देशों के स्नातकों को बुलाया जाय।

यूनैस्को सचिवालय की सहायता से सरकार ने १९५९ में विशेष निधि से इस प्रायोजना को पूरा करने के लिए सहायता की प्रार्थना की। अगले वर्ष निधि के प्रशासन मण्डल ने इस प्रार्थना को स्वीकार किया और ७४०००० डालर की सहायता की। यूनैस्को को कार्यकारी अभिकरण के रूप में नियुक्त किया। इसका अर्थ यह था कि संगठन पर ऐसे विशेषज्ञों की नियुक्ति का दायित्व था जो इस शिक्षा का संगठन करने में समर्थ हों और आवश्यक वैज्ञानिक उपस्कर के लिए आदेशों के कार्यक्रम को स्थापित कर सकें। मोरक्को सरकार ने इसके लिए लगभग १२५००००० दिरहाम (लगभग २५०००००० डालर) की राशि अलग की। स्कूल के आगे विस्तार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को आर्थिक सहायता देने के लिए और इस प्रकार अध्ययनों को अधिक समय तक बनाये रखने के लिए मोरक्को में सब मिलाकर १४४५०००० दिरहाम (२८०००००० डालर) के लगभग हैं। भवनों के निर्माण और उपकरणों (वैज्ञानिक उपस्करों के अतिरिक्त) तथा संस्था के संचालन के लिए खर्च किए हैं। ये प्रायोजना पांच वर्षों के अन्तर्गत सम्पूर्ण होनी थी और समय-समय अवधि की रक्षा की गयी।

मोहमदिया स्कूल विश्वविद्यालय से औद्योगिकी विभाग के रूप संबद्ध हैं। यह बड़ी तीन मंजिल की इमारत है। एक मीनार की तरह है जिसके दो कोण हैं, प्रत्येक में १६० विद्यार्थी हैं। विशेष रूप से विज्ञान शिक्षा के उपस्करों से युक्त भाषण भवन हैं। इसके साथ ही एक लाइब्रेरी, २५० विद्यार्थियों के उपयुक्त छात्रावास और प्रशासन दफ्तर हैं। इस भवन से जुले-मिले जुड़ी हुई प्रयोगशालाएं हैं और जिनमें प्रयोग किये जाते हैं और निर्माण प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। इन प्रयोगशालाओं को ३५०००० डालर का उपस्कर विशेष निधि और यूनैस्को ने दिया है। सम्पूर्ण भवन में शिक्षण, रहने और प्रशासन के लिए १८००० वर्गमीटरों का क्षेत्र है।

स्कूल का कार्यचालन अक्तूबर १९६० से प्रारंभ हुआ। पहले गणित के स्नातक अपर्याप्त संख्या में थे इसलिए माध्यमिक स्कूल के कुछ विद्यार्थियों को चुनकर तैयारी के लिए एक कक्षा स्थापित करनी पड़ी। अन्य विद्यार्थियों को परीक्षा के द्वारा चुना गया था। दो वर्ष बाद उनमें से सबसे अच्छे विद्यार्थियों को इंजीनियरी स्कूल में भरती किया गया और वही इंजीनियरी स्कूल के पहले विद्यार्थी थे। उस समय से स्कूल का मानदण्ड ऊपर ही उठता रहा है और सभी विद्यार्थी जो अब भरती किये जाते हैं उचित योग्यता प्राप्त होते हैं। अगले अक्तूबर में बैकलारिएट स्तर का प्रवेश परीक्षा स्कूल में होगी।

पूरा शिक्षण क्रम चार वर्षों का है। पहले वर्ष में सभी विद्यार्थी एक ही शिक्षण क्रम का अध्ययन करते हैं, उसके बाद वे चार खण्डों में विभाजित कर दिये जाते हैं। सार्वजनिक कार्य, खानों की इंजीनियरी, यांत्रिकी और विद्युत। कार्यक्रमों का आयोजन इस प्रकार किया गया है कि भावी इंजीनियरों को सामान्य वैज्ञानिक प्रशिक्षण, उच्चतर शिल्प वैज्ञानिक शिक्षण और व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हो जाए। उनका आधा समय प्रयोगशाला या कार्यशाला कार्रवाइयों में बीतता है। इसके अतिरिक्त उन्हें एक सामान्य शिक्षा भी दी जाती है जिसके अन्तर्गत आधुनिक भाषाओं, अर्थशास्त्र, कार्य का वैज्ञानिक संगठन और श्रमिक नियमों के अध्ययन सम्मिलित हैं। प्रोबेशन क्रमों को बहुत काफी महत्व दिया जाता है। विद्यार्थियों को प्रत्येक स्कूल वर्ष के अन्त में जनसेवाओं या औद्योगिक उद्यमों में मोरक्को या विदेश में इनकी शिक्षा दी जाती है।

स्कूल के निदेशक के अधीक्षण में शिक्षण कर्मीवर्ग में पूरे समय के अध्यापक विश्वविद्यालय के रीडर जो कि राबात के विज्ञान विभाग या अर्थ सरकारी और निजी संस्थाओं से लिए जाते हैं। वर्तमान समय में अधिकतर कर्मीवर्ग बाहर से आये हुए हैं और कई वर्षों तक संभवतः ऐसी ही स्थिति रहेगी। मोहम्मदिया स्कूल से जून १९६५ में विद्यार्थियों का पहला दल पास हुआ। उसमें ३४ तरुण इंजीनियर थे। १९६५ के लिए संख्या ३९ है। जो स्कूल वर्ष अभी समाप्त हुआ है उसमें २५९ विद्यार्थियों को शिक्षा दी गयी जिनमें से ७७ अपने पहले वर्ष में हैं। स्कूल जब शरद में पुनः खुलेगा तो उसमें १०० और विद्यार्थी भरती किए जाएंगे और तब कुल विद्यार्थियों की संख्या ३४० हो जायेगी।

अभी हाल में लगाये अन्दाजों के अनुसार वर्तमान समय में मोरक्को में काम करने वाले इंजीनियरों की संख्या ३०० से कम है। लगभग १२०० विदेशी इंजीनियर हैं जो १९७० तक देश से चले जायेंगे। मोहम्मदिया स्कूल की आयोजना प्रतिवर्ष ६५ योग्य इंजीनियरों के लिए की गई थी। वह वर्तमान समय में ४७ इंजीनियरों को प्रशिक्षण देता है। इसका मतलब यह है कि उन स्नातकों के लिए सुविधाओं की कमी नहीं रहेगी जो औद्योगिक विकास में योग देना चाहेंगे जैसा कि पहले दल के योग्यता प्राप्त करने वाले लोगों की स्थितियों से पता चलता है। निजी उद्योगों में काम करने वालों के अतिरिक्त ये इंजीनियर सरकारी नौकरियों में भी लगे हुए हैं जैसे खानों या खान सम्बन्धी शोध में, सार्वजनिक कार्य विभाग में, विद्युत ऊर्जा के राष्ट्रीय केन्द्र में, राष्ट्रीय सिंचाई केन्द्र में, राजकीय रेलवे और राज्य तम्बाकू एकाधिकार में। इनमें से केवल ५ राबात में हैं और ३० अन्य विभिन्न प्रान्तों में नौकरी करते हैं।

पर्याप्त संख्या में तकनीकी कर्मीवर्ग के प्रशिक्षण में बड़ी गंभीर समस्या उत्पन्न हो जाती है। ये समस्या शिक्षा के सभी स्तरों के विकास और गुण से निकट रूप से सम्बन्धित है। निरक्षर वयस्कों या उन तरुणों के बीच जिनको पर्याप्त शिक्षा नहीं मिली कितने सम्भावी इंजीनियर हैं?

यूनैस्को कुछ समस्याओं के समाधान के लिए मोरक्को की सहायता कर रही है। यूनैस्को विशेषज्ञ शिक्षा आयोजना, उच्चतर अध्यापक प्रशिक्षण कालेज में, माध्यमिक स्कूल शिक्षकों का प्रशिक्षण, विज्ञान के लिए राष्ट्रीय नीति के स्पष्टीकरण और शोध के संगठन तथा ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता शिक्षण आन्दोलनों के विकास की प्रयोजनाओं से प्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध हैं। जैसा कि महानिदेशक ने अभी हाल में कहा "व्यवहार में एक ओर नैतिक और नागरिक आवश्यकताओं तथा दूसरी ओर आर्थिक और राजनैतिक अवस्थाओं के बीच चुनाव करना असम्भव होता है। उस जनसामान्य के बीच जो निःशुल्क और सार्वजनिक शिक्षा की मांग करता है और उन विशेषज्ञों के बीच जो माध्यमिक अथवा विशेष रूप से तकनीकी शिक्षण के चुनाव युक्त विकास की सिफारिश करते हैं चुनाव करना कठिन होता है। और उनको भुला देना निर्णय की एक बहुत गंभीर भूल होगी। विशिष्ट तकनीकी प्रशिक्षण किसी भी स्तर पर हो इसका अर्थ अपेक्षाकृत अधिक सामान्य तकनीकी शिक्षा होता है और यह तकनीकी शिक्षा स्वयं सामान्य वैज्ञानिक शिक्षा पर आधारित है जो सामान्य शिक्षा पर आधारित हुआ करती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूनैस्को और श्रमिकों के विनिमय

मौनिक हेकर

बीस वर्ष पहले अपनी स्थापना के समय से ही यूनैस्को दूसरे राष्ट्रों या देशों, स्वयं अपने देश और अपने कार्य के अच्छे ज्ञान प्राप्त करने के लिए व्यक्तियों को सहायता देने के साधन के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय विनिमयों को प्रोत्साहन और सुविधा देती आ रही है।

इस क्षेत्र में यूनैस्को की कार्रवाइयां दो प्रकार की हैं—अभिलेखन सम्बन्धी और कार्यचालन सम्बन्धी। पहले यूनैस्को प्रतिवर्ष ऐसी पुस्तिकाएं प्रकाशित करता है जिसमें प्रत्येक देश में अध्ययन क्रमों अथवा शिक्षा सम्बन्धी छुट्टियों के विदेशी दौरों के बाद के लिए सुलभ अवसरों की सूची दी रहती है, दूसरे यूनैस्को का विनिमयों का अपना कार्यक्रम भी है और वह अध्ययन या प्रशिक्षण के लिए शिक्षा वृत्तियां देती है तथा यात्रा अनुदान भी देती है।

इस दूसरे कार्यक्रम के अन्तर्गत बहुत-सी शिक्षावृत्तियों का उद्देश्य तो यह होता है कि श्रमिक विदेशों में शिक्षा सम्बन्धी या सांस्कृतिक दौरों पर जा सकें। ये कार्यक्रम १९४९ में यूनैस्को महासम्मेलन के चौथे अधिवेशन में एक संस्ताव के द्वारा प्रारंभ किया गया था। और वास्तव में इसका कार्यचालन दो प्रारम्भिक अध्ययन बैठकों के बाद १९५२ से हुआ। प्राथमिक स्तरों पर यह श्रमिकों के समूहों का विभिन्न योरपीय देशों में अध्ययन दौरों तक सीमित था। १९५२ और १९६४ के बीच ६५७ दल अर्थात् ११४९० व्यक्ति दूसरे देशों में यात्रा कर सके। वहां वे लोग अपने ही समान काम करने वालों से मिले और उनके दैनिक जीवन के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की।

यह दल बड़े-बड़े अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संगठनों के योरपीय खण्डों द्वारा चुने जाते हैं जो कि यूनैस्को के साथ समायोजन रखते हैं। इन दलों में ऐसे लोग होते हैं जो कि एक विशेष विषय में रुचि रखते हों या एक ही प्रकार का काम कर रहे हों। यूनैस्को की छात्रवृत्ति से यात्रा का खर्च निकल आता है। दूसरे खर्च या तो भाग लेने वाले स्वयं या कार्यकर्त्ताओं के संगठन उठाते हैं। कार्यकर्त्ताओं के संगठनों ने इन कार्यक्रमों का प्रबन्ध करने में सक्रिय भाग लिया। इस प्रकार २५ यूरपीय देशों के बीच १० से १५ दिनों तक के विनिमय किये गये।

इन अध्ययन दौरों ने अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना में योग दिया और व्यक्तिगत तथा सामूहिक कार्रवाइयों और रुचियों को प्रोत्साहन दिया। यूनैस्को ने इतनी सफलता को स्वीकार किया और दूसरे संगठनों तथा इन-इन देशों की सरकारों ने भी १९५५ में प्रारंभ करके यह कार्यक्रम प्रयोगात्मक आधार पर एशिया, लेटिन अमरीका और अफ्रीका के देशों में भी विस्तारित किया गया। ये सभी विनिमय एक ही प्रदेश के बीच में हुए। इन प्रदेशों में समूह छोटे थे (योरप में १५ का औसत था जबकि यहां ३ से ५ व्यक्तियों का)। परन्तु यहां दौरे की अवधि लम्बी थी (एक महीना)। १९५५ और १९६४ के बीच इस प्रकार की शिक्षा वृत्तियां १९६ को दी गई जिनमें ४२ देशों के ५४६ व्यक्ति थे (अफ्रीका के ३७, एशिया के २०४ और लेटिन अमरीका के ३०५)।

१९५५ से १९५८ तक एक दूसरे प्रकार का कार्यक्रम भी प्रारम्भ किया गया। इसके अन्तर्गत योरपीय कार्यकर्त्ताओं को व्यक्तिगत शिक्षावृत्तियां दी गयीं जिससे वे दूसरे देश में अपना ही कार्य एक वर्ष की अवधि तक करते रह सकें। व्यक्ति को अपनी तनख्वाह मिलती है और यूनैस्को यात्रा का खर्च देते हैं। १० विभिन्न देशों के १११ कार्यकर्त्ता २१ प्रकार की नौकरियों में लगे हुए हैं। ये सब इस कार्यक्रम के लागू करने के तीन वर्षों की अवधि में विदेशों में जाकर काम कर सके। अब योरपीय श्रम बाजार का पुनःसंगठन हुआ और विदेशों में कार्य करने की परिस्थितियां बदल गयीं तो कार्यक्रम बन्द करना पड़ा।

इसके साथ ही १९५३ में अरब व्यापार संघों के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किये गये और १९५४ और १९६० में अफ्रीकी श्रमिकों के लिए।

विकासशील प्रदेशों में श्रमिकों की शिक्षा सम्बन्धी सुविधाओं में वृद्धि हुई है। उसके साथ इन प्रदेशों में शिक्षा संस्थाओं के लिए ऐसे शिक्षकों का सुलभ करना आवश्यक हो गया है जिनको यूनैस्को की कार्रवाइयों में कारगर रूप से समायोजन करने के लिए उपयुक्त अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण मिल चुका है। इसलिए यह निश्चय किया गया कि प्रयोगात्मक आधार पर एक अफ्रीका, एशिया और लेटिन अमरीका में श्रमिकों के अध्ययन के लिए अलग रक्खी गयी निधियों के कुछ भाग का उपयोग व्यापार संघों या सहकारिता में वयस्क शिक्षा कार्यक्रमों के नेताओं के लिए व्यक्तिगत शिक्षावृत्तियों के लिए उपयोग कर लिया जाय। उसी समय इस तथ्य पर भी अधिक जोर दिया जा रहा है कि दो देशों के बीच के किसी भी विनिमय में प्रत्येक को कुछ सीखना और कुछ सिखाना होता है।

कार्यक्रम १९६३ और १९६४ के बीच विस्तारित कर दिया गया। जिससे कि इसका लाभ अफ्रीका, लेटिन अमरीका और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एशिया में श्रमिकों के कालेजों में शिक्षण कर्मीवर्ग और श्रमिकों के संगठनों द्वारा नियमित रूप से नियुक्त अध्यापकों को भी लाभ पहुंचा सके। प्रत्येक शिक्षा वृत्ति लेने वाला अपने प्रदेश अथवा दूसरे में अध्ययन का देश चुन सकता है। उसको एक वयस्क शिक्षा संस्थान या श्रमिक विद्यालय में भेजा जाता है जहां वह अध्ययन भी करता है और अपने देश तथा अपने काम के बारे में वार्ताएं या भाषण देता है। इस प्रकार की शिक्षावृत्ति १० देशों से ११ व्यक्तियों को दी जा चुकी हैं। और ये अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय का एक नया और अधिक विस्तृत संकल्पना प्रस्तुत करती है।

महासम्मेलन ने अपने १३वें अधिवेशन में श्रमिकों के विनिमय सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्यक्रम पर विशेष ध्यान दिया। उस समय यह स्पष्ट था कि यूनैस्को को अपने प्रयत्न मूल शिक्षा के विस्तारण में अधिक विशेष रूप से लगाने होंगे जिससे कि उनके आर्थिक और सामाजिक विकास में योग दे सकें।

इसलिए यह निश्चय किया गया कि अफ्रीका, एशिया और लेटिन अमरीका में वयस्क शिक्षा जानकारों के लिए और योरपीय श्रमिकों के लिए ये कार्यक्रम बने रहें। तथा इन कार्यक्रमों में साक्षरता शिक्षण समस्याओं का अध्ययन और समाज आर्थिक स्तर को ऊंचा उठाना सम्भव हो सके।

श्रमिक विनिमय कार्यक्रमों के विशेषज्ञों की बैठक मैरीनबार्ग (डेनमार्क) में २० से २५ मई तक हुई और उससे यूनैस्को के कार्यक्रम में अगले ६ वर्षों तक के लिए इस सम्बन्ध में सिफारिशें प्रस्तुत की गयीं। इन सिफारिशों का उद्देश्य यह था कि सदस्य देशों के समायोजन में श्रमिकों का विनिमय बढ़ाया जाय (सुझाव यह था कि यह विनिमय द्विमुखी और बहुमुखी सांस्कृतिक समझौतों में सम्मिलित किए जाएं) और व्यवसायिक संगठनों के साथ ही इस सम्बन्ध में सहयोग किया गया।

विशेषज्ञों ने यह सिफारिश की थी कि एक ही देश के या विभिन्न देश के श्रमिकों के समूह के लिए अन्तप्रादेशिका अध्ययन दौरों का कार्यक्रम भी प्रारंभ किया जाय। इस कार्यक्रम के लिए श्रमिकों का चुनाव उनके तकनीकी या शिक्षा सम्बन्धी सहायता के प्रति योगदान के अनुसार हो सकेगा।

बारह देशों द्वारा विश्व की दो तिहाई पुस्तकों का प्रकाशन

पुस्तक—कम से कम ४६ पृष्ठ

नवम्बर १९६४ तक पुस्तक के आकार के सम्बन्ध में कोई भी एक अन्तर्राष्ट्रीय परिभाषा नहीं थी। विभिन्न देशों में पुस्तक की विभिन्न परिभाषाओं के कारण प्रकाशन आंकड़ों को समझने और तैयार करने का काम बड़ा जटिल बन जाता था। उदाहरण के लिए इटली में पुस्तक में कम से कम सौ पृष्ठ आवश्यक हैं। भारत में आकार के सम्बन्ध में कोई नियम ही नहीं। नवम्बर १९६४ में यूनेस्को महासम्मेलन में सर्वसम्मति से "पुस्तक और पत्रिकाओं के प्रकाशन सम्बन्धी आंकड़ों के अन्तर्राष्ट्रीय मानकीकरण के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव स्वीकार किया। इसमें पुस्तक की परिभाषा इस प्रकार की गई है "पुस्तक कम से कम ४६ पृष्ठों की, जिसमें मुख्य पृष्ठ शामिल नहीं है, अवधि रहित छपा हुआ प्रकाशन है।" इसी संस्ताव के अन्तर्गत पैम्फलेट की परिभाषा इस प्रकार दी गई है। कम से कम ५ और अधिक से अधिक ४८ पृष्ठों का एक अवधि रहित प्रकाशन इसके साथ ही इसमें प्रथम संस्करण, पुनः संस्करण, अनुवाद और शीर्षक की परिभाषाएं भी दी गई हैं।

प्रकाशक का सौभाग्य

एक अकेला अत्यधिक बिकने वाला प्रकाशन जिसकी हजारों हजार प्रतियां निकलती हैं यदि बुद्धिमानी से उपयोग किया गया तो किसी भी प्रकाशन-गृह का खर्चा कई वर्षों तक चला सकता है और असावधान प्रवन्ध, निर्णय की भूलों और व्यापारिक त्रुटियां होने पर भी उसी पुस्तक के आधार पर प्रकाशन-गृह बहुत दिनों तक चल सकता है।

साहित्य और भाषाएं

बारह साहित्यिक भाषाएं आज ५० मिलियन लोगों द्वारा बोली जाती हैं। बोलने वालों की संख्या के क्रम इस प्रकार हैं: चीनी, अंग्रेजी, रूसी, हिन्दी, स्पेनी, जर्मनी, जापानी, बंगाली, अरबी, फ्रांसीसी, पुर्तगाली और इटाली। अंग्रेजी भाषा के क्षेत्र के अन्तर्गत दो महान अर्थशक्तियां—संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन, और कामनवेल्थ के देश आते हैं। अंग्रेजी के समान ही स्पेनी बोलने वाला समूह भी दूर-दूर तक फैला हुआ है। लेकिन स्पेनी बोलने वाले राष्ट्र आर्थिक दृष्टि से कम विक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सित हैं। फ्रांसीसी समूह की शाखाएं भी समुद्र पार चली गई हैं (कनाडा, हैती, वेस्ट इंडीज और अफ्रीका) लेकिन इसकी संख्या सम्बन्धी महत्व फ्रांस, स्वीट्ज़रलैण्ड और बेल्जियम के कारण है।

विश्व पुस्तक प्रकाशन,

१९६० और १९६३ के बीच कुल वार्षिक विश्व प्रकाशन इस प्रकार हुए : ३६००००, ३७५०००, ३०५००० और ४००००० इसमें अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मनी और स्पेनी प्रकाशन १९५२ में सब प्रकाशनों को ३४ प्रतिशत थे और १९६२ में ३६ प्रतिशत। अंग्रेजी भाषा क्षेत्र में पहले ब्रिटेन में सबसे अधिक पुस्तकें निकलती थीं परन्तु अब संयुक्त राज्य अमेरिका में निकलने लगी हैं। संयुक्त राज्य अमरिका में पुस्तकों की इस अचानक वृद्धि का कारण अजिल्द पुस्तकों का बहुत अधिक संख्या में प्रकाशन है। १९६० में ही संयुक्त राज्य अमरीका में एक मिलियम अजिल्द पुस्तकें प्रतिदिन बिकती थीं। १९६२ में समाजवादी देशों में (चीन के मुख्य प्रदेश अतिरिक्त) उतनी पुस्तको का प्रकाशन होता था जितना अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मनी और स्पेनी भाषा क्षेत्रों में मिलाकर होता है। यह कुल विश्व प्रकाशन का ३६ प्रतिशत था।

बड़े प्रकाशन,

६ देशों में प्रतिवर्ष तीस हजार से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। उनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं : रूस, चीन, जर्मनीं, जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका। ६ अन्य देश फ्रांस, भारत, स्पेन, इटली, नीदरलैण्ड और चेकोस्लोवाकिया प्रतिवर्ष दस हजार पुस्तकें प्रकाशित करते हैं। इसका मतलब यह है कि ये बारह देश विश्व की पुस्तकों का दो-तिहाई भाग प्रकाशित करते हैं। रूस में प्रकाशित बहुत-सी पुस्तकों का प्रकाशन कई भाषाओं में होता है क्योंकि रूस में जो ८०००० पुस्तकें प्रतिवर्ष प्रकाशित होती हैं उनमें बहुत-सी रूसी की नहीं हैं वरन् रूस में प्रयुक्त होने वाली ६१ अन्य भाषाओं और ३२ विदेशी भाषाओं की भी हैं। परन्तु यदि केवल रूसी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें ही गिनी जाएं तब भी रूस में विश्व भर में सबसे अधिक पुस्तकें लगभग तीस हजार प्रतिवर्ष प्रकाशित होती हैं।

पुस्तकों की भिन्न परिभाषाएं,

भारत एक प्रमुख पुस्तक प्रकाशक इसलिए गिना जाता है कि वहां छोटे पैम्फलेटों को भी पुस्तक ही माना जाता है। वास्तव में इसे विश्व प्रकाशन में इससे नीचा स्थान मिलना चाहिए। इटली में यदि पुस्तकों की परिभाषा इतनी कड़ी न होती तो वह प्रकाशन की दृष्टि से फ्रांस के समान ही होता। यही बात चेकोस्लोवाकिया के सम्बन्ध में भी है। चीन में पुस्तकों के वर्गीकरण के सम्बन्ध में कोई सूचना प्राप्त नहीं।

कागज की बढ़ती हुई आवश्यकता,

१९५० में अमरीका के अंग्रेजी भाषी देश विश्व में प्राप्त छपाई योग्य कागज का आधे से अधिक उपयोग में लाते थे। १९६० तक यह उपयोग ४३·२ प्रतिशत हो गया था। इसी अवधि में योरप और लैटिन अमरीका में वही स्तर रहा जबकि पैस्पीक प्रदेश विशेष रूप से आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड में कुछ कुछ प्रगति हुई। अफ्रीकी ऐशियाई देशों द्वारा अधिक महत्वपूर्ण प्रगति हुई। अफ्रीका में २४२·५ प्रतिशत वृद्धि हुई और एशिया में ५१२·३ प्रतिशत। एशिया में यह प्रगति वार्षिक दृष्टि से विकसित देशों जैसे जापान और चीन तक ही सीमित नहीं रही वरन् समूचे क्षेत्र में फैल गई और बर्मा, कम्बोडिया, इराक और ईज़ाइल में छपाई और लिखने के कागज का उपयोग दस गुना बढ़ गया। सीरिया में बहुत अधिक वृद्धि हुई। १९५० मे उपयोग ·०१ प्रति व्यक्ति। १९६० में, ·०३ किलोग्राम हो गया। इसी प्रकार अफ्रीका में भी प्रगति हो रही है। नवस्वतन्त्र देशो में कागज का उपयोग १९५० में ६ हजार टन था और १९६० में ६० हजार टन हो गया।

विरल पुस्तक : सर्वप्रिय पुस्तक,

सर्वप्रिय पुस्तकें बहुत कम ही होती हैं। प्रकाशन की दृष्टि से सफल पुस्तकों में से केवल दो या तीन प्रतिशत पुस्तकों को सर्वप्रिय कहा जा सकता है। सर्वप्रिय पुस्तकों का निश्चय बिकी हुई संख्या से नहीं किया जाता वरन् बिक्री के प्रारूप के प्रकार से किया जाता है। कोई भी पुस्तक ५० हजार प्रतियां बिकने पर भी उतनी ही सरलता से सर्वप्रिय कही जा सकती है जितनी ३० लाख प्रतियां बिकने वाली पुस्तक। बहुत कम पुस्तकों का जीवन लम्बा होता है। सौ प्रकाशित पुस्तकों में से केवल दस एक वर्ष बाद बिकती हैं और बीस वर्ष बाद एक भी बड़ी कठिनाई से बिकती है।

अनुवाद परीक्षण

सबसे पहले पुस्तकों का परीक्षण एक विशेष साहित्यिक या भाषा सम्बन्धी क्षेत्र या विचार-क्षेत्र अथवा राज्य में किया जाता है। यदि पुस्तक इसमें असफल रहती है तो उसके अनुवाद का कोई प्रश्न नहीं उठता, यद्यपि कई बार ऐसा हो सकता है दूसरे देशों के लोगों को वह पसन्द आये।

पुस्तकें और विश्व व्यापार

पुस्तक व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में एक अपेक्षाकृत गौण स्थान रखता है। विश्व में पुस्तकों का आयात करने वाले प्रमुख देश हैं : ब्रिटेन, नीदरलैण्ड, संयुक्त राज्य अमरीका, फ्रांस, स्वीट्ज़रलैण्ड और जर्मन संघ गणराज्य। इनमें से किसी देश में भी पुस्तकों का निर्यात समूचे राष्ट्रीय निर्यात के एक प्रतिशत से अधिक नहीं होता। परन्तु अब पुस्तकों का व्यापार निरन्तर बढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है। मूल्य की अपेक्षा तौल में तो पुस्तकों का निर्यात पिछले दस वर्षों में अधिकतर देशों में दूना हो गया है।

महंगा परिवहन

१९५६ में पेरिस में प्रकाशित "ज्ञान में व्यापारिक बाधाएं" में यूनैस्को ने ९२ देशों में विभिन्न कानूनों की चर्चा की थी। विश्व डाक संघ ने अपने सदस्य देशों से यह कहा है कि पुस्तकों के लिए डाक दरें कम कर दें और चुंगी तथा प्रसासनिक औपचारिकताओं को सरल बना दें। इस सेम्बन्ध में १९५२ से अब तक काफी प्रगति हो चुकी है और लगभग ५० राज्यों ने विश्व विश्व डाक संघ की सिफारिसों के अनुसार काम किया है। १९५३ से अन्तराष्ट्रीय वायु परिवहन संस्था की वायु कम्पनियां पत्रिकाओं और पुस्तक सूचियों पर जो शुल्क लेते हैं वही पुस्तकों पर लेते हैं।

परन्तु अब भी पुस्तकों का परिवाहन महंगा है। उन देशों में भी जहां पुस्तकों को छपी हुई सामग्री के रूप में स्वीकार किया जाता है। सामान्य आकार की पुस्तकों को भेजने का खर्च संयुक्त राज्य के तीन सेटों के बराबर है। यह राशि एक महंगी पुस्तक के लिए बहुत कम प्रतीत हो सकती है लेकिन जब बहुत अधिक पुस्तकों को भेजना होता है तो इसका प्रभाव उनके दामों पर काफी पड़ता हैं।

प्रमुख निर्यातक

रूस की निर्यातित पुस्तकों का ९/१० भाग समाजवादी देशों में जाता है। संयुक्त राज्य के निर्यातों में से आधा अंग्रेज़ी भाषा देशों में जाता है। समाजवादी देशों में जाने वाली पुस्तकों के अतिरिक्त रूसी निर्यात इस प्रकार है: पश्चिमी योरप ४१ प्रतिशत, अंग्रेज़ी भाषी अमरीका ३१ प्रतिशत, दूर पूर्व १६ प्रतिश, लैटिन अमरीका ६ प्रतिशत, निकट पूर्व ४ प्रतिशत, अफ्रीका ३ प्रतिशत, अन्य ७ प्रतिशत। अंग्रेज़ी भाषा क्षेत्रों के अतिरिक्त संयुक्त राज्य अमरीका के पुस्तक प्रकाशन इस प्रकार है: दूर पूर्व ३३ प्रतिशत लैटिन अमरीका २७ प्रतिशत, योरप २५ प्रतिशत, निकट पूर्व ८ प्रतिशत, अफ्रीका ४ प्रतिशत, अन्य ८ प्रतिशत।

इन महान वितरण सरणियों का महत्व प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। उनका एक प्रमुख लाभ यह है कि उनके द्वारा विकासशील देशों में कार्य संचालन सम्बन्धी पुस्तकें पहुंच जाती हैं। लगभग प्रत्येक विकासशील देश में जिस प्रकार की तकनीकी पुस्तक आयात की जातीं हैं भिन्न-भिन्न कारणों की वैसी पुस्तकें प्रकाशित नहीं हो पा रही हैं।

परिवर्तनों का दशक

विश्व पुस्तक प्रकाशन १९५२ और १९६२ के बीच ४० प्रतिशत बढ़ गया परन्तु अनेकों देशों में कम ही हो गया। बेल्जीयम और इटली जैसे देशों में प्रकाशन कम ही हुआ कुछ देशों में बहुत प्रगति हुई। चीन प्रमुख क्षेत्र का प्रकाशन ६ वर्षो में दस गुना बढ़ गया। संयुक्त राज्य का प्रकाशन ८५ प्रतिशत बढ़ गया और अब जापान की भांति उसका भी विश्व में चौथा स्थान है। दस वर्ष पूर्व संयुक्त राज्य अमरीका का स्थान छठा था। अंग्रेज़ी भाषी अमरीका की नयी प्रकाशन स्थिति कनाडा के प्रकाशन ने भी निश्चित होती है। कनाडा में दस वर्षों में ६८४ पुस्तकों से ३६०० पुस्तकों का प्रकाशन होने लगा।

पुस्तकों में बाधा

पुस्तकों के परिवहन में एक बाधा विश्व की भाषा विविधिता है। विश्व की जनसंख्या के तीन-चौथाई भाग में १२ प्रमुख भाषाएं बोली जाती हैं। चीनी: २५ प्रतिशत, अंग्रेज़ी: ११ प्रतिशत, अंग्रेज: ११ प्रतिशत, रूसी: ८.३ प्रतिशत, हिन्दी: ६.२५ प्रतिशत, स्पेनी: ६.२५ प्रतिशत, जर्मन: ३.७५ प्रतिशत, जापानी: ३.७५ प्रतिशत, बंगाली ३ प्रतिशत, अरबी: २.७ प्रतिशत, फ्रांसीसी: २.७ प्रतिशत, पुर्तगाली: २.५ प्रतिशत, और इटली: २.१ प्रतिशत। लिखित भाषाओं की स्थिति भिन्न है। केवल ८ भाषाओं का प्रयोग करके विश्व के तीन-चौथाई लोगों से सम्बन्ध स्थापित करना सम्भव है, अंग्रेज़ी: १८.१ प्रतिशत, चीनी: १६.६ प्रतिशत, रूसी: १५.९ प्रतिशत, स्पेनी: ५.२ प्रतिशत, जर्मन: ५ प्रतिशत, जापानी: ५ प्रतिशत, फ्रांसीसी: ३.२ प्रतिशत, और इटली: २.४ प्रतिशत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रकाशन की कठिन स्थिति

ओमप्रकाश

आठ-सौ मिलियन लोग अथवा विश्व की जनसंख्या एक-चौथाई भाग दक्षिण पूर्व एशिया में रहता है। फिर भी १९६२ में सम्पूर्ण विश्व में प्रकाशित ४०००० पुस्तकों में से केवल २०००० या १।२०वां भाग इस क्षेत्र में प्रकाशित हुआ।

यह स्पष्ट है दक्षिण-पूर्व एशिया में पुस्तकों का प्रकाशन अविकासित स्थिति में है। विश्व की पुस्तकों का दो-तिहाई भाग जिन बारह देशों द्वारा प्रकाशित होता है उनमें से केवल एक देश भारत दक्षिण-पूर्व एशिया में है। इस प्रदेश के दूसरे देशों में पुस्तक प्रकाशन अत्यधिक सीमित है।

अनुवादों का प्रकाशन इसी प्रकार सीमित है। १९६२ में विश्व भर में कुल ३२७८४ अनुवाद प्रकाशित हुए। उनमें से १४५५ या कुल का ४-४ प्रतिशत दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रकाशित हुए। अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक व्यापार में दक्षिण-पूर्व एशिया का स्थान उसके प्रकाशन उद्योग की शिशु अवस्था सूचित करता है। यद्यपि इण्डोनेशिया, भारत और फिलीपाइन से नीदरलैण्ड, संयुक्त राज्य अमरीका और ब्रिटेन को पुस्तकों का निर्यात किया जाता है फिर भी सब मिलाकर अन्य स्थानों की अपेक्षा कुछ इस प्रदेश में पुस्तकों का निर्यात बिलकुल कम है। इसके विपरीत पुस्तकों, पत्रिकाओं व दूसरी छपी हुई सामग्री का आयात देश के कुल आयातों का लगभग एक प्रतिशत है।

दक्षिण-पूर्व एशिया में पुस्तकों के प्रकाशन की यह अल्प विकसित स्थिति कई विशेषक तत्वों के कारण है। इन तत्वों में कागज और उपस्करों की कमी से लेकर जो कि प्रत्यक्ष रूप से पुस्तक के विक्रय को सीमित कर देती है, खरीदने की निम्नशक्ति और परिवहन की बहुत कम सुविधाएं होती हैं।

पठन सामग्रियों के अधिक विस्तृत वितरण में सबसे बड़ी एक बाधा इस प्रदेश में निरक्षरता का बड़ा औसत है। विभिन्न देशों में निरक्षरता दरें इस प्रकार हैं:

अफगानिस्तान और नैपाल : ९५ से ९९ प्रतिशत, ईरान : ८५ से ८९ प्रतिशत, इण्डोनेशिया, लाओस, पाकिस्तान और वियतनाम गणराज्य : ८० से ८४ प्रतिशत, भारत : ७० से ७४ प्रतिशत, कम्बोडिया : ६५ से ६९ प्रतिशत, मलएशिया : ५० से ५४ प्रतिशत, बर्मा : ४० से ४४ प्रतिशत, श्रीलंका और थाइलैण्ड : ३० से ३५ प्रतिशत, फिलीपाइन : २५ से ३० प्रतिशत।

कम आमदनी पठन-आदतों की वृद्धि में एक बहुत बड़ी बाधा है। यद्यपि सस्ती अजिल्द पुस्तकों के प्रकाशन से पुस्तकों का विक्रय बढ़ सकता है फिर भी प्रति व्यक्ति आमदनी इतनी सीमित है कि सस्ती से सस्ती पुस्तकें खरीदना भी सम्भव नहीं रहता। केवल श्रीलंका, ईरान, मलेशिया और फिलीपाइन में १०० से ३०० डालर प्रतिवर्ष आमदनी है। इस प्रदेश के सभी अन्य देशों में प्रतिव्यक्ति आमदनी १०० डालर से कम है।

पठन सामग्री के बढ़े हुए उत्पादन में तीसरी प्रमुख बाधा उस प्रदेश के व्यापार की स्थिति है। दक्षिण-पूर्व एशिया के सभी देशों में निर्यात खर्च से आयात की आमदनी बहुत कम है और इसीलिए उन देशों में राष्ट्रीय विकास प्रयत्नों के लिए आवश्यक सामग्रियों और उपस्कर का आयात भी कठिन हो रहा है।

इन आवश्यकताओं में छपाई के कागज की आवश्यकता बहुत बढ़ी-चढ़ी है।

इस प्रदेश के तीन देशों में छपाई के कागज का उत्पादन होता है—भारत, पाकिस्तान और कम्बोडिया। भारत का उत्पादन उसकी अपनी ही आवश्यकता का केवल २० प्रतिशत पूरा करता है। केवल पाकिस्तान के पास निर्यात करने के लिए अतिरिक्त कागज है (१९६३ में १५ हजार टन)। भारत में अखबारी कागज और लेखन के कागज के अतिरिक्त दूसरे छपाई के कागजों का सबसे अधिक उत्पादन होता है परन्तु इनके भी उपयोग के कारण निर्यात के लिए कुछ नहीं रह जाता। इस प्रदेश में कोई भी देश इस प्रकार के कागज का निर्यात नहीं करता।

इस प्रकार दक्षिण-पूर्व एशिया में कागज बनाने के विकास की दुखद स्थिति के विपरीत मांग में बहुत अधिक वृद्धि अपेक्षित है। दूर पूर्व में जनसंख्या की वृद्धि और प्रतिव्यक्ति आमदनी के आधार पर अखबारी कागज के लिए भी उसकी मांग (चीन के प्रमुख क्षेत्र के अतिरिक्त) १९५५ में ६७२,००० टन की अपेक्षा १९७५ में २,९२०,००० टन हो जायेगी।

निरक्षरता के कम होने के साथ-साथ छपी हुई सामग्री की मांग भी बहुत बढ जाती है। जिन देशों में निरक्षरता बहुत अधिक है वहां उसके एक प्रतिशत कम होने पर भी छपाई कागज की मांग पर उतना ही प्रभाव पड़ता है जितना खरीदने की शक्ति के पांच प्रतिशत बढ़ने पर।

इसके साथ-ही इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि इन दामों की किताबों की मांग अभी तक पूरी नहीं हो सकी है जिससे एशिया के लोग उन्हें खरीद सकें। साक्षरता के निम्न स्तर और खरीदने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कम शक्ति के साथ-साथ पठन की आदतों की कमी के कारण भी पठन सामग्रियों का उत्पादन और वितरण सीमित रह जाता है। सामन्य पुस्तकों अथवा बालकों के लिए विशेष उपयोगी पुस्तकों के प्रकाशक शिक्षा सम्बन्धी या पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशकों से बहुत कम हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी कई देश आयात पर या विदेशी प्रकाशन गृहों की स्थानीय शाखाओं पर निर्भर रहते हैं। कई एशियाई देशों में पहले की योरपीय सत्ताओं द्वारा चलाई गई योरपीय भाषाएं उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती हैं।

श्रीलंका, बर्मा, पाकिस्तान और भारत में पचास वर्ष से अधिक पुराने सामान्य प्रकाशक हैं। अपने प्राथमिक वर्षों में ये सभी प्रकाशक धार्मिक पुस्तकें प्रकाशित किया करते थे। उनमें से कुछ तो पुराण कथाओं और ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तकें भी प्रकाशित करते थे।

इस प्रदेश में नियमित पुस्तक प्रकाशकों की संख्या उपलब्ध नहीं है और अन्दाज लगाना भी कठिन है। कई देशों में प्रकाशकों या पुस्तक विक्रेताओं के गिनने का कोई साधन नहीं है।

दक्षिण-पूर्व एशिया के अधिकतर देशों में प्रकाशन अपेक्षाकृत छोटा और अलाभकारी व्यापारी है और इसमें पूंजी लगाने के लिए लोग आकर्षित नहीं होते। सामान्य प्रकाशन का क्षेत्र भी अत्यधिक सीमित है। अभी हाल में जब से शिक्षा में राष्ट्रीय भाषाओं का प्रयोग बढ़ रहा है शिक्षा सम्बन्धी प्रकाशन में कार्रवाइयों और पूंजी निवेशों में वृद्धि हुई है। परन्तु अब भी इस प्रदेश में उस प्रकार के बड़े-बड़े और सुसंगठित प्रकाशन-गृह नहीं हैं जैसे कि पश्चिमी में हैं। जब तक सामान्य पुस्तकों की मांग कम रहेगी तब तक प्रकाशन के लिए पूंजी की कमी बराबर बनी रहेगी।

और तब तक प्रकाशकों को अपने सीमित ससाधनों तक निर्भर रहना पड़ेगा। किसी भी दक्षिण-पूर्व एशियाई देश में बैंक छपी हुई सामग्री को प्रतिभू मानकर धन उधार नहीं देते। दूसरे स्रोतों से भी प्रकाशकों को इतनी सरलता से ऋण नहीं प्राप्त होती जितनी दूसरे व्यापार से। इसका परिणाम यह होता है कि उनकी कार्रवाइयां अधूरी रह जाती है। इस प्रदेश के अनेकों देशों में छोटे-छोटे उद्योगों को सरकारी ऋण मिलते हैं जिसमें प्रकाशन ऋण भी सम्मिलित हैं। परन्तु इस प्रकार की सुविधाएं प्रकाशकों को प्राप्त नहीं हैं।

प्रकाशन छोटे-छोटे एकांशों द्वारा किया जाता है जो या तो व्यक्ति के होते हैं या साझे में होते हैं। राष्ट्रीय आधार पर ज्वाइंट स्टाक कम्पनियों की संख्या बड़ी सीमित है।

कुछ थोड़ी-सी पुस्तकों का ही पुनः मुद्रण होता है अधिकतर प्रकाशनों का पहला संस्करण ही होता है। ऐसी बहुत कम पुस्तकें हैं सिवाय धार्मिक और पारंपरिक पुस्तकों के जिनको आधुनिक अर्थों में सर्वप्रिय कहा जा सके।

एक सामान्य पुस्तक की पहली छपाई के आर्डर सिंगापुर में पांच हजार प्रतियां, श्रीलंका में दो हजार प्रतियां, बर्मा में तीन हजार, इंडोनेशिया में पांच हजार से दस हजार, ईरान में एक हजार से दस हजार, पाकिस्तान में पांच हजार और भारत में एक हजार से तीन हजार होते हैं। बच्चों और नवसाक्षरों की पुस्तकों के पहले छपाई आर्डर सिंगापुर में दस हजार प्रतियां, श्रीलंका में पांच हजार, बर्मा में पांच हजार, इंडोनेशिया में पांच हजार से बीस हजार, ईरान में दो हजार, पाकिस्तान में ढाई हजार और भारत में दो हजार से दस हजार तक होते हैं।

शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकों के पहले छपाई आर्डर और सब पुस्तकों से अधिक होते हैं। सिंगापुर में बीस हजार, श्रीलंका में साढ़े सात हज़ार से पचास हज़ार, ईरान में बीस हज़ार से तीस हज़ार, और भारत में पांच हज़ार से लेकर एक लाख तक।

विश्वविद्यालय की पाठ्य पुस्तकें बर्मा में २०००, इंडोनेशिया में ३००० से ५००० तक और पाकिस्तान में २५०० से ५००० तक छापी जाती हैं।

बच्चों और नवसाक्षरों की पुस्तकों का औसत मूल्य भिन्न-भिन्न रहता है। परन्तु इन देशों में पुस्तक खरीदने की औसत क्षमता और इच्छा को देखते हुए दाम अधिक हैं। जब तक पुस्तकें अधिक सस्ती नहीं होंगी और अधिक संख्या में नहीं छापी जाएंगी तब तक दक्षिण-पूर्व एशिया में उनका विस्तृत उपयोग नहीं हो सकेगा।

बालकों और नवसाक्षरों की पुस्तकों का विषय लोक-कथाएं, कहानियां, धार्मिक और नैतिक शिक्षा, जीवनियां तथा यात्रा रहते है। अभी हाल में विज्ञान के विकासों के सम्बन्ध में ही पुस्तकों का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया है।

दक्षिण-पूर्व एशिया के सभी देशों में बालकों और नवसाक्षरों के लिए वैज्ञानिक पुस्तकों की विशेषकर राष्ट्रीय भाषाओं में अत्यधिक कमी है। छपाई की सुविधाओ के अभाव के कारण ऐसी पुस्तकों के अनुवाद प्रकाशित नहीं किये जाते और इस क्षेत्र में किए गए प्रयत्न बहुत सफल नहीं हो सके हैं।

दक्षिण-पूर्व एशिया में जन-साधारण के उपयोग के लिए पठन सामग्रियों के प्रकाशन में बहुत-सी बाधाएं उत्पन्न होती हैं। इनको छोटी-छोटी आर्थिक सहायता या क्रय के निश्चित आश्वासनों से ही दूर किया जा सकता है। यूनैस्को ने प्रदेश में पठन सामग्री के प्रकाशन को प्रोत्साहन देने से सम्बन्धित अपने कार्यक्रम के द्वारा कुछ एशियाई देशों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को बढ़ाने की दृष्टि से कुछ चुनी हुई पुस्तकों के प्रकाशन को आर्थिक सहायता दी है।

संयुक्त राज्य अमरीका के फ्रैंकलिन प्रकाशन ने पाकिस्तान के कुछ प्रकाशकों को आर्थिक सहायता दी है जिससे कि वे अनुवाद और वितरण का खर्च उठा सकें। फ्रैंकलिन प्रकाशन जिन पुस्तकों में सहायता देते है। उन पर कुछ प्रतिशत रॉयल्टी ले लेते हैं।

इस प्रदेश के देशों में पुस्तक की परिभाषा को लेकर सहमति नहीं है। श्रीलंका में पुस्तक को "कितने भी पृष्ठों के दो कवरों के बीच में स्थायी रूप में बंधी हुई" बतलाया जाता है। इसके अन्तर्गत पैम्फ़लेट, पुस्तिकाएं, पत्रिकाएं आदि सभी आ जाते हैं। इंडोनेशिया में "पुस्तक ८ पृष्टों या उससे अधिक की कोई भी कृति है। ईरान में पुस्तक को जिल्द बंधा हुआ या आयात करने वाले देश के द्वारा जिल्द में बाँधी जाने वाली कोई भी छपी हुई सामग्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माना जाता है। फिलीपाइन की परिभाषा है" कोई भी कृति कवरों के सहित या उससे रहित जिसमें सौ पृष्ठ हों।" परिभाषा की इस अनिश्चितता के कारण निरंतर जटिलताएं उत्पन्न होती हैं—विशेषरूप से पुस्तकों के आयात और निर्यात करने वाले देशों के लिए—परन्तु अब यूनैस्को ने पुस्तक की एक परिभाषा निश्चित कर दी है (४६ पृष्ठ) और इससे ये कठिनाइयां दूर हो जानी चाहिए।

दक्षिण-पूर्व एशिया में पुस्तकों का वितरण भी अच्छी तरह नहीं हो पाता। पुस्तकों की दुकानों के अतिरिक्त दूसरे स्थानों, छोटे-छोटे स्टालों, छोटे पुस्तक विक्रेता और समाचार-वितरकों का संगठन ठीक से नहीं है। उनके पास बैंक में रुपया नहीं होता और न ही अच्छी पुस्तकों की मांग को पूरी करने की क्षमता या इच्छा ही होती है। समाचार वितरक तब तक पुस्तकों में रुचि नहीं लेते जब तक वे अजिल्द और सस्ती न हों। नियमित रूप से अधिक पुस्तकें मंगाने में पूंजी लगाना केवल अच्छी पुस्तक की दूकानें ही कर सकती हैं और अधिकतर दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में उन दूकानों पर राष्ट्रीय भाषा में स्थानीय रूप से प्रकाशित पुस्तकों की अपेक्षा आयात की हुई पुस्तकें बिकती हैं। जो पुस्तक विक्रेता राष्ट्रीय भाषाओं की पुस्तकों को रखते हैं वे जल्दी बिकने वाली शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकें रखना पसन्द करते हैं। और इसी से सामान्य पुस्तकों के वितरण के सामने बड़ी बाधाएं आती हैं।

दक्षिण-पूर्व एशिया के सभी देशों में पुस्तक व्यापार में बाधक एक तत्व है—विस्तृत प्रतिद्वंदिता और उसके कारण उत्पन्न कीमतों में कमी। किसी भी पुस्तक पर जो दाम छपा रहता है उसका कोई अर्थ नहीं होता क्योंकि खरीदने वाला सदा ही छूट पाने के लिए मोल-भाव करता है। पुस्तकों की अधिक मांग न होने के कारण प्रकाशक या पुस्तक विक्रेता दाम में कमी करके भी पुस्तक को बेचना पसन्द करता है वैसे-का-वैसे रखे रहना नहीं। पुस्तक विक्रेता निरंतर प्रकाशक को अधिक छूट देने के लिए कहता रहता है जिससे कि जब वह खरीदने वाले को दाम में छूट दे भी उसके लिए थोड़ा-सा बच जाए। इसका परिणाम यह होता है कि पुस्तक विक्रेता पुस्तक के प्रकाशित मूल्य पर बहुत काफी छूट प्राप्त कर लेने पर भी खर्चा चलाने या लाभ प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं मिलता। और इसी से पुस्तक बेचने का व्यापार बड़ा ही अलाभकर व्यापार होता है उससे प्रकाशन उद्योग को वह समर्थन नहीं मिल पाता जो कि उससे अपेक्षित है।

अधिकतर दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में अनूदित पुस्तकों के प्रकाशन से बहुत कम आय होती है। इसलिए अनेकों पश्चिमी लेखक और प्रकाशक इस प्रदेश के प्रकाशकों को अनुवाद के अधिकार नहीं देना चाहते। अनूदित पुस्तकों के दाम मूल प्रकाशनों से बहुत कम होते हैं यद्यपि संस्करण बहुत छोटे होते हैं और उसके ऊपर अनुवाद का अतिरिक्त भार उठाना पड़ता है। इसके साथ-ही यदि एशियाई प्रकाशक रॉयल्टी देने में गड़बड़ी करें तो विदेशी प्रकाशक कुछ कर भी नहीं सकते। इसी से पश्चिमी प्रकाशक रॉयल्टी पर बहुत अधिक पेशगी की मांग करते हैं जिसको देना दक्षिण-पूर्व एशियाई प्रकाशक प्रकाशकों के लिए कठिन हो जाता है।

अधिकतर दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में पुस्तकों के आयात के लिए लाइसेंस प्राप्त करने होते हैं। ईरान और सिंगापुर इसका अपवाद है। पाकिस्तान में १५० रु० (३० डॉलर) की पुस्तकें लाइसेंस के बिना आयात की जा सकती हैं। भारत में विश्व विद्यालय और स्थापित पुस्तकालयों जैसे अव्यापारिक संस्थानों को भी पुस्तकें आयात करने के लिए लाइसेंस लेना पड़ता है। बर्मा में कठिन मुद्रा देशों से पुस्तकों के आयात पर अपेक्षाकृत कड़े प्रतिबन्ध हैं और इंडोनेशिया में विदेशी मुद्रा देने की स्थिति होने पर आयात करने वाले को हरेक पुस्तक के लिए सरकार से अनुमति लेनी होती है। प्रदेश के सभी भागों में आयात लाइसेंस प्राप्त करने की पद्धतियां बड़ी लम्बी और जटिल हैं।

दक्षिण-पूर्व एशियाई विकासशील देशों को अजिल्द क्रान्ति से बहुत लाभ हो सकता है। परन्तु अभी इस प्रदेश में अजिल्द पुस्तकों के प्रकाशन की सम्भावनाएं उत्साहजनक नहीं है। अजिल्द पुस्तकों का प्रकाशन करने वाले प्रकाशकों की संख्या बहुत कम है इन पुस्तकों की प्रतियां और स्वयं पुस्तकों की संख्या भी कम ही है

सिंगापुर में अभी ६ प्रकाशक अजिल्द पुस्तकें प्रकाशित करते हैं और पहला छपाई ऑर्डर ५००० प्रतियों का होता है। श्रीलंका में इन पुस्तकों का प्रकाशन नहीं होता। बर्मा में अब कई प्रकाशक अजिल्द पुस्तकें प्रकाशित करते हैं और पहला छपाई आर्डर ५००० प्रतियों का होता है। इंडोनेशिया में २ और ईरान में ४ प्रकाशक इस प्रकाशन में लगे हैं और पहले संस्करणों में १०००० प्रतियां होंगीं। पाकिस्तान में प्रकाशकों ने अजिल्द प्रकाशकों को गम्भीरता से लेना प्रारम्भ नहीं किया। एक या दो प्रकाशकों ने अपने को इस क्षेत्र में स्थापित करने का प्रयास किया है लेकिन पहले छपाई आर्डर ४००० प्रतियों से अधिक नहीं है। भारत में कई प्रकाशकों ने हिन्दी और दूसरी देशी भाषाओं में अजिल्द प्रकाशन सफलतापूर्वक प्रारम्भ किया है। यद्यपि अब पुस्तकों के न बिकने से इस व्यापार में शिथिलता आ रही है। राजभाषा हिन्दी के प्रकाशकों को अच्छे विक्रय परिणाम प्राप्त हुए हैं। पहले छपाई आर्डर ५००० से २५००० प्रतियों के रहे हैं।

पश्चिम के अधिकतर अजिल्द प्रकाशक इन पुस्तकों के लिए अखबारी कागज का प्रयोग करते हैं। दक्षिण-पूर्व एशिया में इस कागज की कमी होने के कारण अधिकारी अजिल्द पुस्तकों के लिए इसके प्रयोग का निषेध करते हैं। अच्छा अखबारी कागज जिसका प्रयोग पुस्तकों के लिए हो सकता हैं अधिकतर आयात किया जाता है और उसको विशेष अनुमति और आयात लाइसेंस के द्वारा बहुत कम मात्रा में प्राप्त किया जा सकता है। छपाई ऑर्डरों के कम होने के कारण ही दाम अधिक रखने पड़ते हैं। उदाहरण के लिए संयुक्त राज्य अमरीका की औसत क्रय-शक्ति की तुलना में भारत पाकिस्तान और इंडोनेशिया में चार आने से अधिक अजिल्द पुस्तक का दाम नहीं होना चाहिए। जबकि वास्तव में दाम एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपया होता है। अतः दक्षिण-पूर्व एशिया में अजिल्द पुस्तकों को कम खर्च वाली नहीं समझा जा सकता। वे ग्राहक को इसलिए सस्ती लगती हैं क्योंकि उन्हीं पुस्तकों के सजिल्द संस्करणों का दाम तीन रुपये तक होता है।

भाषाओं की विविधता एक दूसरी गंभीर समस्या है। श्रीलंका में दो भाषाएं हैं—सिंहली और तमिल जिसमें पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। इंडोनेशिया में प्रकाशन-उपयुक्त भाषाएं 'भासा इंडोनेशिया' और 'मलय' है। दोनों की लिपि एक ही हैं और उनमें स्पेलिंग के अन्तर के अलावा बिलकुल समानता है। इंडोनेशिया और मलेशिया की सरकारों ने राज्य स्तर पर स्पेलिंगों का मानकीकरण करने का प्रयास किया है। इंडोनेशिया की दूसरी भाषाएं जपानी, मदुरी और सुडानी है लेकिन उसमें पुस्तकों की बहुत कम मांग हैं। पाकिस्तान में उर्दू और बंगाली की पुस्तकों की आवश्यकता पड़ती है: जबकि भारत में पुस्तकों को इन १३ भाषाओं में प्रकाशित करना पड़ता है। हिन्दी, उर्दू, कश्मीरी, बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, उड़िया, असमिया, तमिल, तेलगू, मलयालम और कन्नड़। बर्मा में केवल बर्मी भाषा पुस्तकों के लिए आवश्यक है और ईरान में केवल फ़ारसी। कम्बोडिया, फिलीपाइन और लाओस में पुस्तकों का प्रकाशन हमेर, तगलोग और लाओसियन में हो सकता है।

श्रीलंका, पाकिस्तान, फिलीपाइन, भारत और मलएशिया में अंग्रेजी पुस्तकों का प्रयोग होता है। दक्षिण-पूर्व एशियाकी सभी लिपियां अरूपात्मक हैं और फारसी, पश्तो, काश्मीरी और उर्दू, के अतिरिक्त और सभी बाईं से दाहिनी की ओर छापी जाती हैं।

दक्षिण-पूर्व एशिया में बच्चों और नवसाक्षरों के लिए अच्छे नमूने की पुस्तकें विशेषकर वैज्ञानिक पुस्तकों के प्रकाशन में उत्पन्न होने वाली बाधाएं व्यक्तिगत प्रयत्न से दूर नहीं की जा सकती हैं। इस प्रदेश के अधिकतर प्रकाशक यह स्वीकार करते हैं कि जहां तक हो सकता है बच्चों और नवसाक्षरों के लिए पठन की सामग्री के अत्यधिक उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए सहयोगी प्रयत्न किए जाने चाहिए। इस प्रकार अधिक अच्छे प्रकाशन भी होंगे और खर्चा कम होगा। सहकारिता के आधार पर प्रकाशित पुस्तकों के लिए उपयुक्त विषय प्रारंभिक विज्ञान, सार्वजनिक स्वास्थ्य और एशियाई लोक साहित्य, दर्शन, वनस्पतियां और जीव-जन्तु हो सकते हैं। ऐसी पुस्तकें दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बीच उच्चतर सद्भावना का उपकरण भी बन सकती हैं।

पुस्तक विषयक कुछ यूनैस्को प्रकाशन

पुस्तकों की सुलभता, १९५२ ०·२० डॉ, १/-

सबके लिए पुस्तकें, आर० ई० बार्कर १९५६ ३ डॉ, १५/-

विकासशील देशों (एशिया अफ्रीका) के लिए पुस्तकें, ओमप्रकाश और विलफ्रॉर्ड एम० फ़ाइल, यूनैस्को १९६५ ·५० डॉ, ३/-

पुस्तक उत्पादन १९३७-१९५४ और अनुवाद १९५०.१९५४ यूनैस्को १९५७, ०·४० डॉ० २/-

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी—मूल्यांकन रिपोर्ट, फ्रैंक एम० गार्डनर, यूनैस्को, १९५७, १·५० डॉ० ७/६.

अफ्रीका में सार्वजनिक पुस्तकालयों का विकास : इबादान गोष्ठी, यूनैस्को, १९५४, १·७५ डॉ०, ९/६.

लैटिन अमरीका में सार्वजनिक पुस्तकालयों का विकास—साओ पालो सम्मेलन : यूनैस्को, १९५२, १ डा० ६/-

एशिया में प्रकाशित संदर्भ ग्रंथों का कोष : पी० के० गेद (इं० फ्रांग), यूनैस्को, १९५९, २ डा०, १०/६.

अन्तराष्ट्रीय सद्भावना के सहायक रूप में पाठ्य-पुस्तकों और शिक्षण सामग्रियों के सुधार संबंधी पुस्तिका, यूनैस्को, १९४९, ०.४५, २/-

प्रकाशनों के अंतर्राष्ट्रीय विनिमय संबंधी पुस्तिका, (चतुर्भाषीय अं०, फ्रां० रूसी स्पेनी), १९६४, ७·५०, ३८/६, सजिल्द ८·५० डॉ० ४२/-

इतिहास की पाठ्य पुस्तकें और अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना, जे० ए० लावरीज़, यूनैस्को १९५८, ·८५ डा०, ४/-

अनुवादों की अनुक्रमणी (जिल्द १६ सबसे हाल का अंक); २५ डॉ० १२५/- सजिल्द, २८ डॉ, १४० रु०

सार्वजनिक पुस्तकालय और उनकी उद्दृष्ट काम, आंद्रे मारुआ, यूनैस्को १९६३, मुफ्त।

पुस्तकों में क्रांति, रॉबर्ट एस्कार्पिट, इंगलैंड में तैयार हो रही है।

यूनैस्को कापीराइट बुलेटिन १९६४ से प्रतिवर्ष प्रकाशित (त्रिभाषीय अं०, फ्रां० स्पेन) ५ डॉ० २५/-

पुस्तकालयों के लिए यूनैस्को बुलेटिन, द्वैमासिक, वार्षिक चन्दा, ३·५० डॉ०, १८/- एक प्रति का ०·७५ डा०, ४/-

Published by the Director UNESCO South Asia Science Co-operation Office, N-1, Ring Road, New Delhi.
(Unesco Vritta Patrika, Vol. 11, No. 9, Sept. 1965) **Reproduction authorised:** Credit line should read UNESCO.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

UNESCO

यूनैस्को वृत्तपत्रिका

एन-१, रिंग रोड
नई देहली

यह समाचार पत्र संयुक्त राष्ट्रीय शैक्षणिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संस्था के विश्व भर के कार्यों का मासिक प्रतिवेदन है

मासिक बुलेटिन | अक्तूबर, १९६५ | अंक ११, संख्या १०

171268
गुरुकुल कांगड़ी

विषय सूची

विकास की नयी नीति
—रेने मह्यू २

तेहरान सम्मेलन ३

शान्ति के तत्व के रूप में सांस्कृतिक सहयोग ६

कराची प्रादेशिक केन्द्र ८

परिवर्तनशील विश्व में तकनीकी सहयोग
—डेविड ओवेन ९

विज्ञान एक नयी सामाजिक शक्ति
—माइकेल मिलियंशिकोव १३

यूनैस्को पुस्तक कक्ष से १६

समाचार

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना १७

साक्षरता के सम्बन्ध में प्रारंभिक तथ्य १९

इंजीनियरों का प्रशिक्षण १९

रसायन शिक्षण में प्रयोगात्मक प्रायोजना २०

एशिया में यूनैस्को केन्द्र २०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकास की नई नीति

रेने महू

अब यह प्रमाणित करना आवश्यक नहीं रह गया है कि शिक्षा विकास के मूल तथ्यों में से एक है। विकास का उद्देश्य और साधन दोनों मनुष्य ही हैं और उसकी शिक्षा अब एक ऐसा विषय है। जिसका महत्व आर्थिक अध्ययनों में भी बढ़ता जा रहा है। यदि हम १९६५ की स्थिति से १९६० की तुलना करें तो हमें पता चलेगा कि विकास सम्बन्धी विचारों और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा स्वीकृति होना विकास की योजना में प्रमुख नवीकरण है। मुझे विश्वास है कि यह तथ्य जो अब विश्वव्यापी स्तर पर स्वीकृत और निश्चित है उसी को संयुक्त राष्ट्र विकास दशक के उत्तरार्द्ध में इन अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की भावी नीति को आकृति देने के लिए होना चाहिए।

कोई भी देश तब तक अपने को सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र नहीं रह सकता। जब तक सभी स्तरों पर वैज्ञानिक, इंजीनियर और तकनीकी शिल्पी न हों। यही तथ्य वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा की समस्या को माध्यमिक स्कूलों के अध्ययन से लेकर उच्चतर संस्थानों में की जाने वाली मूल शोध के स्तर तक ले जाता है और उसके अन्तर्गत विश्वविद्यालय में या उसके बाहर अथवा उद्योग तथा कृषि के अन्तर्गत सभी प्रकार के तकनीकी प्रशिक्षण आ जाते हैं।

आज शिक्षा के विचार को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता नहीं है। इसकी प्रेरणा इस समय वर्तमान है और विस्तृत मानवता के हृदयों की गहराई से निकलती है। शिक्षा की यह मांग अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों या सरकारों की ओर से नहीं आई। इसके विपरीत बहुतों को तो यह एक ऐसी उमड़ती हुई लहर के रूप में प्रतीत हो रही है जिससे हर चीज के बह जाने का खतरा है, जब तक कि इसको नये रास्तों में न ले जाया गया जहां इसकी संभावनाओं का संगत उपयोग किया जा सके। शिक्षा की आवश्यकता और उसकी आकांक्षा बहुत अधिक है और वह राष्ट्रीय विकास, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और मानव की प्रतिष्ठा के प्रति आदर आदि तीनों मांगों से—के कारण विश्वव्यापी मांग का रूप ग्रहण कर रही है। यह मांग इतनी दृढ़ और दूर व्यापी है कि कई राष्ट्र चाहे वे विकसित हों या नहीं, अभी हाल में स्वतन्त्र रहे हों या सदियों से स्वतन्त्र रहे हों, अब अपने को ऐसी अजेय समस्याओं के सामने पा रहे हैं जो कि केवल तकनीकी या आर्थिक ही नहीं हैं वरन् राजनीतिक भी हैं।

रेने महू
यूनैस्को महानिदेशक

(९ जुलाई, १९६५ को संयुक्त राष्ट्र की आर्थिक और सामाजिक परिषद के सामने दिये गये भाषण के उद्धरण)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेहरान सम्मेलन

शिक्षा मंत्रियों का निरक्षरता के उन्मूलन सम्बन्धी विश्व सम्मेलन यूनैस्को द्वारा आयोजित किया गया और तेहरान में ईरान के शाह के निमंत्रण पर आठ से १९ सितम्बर तक हुआ।

इसमें ८८ देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिसमें ३८ शिक्षा मंत्री थे। इसके साथ-ही होलीसी के प्रतिनिधि और विभिन्न अन्तरसरकारी और ग़ैरसरकारी संगठनों के प्रतिनिधि भी थे। प्रारंभिक अधिवेशन में शाह मुहम्मद रजा ने भाग लिया उनके साथ साम्राज्ञी औल राजकुमारी अशरफ भी थीं जो निरक्षरता विरोधी आन्दोलन की राष्ट्रीय समिति की उपसभापति हैं। अपने भाषण में शाह ने कहा "अनेकानेक निरक्षरों का अस्तित्व उस असमानता का मूल कारण है जो मनुष्य जाति को विभिन्न भागों में बांटती है और वह सामाजिक शान्ति तथा सम्पूर्ण शान्ति के लिए एक निरन्तर का खतरा है। निरक्षरता की समस्या के समाधान के लिए हमें अनुभवों की तुलना करनी चाहिए और इसके प्रति शुभ कामना का वातावरण रखना चाहिए। यदि राष्ट्र अपनी सेना के बजटों में से थोड़ी-थोड़ी कटौती भी करे तो एक विशाल अन्तर्राष्ट्रीय प्रयत्न के लिए धन मिल सकता है।"

यूनैस्को कार्यकारी मण्डल के सभापति मि० मुहम्मद अलफाजी ने जोर देकर कहा कि जनसंख्या की वृद्धि के कारण निरक्षरों का प्रतिवर्ष एक प्रतिशत बढ़ रहा है। इसके साथ ही विकासशील देशों और अतिशय विकसित देशों के बीच राष्ट्रीय आय का अन्तर बढ़ता जा रहा है। उन्होंने कहा "निरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष का मतलब यह है कि सभी राष्ट्रों में सामान्य कार्य के प्रति एक-सी ही मनोवृत्ति होनी चाहिए और यह परिवर्तन अब हो रहा है।"

इसके बाद यूनैस्को महा निदेशक मि० रेने मह्रू ने सम्मेलन के सामने जो कार्य हैं उसकी परिभाषा प्रस्तुत की। प्रारंभिक उद्देश्य यह है कि अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय निरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष में अपने दायित्वों के प्रति सचेत हो जाय। और उन आधुनिक और शक्तिशाली साधनों का लेखा-जोखा ले जिनका प्रयोग इस संघर्ष में किया जा सकता है, वे हैं प्रेस, सिनेमा, रेडियो और टेलिविजन।

अब समय आ गया है कि साक्षरता शिक्षण और स्कूली शिक्षा के बीच जो मिथ्याभ्रान्ति आ गई है उसका अन्त किया जाए। ये दोनों कार्यवाइयां अनुपूरक हैं। सम्मेलन को निरक्षरता के विरुद्ध आन्दोलन के लिए एक ऐसी युक्ति निकालनी होगी जो शिक्षा और विकास की अधिक सामान्य योजनाओं से समेकित हो।

साक्षरता कार्यक्रम सामाजिक अभिप्रेरण होना चाहिए। उन्हें राष्ट्र की अर्थ-व्यवस्था के विभिन्न खण्डों में स्थापित किया जाना चाहिए—फैक्ट्रियों में और सहकारी समाजों में इसके साथ ही उनको व्यापार संघों, युवक आन्दोलनों और स्त्रियों के संगठनों का समर्थन भी प्राप्त होना चाहिए। कहावत है एक पुरुष को शिक्षित करो और तुम एक व्यक्ति को शिक्षत करते हो, एक स्त्री को शिक्षित करो और तुम एक परिवार को शिक्षित करते हो। और अन्त में साक्षरता को संरक्षण के सामान्य प्रयत्नों का अंश होना चाहिए।

मि० मह्रू ने कहा "मुझे इसका दृढ़ विश्वास है कि समय आ गया है कि ऐसा दूर व्यापी कार्य किया जाए जो सदा के लिए विश्व से निरक्षरता को दूर कर दे और आज मानवता को जैसे भौतिक और तकनीकी साधन प्राप्त हों, उद्देश्य उनके बाहर की बात नहीं है। यह दोष एक पीढ़ी में ही निर्मूल किया जा सकता है।"

प्रारंभिक भाषणों के बाद सम्मेलन ने अपने अधिकारी निर्वाचित किए। ईरान के शिक्षामंत्री मि० हादी हैदायती सबकी प्रसन्नता से सभापति निर्वाचित कर लिए गए।

यूनैस्को ने इस सम्मेलन में भाग लेने वाले सदस्य देशों के लिए तीन कार्य अभिलेख पत्र तैयार किए थे। और भेजे थे "विकास के एक तथ्य के रूप में साक्षरता", "निरक्षरता के आंकड़े", साक्षरता तथा वयस्क शिक्षा" (जनशिक्षा सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के सुझाव)।

इन अभिलेखों की विषय-वस्तु का सार इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

१. साक्षरता को आर्थिक विकास से समेकित होना चाहिए;
२. इसको कार्यपूरक होना चाहिए। दूसरे शब्दों में इसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यावसायिक प्रशिक्षण, मजदूरों की उत्पादनशीलता में वृद्धि और जनसंख्या के सक्रिय खण्डों की निरंतर शिक्षा से संबद्ध रहना चाहिए।

३. जो भी युक्ति स्वीकार की जाए उसको आर्थिक विकास आयोजना के लिए निश्चित अग्रताओं पर आधारित होने के कारण चुनावपूरक और सम्बन्धित समूहों के लिए सर्वोत्तम और सबसे अधिक कारगर तरीकों का उपयोग करने के कारण गहन भी होना चाहिए।

४. साक्षरता के द्वारा ऐसे अभिप्रेरण तथ्यों का निर्माण होना चाहिए जो शिक्षा की प्रक्रिया को द्रुत बनाने के लिए उपयुक्त हों। इसके लिए पहले सामाजिक मनोवैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है।

५. निरक्षरता नव साक्षारों के लिए उपयुक्त पाठ्य-पुस्तकों, अभिलेखों, पुस्तकों और समाचार-पत्रों को वितरण के कार्यक्रम बाद में होते रहने चाहिए जिससे वे फिर निरक्षर न हो जाएं।

इसके बाद सामान्य परिचर्चा हुई जिसमें सभी प्रतिनिधि मण्डलों के अध्यक्षों ने अपने-अपने देशों में निरक्षरता के संघर्ष के लिए की गई कार्रवाइयों के परिणामों का वर्णन किया और यूनेस्को के प्रस्ताव के अनुपूरक सुझाव भी दिये। अधिकतर जिन नये विचारों का उल्लेख हुआ वे ये हैं :

१. साक्षरता को पूरी तरह आर्थिक विकास से ही सम्बन्धित नहीं होना चाहिए। इसको समुदाय के सभी खण्डों को अधिक सरल, सम्पूर्ण और संतुलित जीवन की संभावना प्रस्तुत की जानी चाहिए। वास्तव में इसे संस्कृति को प्रोत्साहन देना चाहिए।

२. साक्षरता के सम्बन्ध में स्त्रियों की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। यह याद रखना चाहिए कि सामान्यतः निरक्षर स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक है।

३. साक्षरता आन्दोलन की तैयारी सीखने की इच्छा को बढ़ाने और ऐसी कार्रवाइयों का आयोजन जिससे नव साक्षर फिर से निरक्षर न हो जाएं समुदाय की हितों की दृष्टि से होना चाहिए और इसलिए उन्हें ग्रामीण विकास दलों, युवक आन्दोलन आदि से पूरा समर्थन प्राप्त होना चाहिए।

सामान्य परिचर्चा के बाद सम्मेलन तीन आयोगों में बंट गया।

पहले आयोग में इस विषय का अध्ययन किया : "साक्षरता कार्य और तकनीकी आर्थिक तथा विकास और निरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष के लिए घनौ"

इसकी रिपोर्ट में कार्य अभिलेखों में दिए गए अनेकों विचारों और आर्थिक विकास में साक्षरता के समेकन संबंधी सामान्य परिचर्चा में उल्लंखित विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

इसमें इन सिद्धान्तों पर विशेष जौर दिया गया :

१. साक्षरता की आयोजना सरकार और जिन लोगों के लिए बनाई गई है उन्हीं के ध्यान देने की वस्तु है।

२. किसी भी साक्षरता आन्दोलन के पहले एक सूचना आन्दोलन होना चाहिए जिससे उसके प्रति जनता की रुचि जागृत हो जाए।

३. साक्षरता आन्दोलन की सभी राष्ट्रीय संस्थाओं और व्यापार संस्थाओं का समर्थन प्राप्त होना चाहिए।

४. किसी भी आर्थिक और सामाजिक विकास प्रायोजना का प्रभाव नौकरी और प्रशिक्षण पर पड़ता है। यह बात साक्षरता के लिए भी घटित होती है और इसको ध्यान में रखना चाहिए।

५. आयोजकों को इस बात का विश्वास होना चाहिए कि साक्षरता कार्यक्रमों का आर्थिक लाभ भी होता है।

६. कार्यों को प्रोत्साहन और समायोजन एक विशेष संस्था को सौंपा जाना चाहिए जो आगे चलकर नौकरी के पूर्वानुमानों का दायित्व भी उठाए।

७. जब एक जनसंख्या-पढ़ना-लिखना और गिनना सीख लेती है तभी साक्षरता का कार्यक्रम परिवृति नहीं हो जाती। साक्षरता शिक्षण को निरंतर शिक्षा के रूप में विस्तृत किया जाना चाहिए।

द्वितीय आयोग पर साक्षरता कार्य के लक्ष्यों, संगठन, तरीकों और तकनीकों के अध्ययन का दायित्व था। इसी के अन्तर्गत नवसाक्षरों के लिए की जाने वाली कार्रवाइयां आती हैं। इसके संस्तावों में ये बातें कही गई थीं :

१. जब तक विशिष्ट शिक्षा कमीवर्ग को प्रशिक्षण न मिल सके तब तक साक्षरता कक्षाओं का संचालन स्कूल शिक्षकों की सहायता से या स्वेच्छिक शिक्षकों की सहायता से किया जाना चाहिए। किसी भी स्थिति में निरीक्षकों अथवा शिक्षा परामर्शकों के दल का निर्माण करना आवश्यक होगा। कार्य सम्बन्धी साक्षरता के लिए उस व्यवसाय में दक्ष लोग टेकनिशियन, फोरमैंन कृषि सम्बन्धी टैकनिशियन और व्यापार संघ के लोग दलों का निरीक्षण कर सकते हैं।

२. साक्षरता और उसके बाद के कार्यक्रमों के लिए अनिवार्य छपी हुई सामग्री (पाठ्क-पुस्तकों, प्रारंभिक पुस्तकों, और समाचार-पत्रों) का उत्पादन इसी उद्देश्य से किया जाना चाहिए और विशिष्ट कर्मीवर्ग के द्वारा उनका वितरण होना चाहिए।

३. दृश्य-श्रव्य साधनों के प्रयोग (रेडियो और टेलिविजन) के परिणाम अच्छे रहे हैं परन्तु वे शिक्षक का स्थान नहीं ले सकते। वे अभिप्रेरण के विकास में महत्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं।

४. प्रयुक्त माध्यम जो भी हो उन्हें वर्तमान आवश्यकताओं और चुने हुए तरीकों के अनुकूल बनाना चाहिए।

५. कार्य सम्बन्धी साक्षरता की जटिलता के लिए उससे सम्बन्धित विभिन्न सार्वजनिक और निजी संस्थाओं की कार्रवाइयों का हर प्रकार का समायोजन आवश्यक है।

६. जनशक्ति की आवश्यकताओं और आर्थिक आग्रताओं का ध्यान रखते हुए सभी साक्षरता कार्यक्रमों की आयोजना की जानी चाहिए।

७. जिन देशों में विभिन्न बोलियां बोली जाती हैं वहां साक्षरता शिक्षण सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा में किया जाना चाहिए और इस भाषा की लिपि भी एक ही होनी चाहिए।

८. सब साक्षरता कार्यक्रमों के पहले सामाजिक और मनो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैज्ञानिक, समाज वैज्ञानिक, कार्यपरक सर्वेक्षण होने चाहिए और उसके बाद आंकड़ों की दृष्टि से मूल्यांकन भी।

तीसरा आयोग ने साक्षरता कार्य में अन्तराष्ट्रीय सहयोग का अध्ययन किया और अपनी रिपोर्ट में इन बातों पर जोर दिया :

१. साक्षरता शिक्षण की प्रेरणा सरकार से ही आनी चाहिए और उससे सम्बन्धित विभिन्न राष्ट्रीय संगठनों की कार्रवाइयां समायोजित होनी चाहिए।

२. साक्षरता शिक्षण के विशेषज्ञों को अपने को स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल बनाने में समर्थ होना चाहिए और जहां भी सम्भव हो उनको उसी देश में प्रशिक्षण मिलना चाहिए।

३. विकासशील देशों के बीच सहयोग से अनुभव के लाभकर विनिमय तथा शोध सूचना, शिक्षा, प्रकाशन तथा भाषा सम्बन्धि अध्ययनों के लिए प्रोदेशिक संगठनों के निर्माण की सुविधाएं प्राप्त हो सकती हैं।

४. विकसित और विकासशील देशों के संस्कृतिक सहयोग के समझौतों में साक्षरता शिक्षण कार्रवाइयां भी सम्मिलित हैं।

५. अन्तर सरकारी संगठनों की प्रक्रियाएं और अधिक नम्य बना दी जानी चाहिए जिससे कि वे तात्कालिक आवश्यकताओं के अनुकूल बनाई जा सकें।

६. शिक्षकों के संगठन, स्त्रियों और युवकों के दल, सहकारी समाज और व्यापार संघ इन सभी का साक्षरता आन्दोलन में महत्वपूर्ण कार्य होता है।

७. साक्षरता से लाभ उठाने वाले उद्योगों (कागज के उत्पादन, दृश्य-श्रव्य सामग्रियों के निर्माताओं तथा छपाई व प्रकाशन व्यवसाय) को पूर्व पूंजी निवेश के रूप में इस आन्दोलन में आर्थिक योग देना चाहिए।

सामान्य परिचर्चा में सम्मेलन ने उन उपायों का परीक्षण किया जो "जनमत के समर्थन और निरक्षरता के उन्मूलन के लिए विश्व आन्दोलन में सभी देशों को लोगों के सक्रिय योग प्राप्त करने के लिए बनाए गए हैं।"

इस सम्बन्ध में मि० रेने मह्‌ ने कहा "कोई भी आन्दोलन बिना जनमत को अनुकूल बनाए विशाल स्तर पर नहीं चलाया जा सकता।" महानिदेशक ने जो लोग इस स्थिति से सबसे प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित हैं उनको इस समस्या के प्रति सचेत होने की आवश्यकता पर जोर दिया। विजय तभी निश्चित होगी जब निरक्षर साक्षर होने को अपना काम मानेंगे। जनमत के लिए सरकारों पर जोर डालना आवश्यक है। साक्षरता न्याय और नैतिकता का प्रश्न है और जिन देशों ने निरक्षरता को दूर किया है उन सबका यह कर्त्तव्य है कि दूसरे देशों को इस सम्बन्ध में सहायता करें।

सम्मेलन ने यूनैस्को द्वारा प्रारम्भ किए गए प्रयोगात्मक कार्यक्रम को अपना पूरा समर्थन दिया—विशेष रूप से उन प्रयोगात्मक प्रायोजनाओं को जिनके लिए संयुक्त राष्ट्र विशेष निधि से आर्थिक सहायता मांगी गई है। मि० रेने मह्‌ ने इस बात को स्पष्ट कर दिया कि साक्षरता आन्दोलन की अर्थ व्यवस्था राष्ट्रीय विकास आयोजनाओं से समेकित होने पर निर्भर करेगी। प्रत्येक देश का यह गंभीर दायित्व है कि वह यह निश्चय कर ले कि उन प्रायोजनाओं में वयस्क शिक्षा को कितना महत्व दिया जाएगा।

सम्मेलन ने संयुक्त राष्ट्र और उसके विशिष्ट अभिकरणों तथा प्रादेशिक संस्थाओं, गैर सरकारी संगठनों तथा सार्वजनिक और निजी संस्थाओं के प्रति एक अपील की जिसमें उनसे कहा गया कि वे इन बातों के सम्बन्ध में नेताओं पर प्रभाव डालें :

१. साक्षरता को विकास आयोजनाओं का एक अनिवार्य और आवश्यक अंश बना दिया जाय।

२. निरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष के लिए जहां तक हो सके राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संसाधनों में वृद्धि की जाए।

३. सैनिक खर्चों में कमी करके सामान्य रूप से विकास के लिए और विशेष रूप से साक्षरता के लिए और अधिक संसाधन प्राप्त करना संभव बनाया जाय।

४. वयस्क साक्षरता शिक्षण के लिए उपलब्ध सूचना माध्यमों का पूरा-पूरा उपयोग किया जाय।

अन्तिम अधिवेशन में सम्मेलन ने सर्व सम्पति ने अन्तिम रिपोर्ट स्वीकृत की जिसमे आयोगों की रिपोर्टों को जोड़ लिया गया है।

इसके पश्चात् ईरान के प्रधान मंत्री अमीर अब्बास होवेदा ने यह घोषणा की कि यूनैस्को के पास साक्षरता के क्षेत्र अधिकसे अधिक योग देने वाले व्यक्ति या संस्था के लिए प्रति वर्ष एक पुरस्कार देने के लिए धन प्रस्तुत किया जाएगा।

मि० रेने मह्‌ ने प्रतिनिधियों को याद दिलाई कि सम्मेलन के सुझाव सरकारों को बाध्य नहीं करते और प्रत्येक देश चाहे उनको ग्रहण कर सकता है। उन्होंने कहा कि वे कार्यकारी मण्डल को तत्काल ही अन्तिम रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे। क्योंकि वही महासम्मेलन के अधिवेशनों के बीच यूनैस्को के कार्य अधीक्षण करता है।

अन्त में उन्होंने सम्मेलन के महत्व पर जोर दिया जो साक्षरता से सम्बन्धि विचारों के विकास में एक निश्चित प्रगति को द्योतक है। उन्होंने कहा कि इसके साथ ही जिस सर्वसम्पित्ति से प्रतिनिधियों ने राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय कार्रवाई के संबन्ध में योजना स्वीकार किया है वह इसी के समान महत्वपूर्ण है।" 'उनके विचार-विनिमय से विशाल स्तरीय कार्रवाई के लिए संकेन्द्री साधनों की नई संकल्पना सामने आई हैं। यदि वे सब लोग जो विकासशील देशों में प्रगति को बढ़ाना चाहते हैं साक्षरता को विकास के अनिवार्य तत्व के रूप में सहायता दें तो निरक्षरता अपेक्षाकृत थोड़े ही समय में दूर हो सकती है। यह बात द्विमुखी कार्यक्रमों के लिए ठीक है और अन्तराष्ट्रीय कार्यक्रमों के लिए भी यह सच है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति के तत्व के रूप में सांस्कृतिक सहयोग

यूनेस्को वह प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है जो अपने संविधान के अनुसार विशेष रूप से "विश्व के लोगों के शिक्षा सम्बन्धी, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के लक्ष्यों, मानवता के सामान्य हित को बढ़ाने के लिये निर्मित हुई है।"

इसके संविधान में प्रारम्भ में ही कहा गया है कि "युद्ध मनुष्यों के मस्तिष्क में प्रारम्भ होते हैं इस लिए मनुष्यों के मस्तिष्कों में ही शान्ति की सुरक्षाएं निर्मित होनी चाहिएं। और जैसे सरकारों के राजनीतिक और आर्थिक प्रबन्धों पर आधारित शान्ति ऐसी शान्ति नहीं हो सकती जिसको विश्व के राष्ट्रों का एक-मत, स्थिर और सच्चा समर्थन प्राप्त हो सके, इसीलिए असफल न होने के लिए शान्ति को मानवता की बौद्धिक और नैतिक समेकता पर आधारित करना होगा।

यूनेस्को महासम्मेलन के पिछले १९६४ के अधिवेशन में सदस्य देशों ने सर्वसम्मति से "विभिन्न आर्थिक और सामाजिक पद्धतियों राज्यों के बीच शान्तिपूर्ण सहयोग और शान्तिपूर्वक साथ रहने में योग देने से सम्बन्धित यूनेस्को कार्यों के बारे में एक संस्ताव स्वीकार किया। इस संस्ताव में यह कहा गया है कि "सदस्य देशों को एक-दूसरे के साथ अपने सम्बन्धों, शान्तिपूर्वक साथ रहने" के तथा शान्तिपूर्ण सहयोग के सिद्धान्त से निर्देशित होना चाहिए और पारस्परिक आदर और लाभ, अनाक्रमण, एक-दूसरे की राजसत्ता के प्रति समानता और औपनिवेशित समकता के प्रति आदर, एक-दूसरे की आन्तरिक मामलों में दखल न देना, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के विस्तार, तनावों को कम करना और शान्तिपूर्ण तरीकों से राज्यो के बीच के मतभेदों और विवादों को तय करना आदि का ध्यान रखना चाहिए।" इसमें यह कहा गया है कि महानिर्देशक को इस संस्ताव की भावना से निर्देशित होना चाहिए और इसमें उल्लिखित सिद्धांतों को लागू करने में सहायता देनी चाहिए जिससे विश्व युद्ध के खतरों को दूर किया जा सकेगा।"

१९६५ और १९६६ के यूनेस्को कार्यक्रम में एक बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य शामिल किया गया है वह है अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक सहयोग के सिद्धान्तों और मूल लक्ष्यों को निश्चित करना और उनकी परिभाषा देना।

उसी अधिवेशन में यूनेस्को महासम्मेलन ने महानिदेशक को यह अधिकार दिया कि वे विभिन्न राज्यों और राष्ट्रों के बीच शान्तिपूर्ण सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने और उनका विकास करने में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य के रूप में सांस्कृतिक सहयोग के सम्बन्ध में और अध्ययन करवाएं, इसके लिए विभिन्न सदस्य देशों में प्रमुख विशेषज्ञों से योग प्राप्त करें, फिर उन सब लेखों का प्रकाशन कराएं।

१९६२ में अपने १२वें अधिवेशन में यूनेस्को महासम्मेलन ने सर्वसम्मति से निश्चय कर लिया था कि इस प्रश्न का विशेष अध्ययन किया जाना चाहिए और अगले दो वर्षों में यूनेस्को सचिवालय द्वारा आगे अध्ययन करने के सर्वोत्तम तरीकों का निश्चय करने के लिए यूनेस्को सचिवालय ने प्रारम्भिक कार्य भी करवाया। इस प्रयोजन से ६ देशों (फ्रांस, मैक्सिको, संयुक्त अरब गणराज्य, संयुक्त राज्य, सोवियत रूस और संयुक्त राज्य अमरीका) से सांस्कृतिक सहयोग के विशेषज्ञों को मार्च १९६४ में विचार विनिमय के लिए पेरिस बुलाया गया।

इन परामर्शकों ने एक सुझाव यह प्रस्तुत किया कि विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचनाओं वाले देशों का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रसिद्ध विशेषज्ञों को सांस्कृतिक सहयोग और शान्तिपूर्ण सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने के काम के अध्ययन करने के लिए आमंत्रित किए जाएं और उनके कार्य के परिणाम यूनेस्को के तत्वावधान में प्रकाशित किये जाएं।

यूनेस्को महासम्मेलन द्वारा स्वीकृत अध्ययन के वास्तविक विषय (विभिन्न राज्यों और देशों के बीच शान्तिपूर्ण सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने और विकसित करने के एक प्रमुख तथ्य के रूप में सांस्कृतिक सहयोग) की कुछ व्यवस्था करनी होगी और इसमें प्रयुक्त शब्दावली की स्पष्ट परिभाषा भी प्रस्तुत करनी होगी।

पहले तो सांस्कृतिक सहयोग के सामान्य अर्थ को स्पष्ट करना उपयोगी होगा। इस शब्द की कई व्यवस्थाएं हो सकती हैं। सचिवालय की सम्पत्ति में सांस्कृतिक सहयोग का प्रयोग उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी प्रकार के सांस्कृतिक सम्बन्धों और विनियमों के लिए किया जाना चाहिए जो लोगों को विभिन्न प्रकार के जीवनों के सम्बन्ध में सीखने और दूसरे देशों में प्रयुक्त संरचनात्मक अभिव्यक्तियों के विभिन्न रूपों के सम्बन्ध में सीखने की सुविधाएं देते हैं।

आगे यह कहा जा सकता है कि अध्ययन के शीर्षक में (विभिन्न राज्यों और राष्ट्रों) का शब्दों का क्या अर्थ है। क्या इसका अर्थ है कि विभिन्न राजनीतिक पद्धितियों और सामाजिक, आर्थिक संरचनाओं से युक्त देशों के बीच सांस्कृतिक सम्बन्धों पर विचार किया जाए या अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक सहयोग के तथा सभी प्रकार के सम्बन्धों की सरणियों का अध्ययन किया जाए? १९६२ में यूनेस्को महासम्मेलन के १२वें अधिवेशन में इस अध्ययन के जिस शीर्षक को प्रस्तावित किया गया था वह इस प्रकार था "विभिन्न आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं वाले राज्यों के शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व में एक महत्वपूर्ण तथ्य के रूप में सांस्कृतिक सहयोग।" विभिन्न आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं वाले राज्यों के बीच सम्बन्ध और इन सम्बन्धों पर सांस्कृतिक सहयोग का प्रभाव। यह इस प्रश्न का बहुत महत्वपूर्ण पक्ष है। परन्तु यह नहीं सोचना चाहिए कि समान सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों और सामान्य सांस्कृतिक दाय से युक्त देशों पर कम ध्यान देना होगा। आधुनिक इतिहास में इस बात को देखा ही जा सकता है कि अनेकों सशस्त्र संघर्ष उन देशों के बीच भी हुए हैं जिनकी सामाजिक-आर्थिक पद्धतियां एक समान थीं।

"शान्तिपूर्ण सम्बन्धों" के अर्थ के सम्बन्ध में सहमति होना भी महत्वपूर्ण है। क्या इसका अर्थ है युद्ध के विपरीत सम्पूर्ण शान्ति की अवस्था या कुछ और। यह कहा जा सकता है कि यह स्थिति तभी हो सकती है जब दो या अधिक राज्यों में सामान्य राजनीतिक सम्बन्ध बने और सुविकसित आर्थिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध भी रखें जिससे एक-दूसरे से संघर्ष में पड़ना या सम्बन्धों का बिगड़ना असम्भव या कठिन हो जाता है। शान्तिपूर्ण सम्बन्ध विरोध या विचार सम्बन्धी प्रतिरोधों के अस्तित्व से इन्कार नहीं कर सकते। परन्तु विदेशों के प्रति घृणा की भावना को अवश्य ही दूर करना चाहते हैं। वे न केवल युद्ध का विरोध करते हैं वरन् उन राजनीतिक तनावों के अस्तित्व का विरोध करते हैं जो सशस्त्र संघर्ष में परिणत हो सकते हैं।

इसके साथ ही कुछ विशेष समस्याएं भी हैं जिनका अध्ययन करना चाहिए। उदाहरण के लिए इसमें कोई संदेह नहीं है कि शिक्षा सम्बन्धी उद्देश्यों से विनिमयों का राष्ट्रों के बीच शान्तिपूर्ण सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने में बहुत योग हो सकता है। जब दूसरे राष्ट्रों के प्रति मंगल कामना के बीज तरुणों के मस्तिष्कों और आत्माओं में अंकुरित हो जाते हैं तो वे दूसरों के प्रति मित्रता और शुभेच्छा रखते हैं। लेकिन यह निश्चय करना उतना ही महत्वपूर्ण है कि किन परिस्थितियों में शिक्षा सम्बन्धी उद्देश्यों से किये गए विनिमय शान्तिपूर्ण सम्बन्धों के कार्य को आगे बढ़ा सकते हैं। और शान्ति विरोधी प्रयोजनों को नहीं।

राज्यों के बीच सांस्कृतिक सहयोग के कार्यक्रम कभी-कभी सहयोग के एक विस्तृत कार्यक्रम का अंश होते हैं जो किसी राजनीतिक या सैनिक सम्बन्ध का संघार में प्रयुक्त होता है। क्या ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रम उन देशों के बीच शान्तिपूर्ण सम्बन्धों को प्रेरणा देते हैं जो इन सम्पर्कों से सम्बन्धित नहीं हैं और यदि वे करते भी हैं तो किस सीमा तक। क्या यह सम्भव है कि सांस्कृतिक सहयोग के इन कार्यक्रमों का प्रभाव राष्ट्रों के बीच शान्तिपूर्ण सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने के अतिरिक्त कुछ और भी होता है? सार्वजनिक शान्ति आन्दोलनों और भौतिक आन्दोलनों से सम्बन्धित सांस्कृतिक कार्यक्रम अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक सहयोग का एक रोचक पक्ष है। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से शान्ति के लिए जो व्यापक इच्छा देखी जाती है उसने ऐसे अनेकों आन्दोलनों को प्रोत्साहन दिया है। उदाहरण के लिए विश्व शान्ति आन्दोलन, शान्ति के लिए लाभ का सम्मेलन, पगवाश आन्दोलन, क्वेकर, स्त्रियों के और विभिन्न तरुणों के आन्दोलन, इन आन्दोलनों का आधारभूत उद्देश्य राष्ट्रों के बीच शक्ति को सुदृढ़ बनाना और युद्ध को रोकना है परन्तु वे सांस्कृतिक सम्बन्धों के विकास से ही प्रत्येक रूप से सम्बन्धित है। कुछ केवल बौद्धिक आन्दोलन हैं। अनेकों कलाकार, वैज्ञानिक, शिक्षक और लेखक इन कार्रवाइयों में भाग लेते हैं। और अक्सर यह होता है कि उनका नेतृत्व प्रमुख विद्वान करते हैं। यह आन्दोलन अधिकतर अपने प्रतिदिन की कार्रवाइयों में राजनीतिक साधन अपनाते हैं। शान्ति की रक्षा के लिए प्रार्थना-पत्र, घोषणाएं, सम्मेलनों के संस्ताव आदि। शान्तिपूर्ण सम्बन्धों पर उनका वास्तविक प्रभाव है।

अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक सहयोग के विकास में सरकारों के कार्य का आज की दुनिया में बहुत बड़ा महत्व है और इसकी ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। जब से सरकारें अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक सहयोग को विदेश नीति के एक तथ्य के रूप में समझने लगी और सांस्कृतिक विनियमों को आर्थिक सहायता देने लगीं तभी से उन्हीं के द्वारा इस सहयोग के विषय क्षेत्र स्वरूप और विषय-वस्तु का काफी सीमा तक निश्चय हो गया। सांस्कृतिक सहयोग के कार्यक्रमों पर सरकारों के प्रभाव और नियंत्रण से राष्ट्रों के बीच शान्तिपूर्ण सम्बन्धों को उन सरकारों द्वारा प्रयुक्त विदेश नीति के उद्देश्यों और मूल सिद्धान्तों के अनुसार खतरा उत्पन्न हो सकता है या सुविधा मिल सकती है।

अन्त में शान्ति के सिद्धान्तों पर प्राप्त पुस्तकों के अनुसार ऐसा नहीं लगता कि शान्ति से सम्बन्धित समस्याओं के सांस्कृतिक पक्ष पर बहुत ध्यान दिया गया है। शान्ति के बनाए रखने में सांस्कृतिक सम्बन्धों का किस प्रकार प्रभाव हो सकता है। राज्यों और राष्ट्रों के बीच शान्तिपूर्ण सम्बन्धों में सांस्कृतिक सहयोग और दूसरे तत्वों का क्रमशः क्या महत्व है अधिक सामान्यरूप से सांस्कृतिक सहयोग और इन सम्बन्धों के बीच कितनी अन्तर्निभरता है—ये कुछ प्रश्न हैं जिन पर यूनेस्को कार्यक्रम में शोध करवाने की आयोजना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराची प्रादेशिक केन्द्र

कराची प्रादेशिक केन्द्र की स्थापना १९५८ में पाकिस्तान सरकार के समायोजन से हुई थी। इसका प्रकाशन यूनैस्को द्वारा होता है और इस पर दक्षिण एशिया में पठन सामग्री के उत्पादन सम्बन्धी प्रायोजना को लागू करने का दायित्व है। यह प्रायोजना १९५५-१९५६ में प्रारम्भ हुई थी। पहले इसमें ये चार देश शामिल थे : बर्मा, श्रीलंका, भारत और पाकिस्तान। १९५९ में यह ईरान तक विस्तृत कर ली गई। १९६३ में अफगानिस्तान, नैपाल और थाईलैण्ड तक। १९६४ में मलएशिया तक इसके विस्तारण को स्वीकृति दी गई।

इस प्रायोजना का उद्देश्य प्रदेश की राष्ट्रीय या स्थानीय भाषाओं में पठन सामग्री के उत्पादन का विकास करना है। विशेष रूप से जनता के दो वर्गों के लिए। नवसाक्षर—जिन्होंने साक्षरता आन्दोलनों में अभी हाल में पढ़ना सीखा है और वे लोग जो पढ़े-लिखे हैं लेकिन नियमित रूप से इसलिए नहीं क्योंकि उपयुक्त पठन सामग्री सुलभ नहीं है।

कार्य :

केन्द्र के प्रमुख कार्य ये हैं :

१. दो वर्षों में इस प्रायोजना के लिए प्रादेशिक समायोजना समिति की बैठक का आयोजन करना, सम्बद्ध अभिलेख तैयार करना और उनका प्रकाशन करना।

२. सरकारों का राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकों के उत्पादन और वितरण की आयोजना समायोजन का भार लेने वाली संस्थानों का निर्माण करने में सहायता करना।

३. पुस्तक उद्योग के प्रत्येक खण्ड के बीच सहयोग को प्रोत्साहन देना विशेष रूप से व्यावसायिक संगठनों के द्वारा।

४. जनता की पढ़ने के आदतों के सम्बन्ध में सर्वेक्षण और शोध का प्रबन्ध करना। इसके साथ ही कागज और छपाई के उपकरणों के संसाधनों, पुस्तक बिक्री की स्थिति, पुस्तकालय और पुस्तक सूची व्यवस्थाओं की आवश्यकताओं तथा कापी राइट के प्रश्न आदि।

५. पुस्तक मेलों और उत्सवों तथा साहित्यिक प्रतियोगिताओं के आयोजन में सहायता देना।

६. चल पुस्तकालयों द्वारा या रलवे स्टेशनों अथवा फैक्ट्रियों में पुस्तकालयों के निर्माण द्वारा वितरण में सुधार करना।

७. व्यावसायिक प्रशिक्षण या विशेष अध्ययनों के लिए अभि-लेखन व्यवस्थाओं और परामर्शक या विशेषज्ञ सेवाओं को सुलभ बनाना।

८. बच्चों की पुस्तकों और नवसाक्षरों के लिए आगे की पठन-सामग्री के विशेष और अच्छे संस्करणों के प्रकाशन को प्रोत्साहन देना।

केन्द्र की इच्छा है कि शोध और प्रशिक्षण सम्बन्धी कार्र-वाइयों का विकास करे। प्रारम्भ में पाकिस्तानी राष्ट्रीय पुस्तक केन्द्र के सहयोग में यह एक ऐसी पुस्तक की दुकान बनायेगा जिसमें पुस्तक विक्रेताओं, चित्र बनाने वालों और जिल्दसाजों के लिए शिक्षाक्रम और गोष्ठियां की जाएं।

भावी सम्भावनाएं :

केन्द्र के भूतपूर्व निदेशक मि० ए० हुसेन के अनुसार पठन सामग्री के उत्पादन सम्बन्धी प्रायोजना में पहले नवसाक्षरों की आवश्यकताओं को पूरा करने की ओर ध्यान देना चाहिए क्योंकि ऐसा लगता है कि जब तक नवसाक्षरों के लिए नियमित पुस्तकों का वितरण नहीं होगा, जिससे वे अपना ज्ञान बढ़ाते रह सकें, तब तक निरक्षरता पूरी तरह उन्मूलित नहीं हो सकती। विकास के साथ प्रायोजना का विषय क्षेत्र पुस्तक उद्योग के सभी अंशों से सम्बन्धित होता चलता है। यह बहुत जल्दी ही स्पष्ट हो जाता है कि नवसाक्षर स्थायी प्रकार के नहीं होते। वे या तो पूर्णतया पाठक बन जाते हैं या फिर निक्षरता की ओर वापस लौट जाते हैं। इसके साथ ही यह भी स्वीकार किया गया कि पाठकों का स्तर कुछ भी हो पुस्तक उत्पादन एक विश्वव्यापी प्रक्रिया है जिसके लिए सभी सम्बद्ध व्यवसायों, लेखकों, प्रकाशकों, मुद्रकों, वितरकों और पुस्तक विक्रेताओं तथा पुस्तकालयों और पुस्तक-सूची आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायक व्यवस्थाओं के समायोजित विकास की आवश्यकता है। इस प्रकार यह प्रायोजना पठन-सामग्रियां तैयार करने, प्रकाशन और वितरण तथा लेखकों और प्रकाशकों के प्रशिक्षण, पुस्तक उद्योग के व्यावसायिक संगठनों के विकास और उन संगठनों के बीच सहयोग, पुस्तकालय और पुस्तक-सूची व्यवस्थाओं का विस्तार और विक्रय के प्रोत्साहन के तरीकों में सुधार आदि को प्रोत्साहन देने के लिए उदिष्ट हैं।

कराची के प्रादेशिक केन्द्र और सामान्य रूप से दक्षिण एशिया में पठन सामग्री के उत्पादन सम्बन्धी प्रायोजना के भविष्य पर १९६६ में विश्व साक्षरता आन्दोलन के प्रारम्भ और एशिया में पुस्तक प्रोत्साहन सम्मेलन (जो टोकियो में मई १९६६ में होगा) के परिणामों का लाभकर प्रभाव पड़ेगा।

परिवर्तनशील विश्व में तकनीकी सहयोग

डेविड ओवेन

कार्यकारी अध्यक्ष संयुक्त-राष्ट्र तकनीकी सहायता मंडल

[पन्द्रह वर्ष हुए पहली जुलाई उन्नीस सौ पचास को अन्तर्राष्ट्रीय तकनीकी सहयोग का सबसे बड़ा और दूर व्यापी काम शुरू किया गया था। तकनीकी सहायता का विस्तारित कार्यक्रम।

यह वर्ष तकनीकी सहायता कार्यक्रम के लिए ऐसा है कि इसमें एक ऐसी दुनिया की समस्याओं को सुलझाने के लिए अन्तराष्ट्रीय दायित्व और कारंवाई पर विशेष जोर दिया जा रहा है जिसमें न केवल राजनीतिक सुरक्षा वरन् समूची मानवता के आर्थिक और सामाजिक कल्याण को भी उचित संतुलन प्राप्त करना है। पहले तो विस्तारित कार्यक्रम का १५वां वर्ष संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के २०वीं वर्षगांठ के रूप में मनाया गया था। दूसरे यह अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष भी है और इस विविधता के बीच विस्तारित कार्यक्रम प्रयोजन और कारंवाई के संतुलन के उदाहरण के रूप में सामने आता है। तीसरे १९६५ का वर्ष संयुक्त राष्ट्र विकास दशक (१९६०-१९७०) के बीच में आता है और विस्तारित कार्यक्रम अपने निकट सहयोगियों, संयुक्त राष्ट्र विशेष निधि तथा संयुक्त राष्ट्र और उससे सम्बद्ध विशिष्ट अधिकरणों के नियमित कार्यक्रम मिलकर उन देशों में जहां विकास की सबसे अधिक आवश्यकता है आर्थिक और सामाजिक प्रगति में संगठित अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के सबसे महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष योगदान का रूप लेते हैं।

अन्त में इस वर्ष में संयुक्त राष्ट्र के विस्तारित कार्यक्रम और विशेष निधि के बीच एक नये और अधिक निकट सहयोग एक अकेले संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के रूप में सम्भावना है। इसके लिए आर्थिक और सामाजिक परिषद ने सुझाव दिया है और अब महासभा की कारंवाई की प्रतीक्षा है।

यूनैस्को कूरियर ने संयुक्त राष्ट्र तकनीकी सहायता मण्डल के अध्यक्ष मिस्टर डेविड ओवेन से कहा था विस्तारित कार्यक्रम के प्रारंभिक दिनों के संस्करण प्रस्तुत करते हुए उसकी प्रगति और विकास का लेखा प्रस्तुत करें। नीचे उनका वही लेख दिया जा रहा है।]

जब मैं ये पंक्तियां लिख रहा हूं तो मेरे सामने वे दो अभिलेख हैं जो विकासशील देशों को दी जाने वाली अन्तर्राष्ट्रीय सहायता के इतिहास में विशेष स्थान रखते हैं। पहला तकनीकी सहायता मण्डल की प्रशासन समिति को दी गई और पहली रिपोर्ट है और दूसरा अभी हाल की रिपोर्ट है। यह प्रशासन संस्था संयुक्त राष्ट्र की आर्थिक और सामाजिक परिषद की तकनीकी सहायता समिति है। इन पृष्ठों के पहले और अन्तिम पृष्ठों के बीच पन्द्रह वर्षों का समय इन वर्षों में विश्व में कितना परिवर्तन और प्रगति हुई है।

"विस्तारित कार्यक्रम के अन्तर्गत कार्य करने का आधार दृढ़ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से निश्चित हो चुका है। तकनीकी सहायता सम्मेलन में सरकारों द्वारा निश्चित आर्थिक समर्थन अब संयुक्त राष्ट्र परिवार के उस प्रमुख कार्य के सचमुच प्रारम्भ करने का मार्ग तैयार करता है।" हमने ४ जुलाई १९५० को अपनी पहली रिपोर्ट में यह लिखा था।

सरल शब्दों में सरकारों के समर्थन इसका अर्थ यही था कि अब हमारे पास लगभग २० मिलियन डॉलर और राशि थी अर्थात् सरकारों ने उतना धन देने की प्रतिज्ञा की थी और हमारे पास वह तन्त्र भी था जिससे वह धन विशेषज्ञ सलाहकारों, शिक्षा वृत्तियों और उपस्करों के रूप में परिवर्तित किया जा सकेगा जिसमें तमाम विकासशील देश आर्थिक और सामाजिक विकास की समस्याओं के समाधान के लिए करते हैं।

उसी समय पहली बार और शायद आखिरी बार हमने अपने पास सहायता की मांगों की अपेक्षा अधिक संसाधन होने का अनुभव किया। सहायता की ये मांगे उस समय इतनी कम थी कि तकनीकी सहायता मण्डल एक संस्था के रूप में इन सभी मांगों पर व्यक्तिगत रूप से परीक्षा कर सका। और हमने कुछ आशंका और कुछ उत्साह के भाव से क्षेत्रों में कुछ मिशनें भेजने के लिए सहमति प्रकट की जो यह पता लगाएं कि देशों को किस प्रकार की सहायता की सबसे अधिक आवश्यकता है।

संक्षेप में हम समायोजित अन्तर्राष्ट्रीय तकनीकी सहायता में अपनी दिशा निर्धारित करना चाहते थे। हमने अपने दृष्टिकोण के सम्बन्ध में पहली रिपोर्ट में व्यवहारिक शब्द का प्रयोग किया था परन्तु कुछ ही महीनों में सहायता की मांगें उमड़कर आने लगी और प्रत्येक मांग के साथ विशेषज्ञों, शिक्षावृत्तियों आदि को जुटाने को हमारी स्वीकृतियां सैकड़ों में होने लगीं और तभी हमें लगा कि विस्तारित कार्यक्रम पर्याप्त रूप से चालू हो गया है।

पहले जिस प्रकार की अन्तर्राष्ट्रीय सहायता सुलभ थी उसको देखते हुए तो अब सहायता की सम्भावना बहुत बढ़ गई थी। लेकिन तकनीकी सहायता मण्डल की पहली रिपोर्ट से सबसे हाल की रिपोर्ट देखने से यह पता चलता है कि हमें विस्तारित कार्यक्रम का विकास करने के लिए कितनी दूर जाना है और अब हमें इसके जैसे नतीजे रहें हैं उस समय गर्व का अनुभव हो सकता है।

१५ वर्ष हुए संयुक्त राष्ट्र परिवार में ऐसे सौ अल्प विकसित देशों और उपनिवेशों को देखा जो पूंजी के अभाव सामान्यतः अनुपयुक्त व्यापारिक संभावनाओं और तकनीकी तथा प्रशासनिक कुशलताओं और अनुभव की गंभीर कमी से पीड़ित थे। अन्तर्राष्ट्रीय संगठन पहली दो मांगों को तत्काल पूरा नहीं कर सकते थे और इसी से उन्होंने अपनी शक्ति और संसाधन उस उपकरण को देने में लगाये जिसे वे सरलता से दे सकते थे। वह था ज्ञान, कुशलता और अनुभव का विनिमय। नागरिक सेवा अथवा किसी हवाई अड्डे का प्रबन्ध, प्रदर्शन फार्म या नमूने के स्कूल को चलाना, औद्योगिक प्रशिक्षार्थियों, नर्सों, या मौसम का पूर्वानुमान करने वालों को प्रशिक्षण देना आदि।

देशों को सहायता का हमारा प्रमुख माध्यम विशेषज्ञ भेजना ही था और मुझे पहले से ही लगता था कि इसमें बहुत खतरे हैं। क्या हम लोग अपने विभिन्न सदस्य देशों से ऐसे पर्याप्त व्यक्तिगत और व्यावसायिक योग्यताओं से युक्त स्त्री-पुरुष इतनी संख्या में प्राप्त कर सकते हैं कि विकासशील देशों में भेज सकें। यदि एक भी विशेषज्ञ का चुनाव गलत हो जाए तो समूचे देश में अन्तर्राष्ट्रीय सहायता की संकल्पना ही बुरी दृष्टि से देखी जा सकती थी और हमें यह खतरा एक वर्ष में सैकड़ों बार उठाना पड़ता था।

वास्तव में यह हुआ कि कुछ ही दिनों बाद हमने जिन लोगों को पहले पहल नियुक्त किया था उनमें से एक बहुत ही गलत चुनाव के कारण हमारा भय बहुत ही बढ़ गया। परन्तु वह एक अपवाद ही रहा क्योंकि हमने जिन हजारों व्यावसायिक और तकनीकियों को भेजा वे सभी ऐसे निकले कि हम उन पर गर्व कर सकते हैं। बीच के वर्षों में चौदह हजार से अधिक नियुक्तियां हुई। खाद्य और कृषि संगठन द्वारा भेजे गये मलेरिया विशेषज्ञ; यूनेस्को द्वारा भेजे गए शिक्षा आयोजन; अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभिकरण द्वारा भेजे गए परमाणु ऊर्जा विशेषज्ञ; और इसी प्रकार आर्थिक और सामाजिक विकास के सैकड़ों क्षेत्रों के विशेषज्ञ। मैं यह नहीं सोचता कि ये सभी विशेषज्ञ एक समान उच्च कोटि के थे लेकिन अपने ही ज्ञान के आधार पर कह सकता हूं कि हमें कभी शर्मिन्दा नहीं होना पड़ा (वास्तव में कभी राजनीतिक स्तर पर किसी प्रकार की कठिनाई नहीं आई यद्यपि विशेषज्ञों में विश्व के लगभग सभी राष्ट्र के लोग रहे)। इस प्रकार हमारे मानक योग्यता के उपयुक्त और चुनाव अच्छे रहे।

मैं अच्छा चुनाव उसी विशेषज्ञ को मानता हूं जो विलम्ब, विरोध, या अकर्मण्यता के सामने भी प्रभावशाली ढंग से काम कर सके, अपने लक्ष्यों को संगत ढंग से सम्भव उपलब्धियों तक रखे और जिन लोगों के साथ काम करे उनका विश्वास और मित्रता प्राप्त करे। विशेषज्ञों का काम क्षेत्रों में विशेष रूप से कठिन है लेकिन सरकारी दफ्तरों और संस्थाओं में जहां हमारे विशेषज्ञों के आधे से अधिक हैं कुछ कम कठिन नहीं है। ये विशेषज्ञ हैं आयोजक, अंकशास्त्री, अर्थशास्त्र सम्बन्धी सलाहकार और प्रशासक, तथा वे सभी लोग जिनकी कार्य परिस्थितियां वीरता के कारनामों के अन्तर्गत नहीं आते परन्तु जिनकी सलाह किसी भी क्षेत्र में देश की प्रगति पर गम्भीर प्रभाव डाल सकती है।

उदाहरण के लिए मैं लीबिया के एक अपने अर्थशास्त्री के सम्बन्ध में सोच रहा हूं जिसके परामर्श पर राष्ट्रीय अग्रताएं निश्चित की गई। घाना के उन विशेषजों को जिन्होंने प्रमुख देशव्यापी जनगणना की आयोजना और विश्लेषण करने में सहायता दी वह बहुराष्ट्रीय दल जो सिंगापुर के औद्योगीकरण में सहायता दे रहा है। और पूर्वी अफ्रीका के लोग जो शिक्षा, कृषि, औषधि व्यवस्थाओं और इसी प्रकार की अन्य वस्तुओं में सुधार करने की आयोजना बना रहे हैं या प्रदर्शन कर रहे हैं। विस्तारित कार्यक्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पहले पन्द्रह वर्षों की यह एक विचित्र स्थिति है कि इस प्रकार की सहायताओं पर जनता का ध्यान बिलकुल ही न गया क्योंकि वे अनाटकीय हैं। और क्योंकि उनकी सफलता जब होती है तो उसका प्रशंसक मण्डल नहीं होता।

विस्तारित कार्यक्रम के अन्तर्गत तकनीकी सहयोग का एक तीसरा प्रमुख रूप शिक्षा वृत्तियां देना है अर्थात् किसी भी विकासशील देश में तकनीकी विशेषज्ञ, अध्यापक, प्रशासक, फैक्टरी के फ़ोरमैन या व्यापार संघ के सदस्य को विदेशों में जाकर आगे प्रशिक्षण प्राप्त करने की सुविधा देना है। पिछले पन्द्रह वर्षों में ऐसी ३२००० शिक्षावृत्तियां दी गई हैं और मेरा विश्वास है कि उनके द्वारा कई स्तरों पर और कई विकासशील देशों में व्यावसायिक और तकनीकी कुशलता बढ़ गई है। मैं ऐसे केबिनेट के मन्त्रियों से मिला हूं जिन्होंने इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण के सम्बन्ध में गर्व से उल्लेख किया। इसी प्रकार मैं ऐसे फोरमैनों और फैक्ट्री के अधीक्षकों से भी मिला हूं जो विदेशों में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद अपना काम अधिक अच्छी तरह करने लगे या जिनको अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण काम दिए गए।

इसके साथ ही हमने राष्ट्रीय विकास की उपलब्धि के साधन के रूप में तकनीकी सहयोग के शिक्षावृत्ति पक्ष को गौण समझा है। हमें ऐसे प्रमाण मिले हैं कि पहला साधन संस्थाओं का निर्माण है। स्थानीय या प्रादेशिक स्तर पर उन सुविधाओं को लेना है जिससे कोई भी देश प्रशिक्षित स्त्री-पुरुषों से रहित न हो जाय और सभी प्रकार की कुशलताएं बनी रहें। अधिकांश सरकारी अफसरों का भी यही दृष्टिकोण है। उनका यह दृष्टिकोण विस्तारित कार्यक्रम की सहायता की मांग, अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों, वैज्ञानिक शोध संस्थाओं, जन प्रशासन के स्कूलों, जन प्रशासन सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, डाक्टरों और व्यावसायिक प्रशिक्षकों और अधिकों के सभी स्तरों के लिए स्कूलों की स्थापना की मांग में प्रतिबिम्बित होता है।

यह कार्यक्रम इन स्कूलों को संचालित नहीं करता या पूरे-पूरे विभाग नहीं स्थापित करता उसी प्रकार जैसे कि इस कार्यक्रम की सहायता से न बांधों का निर्माण होता है और न ही फार्म चलाए जाते हैं। लेकिन हमारे विशेषज्ञ आयोजना की स्थिति में और संस्थाओं के संगठन और प्रशासन में सहायता देते हैं तथा तब तक इन संस्थाओं के कर्मी बनकर रहते हैं जब तक इन संस्थाओं द्वारा स्वयं प्रशिक्षित करके उनका स्थान लेने के लिए योग्य व्यक्ति तैयार नहीं हो जाते। इसके परिणामस्वरूप हम अलेक्जैंड्रिया मिस्र में नर्सिंग के उच्चतर स्कूल जिसमें १२४ नर्सें तैयार हो चुकी हैं लिबिया के व्यावसायिक और क्लर्की प्रशिक्षण केन्द्र जहां १९५३ से ग्रेजुएटों की सूची ६५० हो गई है, बम्बई के भारतीय औद्योगिकी संस्थान, जल प्रशासन के मध्य-अमरीकी स्कूल और अंकारा (टर्की) में मध्य-पूर्व तकनीकी विश्वविद्यालय आदि लिए जा सकते हैं। इनमें और बहुत से अन्य मामलों में भी अन्तर्राष्ट्रीय परिवार का यह कहना संगत होगा कि तकनीकी सहयोग के बिना ये सुविधाएं शायद बिलकुल न जुट पातीं।

निश्चय ही उनका अस्तित्व ही नहीं होता यदि उनको प्राप्ता सरकारों का पर्याप्त समर्थन न होता। वर्तमान समय में तकनीकी सहायता की संभावनाओं और सीमाओं का जिस प्रकार ज्ञान है उसमें यह कथन स्पष्ट ही है। जब तकनीकी सहयोग की परीक्षा नहीं हुई थी उस समय यह हम सहायता देने में ही इतने व्यस्त थे कि इसको स्वतः ही स्वीकार कर लेते थे कि विकासशील देशों में इतनी संस्थायें हैं कि इस सहायता को सभी ले सकें।

वास्तव में अल्प विकास का एक मूल लक्षण ही यह था कि तकनीकी सहायता की प्रभावशीलता के लिए आवश्यक सुविधाओं और व्यवस्थाओं का अभाव था। सहायता के समायोजन के लिए राष्ट्रीय तंत्र नहीं था। निश्चित अग्रताओं से युक्त आर्थिक और सामाजिक विकास आयोजना भी नहीं थी। कानूनी और प्रशासनिक उपयुक्त संधार भी नहीं था और न ही ऐसे तकनीकी विशेषज्ञ और प्रशासक ही थे जो अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों के अनुपूरक बन सकते।

इस सभी या इनमें से कुछ बातों के अभाव ने न केवल विस्तारित कार्यक्रम को बल्कि आर्थिक सहायता के नये क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कार्य करने वाली सरकारों और संगठनों के प्रयत्नों को भी प्रभावित किया और इससे उससे संबद्ध लोगों की क्षमता की भी परीक्षा हो गयी। मुझे एक बड़े प्रसिद्ध खनिज इंजीनियर की याद है जिनको हम ने एक एशियाई देश में भेजा था। जिस मंत्रालय ने उनकी सेवाओं की उत्सुकता से मांग की थी उनके पहुंच जाने पर उसी ने ६ महीने तक कुछ भी नहीं किया और जब हम उन्हें दूसरे देश में भेजने वाले थे तब उनके कार्य की ओर सरकार की दूसरी ही शाखा का ध्यान आकर्षित हुआ और वे कुछ सहायता दे सके।

परन्तु इस प्रकार के मामलों से व्यक्ति की विभिन्न कार्यों की क्षमता का अधिक पता चलता हैं मूल समस्या के समाधान का कम। उस समय छोड़ दिया गया था कि समाधान अपने समय पर आयेगा और अब धीरे-धीरे जैसे जैसे सरकारें प्रशासन तंत्र में प्रौढ़ होती जा रही हैं। और सभी प्रकार की बाहरी सहायता का का उपयोग करने में अनुभव प्राप्त कर रही हैं तथा संयुक्त राष्ट्र और उसके अभिकरण सरकारों को इसी दिशा में सहायता दे रहे हैं तब अधिक से अधिक निकट आता जा रहा है।

उदाहरण के लिए विस्तारित कार्यक्रम के अन्तर्गत १९५४ में कार्यक्रम की नयी प्रक्रियाएं स्वीकृत हुई जिनके द्वारा विकास की अग्रताओं को निश्चित करने का भार प्राप्त सरकारों पर पड़ा और जिनके द्वारा उन्हें राष्ट्रीय विकास अग्रताओं के अनुसार सहायता की प्रार्थनाओं को निश्चित करने के लिए केन्द्रीय समायोजन एकांशों की स्थापना करनी पड़ी। इन एकांशों के साथ तकनीकी सहायता बोर्ड के उस देश के प्रतिनिधि और अभिकरणों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के क्षेत्र प्रतिनिधि काम करतेहैं और वे सरकारों को विदेशी सहायता का चुनाव करने औरउसका उपयोग करने के संबंध में निर्देश देते हैं । तकनीकी सहायता बोर्ड के प्रतिनिधि सर्वोपरि नीति के सम्बन्ध में और अभिकरणों के प्रतिनिधि प्रायोजनाओं के प्रतिनिधि सहायता के सम्बन्ध में ।

इसके साथ ही विस्तारित कार्यक्रम का प्रभाव राष्ट्रीय आयोजन और समायोजन पर भी सहायता के स्वरूप के कारण ही पड़ा है । ऐसा विशेष रूप से नये देशों में हुआ है । जैसा मैं पहले ही कह चुका हूं केवल प्रशिक्षण पर दिये जाने वाले जोर के कारण ही नहीं बल्कि आर्थिक और सामाजिक आयोजन और प्रशासन के सभी क्षेत्रों मे विशेषज्ञ परामर्श देकर भी प्रारंभ से ही मुझे लगता था कि सहायता का यह महत्वपूर्ण क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम का स्वाभाविक केन्द्र विन्दु है और मुझे इस प्रकार की सहायता के लिए अनेकों सरकारों की प्रार्थना से अपने इस विचार की पुष्टि से प्रसन्नता हुई है ।

हम इस बात पर संतुष्ट हो सकते हैं कि विस्तारित कार्यक्रम आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए एक आप्त और उपयोगी उपकरण सिद्ध हुआ है फिर भी हम सदा ही यह याद रखते हैं कि यह एक उपकरण है और सभी उपकरणों की भांति उचित परिणाम के लिए इसको ठीक से उपयोग करना आवश्यक है । तकनीकी सहयोग स्वत: जादू नहीं कर सकता । इससे ऐसा करने की कभी आशा भी नहीं की गयी । किसी भी राष्ट्र की अर्थ-व्यवस्था के निर्माण करने के अत्यधिक जटिल कार्य में राष्ट्र के अपने गहन प्रयत्नों का स्थान ही सबसे पहले आता है । यह प्रयत्न पूंजी की सुलभता के अनुसार जल्दी या देर में फलीभूत हो सकते हैं । इसी प्रकार लाभकर विदेशी व्यापार की सुविधाओं से या अनेकों महत्वपूर्ण तथ्यों के कारण जिनमें कुशलताओं की उपलब्धि केवल एक तथ्य ही है वह चाहे कितना ही महत्वपूर्ण क्यों न हो । इसलिए विस्तारित कार्यक्रम या तकनीकी सहायता की किसी अन्य सारणी के योगदान को किसी भी देश के सर्वोपरि विकास के लिए मापना कठिन हो जाता है ।

१५ वर्ष पहले यह कहा गया था कि हमारा कार्यक्रम वर्षों के लिए नहीं वरन् दशकों के लिए हैं और अब की स्थिति देखकर लगता है कि यह वस्तुस्थिति को घटाकर कहना है । अपने कुछ कार्यों को देखते हुए मैं यह स्पष्टत: स्वीकार करूंगा कि उपयोगी परिणामों को प्राप्त करने के लिए जितना हम पहले सोचते थे उससे कहीं अधिक समय लगता है । ऐसे भी मामले हुए हैं जहां पर एक विशेषज्ञ ने किसी देश की नागरिक सेवा के पुर्नसंगठन के लिए जो सुझाव दिए वे चार वर्ष तक पड़े रहे जब तक एक नया प्रशासन तंत्र आया और उसने उसको राष्ट्रीय कानून बना दिया । परन्तु मैं ऐसे मामलों को नहीं सोचता, मैं तो निर्धनता, रोग और अज्ञान की समस्याओं के द्वारा उत्पन्न कठिन रोग की बात सोचता हूं क्योंकि ये समस्याएं बहुत दिनों तक बनी रह सकती हैं और बढ़ती भी जा सकती है । सामान्यत: सभी विकासशील देशों में आबादी शीघ्रता से बढ़ रही है और वहां इन बुराइयों के कारण पन्द्रह वर्ष पहले जितने जीवन नष्ट होते थे उससे अधिक ही नष्ट होते हैं ।

हम इस बात पर संतुष्ट हो सकते हैं । कि राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय प्रयत्नों के कारण जीवन की हानि बढ़ नहीं सकी है, और हजारों लोगों को आर्थिक और सामाजिक सुधार की सुविधाएं और आशा प्राप्त हो सकी है । परन्तु ऐसी सुविधाओं के निर्माण के लिए और ऐसी आशाओं को उचित सिद्ध करने के लिए जो काम किया गया है उससे संतुष्ट होने के लिए हमें बहुत कुछ और करना होगा ।

सरकारें इस सम्बन्ध में योगदान देने में उदार हैं केवल विस्तारित कार्यक्रम के द्वारा ही पन्द्रह वर्षों में उनका दिया हुआ धन पांच सौ मिलियन डालर के बराबर रहा है । लेकिन फिर भी समस्त मानवता के लिए एक सुन्दर और शांतिपूर्ण जीवन के लिए अल्प विकास के जिस दोष को दूर करने की उनकी निश्चित इच्छा है उसके लिए अभी और अधिक संसाधनों की आवश्यकता है । विशेष निधि के विकास और इन दोनों कार्यक्रमों के एक संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम में मिल जाने के प्रस्ताव से हमें यह आशा बनती है कि ये संसाधन आगे के वर्षों में अधिक से अधिक सुलभ होते जायेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान एक नई सामाजिक शक्ति

माइकेल मिलियँशिकोव

अब मानव समाज के जीवन में तर्क के स्थान को ऊंचा उठाने का समय आ गया है। आज की दुनिया में विभिन्न सामाजिक पद्धतियों से युक्त राज्यों के शान्तपूर्ण तरीकों से सहअस्तित्व के रास्ते ढूंढ़ने में तर्क की सहायता लेनी होगी।

आजकल नीति के उपकरण के रूप में ताप अणुकेन्द्रीय युद्ध की स्वीकार्यता को मानने और सामान्य विनाश के साधनों में प्रतियोगिता करने की बातों को लेकर सफलता नहीं मिल रही है। अब ऐसे व्यावहारिक कदम उठाना सम्भव हो गया है जो विश्वव्यापी ताप अणुकेन्द्रीय युद्ध को कुछ और दूर कर दे। ये कदम हैं इन परिस्थितियों में अणुकेन्द्रीय अस्त्रों के परिक्षणों की निषेध सम्बन्धी मास्को सन्धि, अन्तरिक्ष में सामान्य विनाश के अस्त्रों को रखने की स्थिति से बचने के सम्बन्ध में संयुक्त राष्ट्र का संस्ताव, युद्ध के प्रयोजनों के लिए बारूद की सामग्रियों के उत्पादन में कमी, और महान् शक्तियों के सैनिक व्यय में कुछ कमी।

यदि घटनाएं इसी क्रम से होती जाती तो शान्तिप्रेमी लोगों को विशेष संतोष प्राप्त होता। इससे यह प्रमाणित हो जाता कि तर्क में उन तात्विक शक्तियों के विनाश सम्बन्धी संभावना को नियंत्रित करने की क्षमता है जिनको इन्हीं राष्ट्रों ने खोजा है और विश्व में प्रविष्ट किया है। फिर भी अब भी बहुत से तथ्य मानवता के ऊपर नंगी तलवार की भांति लटक रहे हैं। उनमें से एक तथ्य है ताप अणुकेन्द्रीय आपत्तिका खतरा जो अभी दूर नहीं हुआ है बल्कि अणुकेन्द्रीय अस्त्रों में प्रगति और अस्त्रों की प्रतियोगिता के गहन भार के कारण बढ़ ही गया है, एक अन्य तथ्य उपनिवेशवाद और जातिवाद है दूसरा दरिद्रता, भूख और रोग है। एक और तथ्य करोड़ों लोगों की निरक्षरता है। और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा आर्थिक वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग के विस्तृत विकास के मार्ग में आने वाली बाधाएं हैं।

इस स्थिति में पर्याप्त सुधार करने के लिए सही रास्ता उन वैज्ञानिकों के अनुसार काम करने का होगा जो विज्ञान के सामने आने वाली समस्याओं के नये समाधान दृढ़ता से खोजते ही रहते हैं और उन्हें यह समाधान प्राप्त करने में शत्रुता के नहीं सहयोग के वातावरण में सफलता मिलती है। इसी प्रकार राष्ट्रों के सम्बन्धों में भी ईमानदार, परस्पर लाभकर, और मजदूरों के परस्पर सहयोग और विश्वास का वातावरण रहना चाहिए।

सोवियत रूस के संस्थापक लेनिन ने कहा था कि किसी वर्षगांठ को मनाने का सबसे अच्छा तरीका यह था कि जिन समस्याओं का समाधान प्राप्त करना है उन पर ध्यान दिया जाए। अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष मनाना संयुक्त राष्ट्र की बीसवीं वर्षगांठ पर हो रहा है और ऐसा उचित रूप से तभी हो सकेगा, यदि मानवता को आज की समस्याओं की समाधान की ओर आगे ले जाए।

जब मनुष्य अपने ऊपर आने वाले जीवन के खतरे के प्रति सचेत हो जाता है तो और सभी चिन्ताएं और जरूरतें पीछे चली जाती हैं। सुरक्षा ही अग्रता की समस्या है जिसका समाधान मानवता के सामने आने वाली दूसरी सभी समस्याओं के समाधान से पहले होना अत्यधिक आवश्यक है।

हम इस मामले के बारे में हाल के वर्षों में इतनी वार कह चुके हैं कि इन शब्दों का वास्तविक अर्थ ही मानव से दूर होता जा रहा है। और हम उनको अब एक मनोवैज्ञानिक और राजनेतिक नारे के रूप में समझने लगे हैं जिनका कुछ विशेष अर्थ नहीं है। फिर भी मनवता के लिए जो सब से बड़ा खतरा है जो इसके अस्तित्व के लिए ही खतरा है वह जितना आज है उतना पहले कभी नहीं था।

पिछले दो दशकों में मानवता में अपने को एक बार नहीं वरन अनेकों बार विनष्ट करने में सफलता प्राप्त कर ली है। यह खतरा कहीं वास्तविकता में न बदल जाए इसके लिए यह आवश्यक है की सभी तर्क पर लोग अपने को विभाजित करने वाले विवादों के लिए कोई न कोई निर्णय प्राप्त कर सकें। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि अणुकेन्द्रीय युग में मानव समाज की परि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थितियों में आमूलपरिवर्तन हो चुका है। और यदि जो लोग इन परिवर्तनों को नहीं समझते वे अपने व्यवहार और अपनी विचार-पद्धति को पूर्णतया परिवर्तित नहीं कर लेते तो भयंकर आपत्ति आने की सम्भावना है।

सामाजिक विकास और वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति के अन्तर्भूत तर्कपद्धति के दृष्टिकोण से विश्वव्यापी ताप अणुकेन्द्रीय आपत्ति आना असम्भव नहीं है। फिर भी सामान्य विनाश के अस्त्रों का जमा करना चल रहा है। उनके छूटने का खतरा बढ़ता जा रहा है।

इन परिस्थितियों में वैज्ञानिकों का एक विशेष दायित्व है। वैज्ञानिक और सामाजिक प्रगति में उच्चतम हितों के प्रतिनिधि ने उन्हें हमेशा के लिए उपनिवेशवाद को दूर करने और ताप अणुकेन्द्रीय युद्ध को रोकने के शुभ कार्य में शुभेच्छा रखने वाले सभी मनुष्यों के साथ अपने प्रयत्नों को मिलाना और समायोजित करना होगा। अब यह सामान्यतः स्वीकार किया जाता है कि इस समस्या को सुलझाने का सबसे निश्चित रास्ता दृढ़ अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण में सामान्य और सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण है। केवल एक निःशस्त्रीकृत विश्व में ही जो कि युद्धों से मुक्त है विज्ञान विनाश-शक्ति के स्थान पर निर्माण की शक्ति बन सकता है। वैज्ञानिकों का पगवॉश सम्मेलन अणुकेन्द्रीय आपत्ति को रोकने के लिए जो कर सकता है कर रहा है। इस सम्बन्ध में विश्व शान्ति परिषद और दूसरे संगठनों के शान्ति सम्बन्धी प्रयत्नों का स्थान अलग है।

विश्व भर वैज्ञानिकों और सार्वजनिक जीवन में काम करने वाले लोगों को निःशस्त्रीकरण के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा को बचाने के लिए एक सर्वसम्मतकार्यक्रम निश्चित करने चाहिए। मुझे लगता है कि इस प्रकार के कार्यक्रम की उपलब्धि के तरीकों में से एक यह भी हो सकता है कि निःशस्त्रीकरण की तैयारी के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष निश्चित कर लिया जाए। इस कार्य-क्रम की कार्यपरिणति से निश्चित ही आंशिक और सामान्य तथा सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण दोनों को ही सहायता मिलेगी। ऐसे प्रयत्नों को तब तक जारी रखने पर सहमति हो सकती है जब तक उपर्युक्त अन्तर्सरकारी समझौतों के कारण निःशस्त्रीकरण को अधिक सुदृढ़ आधार न मिल जाए। इसके साथ-ही यह वैज्ञानिक और राज-नीतिक दोनों ही स्तरों पर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के सम्पूर्ण प्रश्नों पर एक नया रूप दे देगा। जो कि विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि वर्तमान परिस्थितियों में वैज्ञानिक सहयोग राजनीतिक सहयोग से अलग नहीं किया जा सकता और इसी से निश्चित होता है यद्यपि वह भी राजनीतिक सहयोग पर अधिक से अधिक प्रभाव डालता है।

हमारे समय में मानवता की एकता सभी स्थानों पर रहने वाले लोगों के सामने आने वाली महत्वपूर्ण समस्याओं की एकता और निकट की अन्तर्निर्भरता से स्पष्ट है। आजकल वैज्ञानिक और राजनीतिक समस्याएं आर्थिक समस्याओं से पूर्णतया सम्बन्धित हैं। हर साधन द्वारा आर्थिक क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के विकास के लिए एक सुदृढ़ भौतिक आधार बन सकता है। यहां अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एक प्रमुख साधन हो सकता है। हमारे समय और युग में व्यापार द्वारा न केवल युद्ध दूर हो सकते हैं और शान्ति को शक्ति मिलती है जिससे वैज्ञानिक और तक-नीकी प्रगति को प्रोत्साहन मिलता है वरन् प्रत्यक्ष रूप से लाइ-सेंसों, नए प्रकार के उत्पादनों और नई औद्योगिक प्रक्रियाओं के वितरण के द्वारा वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति को प्रोत्साहन मिल सकता है। नए स्वतन्त्र राज्य अब अन्तर्राष्ट्रीय दृश्य पटल पर आते-जाते रहे हैं। उनके राष्ट्रक उपनिवेशवाद का निर्मूलन कर रहे हैं। विदेशी एकाधिकारों में आर्थिक और राजनीतिक स्थितियों को समाप्त कर रहे हैं। उनकी अर्थव्यवस्था के पुराने औपनिवेशिक संगठन में परिवर्तन कर रहे हैं और एक नए संगठन की रचना कर रहे हैं। यह समय दूर नहीं है जब ये देश विश्व के बाजारों के लिए कृषि सम्बन्धी और औद्योगिक कच्चे माल को जुटाने का काम ही नहीं करते रहेंगे, उपनिवेश युग में वे लोग यही काम करते रहे हैं।

भेदभाव और कृत्रिम रूप से बनाई गई बाधाओं से मुक्त अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का विकास देशों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को स्थापना के लिए एक आधार प्रस्तुत करेगा और उससे राष्ट्रों के बीच शान्ति, विश्वास और पारस्परिक सद्भावना को बनाए रखने और सुदृढ़ रखने में सहायता मिलेगी। इसी कारण वैज्ञानिकों के लिए यह बड़े ही गम्भीर रुचि का विषय है कि अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष में व्यापार और विकास सम्बन्धी संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन द्वारा प्राप्त निश्चित परिणामों को भी अन्तर्भूत किया जाए और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को भी सशक्त नई प्रेरणा दी जाए।

इसी समय अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के विकास के विभिन्न सम्भव क्षेत्रों में से कोई एक भी एकाधिकार नहीं प्राप्त कर सकता और न ही केन्द्र बन सकता है। मनुष्य की आर्थिक, राजनीतिक और वैज्ञानिक समस्याएं एक अन्तर्निर्भर प्रगति के अन्दर आती हैं। परिणामस्वरूप उनका समाधान भी विश्वव्यापी होना चाहिए और उसको सभी क्षेत्रों में कारगर रूप से समायोजित अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग पर आधारित होना चाहिए। इस दृष्टिकोण से पहला महत्वपूर्ण तथ्य हमारे सामने आने वाली समस्याओं के कुछ और प्राथमिक सम्पर्क होगा।

विज्ञान को बहुत-सी राजनीतिक सफलताएं मिली हैं। ये हमारे समय का एक सक्रिय सामाजिक शक्ति बनती जा रही है।

प्राप्त अनुभवों के आधार पर मैं इस बात पर जोर दूंगा कि अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सहयोग शान्ति में पर्याप्त योग देता है। अन्तर्राष्ट्रीय भू-भौतिक वर्ष में अंटार्कटिक कार्यक्रम की पूर्ति का प्रत्यक्ष परिणाम १९५९ की उस अंटार्कटिक सन्धि की पूर्ति थी जिसके अनुसार विश्व के छठे भाग को पहले असैनिक प्रदेश के रूप में घोषित करके विश्व में सैनिक कार्यवाई के क्षेत्र को कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के सिद्धान्त को स्वीकार किया गया था।

निशस्त्रीकरण के तैयारी के एक अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष को स्वीकार करना अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के काम में महत्वपूर्ण योग होगा और इसके परिणाम राजनीतिक और वैज्ञानिक दोनों ही दृष्टियों से अच्छे होंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि ऐसा उत्साहजनक उदाहरण इस दिशा में आगे कदम बढ़ाने के लिए सदृढ़प्रेरक होगा। और यह बड़े महत्व की बात है क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग वर्ष मानवता के शस्त्रों और युद्धों से हीन विश्व को निकट लाने की एक ऐसे विश्व को जिसमें वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति केवल मानवता के हित के लिए उपयुक्त होगी और मनुष्यों के रहने के लिए उपयुक्त परिस्थितियां निर्मित करने में सहायक होगी। विस्तृत और विभिन्न पक्षों के प्रयत्नों के युग को प्रारम्भ करेगा।

विज्ञान प्रत्यक्ष उत्पादनशील शक्ति बन गया है और विशाल स्तर पर भौतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का निर्माण कर रहा है। अब विज्ञान को ही यह देखना होगा कि ये मूल्य नष्ट न हो जाएं। हमारे युग में विज्ञान को न केवल समाज के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने होंगे वरन् उसके विचार सरणी में भी सामाजिक कार्रवाई के सभी क्षेत्रों में प्रवेश करके और उसमें प्रमुख स्थान ग्रहण करके वैज्ञानिक तर्क जोकि विचार की सबसे अधिक संगठित और सुनियोजित सरणी होती है मानवता की समस्याओं के लिए एक तर्क संगत समाधान ढूंढ़ने में सहायक हो सकता है और उसको होना चाहिए।

लेखक विज्ञान सोवियत अकादेमी के उपाध्यक्ष हैं और परमाणु ऊर्जा के कुर्शटोव संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष हैं। उन्होंने विज्ञान और विश्व मामलों से सम्बन्धित मगवाश सम्मेलन में सक्रिय भाग लिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूनैस्को पुस्तक कक्ष से

विश्व अनुवादों की यूनैस्को निदेशिका

[१६ वाँ संस्करण, यूनैस्को, प्लास द फांटनाय, पेरिस, मू० २५ डा० ६.५ पौं० ८७ पैं०]

"अनुवादों की अनुक्रमणी" के अनुसार १९६३ में पहले के सभी वर्षों की अपेक्षा अधिक पुस्तकों का अनुवाद हुआ। "अनुवादों की अनुक्रमणी" यूनैस्को की अनुवादों की अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक सूची है। इसमें ६६ देशों में ३४,१४३ पुस्तकों का अनुवाद प्रकाशित किया गया है। इसके पहले के संस्करण में १९६२ के सम्बन्ध में सूचना थी और उसमें ७० देशों में अनूदित ३२,७८७ कृतियों के अनुवाद की सूची प्रस्तुत की गई थी।

अनुवादों की अनुक्रमणी अनेकों देशों के पुस्तकालयाध्यक्षों की सहायता से बनायी जाती है जिसमें विश्व अनुवादों की एक विस्तृत तस्वीर प्रस्तुत की जाती है जिसमें एक ही वर्ष में प्रकाशित अनुवादों को लिया जाता है। इन सूचियों में पहले की प्रकाशित पुस्तकों के नये संस्करण भी सम्मिलित होते हैं। पिछले १६ वर्षों में ३७६००० अनूदित कृतियों को लिया जा चुका है और जब तक सत्रहवां खण्ड प्रकाशित होगा तब तक यह संख्या ४००००० की सीमा से आगे बढ़ जायेगी।

१९६३ में अनूदित कृतियों की संख्या में शेक्सपियर के अनुवाद सबसे अधिक हमें ऐसा हाल में प्रकाशित ८२० के १६वें संस्करण में बतलाया गया है। बाइबिल की छपाई और उससे उद्धरण १८१, लेनिन के लेखकों के अनुवाद १४८ हुए है, मार्क्स और एंजिल के कृतियों के अनुवाद ८८ और ६१ हैं।

जिन लेखको को साहित्य का नोबुल पुरस्कार मिल चुकता है उनकी कृतियों के भी काफी अनुवाद होते हैं। जान स्टीन वेक ९३ अनुवाद, अर्नेस्ट हेमिंग्वे जा पाल सार्त्र ४५ अनुवाद, विलियम फार्कनर ३७, इवो एन्ड्रीक ३३, एल्वर्ट कैमू ३२।

टाल्सटाय सभी उपन्यासकारों की अपेक्षा अधिक अनूदित होता है। उसकी कृतियों के ९४ अनुवाद हैं। जूल्स वर्ण के ८४ अनुवाद, डास्टोवस्की के ७५, वाल्जक के ६५, पर्ल बक के ६५, ग्राहम ग्रीन के ७५, स्टेंडल के ५४, सामरसेट माम के ४२।

दूसरे क्षेत्रों में प्रिय लेखक जिनकी कृतियों के अनुवादक बहुत काफी होते हैं नाटककार जान बर्नाड शा, ऐंटल चेखब, और बर्टोल्ड ब्रेथ। ग्रीम और हैंस किश्चियन एंडरसन लिखित बालकथाएं और अगाथक्रष्टी अर्ल एस गार्डनर और जार्ज सेमनान की रहस्य कथाएं।

प्रतिनिधि कृतियां

यूनैस्को ने पूर्वी और पश्चिमी सांस्कृतिक मूल्यों के परस्पर अवधारण सम्बन्धी प्रमुख प्रायोजना के अन्तर्गत पिछले आठ वर्षो में पूर्वी देशों के साहित्य से अनूदित अंग्रेजी में ६० और फ्रांसीसी में ४२ पुस्तको के प्रकाशन का प्रबन्ध किया है। इस समय लगभग १०० और पुस्तकें तैयार की जा रही हैं। अभी हाल में अंग्रेजी फ्रांसीसी में जिन पुस्तको का अनुवाद प्रकाशित हुए है। भारतीय कथाओ का प्रसिद्ध संग्रह "पंजतंत्र" (एलन और अनविक, लंदन, २८) और प्राचीन जापानी काव्य की महत्वपूर्ण सकलन मान्योशू, (कोलाम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन और न्यूयार्क, साढ़े बारह डालर)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना

'स्कूल स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना'

यह एक पुस्तिका का शीर्षक है जिसमें यूनैस्को सचिवालय ने "अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना" के शिक्षा कार्यक्रम को संचालित करने वाले सम्बद्ध स्कूलों "के कार्य का विवरण प्रस्तुत किया है। सम्बद्ध स्कूल प्रायोजना में अब ४३ देशों में ३०० संस्थाएं शामिल हैं। यह प्रायोजना १९५३ में प्रारंम्भ की गई थी। यूनैस्को ने विभिन्न देशों के शिक्षा जानकारों की सहायता से स्कूलों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना और सहयोग को प्रोत्साहन देने के तरीकों के बारे में जो अध्ययन करवाये थे उन्हीं के परिणाम स्वरूप यह प्रायोजना प्रारम्भ की गई थी। प्रारम्भ में इसके १५ देशों के माध्यमिक स्कूलों ने भाग लिया था। इसका उद्देश्य यह है कि विद्यार्थियों को निम्नलिखित में से किसी विषय पर प्रयोगात्मक कार्रवाइयों के द्वारा विश्व के मामलों का अधिक अच्छा ज्ञान प्राप्त करवाया जाए। दूसरे देशों, मानवीय अधिकारों या स्त्रियों के अधिकारों का अध्ययन इनमें से प्रत्येक विषय का अध्ययन संयुक्त राष्ट्र या उसके विशिष्ट अभिकरणों के कार्य का उल्लेख करते हुए करना था। यूनैस्को सचिवालव ने इन संवद्ध स्कूलों को सूचना सामग्रियां देने का और उनकी कार्रवाइयों का समायोजन करने का भार लिया था।

शिक्षा के स्तर पर सबसे कारगर तरीका यह समझा गया कि चुने हुए विषय जो अधिकतर दूसरे देशों का अध्ययन था पाठ्य-क्रम के विभिन्न विषयों के दृष्टिकोण से विचार किया जाए: कला, संगीत, विदेशी भाषाएं, नागरिक शास्त्र, अर्थ शास्त्र, इतिहास और भूगोल। अधिकतर कार्य इतिहास व भूगोल की कक्षाओं में किया जाता था। इन प्रायोजनाओं की अवधि कुछ सप्ताहों से लेकर पूरे स्कूल वर्ष तक भी होती थी। अधिकतर दो या तीन महीने के लिए यह प्रायोजना चलाई जाती थी और हफ्ते में चार या पांच पाठ इस सम्बन्ध में दिए जाते थे।

इस प्रायोजना की सफलता में पाठ्य-क्रम बाह्य कार्रवाइयों का बड़ा महत्वपूर्ण भाग था: पत्राचार का विनिमय, फोटो चित्रों और दूसरी सूचना का संकलन, समूह चर्चाएं, प्रदर्शनियों और नाटकीय प्रदर्शनों का प्रबन्ध। बाहर के लोगों द्वारा भाषण, संग्रहालयों को देखने जाना, यूनैस्को कूपन योजना में या रुपया एकत्र करने की दूसरी कार्रवाइयों में भाग लेना।

यह प्रायोजना अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों तक विस्तृत कर दी गई। और तब से इसमें भाग लेने वाली संस्थाओं की संख्या बढ़ती जा रही है। प्रारम्भ में यह योजना थी कि स्कूलों में निश्चित अवधि के प्रयोग संचालित होंगे लेकिन व्यवहार में अधिकतर स्कूल प्रतिवर्ष नई प्रायोजनाएं लेते हैं। इन विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या एक लाख से काफी ऊपर है।

आवश्यक अन्तर्राष्ट्रीय समायोजन प्राप्त करने और शिक्षा जानकारों को विचारों तथा सूचना का विनिमय करने के लिए हेम्बर्ग के शिक्षा संस्थान में १९५६ और १९५८ में तथा १९५९ में किटो (एक्वादोर) में तथा १९६१ में टोकियो में और १९६२ में काहिरा में प्रादेशिक बैठकें हुई। १९६३ में प्रायोजना की दसवीं वर्षगांठ के अवसर पर फ्रांसीसी राष्ट्रीय आयोग ने पेरिस के निकट सेव्र में ३८ सदस्य देशों के सम्बद्ध स्कूल के प्रतिनिधियों की बैठक उपलब्ध परिणामों का मूल्यांकन करने और भविष्य के लिए प्रायोजना बनाने के लिए की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बद्ध स्कूल प्रायोजना कार्यक्रम और शिक्षण तरीकों के सुधार में प्रोत्साहन देने से सम्बन्धित प्रत्यक्ष कार्रवाई के सर्वोत्तम उदाहरणों में से है। सामान्यतः इन प्रायोजनाओं का सामान्य उद्देश्य विश्व की समस्याओं और दूसरे राष्ट्रों तथा सभ्यताओं के सम्बन्ध में ज्ञान का वितरण करना और अन्तराष्ट्रीय सद्भावना के प्रति अनुकूल मनोवृत्ति का विकास करना पूर्ण हो गया है। इसके साथ ही स्कूलों में अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा के समूचे प्रश्न पर शिक्षा अधिकारियों की रुचि जागृत कर दी गई है।

दृश्य श्रव्य साधनों से अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को प्रोत्साहन

बुडापेस्ट में २७ जुलाई से ८ अगस्त तक हंगरी के यूनैस्को राष्ट्रीय आयोग के समायोजन में यूनैस्को शिक्षा संस्थान (हैम्बर्ग) द्वारा "अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए शिक्षा में दृश्य श्रव्य साधनों का प्रयोग" विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में २० देशों (बेल्जीयम, बाइलोरशा, बलगेरिया, सिलोन, साइप्रस, चैकोस्लोवाकिया, जर्मन संघ गणराज्य, फ्रांस, हंगरी, भारत, निदरलैण्ड, न्यूजीलैण्ड, नार्वे, पोलैण्ड, रुमानिया, सूडान, स्वीटजरलैण्ड, उक्रेनिया, रूस और इंगलैण्ड) से ३६ विशेषज्ञों ने भाग लिया। गोष्ठी का उद्घाटन हंगोरियाई राष्ट्रीय आयोग की अध्यक्षा श्रीमति जो बोरू और हंगरियाई शिक्षा मंत्रालय में जनशिक्षा के निदेशक मि० जे बैंसडी ने किया। यूनैस्को का प्रतिनिधित्व शिक्षा में जनसंचारण तकनीकों के प्रयोग से सम्बन्धित खण्ड के अध्यक्ष मि० हेनरी कासीरे और स्कूलों और उच्चतर शिक्षा विभाग के कार्यक्रम विशेषज्ञ मि० आर केण्ट जौन्स ने किया।

भाग लेने वालो ने रेडियो और टेलीविजन प्रसारणों, फिल्मों और सम्बद्ध साधनों तथा प्रदर्शनियों इन तीनों विषयों का अध्ययन करने के लिए तीन कार्यक्रम बनाए। दूसरे दल ने "सबसे छोटी दुनिया, सबसे बड़ा परिवार" विषय पर एक फिल्म पट्टी भी बनाई। उसमें जन्म से लेकर सामाजिक जीवन में पूर्णतया समेकित होने तक मानव जीवन के विकास का चित्रण किया गया था। तीसरे दल ने एक प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसमें युद्ध और शान्ति के परिणामों को प्रस्तुत किया गया था और उनकी विपरीतता दिखलाई गई थी। और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना पर प्रदर्शनियों का संगठन करने की इच्छा करने वाले शिक्षकों के लिए एक निर्देशिका भी इसमें प्रकाशित की।

वयस्क और तरुण शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल का प्रकाशन अब बन्द कर दिया गया हैं। इसका पिछले अंक में (खण्ड १६, १९६४ अंक ३-४) दो प्रमुख विषय लिए गए: अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के प्रति विभिन्न दृष्टिकोण और तरुणों पर समकालीन संस्कृति का प्रभाव और उनका योग। कई लेखों में टेलिविजन, सिनेमा, सांस्कृतिक कार्रवाइयां पठन, विज्ञान और औद्योगिकी के प्रति तरुणों की मनोवृत्ति का निरुपण किया गया है। दूसरी लेखमाला जनसंचारण माध्यमों, कला, विज्ञान और भूगोल के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के प्रति योगदान का विवेचन किया गया है।

संचारण माध्यमों सम्बन्धी लेख में फ्रांस के मि० मैक्स एगली ने "विभिन्न प्रकार अज्ञात दलों (तरुण और वृद्ध, गांव और नगर के निवासी) दर्शकवृन्द के लिए उद्दिष्ट प्रदर्शनों की हानियां निर्दिष्ट की हैं। अधिक से अधिक 'ग्राहकों' की रुचि को बनाए रखने के लिए सूचना माध्यमों को सामान्य रुचि का स्तर बनाए रखना पड़ता है। अर्थात् उन्हें सनसनीपूर्ण अथवा असाधारण तथ्यों को खोजना पड़ता है इसके विपरीत दूसरे देशों और वहां के निवासियों को प्रस्तुत करने में विशेष प्रकार के चित्रण ही करने पड़ते हैं। लेखक ने उल्लेख किया है कि इस क्षेत्र में तीन बातों के कारण निरन्तर सुधार हो रहा है। स्तर के सम्बन्ध में प्रतियोगिता जिससे विशिष्टीकरण बढ़ता है और उससे अधिक वस्तुपरक सूचना प्रस्तुत होती है। तकनीकी प्रगति जिससे समाचार-पत्रों, रेडियो और टेलिविजन के बीच मूल अभिलेखों के विनिमय को प्रोत्साहन मिलता है। और जनता की शिक्षा जिसका प्रभाव सूचना के स्तर के निर्णायक होता है।

दूसरे लेख में इंग्लैण्ड के मि० रिची काल्डर वह विज्ञान लेखक जिसको १९६३ में कलिंग पुरस्कार मिला था ने जोर देकर कहा है कि विज्ञान में "राष्ट्रीयता, विचारधारा, वर्ण या विश्वासों का कोई ध्यान नहीं रखा जाता। वैज्ञानिकों के एक दल ने ही शान्ति और निशस्त्रीकरण के पक्ष में पगवाश आन्दोलन शुरू किया। यूनेस्को और वैज्ञानिक संघों की अन्तर्राष्ट्रीय परिचय द्वारा विश्व स्तर पर वैज्ञानिक सहयोग के संगठन सम्बन्धी कार्य के परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण उपलब्धियां हुई हैं। अन्तर्राष्ट्रीय भू-भौतिक वर्ष (१९५७-१९५९) शान्त सूर्य के वर्ष हिन्द महासागर अभियान, अन्तर्राष्ट्रीय जल वैज्ञानिक दशक। अन्ततः विज्ञान और औद्योगिकी के विकासशील देशों के लाभ के लिए उपयोग सम्बन्धी संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (जिनेवा १९६३) विश्व भर के वैज्ञानिकों को निर्धनता, रोग और अज्ञान के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए आमन्त्रित किया गया था जिससे सभी राष्ट्रों ने रहन-सहन का स्तर मानवीय प्रतिष्ठा के अनुकूल हो।

पोलैण्ड के मि० जोजेफ बारबाग ने उन परिस्थितियों का विवेचन किया है जो जिनका सामना सामाजिक प्रगति और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना में योग देने के लिए भूगोल शिक्षण को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना होगा। इनमें एक परिस्थिति है मनुष्य और उसके भोगोलिक परिवेश के बीच सम्बन्धों की आशावादी संकल्पना। मनुष्य निष्क्रय भाव से प्राकृतिक क्रम को स्वीकार नहीं करता। वह उसमें सुधार भी कर सकता है परन्तु उसे सावधानी से चलना होगा जिससे कि परिस्थिति वैज्ञानिक सरणियों का संतुलन गड़बड़ न हो जाए। प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग, संरक्षण और सुधार में सभी मनुष्यों का संयुक्त दायित्व भूगोल के शिक्षण का मूल विषय है। ऐसे शिक्षण से उपयुक्त ढंग से कठिनाइयों को उदाहरण देने से दूसरे लोगों को सहानुभूति और आदर उत्पन्न किया जा सकता है! शिक्षिक को विभिन्न देशों और प्रदेशों के बीच तुलना करने का कोई भी अवसर किसी भी अवसर की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए और उनको जोड़ने वाले पारस्परिक सम्बन्धों और प्रभावों को भी दिखलाना चाहिए।

साक्षरता के सम्बन्ध में प्रारम्भिक तथ्य

निरक्षरता के निराकरण के सम्बन्ध में शिक्षा मन्त्रियों के विश्व सम्मेलन (तेहरान ८ से १९ सितम्बर १९६५) के अवसर पर जनसंचारण विभाग में मिसेज मेरी बर्नट की लिखी हुई एक पुस्तिका प्रकाशित की। इसमें साक्षरता की समस्या के सम्बन्ध में सामान्य जनता के सदस्यों द्वारा सामान्य रूप से पूछे हुए प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं।

निरक्षरता की समस्या हमेशा ही रही है अब उसके बारे इतनी चिन्ता क्यों; लोगों को पढ़ना-लिखना सिखाने से उसका भूखे रहना या बीमार पड़ना बन्द नहीं हो जाएगा। यदि सभी बच्चे स्कूल भेज दिए जाएं तो निरक्षरता की समस्या कुछ वर्षों स्वतःही सुलझ जाएगी आदि।

इन समस्याओं का समाधान सबके लिए स्पष्ट नहीं है और उन पर अधिक विचार करना होगा। वर्तमान परिस्थिति में प्रत्येक निरक्षर व्यक्ति समुदाय के लिए एक मृत भार के समान है। शिक्षा मनुष्यों को जीविका उपार्जन करने और रोग से बजने की क्षमता देती है। बच्चों को तब तक पढ़ाना असम्भव है जब तक उनके मां-बाप निरक्षर रहेंगे और न ही जो पीढ़ियां उत्पादनशील कार्य कर सकती हैं उनकी बलि देना वांछनीय है।

यदि इसकी आवश्यकता स्पष्ट है तो साक्षरता के लिए क्या किया जा रहा है। कुछ देशों ने जिनमें रूस, तुर्किस्तान और मेक्सिको है यह प्रमाणित कर दिया है कि समूची जनसंख्या को थोड़े ही समय में साक्षर बनाना सम्भव है।

परन्तु पहले उन लोगों की सम्पत्ति प्राप्त करना आवश्यक है; तुम किसी भी मनुष्य को तब तक कुछ नहीं सिखा सकते तब तक वह स्वयं ही न जानना चाहे। सौभाग्य से प्रतिदिन के कटु अनुभवों से निरक्षर व्यक्ति को यह मालूम हो जाता है कि वह आज के समाज में बिना कुछ शिक्षा प्राप्त किये काम करना तो दूर रहा जी भी नहीं सकता।

सरकारें शिक्षा के महत्व के प्रति इतनी सचेत हैं जितना सामान्य जनता। फिर साक्षरता को आगे बढ़ाने के लिए किन बातों की आवश्यकता है? इसका उत्तर है धन, स्कूल भवन और सबसे महत्वपूर्ण शिक्षक।

आधुनिक सूचना माध्यमों विशेष रूप से रेडियो और टेलीवीजन का महत्व प्रकट होता है। "रेडियो के कारण एक शिक्षक हजारों विद्यर्थियों से एक साथ बात कर सकता है। "रेडियो और टेलीवीजन द्वारा शिक्षा की प्रमुख कमी विद्यार्थियों और शिक्षक के बीच प्रत्येय सम्पर्क का अभाव है। अब यह अभाव समूह में सुनने के कारण दूर किया जा रहा है। विद्यार्थियों को दलों में संगठित कर लिया जाता है जिनके ऊपर एक मानिटर होता है जो विद्यार्थियों से प्रश्न पूछता है, समस्याएं सुलझाता है, रुचि उकसाता है और अक्रियता के विरुद्ध संघर्ष करता है जो सभी सच्ची शिक्षा की मृत्यु के समान होती है। इस तरीके के सफल प्रयोग के अनेकों उदाहरण हैं। विशेष रूप से कोलम्बिया, माली और इटली में जहां इसका उपयोग विशाल साक्षरता आन्दोलनों के लिए किया गया है।

परन्तु केवल पढ़ना-लिखना सीखना ही काफी नहीं है। यह ज्ञान एक बार में पूरी तरह नहीं उपार्जित किया जा सकता और यदि बराबर इसका प्रयोग और विकास न किया जाय तो भूल भी जाता है। जो लोग पढ़ सकते हैं उनके लिए पुस्तकों की आवश्यकता भी होती है जिन लोगों ने हाल में पढ़ना सीखा है उनके लिए उनकी आवश्यकताओं के अनुकूल उपयुक्त पाठ्य-पुस्तकों की आवश्यकता होती है। नवसाक्षरों के लिए पठन सामग्री का उत्पादन, कम खर्च की पुस्तकें, पत्रिकाएं, समाचार-पत्र आदि किसी भी साक्षरता योजना का दूसरा अनिवार्य सौपान है।

अन्त में लेखिका ने यूनैस्को द्वारा स्वीकृत साक्षरता की चुनाव परक नीति की व्याख्या की है: प्रारम्भ में कुछ देशों और दलों जो शिक्षा के महत्व के प्रति सचेष्ट हैं और राष्ट्रीय विकास के प्रति तात्कालिक योग दे सकते हैं कारंवाई को संकेंद्रित करना।

इन्जीनियरों का प्रशिक्षण

यूनैस्को भवन पेरिस में ३० जून से २ जुलाई १९६५ तक विशेषज्ञों का अन्तर्राष्ट्रीय दल (इंजीनियरी स्कूल के शिक्षक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निदेशक) इंजीनियरों के प्रशिक्षण की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए बैठक हुई। इस दल में ६ विशेषज्ञ थे—वैलेन्टीनजीडेसा (पाकिस्तान), जेम्स ग्रीग (इंगलैण्ड), एच ए हैवमैन (जर्मन संघ गणराज्य), हैरोल्ड हेजन (संयुक्त राज्य अमरीका) मसातो नाम्बा, (जापान), और हास्कर मागियोलो (यूरुग्वे)। मिस्टर वी आई तागानोव (सोवियत रूस) बीमारी के कारण बैठक में न आ सके।

विशेषज्ञों ने यह सिफारिश की कि यूनैस्को विकासशील देशों और औद्योगिककृत देशों में इंजीनियरों के प्रशिक्षण की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय या प्रादेशिक सम्मेलन का आयोजन करे।

तकनीकी प्रगति की इस दुनिया में नयी शोधें और तरीकें जल्दी-जल्दी पुराने पड़ते जाते हैं। १९२५ के विद्युत इंजीनियर के लिए वैकुअम नलिका एक नया आविष्कार था। आजकल ट्रांजिस्टर का प्रयोग किया जाता है और अब तो उसका स्थान सूक्ष्म समेकित परिपथ लेते जा रहे हैं। २० वर्ष पहले बीस हजार अश्व शक्ति वाला विद्युत संयन्त्र बड़ा माना जाता था अब यह जेट वायुयान की क्षमता है।

इसीलिए यदि इंजीनियरों को प्रशिक्षण देना है कि वे अपने को कल के तरीकों के अनुकूल बना सकें तो उनको सीखने की आदत पड़नी होगी क्योंकि उन्हें अपने समस्त जीवन सीखना होगा। दस वर्षों के भीतर इंजीनियर जो कुछ ज्ञान प्राप्त करता हैं वह पुराना पड़ जाता है और एक व्यावसायिक जीवन में कई नवीनकरण शिक्षाक्रमों की आवश्यकता पड़ेगी। इसके साथ ही और इंजीनियरों को आधुनिक समाज में अधिक महत्वपूर्ण योग देना होगा और यह आवश्यक है कि उनका तकनीकी ज्ञान सामान्य शिक्षा से पूरा किया जाए।

भविष्य में सभी इंजीनियरी स्कूलों को दो लक्ष्यों का ध्यान रखना होगा। कार्य तरीकों को सिखाना और अपने विद्यार्थियों की सामान्य संस्कृति में वृद्धि।

रसायन शिक्षण में प्रयोगात्मक प्रायोजना

२० सितम्बर १९६५ से जुलाई १९६६ तक दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया के विश्वविद्यालयों और अध्यापक प्रशिक्षण कालेज़ों से २० शिक्षकों की बैठक बैंकाक में हो रही है जहां यूनैस्को द्वारा नामित अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों के निदेशन में वे रसायन के शिक्षण की सामग्रियों के सैट तैयार करेंगे : ८ मि० मि० के फिल्म लू ताजेक्रम वद्ध शिक्षण की सामग्रियां, प्रयोगशाला के उपस्कर और प्रयोगों की निदेशिका।

एशियाई स्कूलों और विश्वविद्यलयों में रसायन के कार्यक्रम स्तर और विषय-वस्तु में भिन्न है जिसके कारण समूचे प्रदेश के लिए सामग्रियों का एक ही सैट होना असम्भव है। प्रयोगात्मक प्रायोजना का उद्देश्य ऐसी चुनी हुई सामग्रियों का उत्पादन करना है जो रसायन के तरीकों और उद्देश्यों के सम्बन्ध में सबसे नये विचारों के अनुसार हो। जो देश बैंकाक गोष्ठी में भाग लेने व इस गोष्ठी से निकट सहयोग करने के लिए एक अध्ययन दल का निर्माण करेंगे और फिर यहां बनाई हुई सामग्रियों से प्रयोगों का संगठन करेंगे और इस प्रकार उनको प्रत्येक देश के कार्यक्रम के अनुकूल बनायेंगे तथा पुस्तकों को राष्ट्रीय भाषाओं में अनूदित करेंगे।

१९६८ तक सम्बन्धित देशों के पास आधुनिक रसायन शिक्षण-सामग्रियां विश्वविद्यालय पूर्व स्तर पर माध्यमिक स्कूलों और अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों के लिए हो जायेंगे।

एशिया में यूनैस्को केन्द्र

एशिया में यूनैस्को के ८ प्रादेशिक केन्द्र हैं जो अन्तरएशियाई सहयोग और अपना विशेष तकनीकी प्रयोजन के लक्ष्य पूरे कर रहे हैं। यूनैस्को के महानिदेशक द्वारा इन केन्द्रों के कार्य का सर्वेक्षण करने के लिए एक स्थापित विशेष मूल्यांकन आयोग का यह मत है।

०४०००६

Published by the Director UNESCO South Asia Science Co-operation Office, N-1, Ring Road, New Delhi.
(Unesco Vritta Patrika, Vol. 11, No. 9, Sept. 1965) **Reproduction authorised**: Credit line should read UNESCO.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar